श्रीः ।

अथामरकोशः ।

श्रीमदमरसिंहविरचितः ।

मुरादाबादवास्तव्यश्रीयुतगौडवंशावतंसभोला-
नाथात्मजपण्डितरामस्वरूपकृतभाषाटीकया
शब्दानुक्रमणिकया च समेतः ।

खेमराज श्रीकृष्णदास,

" श्रीवेङ्कटेश्वर " स्टीम्-प्रेस,

बंबई.

संवत् १९९२, शके १८५७.



मुद्रक और प्रकाशक-
खेमराज श्रीकृष्णदास,
मालिक-"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस, बम्बई.



AMARKOSHA

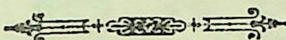
OF

AMARSINGH

WITH AN INDEX AND A COMMENTARY

BY

Ramaswarupa Bholanath Pandit



Printed and Published

BY

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS,

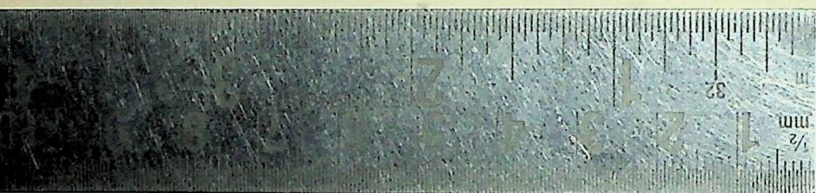
AT HIS

SHRI VENKATESHWAR STEAM PRESS,

BOMBAY.

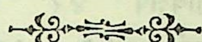


1935



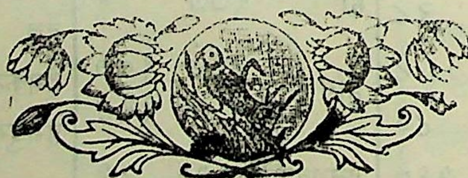
श्रीः ।

अकारादिक्रमेण अमरकोश–शब्दानुक्रमणिका ।



१ (प्राघूर्णिकः प्राघुणक- अभ्युत्थानं तु गौरवम्)

इत्यमरकोशशब्दानुक्रमणिका समाप्ता ।



श्रीः ।

अथामरकोशः

भाषाटीकासमेतः ।



प्रथमं काण्डम् १.

अथ स्वर्गवर्गः १.

यस्य ज्ञानदयासिन्धोरगाधस्यानघा गुणाः । सेव्यतामक्षयो धीराः स श्रिये चामृताय च ॥ १ ॥

यस्य भासा जगद्भाति सदैव सचराचरम् । तं नौमि परमात्मानं भक्तानामभयङ्करम् ॥ १ ॥ जटाटवीगलद्गङ्गं चन्द्रचूडामणिं शिवम् । स्मृत्वामरकृतेः कुर्वे भाषां व्याख्यासुधानुगाम् ॥ २ ॥

अन्वयः–हे अनघाः! भवद्भिः, सः, अक्षयः, धीराः, श्रिये, च, अमृताय, च, सेव्यताम् । ज्ञानदयासिन्धोः, अगाधस्य, अस्य, ई, अस्ति, गुणाः, च, सन्ति॥ १॥

अर्थः--हे सज्जनो ! तुम उस अविनाशी ज्ञानदाता गुरुकी भोग और मोक्षकी प्राप्ति होनेके अर्थ सेवा करो, जो शास्त्रकरके संपन्न और दयाकरके पूर्ण तथा विषयोंसे विरक्त हैं,ऐसे इन गुरुके पास अखण्ड लक्ष्मी और सत्य, शौच, दया, क्षमा आदिक गुण हैं ॥ १ ॥

ग्रंथमें वक्तव्य विषय दिखलाते हैं:–

समाहृत्यान्यतन्त्राणि संक्षिप्तैः प्रतिसंस्कृतैः । सम्पूर्णमुच्यते वर्गैर्नामलिङ्गानुशासनम् ॥ २ ॥

अन्वयः–मया,अन्यतन्त्राणि, समाहृत्य, संक्षिप्तैः,प्रतिसंस्कृतैः, वर्गैः,युक्तम्, नामलिंगानुशासनं,सम्पूर्णम्,उच्यते॥२॥

अर्थः–मैं व्याडि आदिकोंके नामलिङ्गानुशासन अथवा सिद्धांतोंका संग्रह करके शब्दोंके क्रमानुसार कथन करनेसे सुशोभित ऐसे थोड़े २ शब्दोंके वर्गोंसे अर्थात् पृथक् २ प्रकरणोंसे युक्त ऐसा शब्द और उनके लिंगोंका स्पष्ट रीतिसे बोध करनेवाला कोश परिपूर्ण रीतिसे कहता हूँ ॥ २ ॥

---

१ धियं राति ददाति । 'रा दाने' अस्मात् क्विप् । धीरा ज्ञानप्रदो गुरुरित्यर्थः ।

अर्थात्–ज्ञानके देनेवाले गुरुको धीर कहते हैं ।

इस ग्रंथमें लिंगादिव्यवस्था किस प्रकारसे की है वह कहते हैं:-

प्रायशो रूपभेदेन साहचर्याच्च कुत्रचित्। स्त्रीपुंनपुंसकं ज्ञेयं तद्विशेषविधेः क्वचित् ॥ ३ ॥

अन्वयः-अत्र, प्रायशः, रूपभेदेन, स्त्रीपुंनपुंसकं, ज्ञेयम्; च कुत्रचित्, साहचर्यात्, स्त्रीपुंनपुंसकं ज्ञेयम्; क्वचित्, तद्विशेषविधेः, स्त्रीपुंनपुंसकं ज्ञेयम् ॥३॥

अर्थः--इस ग्रंथमें वहुत करके ईप्, आप्, विसर्ग और अनुस्वार इनसे स्त्रीलिंग, पुँल्लिंग और नपुंसकलिंग जानना, जैसे-'पद्मालया' और 'पद्मा' यहां 'आप्' होनेसे 'पद्मालया' और 'पद्मा' यह स्त्रीलिङ्ग हैं।'पिनाकोऽजगवं धनुः' 'पिनाकः' यहांपर विसर्ग है इससे 'पिनाक' शब्द पुँल्लिङ्ग है। 'अजगवम्' यहांपर अनुस्वार होनेसे 'अजगव'शब्द नपुंसक है. कहींपर विशेषणमें स्थित अथवा सर्वनामवाचक शब्दमें स्थित रूपके भेदसे लिंगोंमें भेद होता है, जैसा-'तत्परो हनुः'यहांपर'तत्परः'इस विशेषणका पुँल्लिंगरूप होनेसे उसका विशेष्य जो'हनु'शब्द है उसका भी पुँल्लिंगहीमें रूप चलता है तथा'कुतूः कृत्तेः स्नेहपात्रं सैवाल्पा कुतुपः पुमान्'यहां'सा'यह जो सर्वनामसंज्ञक शब्द है वह'कुतू' शब्दका विशेषण है इससे 'सा' इसका स्त्रीलिंग होनेसे उसका विशेष्य जो 'कुतू' शब्द है उसका भी स्त्रीलिंग है. और निश्चित है लिंग जिसका ऐसा शब्द समीप उच्चारण करनेसे उसका जो लिंग है वही लिंग उस समीप पढ़े हुए अनिश्चितलिंगवाले शब्दका जानना, जैसे 'अश्वयुगश्विनी' 'भानुः करः' 'वियद्विष्णुपदम्' यहांपर'अश्वयुज्' 'भानु' और 'वियद्' इन अनिश्चितलिंगवाले शब्दोंके समीप निश्चित लिंगवाले 'अश्विनी' 'कर' और 'विष्णुपद' ये शब्द होनेसे उनके जो लिंग हैं वे ही लिंग उन अनिश्चित लिंगवाले शब्दोंके जानने अर्थात् 'अश्वयुज्' शब्दका स्त्रीलिंग, 'भानु'-शब्दका पुँल्लिंग और 'वियद्' शब्दका नपुंसक लिंग है, इस प्रकारसे जानने। और कहीं कहींपर उन स्त्री, पुम्, नपुंसक इनके विशेषरीतिसे कथन करनेसे स्त्रीलिंग, पुँल्लिंग और नपुंसकलिंग जानना. जैसे 'भेरी स्त्री दुन्दुभिः पुमान्' 'रोचिः शोचिरुभे क्लीबे' यहां पर भेरी शब्दके समीप 'स्त्री' ऐसा विशेषरीतिसे कथन किया है इसवास्ते 'भेरी' यह शब्द स्त्रीलिंग है और 'दुन्दुभि' शब्दके समीप 'पुमान्' यह

कथन करनेसे 'दुन्दुभि' शब्द पुँल्लिंग है और 'रोचिस्' 'शोचिस्' शब्दोंके समीप 'उभे क्लीबे' अर्थात् दोनों भी नपुंसक यह विशेष कथन करनेसे 'रोचिस्' और 'शोचिस्' ये शब्द नपुंसकलिङ्ग हैं, इस प्रकारसे सर्वत्र जानना ॥ ३ ॥

भेदाख्यानाय न द्वन्द्वो नैकशेषो न संकरः । कृतोऽत्र भिन्नलिंगानामनुक्तानां क्रमादृते ॥ ४ ॥

अन्वयः—अत्र, अनुक्तानां, भिन्नलिङ्गानां, भेदाख्यानाय, द्वन्द्वः, न, कृतः, एकशेषः, न, कृतः, क्रमात्, ऋते, संकरः, न, कृतः ॥ ४ ॥

अर्थः—इस कोशमें अपने अपने पर्यायोंमें नहीं पढ़े हुए भिन्न २ लिङ्गवाले शब्दोंका लिङ्गभेद कहनेके अर्थ द्वन्द्व और एकशेष नहीं किया है, जैसे-'देवता' शब्द स्त्रीलिङ्ग है 'दैवत' शब्द नपुंसकलिङ्ग है और 'अमर' शब्द पुँल्लिङ्ग है, इन भिन्नभिन्न लिङ्गवाले 'देवता' 'दैवत' और 'अमर' शब्दोंका लिङ्गभेद कहनेके अर्थ 'देवतादैवतामराः' ऐसा द्वन्द्वसमास नहीं किया है. द्वन्द्वसमास किया जाय तो 'अमर' शब्दका पुँल्लिङ्ग ही 'देवता' और 'दैवत' इनका हो जायगा. कारण द्वन्द्व समासमें और तत्पुरुषमें परपदका ही लिङ्ग होता है. वह यहां पर परपदलिङ्ग जो 'अमर' शब्दका पुँल्लिङ्ग है सो 'देवता' और 'दैवत' शब्दका नहीं होनेके वास्ते द्वन्द्व समास नहीं किया ऐसा सर्वत्र जानना. ऐसे ही 'नभः खं श्रावणो नभाः' यहांपर 'अश्रावणौ तु नभसी' ऐसा 'नभसी' इसप्रकारका एकशेष भी नहीं किया, यदि 'नभाश्च नभश्च नभसी' ऐसा एकशेष करनेसे 'नभसी' यह नपुंसकलिङ्ग शेष रहेगा फिर आकाशवाचक 'नभस्' शब्द नपुंसकलिङ्ग होगा परन्तु श्रावणवाचक 'नभस्' शब्द पुँल्लिङ्ग है ऐसा नहीं जाना जायगा, इस वास्ते 'खं नभः' और 'श्रावणो नभाः' ऐसा पृथक् २ 'नभस्' शब्द कहा है, लिङ्गभेद समझनेके लिये एकशेष 'नभसी' ऐसा नहीं किया, परन्तु समान लिङ्गोंका तो द्वन्द्वसमास किया ही है. जैसे—'स्वर्गनाकत्रिदिवत्रिदशालयाः' 'पादा रश्म्यंघ्रितुर्यांशाः' यहां पर एकलिङ्गके ही सब शब्द हैं, इसवास्ते उनका द्वन्द्वसमास किया है और जिन शब्दोंके पर्यायशब्द और लिङ्ग स्वतंत्रतासे अन्य स्थलोंमें कहे हैं, उससे अन्यत्र जो उस भिन्नलिङ्ग शब्दोंका किसी अर्थान्तरके अर्थ कथन करनेके लिये द्वन्द्वसमास

किया है, जैसे—'विद्याधराप्सरोयक्षरक्षोगन्धर्वकिन्नराः' 'मातापितरौ पितरौ' यहांपर 'अप्सरस्' शब्द अपने पर्यायोंमें 'स्त्रियां बहुष्वप्सरसः स्वर्वेश्या उर्वशीमुखाः' यहां ही स्त्रीलिङ्ग है ऐसा कहा है. उसी 'अप्सरस्' शब्दको देवयोनिमें परिगणनरूप अर्थके लिये विद्याधर आदिक गणोंमें पठित किया है और 'विद्याधर' 'अप्सरस्' 'यक्ष' 'रक्षस्' 'गन्धर्व' 'किन्नर' इन सब शब्दोंका द्वन्द्व, समास किया है, अब यहांपर यद्यपि सर्वशब्दोंका द्वन्द्वसमास होनेसे 'विद्याधराप्सरोयक्षरक्षोगन्धर्वकिन्नराः' ऐसा पुँल्लिङ्ग रूप बना है तो भी 'अप्सरस्' शब्दका अन्यत्र 'स्त्रियां बहुष्वप्सरसः' यहांपर कथन करनेके अनुसार स्त्रीलिङ्ग ही है ऐसा समझना और 'मातापितरौ पितरौ' यहांपर 'पितरौ' इसमें 'मातृ' और 'पितृ' ऐसे दोनों शब्दोंका एकवद्भाव किया गया है, इसमें 'मातृ' और 'पितृ' इनमेंसे 'पितृ' इसका शेष रहा है, इससे 'पितृ' इस शब्दको 'मातृ' 'पितृ' इन दोनोंका वाचकत्व होनेसे भी उसके अन्तर्गत यद्यपि 'मातृ' यह शब्द है तथापि वह 'मातृ' शब्द 'जनयित्री प्रसूर्माता' इस स्थलमें पर्यायशब्दोंके साथ स्त्रीलिङ्ग पठित है इसवास्ते उस 'पितरौ' इसके अन्तर्गत 'मातृ' शब्दका स्त्रीलिङ्ग ही है ऐसा जानना । और इस कोशमें उन भिन्न भिन्न लिङ्गवाले शब्दोंका क्रम छोड़के भिन्न २ लिङ्गवाले शब्दोंमें संकर कहिये मिश्रण नहीं किया है. जैसे—'स्तवः स्तोत्रं स्तुतिर्नुतिः' यहांपर 'स्तव' ऐसा पुँल्लिङ्ग कहा, फिर 'स्तोत्रं' यह नपुंसकलिंग कहा, फिर 'स्तुतिः' 'नुतिः' वे स्त्रीलिङ्ग शब्द कहे हैं. 'स्तुतिः स्तोत्रः स्तवो नुतिः' ऐसा लिंगोंका मिश्रणरूप संकर नहीं किया है. ऐसा ही 'जनुर्जननजन्मानि जनिरुत्पत्तिरुद्भवः' यहांपर 'जनुर्जननजन्मानि' ये नपुंसक शब्द कहे, फिर 'जनिः' 'उत्पत्ति' ये स्त्रीलिङ्ग शब्द कहे, फिर 'उद्भवः' यह पुँल्लिङ्ग शब्द कहा । इस प्रकारसे सर्वत्र लिङ्गविषयमें जानना॥४॥

त्रिलिङ्ग्यां त्रिष्विति पदं मिथुने तु द्वयोरिति । निषिद्धलिंगं शेषार्थं त्वन्ताथादि न पूर्वभाक् ॥ ५ ॥

अन्वयः—त्रिलिङ्ग्याम्, त्रिषु, इति, पदम्, ज्ञेयम्, मिथुने, तु, द्वयोः, इति पदम्, ज्ञेयम्, निषिद्धलिङ्गम्, शेषार्थम्,

ज्ञेयम्, त्वन्ताथादि, पूर्वभाक्, न, इति ज्ञेयम् ॥ ५ ॥

अर्थः—इस ग्रंथमें जहांपर कोई शब्द तीनों लिंगोंमें चलता हो वह 'त्रिषु' ऐसा पद कथन किया है सो जानना, जैसे-- 'त्रिषु स्फुलिंगोऽग्निकणः' यहांपर 'स्फुलिङ्ग' शब्द तीनों लिंगोंमें होता है इसवास्ते उस 'स्फुलिङ्ग' शब्दके समीप 'त्रिषु' यह पद कथन किया है. और जहांपर स्त्रीलिंग और पुँल्लिङ्ग इन दोनों लिंगोंमें कोई शब्द होता हो तो वहां 'द्वयोः' ऐसा पद कथन किया है सो जानना, जैसे—'द्वयोर्ज्वालकीलौ' यहांपर 'ज्वाल' और 'कील' ये दोनों शब्द पुँल्लिङ्ग और स्त्रीलिंग हैं इसवास्ते 'द्वयोः' ऐसा कथन किया है । 'द्वयोः' यह केवल द्विशब्दका उपलक्षण है, अर्थात् किसी भी तरहसे द्वि—शब्दका जहांपर प्रयोग होगा वहां स्त्रीलिंग और पुँल्लिंग जानना. जैसे-'द्विहीनं प्रसवे सर्वम्' और 'द्वयहीने कुकुन्दरे' इत्यादिक स्थलमें द्वि शब्दसे स्त्रीलिंग और पुँल्लिंग ऐसा अर्थ करनेसे प्रसव--वाचक जितने शब्द हैं वे सर्व स्त्रीलिंग और पुँल्लिंगसे रहित हैं अर्थात् नपुंसकलिंग हैं और कुकुन्दर-शब्द द्वय-कहिये स्त्रीलिंग और पुँल्लिंग इनसे रहित है अर्थात् नपुंसकलिंग है ऐसा जानना. तथा जिस शब्दका जो लिंग निषिद्ध किया हो उसके अतिरिक्त बाकी रहा लिंग उस शब्दका जानना. जैसे 'वज्रमस्त्री' यहांपर 'वज्र' यह शब्द 'अस्त्री' कहिये स्त्रीलिंग नहीं है, इससे 'वज्र' शब्दको स्त्रीलिंगत्वका निषेध होनेपर बाकी रहे पुँल्लिंग और नपुंसकलिंग इस 'वज्र' शब्दके हैं ऐसा जानना और जहां जिस शब्दके पीछे 'तु' यह शब्द हो वहां उस तु-शब्दके प्रथम जो शब्द हो उसका पर्यायवाचक शब्द केवल उस तु-शब्दके पीछे पढ़ा हुआ ही शब्द होता है, उससे पहला शब्द उस 'तु' के पहले पठित किये शब्दका पर्यायवाचक शब्द नहीं होता है. जैसे-- 'नगरी' त्वमरावती' यहांपर 'तु' यह जो शब्द पठन किया है इसके पूर्व पठित जो 'नगरी' शब्द है उसका पर्यायअर्थबोधक शब्द 'अमरावती' यह है इस तु--शब्दके कथन करनेसे 'नगरी' इसका संबंध 'अमरावती' इसमें होता है उस 'नगरी' शब्दके प्रथम पठित, 'इन्द्राणी' शब्दमें नहीं होता है यह 'तु' अन्त में जिसके है ऐसे नामपदकी व्यवस्था कही अब इसी प्रकारसे 'तु' जिसके अन्तमें

है ऐसा लिंगवाचक पद सर्वनामसंज्ञक पद और अव्ययसंज्ञक पद इन पदोंका भी संबंध उस तु-शब्दके पीछे पढ़े हुए शब्दमें ही होता है, जैसे—'पुंसि त्वन्तार्धिः' यहां 'पुंसि' इस लिंगवाचक पदका 'अन्तार्धिः' इस पदमें संबंध हुआ और 'तस्य तु प्रिया' यहां 'तस्य' इस सर्वनामसंज्ञक पदका तु--शब्दके पीछे पठित प्रिया-शब्दमें संबंध हुआ और 'वा तु पुंसि' यहांपर 'वा' इस अव्ययसंज्ञक पदका तु-शब्दके पीछे पठित 'पुंसि' इसमें संबंध हुआ. इस प्रकारसे सर्वत्र तु-शब्दके विषयमें जानना । और इस कोशमें जहांपर जिन शब्दोंके प्रथम 'अथ' यह शब्द हो वहां उस अथ--शब्दके पीछे पठित नामपद, लिंगपद, सर्वनामपद और अव्ययपद इनका संबंध उस अथ-के प्रथम पठित शब्दोंमें नहीं होता है । उन अथ-शब्दके पीछे पठित शब्दोंका सम्बन्ध अथ--शब्दके पीछे पठित शब्दोंमें ही होता है जैसे—'जवोऽथ शीघ्रं त्वरितम्' यहांपर अथ-शब्दके पीछे पठित 'शीघ्र' इस नामपदका सम्बन्ध उस अथ-के प्रथम पठित जव-शब्दमें नहीं होता है किंतु अथ-शब्दके पीछे पठित 'शीघ्र' इस नामपदका संबंध उस अथ--शब्दके पीछे पठित 'त्वरितम्' 'लघु' 'क्षिप्रम्' 'अरम्' 'द्रुतम्' इन शब्दोंमें होता है। ऐसे ही 'शस्तं चाथ त्रिषु द्रव्ये' यहांपर अथ-शब्दके पीछे पठित 'त्रिषु' इस लिंगवाचक पदका द्रव्यवाचक पाप, पुण्य, सुख आदिक पदोंमें संबंध होता है. उस अथ--के प्रथम पठित 'शस्तं' इसमें संबंध नहीं होता है. अब जहां अथ--शब्दके बदलेमें कहीं कहीं अथो-शब्द कहा हो वहां भी इसी प्रकारकी व्यवस्था जाननी. जैसे—'अनुक्रोशोऽप्यथो हसः' यहांपर अथो इस शब्दके पीछे पठित 'हस' इस नामपदका संबंध उनके पीछे पठित 'हास' 'हास्य' इन शब्दोंमें होता है. उस अथो-शब्दके प्रथम पाठित अनुक्रोश-शब्दमें नहीं होता है । इस प्रकारसे व्यवस्था इस कोशमें की है, सो जिज्ञासु जनोंको जाननी चाहिये ॥५॥

इति परिभाषा ॥

स्वरव्ययं स्वर्गनाकत्रिदिवत्रिदशालयाः।सुरलोको द्योदिवौ द्वे स्त्रियां क्लीबे त्रिविष्टपम् ॥ ६ ॥

स्वर्गके नाम ९—स्वर् १ स्वर्ग २ नाक ३ त्रिदिव ४ त्रिदशालय ५ सुरलोक ६ द्यो ७ दिव् ८ त्रिविष्टप ९ ॥ ६ ॥

अमरा निर्जरा देवास्त्रिदशा विबुधाः सुराः । सुपर्वाणः सुमनसस्त्रिदिवेशा दिवौकसः ॥ ७ ॥ आदितेया दिविषदो लेखा अदितिनन्दनाः । आदित्या ऋभवोऽस्वप्ना अमर्त्या अमृतान्धसः ॥ ८ ॥ बर्हिर्मुखाः क्रतुभुजो गीर्वाणा दानवारयः । वृन्दारका दैवतानि पुंसि वा देवताः स्त्रियाम् ॥ ९ ॥

देवताओंके नाम २६—अमर १ निर्जर २ देव ३ त्रिदश ४ विबुध ५ सुर ६ सुपर्वन् ७ सुमनस् ८ त्रिदिवेश ९ दिवौकस् १० ॥ ७ ॥ आदितेय ११ दिविषद् १२ लेख १३ अदितिनन्दन १४ आदित्य १५ ऋभु १६ अस्वप्न १७ अमर्त्य १८ अमृतान्धस् १९ ॥ ८ ॥ बर्हिर्मुख २० क्रतुभुज २१ गीर्वाण २२ दानवारि २३ वृंदारक २४ दैवत २५ देवता २६ ॥ ९ ॥

आदित्यविश्ववसवस्तुषिताभास्वरानिलाः । महाराजिकसाध्याश्च रुद्राश्च गणदेवताः ॥ १० ॥

गणदेवताओंके नाम ९—आदित्य (बारह) १ विश्व (तेरह) २ वसु (आठ) ३ तुषित (छत्तिस) ४ आभास्वर (चौंसठ)५ अनिल (उनञ्चास) ६ महाराजिक (दोसौ बीस)७ साध्य (बारह) ८ रुद्र (ग्यारह) ९ ॥१०॥

विद्याधराप्सरोयक्षरक्षोगन्धर्वकिन्नराः । पिशाचो गुह्यकः सिद्धो भूतोऽमी देवयोनयः ॥ ११ ॥

देवताओंकी जातिके भेद १०—विद्याधर १ अप्सरस् २ यक्ष ३ रक्षस् ४ गंधर्व ५ किन्नर ६ पिशाच ७ गुह्यक ८ सिद्ध ९ भूत १० ॥ ११ ॥

असुरा दैत्यदैतेयदनुजेन्द्रारिदानवाः । शुक्रशिष्या दितिसुताः पूर्वदेवाः सुरद्विषः ॥ १२ ॥

दैत्योंके नाम १०—असुर १ दैत्य २ दैतेय ३ दनुज ४ इन्द्रारि ५ दानव ६ शुक्रशिष्य ७ दितिसुत ८ पूर्वदेव ९ सुरद्विष् १० ॥ १२ ॥

सर्वज्ञः सुगतो बुद्धो धर्मराजस्तथागतः। समन्तभद्रो भगवान्मारजिल्लोकजिज्जिनः ॥ १३ ॥ षडभिज्ञो दशबलोऽद्वयवादी विनायकः। मुनीन्द्रः श्रीघनः शास्ता मुनिः–

बुद्धिके नाम १८–सर्वज्ञ १ सुगत २ बुद्धि ३ धर्मराज ४ तथागत ५ समन्तभद्र ६ भगवत् ७ माराजित् ८ लोकाजित् ९ जिन १० ॥ १३ ॥ षडभिज्ञ ११ दशबल १२ अद्वयवादिन् १३ विनायक १४ मुनीन्द्र १५ श्रीघन १६ शास्तृ १७ मुनि १८ ॥–

–शाक्यमुनिस्तु यः ॥ १४ ॥ स शाक्यसिंहः सर्वार्थसिद्धः शौद्धोदनिश्च सः। गौतमश्चार्कबन्धुश्च मायादेवीसुतश्च सः ॥ १५ ॥

शाक्यसिंहके नाम ७–शाक्यमुनि १ ॥ १४ ॥ शाक्यसिंह २ सर्वार्थसिद्ध ३ शौद्धोदनि ४ गौतम ५ अर्कबन्धु ६ मायादेवीसुत ७ ॥ १५ ॥

ब्रह्मात्मभूः सुरज्येष्ठः परमेष्ठी पितामहः। हिरण्यगर्भो लोकेशः स्वयंभूश्चतुराननः ॥ १६ ॥ धाताब्जयोनिर्द्रुहिणो विरिञ्चिः कमलासनः। स्रष्टा प्रजापतिर्वेधा विधाता विश्वसृड्विधिः ॥ १७ ॥

ब्रह्माजीके नाम २०–ब्रह्मन् १ आत्मभू २ सुरज्येष्ठ ३ परमेष्ठिन् ४ पितामह ५ हिरण्यगर्भ ६ लोकेश ७ स्वयम्भू ८ चतुरानन ९ ॥ १६ ॥ धातृ १० अब्जयोनि ११ द्रुहिण १२ विरिञ्चि १३ कमलासन १४ स्रष्टृ १५ प्रजापति १६ वेधस् १७ विधातृ १८ विश्वसृज् १९ विधि २० ॥ १७ ॥

विष्णुर्नारायणः कृष्णो वैकुण्ठो विष्टरश्रवाः। दामोदरो हृषीकेशः केशवो माधवः स्वभूः ॥ १८ ॥ दैत्यारिः पुण्डरीकाक्षो गोविन्दो गरुडध्वजः। पीताम्बरोऽच्युतः शार्ङ्गी विष्वक्सेनो जनार्दनः ॥ १९ ॥ उपेन्द्र इन्द्रावरजश्चक्रपाणिश्चतुर्भुजः। पद्मनाभो मधुरिपुर्वासुदेवस्त्रिविक्रमः ॥ २० ॥ देवकीनन्दनः शौरिः श्रीपतिः पुरुषोत्तमः। वनमाली बलिध्वंसी कंसारातिरधोक्षजः ॥ ॥ २१ ॥ विश्वम्भरः कैटभजिद्विधुः श्रीवत्सलाञ्छनः।–

विष्णुभगवान्के नाम ३९–विष्णु १ नारायण २ कृष्ण ३ वैकुण्ठ ४ विष्टरश्रवस् ५ दामोदर ६ हृषीकेश ७ केशव ८ माधव ९ स्वभू १० ॥ १८ ॥ दैत्यारि ११ पुण्डरीकाक्ष १२

गोविन्द १३ गरुडध्वज १४ पीतांबर १५ अच्युत १६ शार्ङ्गिन् १७ विष्वक्सेन १८ जनार्दन १९ ॥ १९ ॥ उपेन्द्र २० इन्द्रावरज २१ चक्रपाणि २२ चतुर्भुज २३ पद्मनाभ २४ मधुरिपु २५ वासुदेव २६ त्रिविक्रम २७ ॥ २० ॥ देवकीनन्दन २८ शौरिन् २९ श्रीपति ३० पुरुषोत्तम ३१ वनमालिन् ३२ बलिध्वंसिन् ३३ कंसाराति ३४ अधोक्षज ३५ ॥ २१ ॥ विश्वंभर ३६ कैटभाजित् ३७ विधु ३८ श्रीवत्सलाञ्छन ३९ ॥–

वसुदेवोऽस्य जनकः स एवानकदुन्दुभिः ॥ २२ ॥

वसुदेवजीके नाम २–वसुदेव १ आनकदुन्दुभि २ ॥ २२ ॥

बलभद्रः प्रलम्बघ्नो बलदेवोऽच्युताग्रजः । रेवतीरमणो रामः कामपालो हलायुधः ॥ २३ ॥ नीलांबरो रौहिणेयस्तालांको मुसली हली । संकर्षणः सीरपाणिः कालिन्दीभेदनो बलः ॥ २४ ॥

बलदेवजीके नाम १७–बलभद्र १ प्रलम्बघ्न २ बलदेव ३ अच्युताग्रज ४ रेवतीरमण ५ राम ६ कामपाल ७ हलायुध ८ ॥ २३ ॥ नीलांबर ९ रौहिणेय १० तालांक ११ मुसलिन् १२ हलिन् १३ संकर्षण १४ सीरपाणि १५ कालिन्दीभेदन १६ बल १७ ॥ २४ ॥

मदनो मन्मथो मारः प्रद्युम्नो मीनकेतनः । कन्दर्पो दर्पकोऽनंगः कामः पञ्चशरः स्मरः ॥ २५ ॥ शम्बरारिर्मनसिजः कुसुमेषुरनन्यजः । पुष्पधन्वा रतिपतिर्मकरध्वज आत्मभूः ॥ २६ ॥ ब्रह्मसूर्ऋष्यकेतुः–

कामदेवके नाम २१–मदन १ मन्मथ २ मार ३ प्रद्युम्न ४ मीनकेतन ५ कन्दर्प ६ दर्पक ७ अनंग ८ काम ९ पञ्चशर १० स्मर ११ ॥ २५ ॥ शम्बरारि १२ मनसिज १३ कुसुमेषु १४ अनन्यज १५ पुष्पधन्वन् १६ रतिपति १७ मकरध्वज १८ आत्मभू १९ ॥ २६ ॥ ब्रह्मसू २० ऋष्यकेतु २१ ॥–

–स्यादनिरुद्ध उषापतिः ।–

अनिरुद्धके नाम २–अनिरुद्ध १ उषापति २ ॥–

लक्ष्मीः पद्मालया पद्मा कमला श्रीर्हरिप्रिया ॥ २७ ॥

लक्ष्मीजीके नाम ६–लक्ष्मी १ पद्मालया २ पद्मा ३ कमला ४ श्री ५ हरिप्रिया ६ ॥ २७ ॥

शंखो लक्ष्मीपतेः पाञ्चजन्य–

विष्णुभगवान्के शंखका नाम १–पाञ्चजन्य १ ॥–

–श्चक्रं सुदर्शनम् ।

विष्णुभगवान्के चक्रका नाम १–सुदर्शन १ ॥

कौमोदकी गदा–

विष्णुभगवान्की गदाका नाम १--कौमोदकी १ ॥–

–खड्गो नन्दकः–

विष्णुके खड्गका नाम१--नन्दक १ ॥--

–कौस्तुभो मणिः ॥ २८ ॥

विष्णुकी मणिका नाम १--कौस्तुभ १ ॥ २८ ॥

गरुत्मान्गरुडस्तार्क्ष्यो वैनतेयः खगेश्वरः । नागान्तको विष्णुरथः सुपर्णः पन्नगाशनः ॥ २९ ॥

गरुडजीके नाम ९--गरुत्मत् १ गरुड २ तार्क्ष्य ३ वैनतेय ४ खगेश्वर ५ नागान्तक ६ विष्णुरथ ७ सुपर्ण ८ पन्नगाशन ९ ॥ २९ ॥

शम्भुरीशः पशुपतिः शिवः शूली महेश्वरः । ईश्वरः शर्व ईशानः शङ्करश्चन्द्रशेखरः॥३० ॥ भूतेशः खण्डपरशुर्गिरीशो गिरिशो मृडः । मृत्युञ्जयः कृत्तिवासाः पिनाकी प्रमथाधिपः ॥ ३१ ॥ उग्रः कपर्दी श्रीकण्ठः शितिकण्ठः कपालभृत् । वामदेवो महादेवो विरूपाक्षस्त्रिलोचनः ॥ ३२ ॥ कृशानुरेताः सर्वज्ञो धूर्जटिर्नीललोहितः । हरः स्मरहरो भर्गस्त्र्यम्बकस्त्रिपुरान्तकः ॥ ३३॥ गङ्गाधरोऽधकरिपुः क्रतुध्वंसी वृषध्वजः ॥व्योमकेशो भवो भीमः स्थाणू रुद्र उमापतिः ॥ ३४ ॥

शिवजीके नाम ४८–शम्भु १ ईश २ पशुपति ३ शिव ४ शूलिन् ५ महेश्वर ६ ईश्वर ७ शर्व ८ ईशान ९ शंकर १० चन्द्रशेखर ११ ॥ ३० ॥ भूतेश १२ खण्डपरशु १३ गिरीश १४ गिरिश १५ मृड १६ मृत्युञ्जय १७ कृत्तिवासस् १८ पिनाकिन् १९ प्रमथाधिप २० ॥ ३१ ॥ उग्र २१ कपर्दिन् २२ श्रीकण्ठ २३ शितिकण्ठ २४ कपालभृत् २५ वामदेव २६ महादेव २७ विरूपाक्ष २८ त्रिलोचन २९ ॥ ३२ ॥ कृशानुरेतस् ३० सर्वज्ञ ३१ धूर्जटि ३२ नीललोहित ३३ हर ३४ स्मरहर ३५ भर्ग ३६ त्र्यम्बक ३७ त्रिपुरान्तक ३८ ॥३३॥ गंगाधर ३९

अन्धकरिपु ४० क्रतुध्वंसिन् ४१ वृषध्वज ४२ व्योमकेश ४३ भव ४४ भीम ४५ स्थाणु ४६ रुद्र ४७ उमापति ४८ ॥ ३४ ॥

कपर्दोऽस्य जटाजूटः–

शिवजीके जटाजूटका नाम १–कपर्द १॥–

–पिनाकोऽजगवं धनुः ।

शिवजीके धनुषके नाम २–पिनाक १ अजगव २ ॥

प्रमथाः स्युः पारिषदा–

शिवजीके पार्षदोंके नाम २–प्रमथ १ पारिषद २ ॥–

–ब्राह्मीत्याद्यास्तु मातरः ॥३५॥

"ब्राह्मी माहेश्वरी चैव कौमारी वैष्णवी तथा । वाराही च तथेन्द्राणी चामुण्डा सप्त मातरः ॥"

ब्राह्मी आदि शक्तियोंके नाम ७–ब्राह्मी १ माहेश्वरी २ कौमारी ३ वैष्णवी ४ वाराही ५ इन्द्राणी ६ चामुण्डा ७॥ ३५ ॥

विभूतिर्भूतिरैश्वर्य–

ऐश्वर्यके नाम ३–विभूति १ भूति २ ऐश्वर्य ३ ॥–

–मणिमादिकमष्टधा ।

"अणिमा महिमा चैव गरिमा लघिमा तथा । प्राप्तिः प्राकाम्यमीशित्वं वशित्वं चाष्टसिद्धयः ॥"

ऐश्वर्यके भेद ८–अणिमन् १ महिमन् २ गरिमन् ३ लघिमन् ४ प्राप्ति ५ प्राकाम्य ६ ईशित्व ७ वशित्व ८ ॥

उमा कात्यायनी गौरी काली हैमवतीश्वरी ॥३६॥ शिवा भवानी रुद्राणी शर्वाणी सर्वमङ्गला । अपर्णा पार्वती दुर्गा मृडानी चण्डिकाम्बिका ॥ ३७ ॥

" आर्या दाक्षायणी चैव गिरिजा मेनकात्मजा ॥"

पार्वतीके नाम २१–उमा १ कात्यायनी २ गौरी ३ काली ४ हैमवती ५ ईश्वरी ६ ॥ ३६ ॥ शिवा ७ भवानी ८ रुद्राणी ९ शर्वाणी १० सर्वमंगला ११ अपर्णा १२ पार्वती १३ दुर्गा १४ मृडानी १५ चण्डिका १६ अम्बिका १७ ॥ ३७ ॥ आर्या १८ दाक्षायणी १९ गिरिजा २० मेनकात्मजा २१ ॥

विनायको विघ्नराजद्वैमातुरगणाधिपाः । अप्येकदन्तहेरम्बलम्बोदरगजाननाः ॥ ३८ ॥

गणेशके नाम ८–विनायक १ विघ्नराज २ द्वैमातुर ३ गणाधिप ४ एकदन्त ५ हेरम्ब ६ लम्बोदर ७ गजानन ८॥ ३८॥

कार्त्तिकेयो महासेनः शरजन्मा षडाननः। पार्वतीनन्दनः स्कन्दः सेनानीरग्निभूर्गुहः ॥ ३९ ॥ बाहुलेयस्तारकजिद्विशाखः शिखिवाहनः। षाण्मातुरः शक्तिधरः कुमारः क्रौञ्चदारणः ॥ ४० ॥

स्वामिकार्त्तिकेयके नाम १७—कार्त्तिकेय १ महासेन २ शरजन्मन् ३ षडानन ४ पार्वतीनन्दन ५ स्कन्द ६ सेनानी ७ अग्निभू ८ गुह ९ ॥३९॥ बाहुलेय १० तारकजित् ११ विशाख १२ शिखिवाहन १३ षाण्मातुर १४ शक्तिधर १५ कुमार १६ क्रौञ्चदारण १७ ॥ ४० ॥

इन्द्रो मरुत्वान् मघवा बिडौजाः पाकशासनः। वृद्धश्रवाः शुनासीरः पुरुहूतः पुरंदरः॥४१॥जिष्णुर्लेखर्षभः शक्रः शतमन्युर्दिवस्पतिः। सुत्रामा गोत्रभिद्वज्री वासवो वृत्रहा वृषा॥४२॥वास्तोष्पतिः सुरपतिर्बलारातिः शचीपतिः। जम्भभेदी हरिहयः स्वाराण्नमुचिसूदनः॥४३॥ संक्रन्दनो दुश्च्यवनस्तुराषाण्मेघवाहनः। आखण्डलः सहस्राक्ष ऋभुक्षा—

इन्द्रके नाम ३५—इन्द्र १ मरुत्वत् २ मघवन् ३ बिडौजस् ४ पाकशासन ५ वृद्धश्रवस् ५ शुनासीर ७ पुरुहूत ८ पुरन्दर ९ ॥४१॥ जिष्णु १० लेखर्षभ ११ शक्र १२ शतमन्यु १३ दिवस्पति १४ सुत्रामन् १५ गोत्रभिद् १६ वज्रिन् १७ वासव १८ वृत्रहन् १९ वृषन् २० ॥ ४२ ॥ वास्तोष्पति २१ सुरपति २२ बलाराति २३ शचीपति २४ जम्भभेदिन् २५ हरिहय २६ स्वाराज् २७ नमुचिसूदन २८ ॥ ४३ ॥ संक्रन्दन २९ दुश्च्यवन ३० तुरासाह् ३१ मेघवाहन ३२ आखण्डल ३३ सहस्राक्ष ३४ ऋभुक्षिन् ३५ ॥—

--स्तस्य तु प्रिया ॥ ४४ ॥ पुलोमजा शचीन्द्राणी—

इन्द्राणीके नाम ३— ॥४४॥ पुलोमजा १ शची २ इन्द्राणी ३—

--नगरी त्वमरावती।

इन्द्रपुरीका नाम १—अमरावती १॥

हय उच्चैःश्रवाः—

इन्द्रके घोड़ेका नाम १—उच्चैःश्रवस् १॥—

--सूतो मातलि—

इन्द्रके सारथिका नाम १-मातलि १॥—

--र्नन्दनं वनम् ॥ ४५ ॥

इन्द्रके बगीचेका नाम १-नन्दन १ ॥ ४५ ॥

स्यात्प्रासादो वैजयंतो--

इन्द्रके धवरहरको नाम १-वैजयन्त १ ॥

--जयंतः पाकशासनिः ।

इन्द्रके पुत्रके नाम २--जयन्त १ पाकशासनि २ ॥

ऐरावतोऽभ्रमातङ्गैरावणाभ्रमुवल्लभाः ॥ ४६ ॥

इन्द्रके हाथीके नाम ४—ऐरावत १ अभ्रमातंग २ ऐरावण ३ अभ्रमुवल्लभ ४ ॥ ४६ ॥

ह्रादिनी वज्रमस्त्री स्यात्कुलिशं भिदुरं पविः । शतकोटिः स्वरुः शम्बो दम्भोलिरशनिर्द्वयोः ॥ ४७ ॥

वज्रके नाम १०--ह्रादिनी १ वज्र २ कुलिश ३ भिदुर ४ पवि ५ शतकोटि ६ स्वरु ७ शम्ब ८ दम्भोलि ९ अशनि १० ॥ ४७ ॥

व्योमयानं विमानोऽस्त्री—

विमानके नाम २--व्योमयान १ विमान २॥—

—नारदाद्याः सुरर्षयः ।

सुरऋषियोंके नाम—नारद आदि ॥

स्यात्सुधर्मा देवसभा—

देवसभाके नाम २—सुधर्मा १ देवसभा २॥—

—पीयूषममृतं सुधा ॥ ४८ ॥

अमृतके नाम ३—पीयूष १ अमृत २ सुधा ३ ॥ ४८ ॥

मंदाकिनी वियद्गङ्गा स्वर्णदी सुरदीर्घिका ।

स्वर्गगंगाके नाम ४--मन्दाकिनी १ वियद्गंगा २ स्वर्णदी ३ सुरदीर्घिका ४॥

मेरुः सुमेरुर्हेमाद्री रत्नसानुः सुरालयः ॥ ४९ ॥

सुमेरुपर्वतके नाम ५—मेरु १ सुमेरु २ हेमाद्रि ३ रत्नसानु ४ सुरालय ५॥४९॥

पञ्चैते देवतरवो मन्दारः पारिजातकः । संतानः कल्पवृक्षश्च पुंसि वा हरिचन्दनम् ॥ ५० ॥

देववृक्षोंके नाम ५—मन्दार १ पारिजातक २ सन्तान ३ कल्पवृक्ष ४ हरिचन्दन ५ ॥ ५० ॥

सनत्कुमारो वैधात्रः—

सनत्कुमारके नाम २—सनत्कुमार १ वैधात्र २॥—

—स्वर्वैद्यावश्विनीसुतौ । नासत्यावश्विनौ दस्रावाश्विनेयौ च तावुभौ ॥ ५१ ॥

अश्विनीकुमारके नाम ६—स्वर्वैद्य १ अश्विनीसुत २ नासत्य ३ अश्विन् ४ दस्र ५ आश्विनेय ६ ॥ ५१ ॥

स्त्रियां बहुष्वप्सरसः स्वर्वेश्या उर्वशीमुखाः ।

अप्सराओंके नाम २—अप्सरस् १ स्वर्वेश्या २॥ वे उर्वशी आदिक अप्सराएँ हैं ॥

हाहाहूहूश्चैवमाद्या गन्धर्वास्त्रिदिवौकसाम् ॥ ५२ ॥

गन्धर्वोंके नाम २—हाहा १ हूहू २ आदि देवोंके गवैये हैं ॥ ५२ ॥

अग्निर्वैश्वानरो वह्निर्वीतिहोत्रो धनञ्जयः । कृपीटयोनिर्ज्वलनो जातवेदास्तनूनपात् ॥ ५३ ॥ बर्हिः शुष्मा कृष्णवर्त्मा शोचिष्केश उषर्बुधः । आश्रयाशो बृहद्भानुः कृशानुः पावकोऽनलः ॥ ५४ ॥ रोहिताश्वो वायुसखः शिखावानाशुशुक्षणिः ॥ हिरण्यरेता हुतभुग्दहनो हव्यवाहनः ॥ ५५ ॥ सप्तार्चिर्दमुनाः शुक्रश्चित्रभानुर्विभावसुः । शुचिरप्पित्त—

अग्निके नाम ३४—अग्नि १ वैश्वानर २ वह्नि ३ वीतिहोत्र ४ धनञ्जय ५ कृपीटयोनि ६ ज्वलन ७ जातवेदस् ८ तनूनपात् ९ ॥ ५३ ॥ बर्हिस् १० शुष्मन् ११ कृष्णवर्त्मन् १२ शोचिष्केश १३ उषर्बुध १४ आश्रयाश १५ बृहद्भानु १६ कृशानु १७ पावक १८ अनल १९ ॥ ५४ ॥ रो (लो) हिताश्व २० वायुसख २१ शिखावत् २२ आशुशुक्षणि २३ हिरण्यरेतस् २४ हुतभुज् २५ दहन २६ हव्यवाहन २७ ॥ ५५ ॥ सप्तार्चिस् २८ दमुनस् २९ शुक्र ३० चित्रभानु ३१ विभावसु ३१ शुचि ३३ अप्पित्त ३४—

—और्वस्तु वाडवो वडवानलः ९६

वडवानलके नाम ३-और्व १ वाडव २ वडवानल ३ ॥ ५६ ॥

वह्नेर्द्वयोर्ज्वालकीलावर्चिर्हेतिः शिखा स्त्रियाम् ।

अग्निकी ज्वालाके नाम ५—ज्वाल १ कील २ अर्चिस् ३ हेति ४ शिखा ५ ॥

त्रिषु स्फुलिंगोऽग्निकणः—

चिनगारीके नाम २—स्फुलिंग १ अग्निकण २॥—

—संतापः संज्वरः समौ ॥ ९७ ॥

संतापके नाम २—सन्ताप १ सञ्ज्वर २ ॥ ५७ ॥

धर्मराजः पितृपतिः समवर्ती परेतराट् । कृतान्तो यमुनाभ्राता शमनो यमराड्यमः ॥ ९८ ॥ कालो दण्डधरः श्राद्धदेवो वैवस्वतोऽन्तकः ।

यमराजके नाम १४—धर्मराज १ पितृपति २ समवर्तिन् ३ परेतराज् ४ कृतान्त ५ यमुनाभ्रात ६ शमन ७ यमराज् ८ यम ९॥५८॥काल १० दण्डधर ११ श्राद्धदेव १२ वैवस्वत १३ अन्तक १४ ॥

राक्षसः कौणपः क्रव्यात् क्रव्यादोऽस्रप आशरः ॥ ५९ ॥ रात्रिंचरो रात्रिचरः कर्बुरो निकषात्मजः । यातुधानः पुण्यजनो नैर्ऋतो यातुरक्षसी ॥ ६० ॥

राक्षसोंके नाम १५--राक्षस १ कौणप २ क्रव्याद् ३ क्रव्याद ४ अस्रप ५ आशर ६॥५९॥रात्रिञ्चर ७ रात्रिचर ८ कर्बुर ९ निकषात्मज १० यातुधान ११ पुण्यजन १२ नैर्ऋत १३ यातु १४ रक्षस् १५ ॥ ६० ॥

प्रचेता वरुणः पाशी यादसां पतिरप्पतिः ।

वरुणके नाम ५--प्रचेतस् १ वरुण २ पाशिन् ३ यादसाम्पति ४ अप्पति ५॥

श्वसनः स्पर्शनो वायुर्मातरिश्वा सदागतिः ॥ ६१ ॥ पृषदश्वो गन्धवहो गन्धवाहानिलाशुगाः । समीरमारुतमरुज्जगत्प्राणसमीरणाः ॥ ६२ ॥ नभस्वद्वातपवनपवमानप्रभञ्जनाः ॥

वायुके नाम २०--श्वसन १ स्पर्शन २ वायु ३ मातरिश्वन् ४ सदागति ५ ॥६१॥ पृषदश्व ६ गन्धवह ७ गन्धवाह ८ अनिल ९ आशुग १० समीर ११ मारुत १२ मरुत् १३ जगत्प्राण १४ समीरण १५ ॥६२॥ नभस्वत् १६ वात १७ पवन १८ पवमान १९ प्रभञ्जन २० ॥

प्राणोऽपानः समानश्चोदानव्यानौ च वायवः ॥ ६३ ॥ शरीरस्था इमे—

हृदयके वायुका नाम १—प्राण १॥ गुदाके वायुका नाम १--अपान १॥ नाभिके वायुका नाम १--समान १॥ कण्ठके वायुका नाम १--उदान १॥ सब शरीरमें फिरनेवाले वायुका नाम १--व्यान १ ॥ ६३ ॥--

—रंहस्तरसी तु रयः स्यदः । जवो--

वेगके नाम ५--रंहस् १ तरस् २ रय ३ स्यद ४ जव ५॥--

-ऽथ शीघ्रं त्वरितं लघु क्षिप्रमरं द्रुतम् ॥ ६४ ॥ सत्वरं चपलं तूर्णमविलम्बितमाशु च ।

शीघ्रताके नाम ११—शीघ्र १ त्वरित २ लघु ३ क्षिप्र ४ अर ५ द्रुत ६ ॥ ६४ ॥ सत्वर ७ चपल ८ तूर्ण ९ अविलंबित १० आशु ११ ।

सततानारताश्रान्तसंततविरतानिशम् ॥ ६५ ॥ नित्यानवरताजस्रमप्य—

निरन्तरके नाम ९--सतत १ अनारत २ अश्रान्त ३ सन्तत ४ अविरत ५ अनिश ६ ॥ ६५ ॥ नित्य ७ अनवरत ८ अजस्र ९ ॥--

--थातिशयो भरः । अतिवेलभृशात्यर्थातिमात्रोद्गाढनिर्भरम् । ॥ ६६ ॥ तीव्रैकान्तनितान्तानि गाढबाढदृढानि च ।

वारंवारके नाम १४—अतिशय १ भर २ अतिवेल ३ भृश ४ अत्यर्थ ५ अतिमात्र ६ उद्गाढ७ निर्भर ८॥६६॥ तीव्र ९ एकान्त १० नितान्त ११ गाढ १२ बाढ १३ दृढ १४ ॥

क्लीबे शीघ्राद्यसत्त्वे स्यात्त्रिष्वेषां सत्त्वगामि यत् ॥ ६७ ॥

अद्रव्यवाची शीघ्र आदि शब्द नपुंसक लिङ्गमें होते हैं और द्रव्यवाची तीनों लिंगोंमें होते हैं ॥ ६७ ॥

कुबेरस्त्र्यम्बकसखो यक्षराड् गुह्यकेश्वरः । मनुष्यधर्मा धनदो राजराजो धनाधिपः ॥ ६८ ॥ किन्नरेशो वैश्रवणः पौलस्त्यो नरवाहनः । यक्षैकपिङ्गैलविलश्रीदपुण्यजनेश्वराः ॥ ६९ ॥

कुबेरके नाम १७—कुबेर १ त्र्यम्बकसख २ यक्षराज् ३ गुह्यकेश्वर ४ मनुष्यधर्मन् ५ धनद ६ राजराज ७ धनाधिप ८ ॥ ६८ ॥ किन्नरेश ९ वैश्रवण १० पौलस्त्य ११ नरवाहन १२ यक्ष १३ एकपिंग १४ ऐलविल १५ श्रीद १६ पुण्यजनेश्वर १७ ॥ ६९ ॥

अस्योद्यानं चैत्ररथम्—

कुबेरके बगीचेका नाम १—चैत्ररथ॥-

—पुत्रस्तु नलकूबरः ।

कुबेरके पुत्रका नाम १—नलकूबर १।

कैलासस्थान—

कुबेरके स्थानका नाम १—कैलास १।

—मलका पू—

कुबेरकी पुरीका नाम १—अलका १।—

विमानं तु पुष्पकम् ॥ ७० ॥

कुबेरके विमानका नाम १—पुष्पक -१ ॥ ७० ॥

स्यात्किन्नरः किम्पुरुषस्तुरङ्गवदनो मयुः ।

किन्नरोंके नाम ४--किन्नर १ किम्पुरुष २ तुरंगवदन ३ मयु ४ ॥

निधिर्ना शेवधि--

खजानेके नाम २–निधि १ शेवधि २ ॥–

–भेंदाः पद्मशङ्खादयो निधेः ॥७१॥

खजानेके भेद- पद्म, शङ्ख इत्यादि ॥ ७१ ॥

इति स्वर्गवर्गः ॥ १ ॥

अथ व्योमवर्गः २.

द्योदिवौ द्वे स्त्रियामभ्रं व्योम पुष्करमम्बरम् । नभोऽन्तरिक्षं गगनमनन्तं सुरवर्त्म खम् ॥ १ ॥ वियद्विष्णुपदं वा तु पुंस्याकाशविहायसी । विहायसोऽपि नाकोऽपि द्युरपि स्यात्तदव्ययम् ॥ २ ॥

आकाशके नाम १९-द्यो १ दिव् २ अभ्र ३ व्योमन् ४ पुष्कर ५ अम्बर ६ नभस् ७ अन्तरिक्ष ८ गगन ९ अनंत १० सुरवर्त्मन् ११ ख १२ ॥१॥ वियत् १३ विष्णुपद १४ आकाश १५ विहायस् १६ विहायस १७ नाक १८ द्युस् १९ ॥ २ ॥

इति व्योमवर्गः ॥ २ ॥

अथ दिग्वर्गः ३.

दिशस्तु ककुभः काष्ठा आशाश्च हरितश्च ताः ।

दिशाओंके नाम ५–दिश् १ ककुभ् २ काष्ठा ३ आशा ४ हरित्५॥

प्राच्यवाचीप्रतीच्यस्ताः पूर्वदक्षिणपश्चिमाः ॥ १ ॥ उत्तरादिगुदीची स्याद्–

पूर्व दिशाका नाम १–प्राची १ । दक्षिण दिशाका नाम १–अवाची १ । पश्चिमदिशाका नाम१-प्रतीची १ ॥१॥ उत्तरदिशाका नाम १–उदीची । १ ।

–दिश्यं तु त्रिषु दिग्भवे ।

दिशोत्पन्नवस्तुका नाम १–दिश्य १ ।–

इन्द्रो वह्निः पितृपतिर्नैर्ऋतो वरुणो मरुत् ॥ २ ॥ कुवेर ईशः पतयः पूर्वादीनां दिशां क्रमात् ।

पूर्व दिशाके स्वामीका नाम–इन्द्र १ । अग्निकोणके स्वामीका नाम–वह्नि १ । दक्षिणदिशाके स्वामीका नाम–यमराज १ । नैर्ऋत्य कोणके स्वामीका

---

१ "पद्मोऽस्त्रियां महापद्मः शङ्खो मकरकच्छपौ । मुकुन्दकुंदनीलाश्च खर्वश्च निधयो नव ॥" इति शब्दार्णवः। भाषाः–पद्म १ महापद्म २ शंख ३ मकर ४ कच्छप ५ मुकुन्द ६ कुन्द ७ नील ८ खर्व ९ यह नौ खजानेके भेद हैं ।

नाम—नैर्ऋत १ । पश्चिमदिशाके स्वामीका नाम—वरुण १ । वायु-कोणके स्वामीका नाम-पवन १ ॥ २ ॥ उत्तर दिशाके स्वामीका नाम—कुबेर १ । ईशान कोणके स्वामीका नाम-ईश १।

ऐरावतः पुण्डरीको वामनः कुमुदोऽञ्जनः ॥ ३ ॥ पुष्पदन्तः सार्वभौमः सुप्रतीकश्च दिग्गजाः ।

पूर्व दिशाके हस्तीका नाम—ऐरावत १ । अग्निकोणके हस्तीका नाम—पुण्डरीक २ । दक्षिण दिशाके हस्तीका नाम—वामन ३ । नैर्ऋत कोणके हस्तीका नाम—कुमुद ४ । पश्चिम दिशाके हस्तीका नाम—अञ्जन ५ । ॥ ३ ॥ वायु कोणके हस्तीका नाम—पुष्पदन्त ६ । उत्तरदिशाके हस्तीका नाम—सार्वभौम ७ । ईशान कोणके हस्तीका नाम—सुप्रतीक ८ ।

करिण्योऽभ्रमुकपिलापिङ्गलानुपमाः क्रमात् ॥ ४ ॥ ताम्रकर्णी शुभ्रदन्ती चाङ्गना चाञ्जनावती ।

ऊपर लिखे हुए ऐरावत आदि आठ हस्तियोंकी हथिनियोंके क्रमसे नाम—अभ्रमु १ कपिला २ पिंगला ३ अनुपमा ४ ॥ ४ ॥ ताम्रकर्णी ५ शुभ्रदन्ती ६ अंगना ७ अञ्जनावती ८ ।

क्लीबाऽव्ययं त्वपदिशं दिशोर्मध्ये विदिक् स्त्रियाम् ॥ ५ ॥

अग्नि आदि कोणके नाम २—अपदिश १ विदिश् २ ॥ ५ ॥

अभ्यन्तरं त्वन्तरालं—

बीचभागके नाम २—अभ्यंतर १ अन्तराल २ ।—

—चक्रवालं तु मण्डलम् ।

गोलाकार समूहके नाम २—चक्रवाल १ मण्डल २ ।

अभ्रं मेघो वारिवाहः स्तनयित्नुर्बलाहकः ॥ ६ ॥ धाराधरो जलधरस्तडित्वान्वारिदोऽम्बुभृत् । घनजीमूतमुदिरजलमुग्धूमयोनयः ॥७॥

बादलके नाम १५—अभ्र १ मेघ २ वारिवाह ३ स्तनयित्नु ४ बलाहक ५ ॥ ६ ॥ धाराधर ६ जलधर ७ तडित्वत् ८ वारिद ९ अम्बुभृत् १० घन ११ जीमूत १२ मुदिर १३ जलमुच् १४ धूमयोनि १५ ॥ ७ ॥

कादम्बिनी मेघमाला—

मेघपंक्तिके नाम २—कादम्बिनी १ मेघमाला २ ॥—

त्रिषु मेघभवेऽभ्रियम् ।

मेघोत्पन्न वस्तुका नाम १-अभ्रिय १

स्तनितं गर्जितं मेघनिर्घोषो रसितादि च ॥ ८ ॥

गर्जनेके नाम ४—स्तानित १ गर्जित २ मेघनिर्घोष ३ रसित ४ ॥ ८ ॥

शम्पाशतह्रदाह्रादिन्यैरावत्यः क्षणप्रभा । तडित्सौदामनी विद्युच्चञ्चला चपला अपि ॥ ९ ॥

बिजलीके नाम १०—शम्पा १ शतह्रदा २ ह्रादिनी ३ ऐरावती ४ क्षणप्रभा ५ तडित् ६ सौदामनी ७ विद्युत् ८ चञ्चला ९ चपला १० ॥९॥

स्फूर्जथुर्वज्रनिर्घोषो—

वज्रके शब्दोंके नाम २—स्फूर्जथु १ वज्रनिर्घोष २ ।—

—मेघज्योतिरिरंमदः ।

वज्रके अग्निके नाम २—मेघज्योतिष् १ । इरम्मद २ ।

—इन्द्रायुधं शक्रधनुस्तदेव ऋजु रोहितम् ॥ १० ॥

इन्द्रधनुषके नाम ३--इन्द्रायुध १ शक्रधनुष् २ रोहित ३ । सरल इंद्रधनुषका नाम रोहित है ॥ १० ॥

वृष्टिर्वर्षं—

वर्षाके नाम २—वृष्टि १ वर्ष २ ।—

--तद्विघातेऽवग्राहावग्रहौ समौ ।

झूराके नाम २—अवग्राह १ अवग्रह २॥

धारासंपात आसारः—

निरन्तर मेघधाराके नाम २--धारासम्पात १ आसार २ ।--

--शीकरोऽम्बुकणाः स्मृताः ११॥

वायुसे उड़ाये हुए जलकणों (फुहारों) का नाम १-शीकर १ ॥ ११ ॥

वर्षोपलस्तु करका—

आकाशसे गिरे हुए पत्थरोंके नाम २--वर्षोपल १ करका २।—

—मेघच्छन्नेऽह्नि दुर्दिनम् ।

मेघसे आच्छादित हुआ दिनरात्रिका नाम १—दुर्दिन १ ॥

अन्तर्धा व्यवधा पुंसि त्वन्तर्धिरपवारणम् ॥ १२ ॥ अपिधानतिरोधानपिधानाच्छादनानि च ।

झपनाके नाम ८--अन्तर्धा १ व्यवधा २ अन्तर्धि ३ अपवारण ४ ॥ ॥ १२ ॥ अपिधान ५ तिरोधान ६ पिधान ७ आच्छादन ८ ॥

हिमांशुश्चन्द्रमाश्चन्द्र इन्दुः कुमुद्बान्धवः ॥ १३ ॥ विधुः सुधांशुः शुभ्रांशुरोषधीशो निशापतिः । अब्जो जैवातृकः सोमो ग्लौर्मृगाङ्कः कलानिधिः ॥ १४ ॥ द्विजराजः शशधरो नक्षत्रेशः क्षपाकरः ।

चन्द्रमाके नाम २०--हिमांशु १ चन्द्रमस् २ चन्द्र ३ इन्दु ४ कुमुद-बान्धव ५ ॥ १३ ॥ विधु ६ सुधांशु ७ शुभ्रांशु ८ ओषधीश ९ निशापति १० अब्ज ११ जैवातृक १२ सोम १३ ग्लौ १४ मृगाङ्क १५ कलानिधि १६ ॥ १४ ॥ द्विजराज १७ शशधर १८ नक्षत्रेश १९ क्षपाकर २० ॥

कला तु षोडशो भागो--

चन्द्रमाके १/१६ वें भागका नाम १-कला १ ॥--

--बिम्बोऽस्त्री मण्डलं त्रिषु॥१५॥

चन्द्रमण्डलके नाम २--बिम्ब १ मण्डल २ ॥ १५ ॥

भित्तं शकलखण्डे वा पुंस्यर्धो-

खण्डके नाम ४--भित्त १ शकल २ खण्ड ३ अर्द्ध ४ (पुँल्लिंग) ॥--

--ऽर्धं समेंऽशके।

समभागका नाम १--अर्द्ध १ (नपुंसकलिंग) ॥

चन्द्रिका कौमुदी ज्योत्स्ना--

चांदनीके नाम ३--चन्द्रिका १ कौमुदी २ ज्योत्स्ना ३॥--

--प्रसादस्तु प्रसन्नता ॥ १६ ॥

निर्मलताके नाम २--प्रसाद १ प्रसन्नता २ ॥ १६ ॥

कलंकाङ्कौ लाञ्छनं च चिह्नं लक्ष्म च लक्षणम् ।

चिह्नके नाम ६--कलंक १ अंक २ लाञ्छन ३ चिह्न ४ लक्ष्मन् ५ लक्षण ६॥

सुषमा परमा शोभा--

अति शोभाका नाम १--सुषमा १--

-शोभा कान्तिर्द्युतिश्छविः॥१७॥

शोभाके नाम ४--शोभा १--कांति २ द्युति ३ छवि ४ ॥ १७ ॥

अवश्यायस्तु नीहारस्तुषारस्तुहिनं हिमम् । प्रालेयं मिहिका चा--

पालेके नाम ७--अवश्याय १ नीहार २ तुषार ३ तुहिन ४ हिम ५ प्रालेय ६ मिहिका ७ ॥--

--थ हिमानी हिमसंहतिः ॥१८॥

पालेके समूहके नाम २--हिमानी १ हिमसंहति २ ॥ १८ ॥

शीतं गुणे--

शीतलताका नाम १--शीत १ ॥--

-तद्वदर्थाः सुषीमः शिशिरो जडः। तुषारः शीतलः शीतो हिमः सप्तान्यलिंगकाः ॥ १९ ॥

शीतलवस्तुके नाम ७–सुषीम १ शिशिर २ जड ३ तुषार ४ शीतल ५ शीत ६ हिम ७ ॥ १९ ॥

ध्रुव औत्तानपादिः स्या-

ध्रुवजीके नाम २–ध्रुव १ औत्तानपादि २ ॥

–दगस्त्यः कुम्भसम्भवः । मैत्रावरुणि–

अगस्त्यके नाम ३–अगस्त्य १ कुम्भसम्भव २ मैत्रावरुणि ३ ॥–

रस्यैव लोपामुद्रा सधर्मिणी २०

अगस्त्यकी स्त्रीका नाम १–लोपामुद्रा १ ॥ २० ॥

नक्षत्रमृक्षं भं तारा तारकाप्युडु वा स्त्रियाम् ।

नक्षत्रोंके नाम ६–नक्षत्र १ ऋक्ष २ भ ३ तारा ४ तारका ५ उडु ६॥

दाक्षायण्योऽश्विनीत्यादितारा–

अश्विनी आदि २८ नक्षत्रोंका नाम १–दाक्षायणी १ ।–

--अश्वयुगश्विनी ॥ २१ ॥

अश्विनी नक्षत्रके नाम २–अश्वयुजू १ अश्विनी २ ॥ २१ ॥

राधा विशाखा–

विशाखानक्षत्रके नाम २–राधा १ विशाखा २ ॥–

–पुष्ये तु सिध्यतिष्यौ–

पुष्यनक्षत्रके नाम ३–पुष्य १ सिध्य २ तिष्य ३ ॥–

–श्रविष्ठया । समा धनिष्ठा–

धनिष्ठानक्षत्रके नाम २–श्रविष्ठा १ धनिष्ठा २ ॥–

–स्युः प्रोष्ठपदा भाद्रपदाः स्त्रियः ॥ २२ ॥

पूर्वभाद्रपदा और उत्तरभाद्रपदा नक्षत्रोंके नाम २–प्रोष्ठपदा १ भाद्रपदा २ ॥ २२ ॥

मृगशीर्षं मृगशिरस्तस्मिन्नेवाग्रहायणी ।

मृगशिरनक्षत्रके नाम ३–मृगशीर्ष १ मृगशिर २ आग्रहायणी ३ ॥

इल्वलास्तच्छिरोदेशे तारका निवसन्ति याः ॥ २३ ॥

मृगशिरके मस्तकपर रहनेवाले नक्षत्रोंका नाम १–इल्वल १ ॥ २३ ॥

बृहस्पतिः पुराचार्यो गीष्पतिर्धिषणो गुरुः । जीव आङ्गिरसो वाचस्पतिश्चित्रशिखण्डिजः ॥२४॥

बृहस्पतिके नाम ९—बृहस्पति १ सुराचार्य २ गीष्पति ३ धिषण ४ गुरु ५ जीव ६ आंगिरस ७ वाचस्पति ८ चित्रशिखण्डिज ९ ॥ २४ ॥

शुक्रो दैत्यगुरुः काव्य उशना भार्गवः कविः ।

शुक्रके नाम ६—शुक्र १ दैत्यगुरु २ काव्य ३ उशनस् ४ भार्गव ५ कवि ६ ॥

अंगारकः कुजो भौमो लोहितांगो महीसुतः ॥ २५ ॥

मंगलके नाम ५—अङ्गारक १ कुज २ भौम ३ लोहितांग ४ महीसुत ५ ॥ २५ ॥

रौहिणेयो बुधः सौम्यः—

बुधके नाम ३—रौहिणेय १ बुध २ सौम्य ३ ॥—

—समौ सौरिशनैश्चरौ ।

शनिके नाम २—सौरि १ शनैश्चर २ ॥

तमस्तु राहुः स्वर्भानुः सैंहिकेयो विधुन्तुदः ॥ २६ ॥

राहुके नाम ५—तमस् १ राहु २ स्वर्भानु ३ सैंहिकेय ४ विधुन्तुद ५ ॥ २६ ॥

सप्तर्षयो मरीच्यत्रिमुखाश्चित्रशिखण्डिनः ।[1]

मरीचि अत्रि आदि सप्तर्षियोंके नाम—चित्रशिखण्डिन् ॥ १ ॥

राशीनामुदयो लग्नं—

राशियोंके उदयका नाम १—लग्न १—

—ते तु मेषवृषादयः ॥ २७ ॥

राशियोंके नाम—मेष १ वृष २ आदि ॥ २७ ॥

सूरसूर्यार्यमादित्यद्वादशात्मदिवाकराः । भास्कराहस्करब्रध्नप्रभाकरविभाकराः ॥ २८ ॥ भास्वद्विवस्वत्सप्ताश्वहरिदश्वोष्णरश्मयः । विकर्तनार्कमार्त्तण्डमिहिरारुणपूषणः ॥२९॥ द्युमणिस्तरणिर्मित्रश्चित्रभानुर्विरोचनः । विभावसुर्ग्रहपतिस्त्विषांपतिरहर्पतिः ॥ ३० ॥ भानुर्हंसः सहस्रांशुस्तपनः सविता रविः ।

सूर्यके नाम ३७—सूर १ सूर्य २ अर्य्यमन् ३ आदित्य ४ द्वादशात्मन् ५ दिवाकर ६ भास्कर ७ अहस्कर ८ ब्रध्न ९ प्रभाकर १० विभा—

---

१ " मरीचिरंगिरा अत्रिः पुलस्त्यः पुलहः क्रतुः । वसिष्ठश्चेति सप्तैते ज्ञेयाश्चित्रशिखंडिनः " ॥ १ ॥ भाषा— मरीचि १ अंगिरस २ अत्रि ३ पुलस्त्य ४ पुलह ५ क्रतु ६ वसिष्ठ ७ यह सप्तर्षि चित्रशिखण्डि कहलाते हैं ।

कर ११ ॥२८॥ भास्वत् १२ विवस्वत् १३ सप्ताश्व १४ हरिदश्व १५ उष्ण-रश्मि १६ विकर्त्तन १७ अर्क १८ मार्तण्ड १९ मिहिर २० अरुण २१ पूषन् २२ ॥ २९ ॥ द्युमणि २३ तरणि २४ मित्र २५ चित्रभानु २६ विरोचन २७ विभावसु २८ ग्रहपति २९ त्विषाम्पति ३० अहर्पति ३१ ॥ ॥ ३० ॥ भानु ३२ हंस ३३ सहस्रांशु ३४ तपन ३५ सवितृ ३६ रवि ३७ ॥

माठरः पिंगलो दण्डश्चडांशोः पारिपार्श्विकाः ॥ ३१ ॥

सूर्यपार्श्ववर्ती तीनोंके एक एक नाम—माठर १ पिंगल २ दण्ड ३ ॥ ३१ ॥

सूरसूतोऽरुणोऽनूरुः काश्यपि-र्गरुडाग्रजः ।

सूर्यके सारथिके नाम ५—सूरसूत १ अरुण २ अनूरु ३ काश्यपि ४ गरु-डाग्रज ५ ॥

परिवेषस्तु परिधिरुपसूर्यकम-ण्डले ॥ ३२ ॥

सूर्यके मण्डलके अर्थात् जो कभी २ उनके चारों ओर घेरासा बन जाता है उसके नाम ४—परिवेष १ परिधि २ उपसूर्यक ३ मण्डल ४ ॥ ३२ ॥

किरणोस्रमयूखांशुगभस्तिघृणि-रश्मयः।भानुः करो मरीचिः स्त्रीपुं-सयोर्दीधितिः स्त्रियाम् ॥ ३३ ॥

सूर्यके किरणके नाम ११—किरण १ उस्र २ मयूख ३ अंशु ४ गभस्ति ५ घृणि ६ रश्मि ७ भानु ८ कर ९ मरीचि १० दीधिति ११ ॥ ३३ ॥

स्युः प्रभारुग्रुचिस्त्विड्भाभा-श्छविद्युतिदीप्तयः । रोचिःशोचिरुभे क्लीबे—

दीप्तिके नाम ११—प्रभा १ रुच् २ रुचि ३ त्विष् ४ भा ५ भास् ६ छवि ७ द्युति ८ दीप्ति ९ रोचिष् १० शोचिष् ११ ॥—

—प्रकाशो द्योत आतपः ॥३४॥

धूपके नाम ३—प्रकाश १ द्योत २ आतप ३ ॥ ३४ ॥

कोष्णं कवोष्णं मन्दोष्णं कदुष्णं त्रिषु तद्वति ।

थोड़े गरमके नाम ४—कोष्ण १ कवोष्ण २ मन्दोष्ण ३ कदुष्ण ४ ॥

तिग्मं तीक्ष्णं खरं तद्व—

बहुत गरमके नाम ३—तिग्म १ तीक्ष्ण २ खर ३ ॥—

—न्मृगतृष्णा मरीचिका ॥३५॥

मृगतृष्णाके नाम २—मृगतृष्णा १ मरीचिका २ ॥ ३५ ॥

इति दिग्वर्गः ॥ ३ ॥

अथ कालवर्गः ४.

कालो दिष्टोऽप्यनेहापि समयो-

समयके नाम ४—काल १ दिष्ट २ अनेहस् ३ समय ४ ॥—

—ऽप्यथ पक्षतिः । प्रतिपद्

द्वे इमे स्त्रीत्वे—

प्रतिपदाके नाम २—पक्षति १ प्रतिपत् २ ॥—

तदाद्यास्तिथयो द्वयोः ॥ १ ॥

प्रतिपदादिका नाम १—तिथि १॥ १॥

घस्रो दिनाहनी वा तु क्लीबे दिवसवासरौ ।

दिनके नाम ५—घस्र १ दिन २ अहन् ३ दिवस ४ वासर ५—

प्रत्यूषोऽहर्मुखं कल्यमुषःप्रत्युषसी अपि ॥ २ ॥ प्रभातं च—

प्रातःकालके नाम ६—प्रत्यूष १ अहर्मुख २ कल्य ३ उषस् ४ प्रत्युषस् ५ ॥ २ ॥ प्रभात ६ ॥—

—दिनान्ते तु सायंसंध्या पितृप्रसूः ।

सायंकालके नाम ४—दिनान्त १ सायम् २ सन्ध्या ३ पितृप्रसू ४ ॥

प्राह्णापराह्णमध्याह्नास्त्रिसंध्य—

प्रातःकालका नाम १ प्राह्ण १ ॥ मध्याह्नकालका नाम १—मध्याह्न १ ॥ मध्याह्नोत्तर कालका नाम १—अपराह्ण १—इन तीनों कालोंका इकट्ठा नाम—त्रिसंध्य १॥—

—मथ शर्वरी ॥ ३ ॥

निशा निशीथिनी रात्रिस्त्रियामा क्षणदा क्षपा । विभावरीतमस्विन्यौ रजनी यामिनी तमी ॥ ४ ॥

रात्रिके नाम १२—शर्वरी १—॥ ३ ॥ निशा २ निशीथिनी ३ रात्रि ४ त्रियामा ५ क्षणदा ६ क्षपा ७ विभावरी ८ तमस्विनी ९ रजनी १० यामिनी ११ तमी १२ ॥ ४ ॥

तमिस्रा तामसी रात्रि—

अंधियारी रात्रिका नाम १—तमिस्रा १॥

—र्ज्यौत्स्नी चन्द्रिकयान्विता ।

उजियाली रात्रिका नाम नाम १—ज्यौत्स्नी १॥

आगामिवर्तमानाहर्युक्तायां निशि पक्षिणी ॥ ५ ॥

वर्तमान और आगन्तुक दिनोंके मध्यकी रात्रिका नाम १—पक्षिणी १॥५॥

गणरात्रं निशा बहव्यः—

बहुत रात्रियोंका नाम १—गणरात्र १ ॥

—प्रदोषो रजनीमुखम् ।

रात्रिके प्रथमभागके नाम २—प्रदोष १ रजनीमुख २ ॥

अर्धरात्रनिशीथौ द्वौ—

आधीरात्रिके नाम २—अर्धरात्र १ निशीथ २ ॥

—द्वौ यामप्रहरौ समौ ॥ ६ ॥

—प्रहरके नाम २—याम १ प्रहर २ ॥ ६ ॥

स पर्वसंधिः प्रतिपत्पञ्चदश्योर्यदन्तरम् ।

प्रतिपदा १ और पंचदशी १५।३० के मध्यके कालका नाम १-पर्वसन्धि १ ॥

पक्षान्तौ पञ्चदश्यौ द्वे—

अमावास्या और पूर्णिमाका नाम १—पक्षान्त १ ॥

—पौर्णमासी तु पूर्णिमा ॥ ७ ॥

पूर्णिमाके नाम २—पौर्णमासी १ पूर्णिमा २ ॥ ७ ॥

कलाहीने सानुमतिः—

जिस पूर्णमासीमें प्रतिपदाके योगसे चन्द्रमाकी कला हीन हो उसका नाम १—अनुमति १ ॥

—पूर्णे राका निशाकरे ।

जिसमें पूर्ण चन्द्रमा हो उस पूर्णिमाका नाम १—राका १ ॥

अमावास्या त्वमावस्या दर्शः सूर्येन्दुसंगमः ॥ ८ ॥

अमावास्याके नाम ४—अमावास्या १ अमावस्या २ दर्श ३ सूर्येन्दु-संगम ४ ॥ ८ ॥

सा दृष्टेन्दुः सिनीवाली—

जिसमें चतुर्दशीके योगसे चन्द्रमाका दर्शन हो उस अमावास्याका नाम १—सिनीवाली १ ॥

—सा नष्टेन्दुकला कुहूः ।

जिसमें बिलकुल चन्द्रदर्शन न हो उस अमावस्याका नाम १—कुहू १ ॥

उपरागो ग्रहो राहुग्रस्ते त्विन्दौ च पूष्णि च ॥ ९ ॥ सोपप्लवोपरक्तौ द्वौ—

चन्द्रग्रहण और सूर्यग्रहणके नाम ४—उपराग १ ग्रह २ ॥ ९ ॥ सोपप्लव ३ उपरक्त ४ ।

—वग्न्युत्पात उपाहितः ।

धूम्रकेतुके नाम २—अग्न्युत्पात १ उपाहित २ ॥

एकयोक्त्या पुष्पवन्तौ दिवाकरनिशाकरौ ॥ १० ॥

सूर्य और चन्द्र दोनोंका इकट्ठा नाम १—पुष्पवन्त १ ॥ १० ॥

अष्टादश निमेषास्तु काष्ठा—

पलक मारनेका नाम १—निमेष १ ॥ अठारह निमेषोंका नाम १—काष्ठा १ ॥

—त्रिंशत्तु ताः कला ।

तीस काष्ठाओंका नाम १—कला १ ॥

तास्तु त्रिंशत्क्षण—

तीस कलाओंका नाम १—क्षण १ ॥

—स्ते तु मुहूर्त्तो द्वादशास्त्रियाम् ११

बारह क्षणोंका नाम १—मुहूर्त्त १ ॥११॥

ते तु त्रिंशदहोरात्रः—

तीस मुहूर्तोंका नाम १—अहोरात्र १ ॥

—पक्षस्ते दशपञ्च च ।

पंद्रह दिनरातका नाम १—पक्ष १ ॥

पक्षौ पूर्वापरौ शुक्लकृष्णौ—

पक्ष दो हैं २—शुक्ल १ कृष्ण २ ॥

—मासस्तु तावुभौ ॥ १२ ॥

दो पक्षोंका नाम १—मास १॥ १२ ॥

द्वौ द्वौ मार्गादिमासौ स्यादृतु-

मार्गशीर्षादि दो दो मासोंका नाम १—ऋतु १ ॥

—स्तैरयनं त्रिभिः ।

तीन ऋतुओंका नाम १—अयन १ ॥

अयने द्वे गतिरुदग्दक्षिणार्कस्य-

दो अयनोंके २ भेद—उत्तरायण १ । दक्षिणायन २ ॥

—वत्सरः ॥ १३ ॥

दो अयनोंका नाम १—वत्सर १॥१३॥

समरात्रिन्दिवे काले विषुवद्वि-षुवं च तत् ।

जिसमें दिनरात समान होते हैं उस संक्रांति (तुला और मेष) के नाम २—विषुवत् १ विषुव २ ॥

मार्गशीर्षे सहा मार्ग आग्रहा-यणिकश्च सः ॥ १४ ॥

अगहन महीनेके नाम ४—मार्गशीर्ष १ सहस् २ मार्ग ३ आग्रहायणिक ४ ॥ १४ ॥

पौषे तैषसहस्यौ द्वौ—

पूषमासके नाम ३—पौष १ तैष २ सहस्य ३ ।

—तपा माघे—

माघमासके नाम २—तपस् १ माघ २ ॥

—ऽथ फाल्गुने । स्यात्तपस्यः फाल्गुनिकः—

फाल्गुनमासके नाम ३—फाल्गुन १ तपस्य २ फाल्गुनिक ३ ॥

स्याच्चैत्रे चैत्रिको मधुः ॥ १५॥

चैत्रमासके नाम ३—चैत्र १ चैत्रिक २ मधु ३ ॥ १५ ॥

वैशाखे माधवो राधो—

वैशाखमासके नाम ३—वैशाख १ माधव २ राध ३ ॥

—ज्येष्ठे शुक्र—

ज्येष्ठके नाम २—ज्येष्ठ १ शुक्र २ ॥

—श्शुचिस्त्वयम् । आषाढे—

आषाढमासके नाम २—शुचि १ आषाढ २ ॥

—श्रावणे तु स्यान्नभाः श्रावणिकश्च सः ॥ १६ ॥

श्रावणमासके नाम ३—श्रावण १ नभस् २ श्रावणिक ३ ॥ १६ ॥

स्युर्नभस्यः प्रौष्ठपदभाद्रभाद्रपदाः समाः ।

भादों मासके नाम ४—नभस्य १ प्रौष्ठपद २ भाद्र ३ भाद्रपद ४ ॥

स्यादाश्विन इषोऽप्याश्वयुजोऽपि-

क्वारमासके नाम ३—आश्विन १ इष २ आश्वयुज ३ ॥

—स्यात्तु कार्त्तिके ॥ १७ ॥ बाहुलोर्जौ कार्त्तिकिको-

कार्तिकमासके नाम ४—कार्तिक १ ॥ १७ ॥ बाहुल २ ऊर्ज ३ कार्तिकिक ४ ॥

—हेमन्तः—

अगहन पूस माससे सिद्ध हुई ऋतुका नाम १—हेमन्त १ ॥

—शिशिरोऽस्त्रियाम् ।

माघ फाल्गुनसे सिद्ध हुई ऋतुका नाम १—शिशिर १ ॥

वसन्ते पुष्पसमयः सुरभि—

चैत्र वैशाखसे सिद्ध ऋतुके नाम ३—वसन्त १ पुष्पसमय २ सुरभि ३ ॥

—ग्रीष्म ऊष्मकः ॥ १८ ॥ निदाघ उष्णोपगम उष्ण ऊष्मागमस्तपः ।

ज्येष्ठआषाढके ऋतुके नाम ७—ग्रीष्म १ ऊष्मक २ ॥१८॥ निदाघ३ उष्णोपगम४उष्ण५ऊष्मागम६तप ७ ॥

स्त्रियां प्रावृट् स्त्रियां भूम्नि वर्षा-

सावन भादोंके ऋतुके नाम २—प्रावट् १ वर्षा २ ॥

—अथ शरत् स्त्रियाम् ॥ १९ ॥

क्वार कार्तिकके ऋतुका नाम १—शरद् १ ॥ १९ ॥

षडमी ऋतवः पुंसि मार्गादीनां युगैः क्रमात् ।

मार्गशीर्ष आदि दो दो महीनोंके ये छः ऋतु होते हैं ॥

संवत्सरो वत्सरोऽब्दो हायनोऽस्त्री शरत्समाः ॥ २० ॥

वर्षके नाम ६—संवत्सर १ वत्सर २ अब्द ३ हायन ४ शरद् ५ समा ६ ॥ २० ॥

मासेन स्यादहोरात्रः पैत्रो—

मनुष्योंके एक महीनेका पितरोंका (दिनरात्रि) दिवस होता है ॥

—वर्षेण दैवतः ।

और एक वर्षका देवताओंका (दिनरात्रि) दिवस होता है ॥

दैवे युगसहस्रे द्वे ब्राह्मः-

देवोंके दो हजार युगका ब्रह्माका (दिनरात्रि) दिवस होता है ॥

-कल्पौ तु तौ नृणाम् ॥ २१ ॥

उन दो युगसहस्रोंको मनुष्योंका कल्प कहते हैं, ब्रह्माका दिन मनुष्योंका स्थितिकाल और ब्रह्माकी रात्रि मनुष्योंका प्रलयकाल होता है ॥ २१ ॥

मन्वन्तरं तु दिव्यानां युगानामेकसप्ततिः ।

इकहत्तर दिव्यवर्षका नाम १-मन्वन्तर १ ॥

संवर्तः प्रलयः कल्पः क्षयः कल्पान्त इत्यपि ॥ २२ ॥

प्रलयके नाम ५-संवर्त १ प्रलय २ कल्प ३ क्षय ४ कल्पान्त ५॥२२॥

अस्त्री पंकं पुमान्पाप्मा पापं किल्बिषकल्मषम् । कलुषं वृजिनैनोऽघमंहो दुरितदुष्कृतम् ॥ २३॥

पापके नाम १२-पंक १ पाप्मन् २ पाप ३ किल्बिष ४ कल्मष ५कलुष ६ वृजिन ७ एनस् ८ अघ ९ अंहस् १० दुरित ११ दुष्कृत १२ ॥ २३ ॥

स्याद्धर्ममस्त्रियां पुण्यश्रेयसी सुकृतं वृषः ।

धर्मके नाम ५-धर्म १ पुण्य २ श्रेयस् ३ सुकृत ४ वृष ५ ॥

मुत्प्रीतिः प्रमदो हर्षप्रमोदामोदसंमदाः ॥ २४ ॥ स्यादानन्दथुरानन्दः शर्मशातसुखानि च ।

हर्षके नाम १२-मुद् १ प्रीति २ प्रमद ३ हर्ष ४ प्रमोद ५ आमोद ६ सम्मद ७ ॥ २४ ॥ आनन्दथु ८ आनन्द ९ शर्मन् १० शात ११ सुख १२ ॥

श्वःश्रेयसं शिवं भद्रं कल्याणं मंगलं शुभम् ॥ २५ ॥ भावुकं भविकं भव्यं कुशलं क्षेममस्त्रियाम् । शस्तं चा-

कल्याणके नाम १२-श्वःश्रेयस् १ शिव २ भद्र ३ कल्याण ४ मंगल ५ शुभ ६ ॥ २५ ॥ भावुक ७ भविक ८ भव्य ९ कुशल १० क्षेम ११ शस्त १२।

-ऽथ त्रिपु द्रव्ये पापं पुण्यं सुखादि च ॥ २६ ॥

पाप और पुण्यशब्द तथा सुखशब्द से लेकर शस्तशब्द पर्यंत जो शब्द हैं वे यदि द्रव्यवाचक हों तो तीनों लिंगोंमें होते हैं ॥ २६ ॥

मतल्लिका मचर्चिका प्रकाण्डमुद्धतल्लजौ । प्रशस्तवाचकान्यमू-

अच्छेके नाम ५–मतल्लिका १ मचर्चिका २ प्रकाण्ड ३ उद्ध ४ तल्लज ५ ॥

–न्ययः शुभावहो विधिः ॥२७॥

शुभकारक विधिका नाम–अय १ ॥ २७ ॥

दैवं दिष्टं भागधेयं भाग्यं स्त्री नियतिर्विधिः ।

भाग्यके नाम ६–दैव१दिष्ट २भागधेय ३ भाग्य ४ नियति ५ विधि ६॥

हेतुर्ना कारणं बीजम्–

कारणके नाम ३–हेतु १ कारण २ बीज ३ ॥

–निदानं त्वादिकारणम् ॥२८॥

आदिकारणका नाम१–निदान१॥२८॥

क्षेत्रज्ञ आत्मा पुरुषः–

चैतन्यके नाम ३–क्षेत्रज्ञ १ आत्मन् २ पुरुष ३ ॥

–प्रधानं प्रकृतिः स्त्रियाम् ।

प्रकृतिके नाम २–प्रधान १ प्रकृति २ ॥

विशेषः कालिकोऽवस्था–

उमरका नाम १–अवस्था १ ।

–गुणाः सत्त्वं रजस्तमः ॥२९॥

गुणोंके नाम ३–सत्त्व १ रजस् २ तमस् ३ ॥ २९ ॥

जनुर्जननजन्मानि जनिरुत्पत्तिरुद्भवः ॥

जन्मके नाम ६–जनुस् १ जनन २जन्मन्३जनि ४उत्पत्ति ५उद्भव ६ ॥

प्राणी तु चेतनो जन्मी जन्तुजन्युशरीरिणः ॥ ३० ॥

प्राणीके नाम ६–प्राणिन् १ चेतन २ जन्मिन् ३ जन्तु ४ जन्यु ५ शरीरिन् ६ ॥ ३० ॥

जातिर्जातं च सामान्यं–

जातिमात्रके नाम ३=जाति १ जात २ सामान्य ३ ॥

–व्यक्तिस्तु पृथगात्मता ।

व्यक्तिवाचकके नाम २–व्यक्ति १ पृथगात्मता २ ॥

चित्तं तु चेतो हृदयं स्वान्तं हृन्मानसं मनः ॥ ३१ ॥

मनके नाम ७–चित्त १ चेतस् २ हृदय ३ स्वान्त ४ हृद् ५ मानस ६ मनस् ७ ॥ ३१ ॥

इति कालवर्गः ॥ ४ ॥

अथ धीवर्गः ५.

बुद्धिर्मनीषा धिषणा धीः प्रज्ञा शेमुषी मतिः । प्रेक्षोपलब्धिश्चित्संवित्प्रतिपज्ज्ञप्तिचेतनाः ॥ १ ॥

बुद्धिके नाम १४–बुद्धि १ मनीषा २ धिषणा ३ धी ४ प्रज्ञा ५

शेमुषी ६ मति ७ प्रेक्षा ८ उपलब्धि ९ चित् १० संविद् ११ प्रतिपद् १२ ज्ञप्ति १३ चेतना १४ ॥ १ ॥

धीर्धारणावती मेधा–

कही हुई वार्त्ताको धारण रखनेवाली बुद्धिका नाम १–मेधा १ ॥

–संकल्पः कर्म्म मानसम्।

मनकी कामनाका नाम १–संकल्प १ ॥

चित्ताभोगो मनस्कार–

किसी वस्तुमें चित्तके तत्पर हो जाने- के नाम २–चित्ताभोग १ मनस्कार २॥

–श्चर्चा संख्या विचारणा ॥२॥

विचारके नाम ३–चर्चा १ संख्या २ विचारणा ३ ॥ २ ॥

अध्याहारस्तर्क ऊहो–

अपूर्व विचारके नाम ३–अध्या- हार १ तर्क २ ऊह ३ ॥

–विचिकित्सा तु संशयः। संदेहद्वापरौ चा–

सन्देहके नाम ४–विचिकित्सा १ संशय २ संदेह ३ द्वापर ४ ॥

–थ समौ निर्णयनिश्चयौ॥ ३ ॥

निश्चयके नाम २–निर्णय १ निश्चय २ ॥ ३ ॥

मिथ्यादृष्टिर्नास्तिकता–

परलोकको मिथ्या जाननेके नाम २– मिथ्यादृष्टि १ नास्तिकता २ ॥

व्यापादो द्रोहचिन्तनम्।

परद्रोहके नाम २–व्यापाद १ द्रोहचिन्तन २ ॥

समौ सिद्धान्तराद्धान्तौ–

निश्चय की हुई बातके नाम २– सिद्धान्त १ राद्धान्त २ ॥

–भ्रान्तिर्मिथ्यामतिर्भ्रमः ॥४॥

भ्रमके नाम ३–भ्रान्ति १ मिथ्या- मति २ भ्रम ३ ॥ ४ ॥

संविदागूः प्रतिज्ञानं नियमा- श्रवसंश्रवाः ॥ अङ्गीकाराभ्युपग- मप्रतिश्रवसमाधयः ॥ ५ ॥

प्रतिज्ञाके नाम १०–संविद् १ आगू २ प्रतिज्ञान ३ नियम ४ आश्रव ५ संश्रव ६ अङ्गीकार ७ अभ्युपगम ८ प्रतिश्रव ९ समाधि १० ॥ ५ ॥

मोक्षे धीर्ज्ञान–

मोक्षमें बुद्धि लगानेका नाम १– ज्ञान १ ॥

–मन्यत्र विज्ञानं शिल्पशास्त्रयोः।

मोक्षसे अन्यत्र शिल्पविद्या और शास्त्रमें बुद्धि लगानेका नाम–१ विज्ञान १ ॥

मुक्तिः कैवल्यनिर्वाणश्रेयोनिःश्रेयसामृतम् ॥ ६ ॥ मोक्षोऽपवर्गो-

मोक्षके नाम ८—मुक्ति १ कैवल्य २ निर्वाण ३ श्रेयस् ४ निःश्रेयस् ५ अमृत ६ ॥ ६ ॥ मोक्ष ७ अपवर्ग ८ ॥

—थाज्ञानमविद्याहंमतिः स्त्रियाम् ।

अज्ञानके नाम ३—अज्ञान १ अविद्या २ अहम्मति ३ ॥

रूपं शब्दो गन्धरसस्पर्शाश्च विषया अमी ॥ ७ ॥

पञ्चविषयोंके नाम ५—रूप १ शब्द २ गन्ध ३ रस ४ स्पर्श ५॥७॥

गोचरा इन्द्रियार्थाश्च-

इकट्ठे रूपरसादिके नाम ३—विषय १ गोचर २ इन्द्रियार्थ ३ ॥

—हृषीकं विषयीन्द्रियम् ।

इन्द्रियके नाम ३—हृषीक १ विषयी २ इन्द्रिय ३ ॥

कर्मेन्द्रियं तु पाय्वादि-

कर्मेंद्रियोंके नाम—गुदा आदि[1] ॥

—मनोनेत्रादि धीन्द्रियम् ॥८॥

ज्ञानेंद्रियोंके नाम—५ मनस् १ नेत्र २ आदि[1] ॥ ८ ॥

तुवरस्तु कषायोऽस्त्री मधुरो लवणः कटुः । तिक्तोऽम्लश्च रसाः पुंसि--

छः रसोंके नाम—तुवर—कषाय १ मधुर २ लवण ३ कटु ४ तिक्त ५ अम्ल ६ ॥

—तद्वत्सु षडमी त्रिषु ॥ ९ ॥

कषाय आदि रसवाचक शब्द यदि द्रव्यवाचक हों तो तीनों लिंगोंमें होते हैं ॥ ९ ॥

विमर्दोत्थे परिमलो गन्धे जनमनोहरे ।

मनुष्योंके मनको हरनेवाले विसनेसे उत्पन्न हुए सुगन्धका नाम १—परिमल १

आमोदः सोऽतिनिर्हारी-

अत्यन्त मनको हरनेवाले सुगंधका नाम १—आमोद १ ॥

—वाच्यलिंगत्वमागुणात् ॥१०॥

यहांसे लेकर "गुणे शुक्लादयः पुंसि" इससे पहले जो शब्द हैं वे वाच्यलिङ्ग अर्थात् विशेष्यलिंग होते हैं ॥ १० ॥

---

१ "पायूपस्थे पाणिपादा वाक्चेतीन्द्रियसंग्रहः ।" अर्थात्—पायु १ उपस्थ २ पाणि३ पाद४ और वाक् ५ यह पांच कर्मेन्द्रिय हैं ॥

१ "मनः कर्णस्तथा नेत्रं रसना च त्वचा सहानासिका चेति षट् तानि धीन्द्रियाणि प्रचक्षते ॥" अर्थात्—मन१कर्ण २ नेत्र ३ जिह्वा ४ त्वचा५और नासिका यह ६ ज्ञानेन्द्रिय (धीन्द्रिय) हैं ॥

समाकर्षी तु निर्हारी-

दूरसे ही जिसकी गन्ध आवे उसके नाम २-समाकर्षिन् १ निर्हारिन् २ ॥

-सुरभिर्घ्राणतर्पणः । इष्टगन्धः सुगन्धिः स्या-

अत्युत्तमगन्धके नाम ४-सुरभि १ घ्राणतर्पण २ इष्टगन्ध ३ सुगंधि ४ ॥

-दामोदी मुखवासनः ॥ ११॥

मुखको सुगंधित करनेवाले ताम्बूल आदिकी गंधके नाम २-आमोदिन् १ मुखवासन २ ॥ ११ ॥

पूतिगन्धिस्तु दुर्गन्धो-

दुर्गन्धके नाम २-पूतिगन्धि १ दुर्गन्ध २ ॥

-विस्रं स्यादामगन्धि यत् ।

कच्चे मांसादिके गन्धका नाम १-विस्र १ ॥

शुक्लशुभ्रशुचिश्वेतविशदश्येतपाण्डराः ॥ १२ ॥ अवदातः सितो गौरो वलक्षो धवलोऽर्जुनः ।

उज्ज्वलके नाम १३-शुक्ल १ शुभ्र २ शुचि ३ श्वेत ४ विशद ५ श्येत ६ पांडर ७॥ १२ ॥ अवदात ८ सित ९ गौर १० वलक्ष ११ धवल १२ अर्जुन १३ ॥

हरिणः पाण्डुरः पाण्डु-

कुछ पीलापन मिले हुए सफेदवर्णके नाम ३-हरिण १ पांडुर २ पांडु ३ ।

-रीषत्पाण्डुस्तु धूसरः ॥ १३ ॥

किञ्चित् उज्ज्वलका नाम १-धूसर १ ॥ १३ ॥

कृष्णे नीलासितश्यामकालश्यामलमेचकाः ।

काले वर्णके नाम ७-कृष्ण १ नील २ असित ३ श्याम ४ काल ५ श्यामल ६ मेचक ७ ॥

पीतो गौरो हरिद्राभः-

पीले वर्णके नाम ३-पीत १ गौर २ हरिद्राभ ३ ॥

-पालाशो हरितो हरित् ॥१४॥

हरे वर्णके नाम ३-पालाश १ हरित २ हरित् ३ ॥ १४ ॥

रोहितो लोहितो रक्तः-

लालवर्णके नाम ३-रोहित १ लोहित २ रक्त ३॥

-शोणः कोकनदच्छविः ।

लाल कमलके समान वर्णके नाम २-शोण १ कोकनदच्छवि २ ॥

अव्यक्तरागस्त्वरुणः-

थोडे लालका नाम १-अरुण १ ॥

-श्वेतरक्तस्तु पाटलः ॥ १५ ॥

मिले हुए सफेद और लालवर्णका नाम १–पाटल १ ॥ १५ ॥

श्यावः स्यात्कपिशो–

मिले हुए काले और पीले रंगके नाम २–श्याव १ कापिश २ ॥

–धूम्रधूमलौ कृष्णलोहिते ।

मिले हुए काले और लालवर्णके नाम ३–धूम्र १ धूमल २ कृष्णलोहित ३ ॥

कडारः कपिलः पिङ्गपिशंगौ कद्रुपिङ्गलौ ॥ १६ ॥

वानरकेसे रंगके नाम ६–कडार १ कपिल २ पिङ्ग ३ पिशङ्ग ४ कद्रु ५ पिंगल ६ ॥ १६ ॥

चित्रं किर्मीरकल्माषशबलैताश्च कर्बुरे ।

चित्रवर्णके नाम ६–चित्र १ किर्मीर २ कल्माष ३ शबल ४ एत ५ कर्बुर ६॥

गुणे शुक्लादयः पुंसि गुणिलिंगास्तु तद्वति ॥ १७ ॥

गुणवाचक शुक्ल आदि शब्द पुँलिंग होते हैं और द्रव्यवाचकशब्द द्रव्यके अनुसार लिंगमें होते हैं ॥ १७ ॥

इति धीवर्गः ॥ ५ ॥

२

अथ शब्दादिवर्गः ६.

ब्राह्मी तु भारती भाषा गीर्वाग्वाणी सरस्वती ।

सरस्वतीके नाम ७–ब्राह्मी १ भारती २ भाषा ३ गिर् गिरा ४ वाच् ५ वाणी ६ सरस्वती ७ ॥

व्याहार उक्तिर्लपितं भाषितं वचनं वचः ॥ १ ॥

बोलनेके नाम ६–व्याहार १ उक्ति २ लपित ३ भाषित ४ वचन ५ वचस् ६ ॥ १ ॥

अपभ्रंशोऽपशब्दः स्या–

अपभ्रष्ट अर्थात् व्याकरणकी रीतिसे अशुद्ध शब्दका नाम १–अपभ्रंश १ ।

च्छास्त्रे शब्दस्तु वाचकः ।

व्याकरणशास्त्रानुसार शुद्ध शब्दका नाम १–शब्द १ ॥

तिङ्सुबन्तचयो वाक्यं क्रिया वा कारकान्विता ॥ २ ॥

तिङन्तसुबन्तके समूह और कारकयुक्त क्रियाका नाम १–वाक्य १॥२॥

श्रुतिः स्त्री वेद आम्नायस्त्रयी–

वेदके नाम ४–श्रुति १ वेद २ आम्नाय ३ त्रयी ४ ॥

–धर्मस्तु तद्विधिः ।

वेदमें कही हुई संध्या तर्पण आदि विधिका नाम १–धर्म १ ॥

स्त्रियामृक्सामयजुषी-

वेदोंके नाम३-ऋच् १ यजुष् २ सामन् ३ ॥

-इति वेदास्त्रयस्त्रयी ॥ ३ ॥

इन्हीं तीनों वेदोंका इकट्ठा नाम१- त्रयी १ ॥ ३ ॥

शिक्षेत्यादि श्रुतेरङ्ग-

वेदके छः अंगोंके नाम ६-शिक्षा १ कल्प २ व्याकरण ३ निरुक्त ४ ज्योतिष ५ छन्दस् ६ ॥

ओंकारप्रणवौ समौ ।

ओंकारके नाम २-ओंकार१प्रणव२ ॥

इतिहासः पुरावृत्त-

इतिहासके नाम २-इतिहास १ पुरावृत्त २ ॥

मुदात्ताद्यास्त्रयः स्वराः ॥ ४ ॥

उदात्त, अनुदात्त, स्वरितका नाम १-स्वर १ ॥ ४ ॥

आन्वीक्षिकी दण्डनीतिस्तर्क- विद्यार्थशास्त्रयोः ।

तर्कविद्याका नाम १-आन्वीक्षिकी१ अर्थशास्त्रका नाम १-दंडनीति १ ॥

आख्यायिकोपलब्धार्था-

जिसका अर्थ जान लिया हो उस कथाके नाम २-आख्यायिका १ उप- लब्धार्था २ ॥

पुराणं पञ्चलक्षणम् ॥ ५ ॥

पुराणोंके नाम २-पुराण १ पंच- लक्षण २ ॥ ५ ॥

प्रबंधकल्पना कथा-

कल्पना की हुई कादम्बरी आदि कथाके नाम २-प्रबन्धकल्पना १ कथा २ ॥

प्रवह्लिका प्रहेलिका ।

जिसके सुननेसे मतलब जाना जाय और विचार करनेसे दूसरा मत- लब निकले उस (कहानी) के नाम २-प्रवह्लिका १ प्रहेलिका २ ॥

स्मृतिस्तु धर्मसंहिता-

धर्म जाननेको रचना किये हुए श्लोकोंके समूहके नाम२-स्मृति १ धर्मसंहिता २ ॥

-समाहृतिस्तु संग्रहः ॥ ६ ॥

संग्रहके नाम २-समाहृति १-सं- ग्रह २ ॥ ६ ॥

समस्या तु समासार्था-

जिसमें कुछ अर्थ पूरा किया जाय उसके नाम २-समस्या१समासार्था२॥

-किंवदन्ती जनश्रुतिः ।

लोकप्रवाद अर्थात् दुर्यशके नाम२- किंवदन्ती १ जनश्रुति ॥ २ ॥

वार्ता प्रवृत्तिर्वृत्तान्त उदन्तः स्या-

वार्त्ताके नाम ४–वार्त्ता १ प्रवृत्ति २ वृत्तान्त ३ उदन्त ४ ॥

–र्थाह्वयः ॥ ७ ॥ आख्याह्वे अभिधानं च नामधेयं च नाम च ।

नामके नाम ६–आह्वय १ ॥ ७ ॥ आख्या २ आह्वा ३ अभिधान ४ नामधेय ५ नामन् ६ ॥

हूतिराकारणाह्वानं–

पुकारनेके नाम ३–हूति १ आकारणा २ आह्वान ३ ॥

–संहूतिर्बहुभिः कृता ॥ ८ ॥

बहुत जनोंकरके पुकारनेका नाम १–संहूति १ ॥ ८ ॥

विवादो व्यवहारः स्या–

विवादके नाम २–विवाद १ व्यवहार २ ॥

–दुपन्यासस्तु वाङ्मुखम् ।

वार्त्ताका प्रारम्भ करनेके नाम २–उपन्यास १ वाङ्मुख २ ॥

उपोद्घात उदाहारः–

जो बात आगे कही जाय उसके उपयोगी बातके नाम २–उपोद्घात १ उदाहार २ ॥

–शपनं शपथः पुमान् ॥ ९ ॥

सौगन्ध खानेके नाम २–शपन १ शपथ २ ॥ ९ ॥

प्रश्नोऽनुयोगः पृच्छा च–

प्रश्नके नाम ३–प्रश्न १ अनुयोग २ पृच्छा ३ ॥

–प्रतिवाक्योत्तरे समे ।

उत्तरके नाम २–प्रतिवाक्य १ उत्तर २ ॥

मिथ्याभियोगोऽभ्याख्यान–

झूठे दोष लगानेके नाम २–मिथ्याभियोग १ अभ्याख्यान २ ॥

–मथ मिथ्याभिशंसनम् ॥ १० ॥ अभिशापः–

मदिरादिपान आदिका झूठा दोष लगानेके नाम २–मिथ्याभिशंसन १ ॥ १० ॥ अभिशाप २ ॥

प्रणादस्तु शब्दः स्यादनुरागजः ।

अनुरागज शब्दका नाम १–प्रणाद १ ॥

यशः कीर्त्तिः समज्ञा च–

कीर्त्तिके नाम ३–यशस् १ कीर्त्ति २ समज्ञा ३ ॥

–स्तवः स्तोत्रं स्तुतिर्नुतिः ॥ ११ ॥

स्तुतिके नाम ४–स्तव १ स्तोत्र २ स्तुति ३ नुति ४ ॥ ११ ॥

आम्रेडितं द्विस्त्रिरुक्त–

दोतीनबार कहनेका नाम १-आम्रेडित १।

–मुच्चैर्घुष्टं तु घोषणा ।

जोरसे बोलनेके नाम २—उच्चैर्घुष्ट १ घोषणा २ ॥

काकुः स्त्रियां विकारो यः शोकभीत्यादिभिर्ध्वनेः ॥ १२ ॥

शोकभयकामादियुक्त वचनका नाम १—काकु ॥ १२ ॥

अवर्णाक्षेपनिर्वादपरीवादापवादवत् । उपक्रोशो जुगुप्सा च कुत्सा निन्दा च गर्हणे ॥ १३ ॥

निन्दाके नाम १०—अवर्ण १ आक्षेप २ निर्वाद ३ परीवाद-(परिवाद) ४ अपवाद ५ उपक्रोश ६ जुगुप्सा ७ कुत्सा ८ निन्दा ९ गर्हण १० ॥१३॥

पारुष्यमतिवादः स्या—

कठोर भाषणके नाम २—पारुष्य १ अतिवाद २ ॥

—द्भर्त्सनं त्वपकारगीः ।

ललकारनेका नाम १—भर्त्सन १ ॥

यः सनिन्द उपालम्भस्तत्र स्यात्परिभाषणम् ॥ ४१ ॥

खिजानेका नाम १—परिभाषण १ ॥ १४ ॥

तत्र त्वाक्षारणा यः स्यादाक्रोशो मैथुनं प्रति ।

परस्त्री या पुरुषसे मैथुनार्थ वार्त्ता करनेका नाम १—आक्षारणा(आक्षारण १)॥

स्यादाभाषणमालापः—

सम्बोधनपूर्वक वार्त्ता करनेके नाम २—आभाषण १ आलाप २ ॥

प्रलापोऽनर्थकं वचः ॥ १५ ॥

अनर्थ वचनका नाम १—प्रलाप १॥१५॥

अनुलापो मुहुर्भाषा—

वारंबार भाषणके नाम २—अनुलाप १ मुहुर्भाषा ॥ २ ॥

—विलापः परिदेवनम् ।

रोनेके नाम २—विलाप १ परिदेवन २॥

विप्रलापो विरोधोक्तिः—

परस्पर विरुद्ध भाषणके नाम २—विप्रलाप १ विरोधोक्ति ॥ २ ॥

—संलापो भाषणं मिथः ॥१६॥

परस्पर योग्यभाषणका नाम १—संलाप १ ॥ १६ ॥

सुप्रलापः सुवचन—

सुन्दर वचनके नाम २—सुप्रलाप १ सुवचन ॥ २ ॥

—मपलापस्तु निह्नवः ।

मुकर जानेके नाम २—अपलाप १ निह्नव २ ॥

संदेशवाग्वाचिकं स्या—

संदेशके नाम २—सन्देशवाच् १ वाचिक २ ॥

--द्वाग्भेदास्तु त्रिषूत्तरे ॥ १७ ॥

रुशती शब्दसे लेकर सम्यक्शब्द-पर्यंत जो शब्द हैं वे तीनों लिंगोंमें होते हैं ॥ १७ ॥

रुशती वागकल्याणी--

अमंगल वाक्यका नाम १--रुशती १ ॥

--स्यात्कल्या तु शुभात्मिका ।

शुभवाणीका नाम १--कल्या १ ॥

अत्यर्थमधुरं सान्त्वं--

अति मिष्टवचनका नाम १--सान्त्व१॥

--संगतं हृदयंगमम् ॥ १८ ॥

सम्बद्ध अर्थात् योग्य वचनके नाम २--संगत १ हृदयंगम २ ॥ १८ ॥

निष्ठुरं परुषं--

कठोरवचनके नाम २-निष्ठुर१परुष२॥

--ग्राम्यमश्लीलं--

भाँड़ आदिके वचनोंके नाम २--ग्राम्य १ अश्लील २ ॥

सूनृतं प्रिये । सत्ये--

प्रिय और सत्यवचनका नाम १--सूनृत १ ॥

--ऽथ संकुलक्लिष्टे परस्परपराहते१९

पूर्वापर विरुद्ध वचनके नाम ३--संकुल १ क्लिष्ट२परस्परपराहत३॥१९॥

लुप्तवर्णपदं ग्रस्तं--

अधकहे वचनके नाम २--लुप्तवर्ण-पद १ ग्रस्त २ ॥

निरस्तं त्वरितोदितम् ।

जलदी कहे हुए शब्दके नाम २--निरस्त १ त्वरितोदित २ ॥

अम्बूकृतं सनिष्ठीव--

थूकसहित बोलनेके नाम २--अम्बू-कृत १ सनिष्ठीव २ ॥

--मबद्धं स्यादनर्थकम् ॥ २० ॥

अर्थन्यूनवचनके नाम २--अबद्ध १ अनर्थक २ ॥ २० ॥

अनक्षरमवाच्यं स्या--

अकथनयोग्य निन्दायुक्त वचनके नाम २--अनक्षर १ अवाच्य २॥

--दाहतं तु मृषार्थकम् ।

झुठाईका नाम १--आहत १ ॥

"सोल्लुण्ठनं तु सोत्प्रासं--

हास्यसहित वचनके नाम २--सोल्लुण्ठन १ सोत्प्रास २ ॥

--भणितं रतिकूजितम्" ।

मैथुनके शब्दके नाम २--भणित १ रतिकूजित २ ॥

अथ म्लिष्टमविस्पष्टं--

अप्रतीकके नाम २--म्लिष्ट १ अवि-स्पष्ट २ ॥

--वितथं त्वनृतं वचः ॥ २१ ॥

झूठके नाम २--वितथ१अनृत२॥२१॥

सत्यं तथ्यमृतं सम्य--

सत्यके नाम ४—सत्य १ तथ्य २ ऋत ३ सम्यच् ४ ॥

—गमूनि त्रिषु तद्वति ।

सत्य आदि शब्द द्रव्यवाचक हों तो तीनों लिंगोंमें होते हैं ॥

शब्दे निनादनिनदध्वनिध्वान-रवस्वनाः ॥ २२ ॥ स्वाननिर्घोष-निर्ह्रादनादनिस्वानानिस्वनाः । आर-वारावसंराववरावा—

शब्दके नाम १७—शब्द १ निनाद २ निनद ३ ध्वनि ४ ध्वान ५ रव ६ स्वन ७ ॥ २२ ॥ स्वान ८ निर्घोष ९ निर्ह्राद १० नाद ११ निस्वान १२ निस्वन १३ आरव १४ आराव १५ संराव १६ विराव १७ ॥

—अथ मर्मरः ॥ २३ ॥ स्वनिते वस्त्रपर्णानां—

वस्त्र और पत्तोंके शब्दका नाम १—मर्मर १ ॥ २३ ॥

भूषणानां च शिञ्जितम् ।

गहनेके खनखनाहटका नाम १—शिञ्जित १ ॥

निक्वाणो निक्वणः क्वाणः क्वणः क्वणनमित्यपि ॥ २४ ॥

वीणादि शब्दोंके नाम ५—निक्वाण १ निक्वण २ क्वाण ३ क्वण ४ क्वणन ५ ॥ २४ ॥

वीणायाः क्वणिते प्रादेः प्रक्वाणप्रक्वणादयः ।

केवल वीणाके बाजोंके नाम ३—प्रक्वाण १ प्रक्वण २ उपक्वणन आदि ३ ॥

कोलाहलः कलकल—

कोलाहलके नाम २—कोलाहल १ कलकल २ ॥

—स्तिरश्चां वाशितं रुतम् ॥ २५ ॥

पक्षियोंके शब्दके नाम २—वाशित १ रुत २ ॥ २५ ॥

स्त्री प्रतिश्रुत्प्रतिध्वाने—

आवाजकी आवाज अर्थात् गूँजनेके नाम २—प्रतिश्रुत् १ प्रतिध्वान २ ॥

—गीतं गानमिमे समे ।

गानेके नाम २—गीत १ गान २ ॥

इति शब्दादिवर्गः ॥ ६ ॥

अथ नाट्यवर्गः ७.

निषादर्षभगान्धारषड्जमध्य—

---

१ "षड्जं रौति मयूरस्तु गावो नर्दन्ति चर्षभम् । अजाविकौ च गांधारं क्रौञ्चो नदति मध्यमम् ॥१॥ पुष्पसाधारणे काले कोकिलो रौति पञ्चमम् । अश्वस्तु धैवतं रौति निषादं रौति कुञ्जरः ॥२॥" अर्थात् मोर षड्ज शब्दको बोलता है। बैल ऋषभ शब्दको, भेड बकरी गान्धार स्वरको, क्रौञ्च पक्षी मध्यम स्वरको, घोड़ा धैवत स्वरको, कोकिल वसन्त कालमें पञ्चम स्वरको और हस्ती निषाद स्वरको बोलता है ।

मधैवताः ॥ पञ्चमश्चेत्यमी सप्त तन्त्रीकण्ठोत्थिताः स्वराः ॥ १ ॥

वीणासे वा कंठसे उत्पन्न होनेवाले स्वरोंके नाम ७—निषाद १ ऋषभ २ गान्धार ३ षड्ज ४ मध्यम ५ धैवत ६ पञ्चम ७ ॥ १ ॥

काकली तु कले सूक्ष्मे—

सूक्ष्मशब्दका नाम १—काकली १॥

—ध्वनौ तु मधुरास्फुटे । कलो-

मीठी और अस्फुट आवाजका नाम १—कल १ ॥

—मन्द्रस्तु गम्भीरे—

गंभीर शब्दका नाम १ —मन्द्र १ ॥

—तारोऽत्युच्चे—

अत्युच्च शब्दका नाम १—तार १ ॥

—त्रयस्त्रिषु ॥ २ ॥

कल आदि तीन शब्द तीनों लिंगों-में होते हैं ॥ २ ॥

समन्वितलयस्त्वेकतालो—

वाद्यगानादिके एकसंग तालत्वरका नाम १—एकताल १ ॥

—वीणा तु वल्लकी । विपञ्ची—

वीणाके नाम ३—वीणा १ वल्लकी २ विपञ्ची ३ ॥

—सा तु तन्त्रीभिः सप्तभिः परि-वादिनी ॥ ३ ॥

सात तारोंसे बोलनेवाली वीणाका नाम १—परिवादिनी १ ॥ ३ ॥

ततं वीणादिकं वाद्य—

वीणादिक बाजेका नाम १—तत १॥

मानद्धं मुरजादिकम् ।

मृदंगआदि बाजेका नाम १—आनद्ध १॥

वंशादिकं तु सुषिरं—

वंशी आदि बाजेका नाम १—सुषिर १।

—कांस्यतालादिकं घनम् ॥ ४॥

झांझ मंजीरा आदि बाजेका नाम १—घन १ ॥ ४ ॥

चतुर्विधमिदं वाद्यं वादित्रातोद्य-नामकम् ।

तत आदि चारों बाजोंका इकट्ठा नाम ३—वाद्य १ वादित्र २ आतोद्य ३॥

मृदंगा मुरजा—

मृदङ्गके नाम २—मृदङ्ग १ मुरज २

—भेदास्त्वङ्क्यालिङ्ग्योर्ध्वकास्त्रयः ॥ ५ ॥

मृदङ्गके भेद ३—अङ्क्य १ आलिङ्ग्य २ ऊर्ध्वक ३ ॥ ५ ॥

स्याद्यशःपटहो ढक्का—

नगाड़ेके नाम २—यशःपटह १ ढक्का २ ॥

भेर्यामानकदुन्दुभी ।

धोंसा नफीरी आदिके नाम ३-भेरी १ आनक २ दुन्दुभि ३ ॥

आनकः पटहोऽस्त्री स्यात्-

ढोलके नाम २--आनक१पटह २॥

-कोणो वीणादिवादनम् ॥ ६ ॥

जिससे वीणादि बजाते हैं उस नक्खी आदिका नाम १-कोण १ ॥ ६ ॥

वीणादण्डः प्रवालः स्या-

वीणाकी डंडीका नाम१-प्रवाल १।

-त्ककुभस्तु प्रसेवकः ।

वीणाके नीचे जो गोल गोल चर्मसे मढ़ा हुआ होता है उसके नाम २-ककुभ १ प्रसेवक २ ॥

कोलम्बकस्तु कायोऽस्या-

वीणाके सर्वांगका नाम१-कोलम्बक१

-उपनाहो निबन्धनम् ॥ ७ ॥

वीणामें जहां तार बांधे जाते हैं उसके नाम २-उपनाह १ निबन्धन२॥७॥

वाद्यप्रभेदा डमरुमड्डुडिण्डिमझर्झराः । मर्दलः पणवोऽन्ये च-

डमरुका नाम १-डमरु १ ॥ बड़े डमरुका नाम १-मड्डु १ ॥ डिंडिमका नाम १-डिंडिम १ ॥ झांझका नाम १-झर्झर १ ॥ तथा मर्दल, पणव आदि और भी बाजे हैं ॥

-नर्तकीलासिके समे ॥ ८ ॥

नाचनेवालीके नाम २-नर्तकी १ लासिका २ ॥ ८ ॥

विलम्बितं द्रुतं मध्यं तत्त्वमोघो घनं क्रमात् ।

धीरे धीरे नाचका नाम १-तत्त्व १ ॥ शीघ्र नाचका नाम १-ओघ १ ॥ मध्यम नाचका नाम १-घन १ ॥

तालः कालक्रियामानं-

समय और क्रियाके प्रमाणका नाम १-ताल १ ॥

-लयः साम्य-

बाजा और नाचका एक संग ताल छूटनेका नाम १-लय १ ॥

-मथास्त्रियाम् ॥ ९ ॥

इसके आगे कहे ये शब्द स्त्रीलिङ्गवाची नहीं, अर्थात् पुँलिङ्ग-नपुंसकलिङ्गवाची होते हैं ॥ ९ ॥

ताण्डवं नटनं नाट्यं लास्यं नृत्यं च नर्तनम् ।

नाचके नाम ६-तांडव १ नटन २ नाट्य ३ लास्य४ नृत्य ५ नर्त्तन ६॥

तौर्यत्रिकं नृत्यगीतवाद्यं नाट्यमिदं त्रयम् ॥ १० ॥

नाच गीत बाजा इन तीनके इकट्ठे नाम२—तौर्यत्रिक १ नाट्य २ ॥१०॥

भ्रकुंसश्च भ्रुकुंसश्च भ्रूकुंसश्चेति नर्तके । स्त्रीवेषधारी पुरुषो—

स्त्रीवेषधारी नाचनेवाले पुरुषके नाम ३—भ्रकुंस १ भ्रुकुंस २ भ्रूकुंस ३ ॥

—नाट्योक्तौ गणिकाऽज्जुका ११॥

केवल नाटकमें नाचने गानेवाली वेश्याका नाम १—अज्जुका १॥११॥

भगिनीपतिरावुत्तो—

बहनोईका नाम १—आवुत्त १ ॥

—भावो विद्वा—

विद्वान्का नाम १—भाव १ ॥

—नथावुकः । जनको—

पिताका नाम १—आवुक १ ॥

—युवराजस्तु कुमारो भर्तृदारकः ॥ १२ ॥

युवराजके नाम२—कुमार १ भर्तृदारक २ ॥ १२ ॥

राजा भट्टारको देव—

राजाके नाम २—भट्टारक १ देव २ ॥

—स्तत्सुता भर्तृदारिका ।

राजकन्याका नाम १—भर्तृदारिका १॥

देवी कृताभिषेकाया—

अभिषेक की हुई रानीका नाम १—देवी १ ॥

मितरासु तु भट्टिनी ॥ १३ ॥

अन्य राजास्त्रियोंका नाम १—भट्टिनी १ ॥ १३ ॥

अब्रह्मण्यमवध्योक्तौ—

अवध्य वचनका नाम १—अब्रह्मण्य १ ॥

—राजश्यालस्तु राष्ट्रियः ।

राजाके सालेका नाम—१राष्ट्रिय१॥

अम्बा माता—

माताके नाम२—अम्बा १ मातृ२॥

ऽथ बाला स्याद्वासू—

कुमारीके नाम२—बाला १वासू२॥

—रार्यस्तु मारिषः ॥ १४ ॥

श्रेष्ठके नाम२—आर्य१मारिष २ ॥१४॥

अत्तिका भगिनी ज्येष्ठा—

जेठी बहनका नाम १—अत्तिका १॥

निष्ठानिर्वहणे समे ।

नाटककी संधियोंके नाम२—निष्ठा १ निर्वहण २ ॥

हण्डे हञ्जे हलाह्वाने नीचां चेटीं सखीं प्रति ॥ १५ ॥

नीच स्त्रीके पुकारनेमें—हण्डे १ ॥ चेटीके पुकारनेमें—हंजे १ ॥ सखीके पुकारनेमें—हला १ ॥ १५ ॥

अंगहारोऽङ्गविक्षेपो—

लचकनेके नाम २—अंगहार १ अंगविक्षेप २ ॥

-व्यञ्जकाभिनयौ समौ ।

भाव बतानेके नाम २-व्यञ्जक १ अभिनय २ ॥

निर्वृत्ते त्वंगसत्त्वाभ्यां द्वे त्रिष्वाङ्गिकसात्त्विके ॥ १६ ॥

भौंह मटकानेका नाम १-आंगिक १ । अंतःकरणके भावका नाम १-सात्त्विक १ ॥ १६ ॥

शृङ्गारवीरकरुणाद्भुतहास्यभयानकाः । बीभत्सरौद्रौ च रसाः-

साहित्यिक रसोंके नाम १०-शृङ्गार १ वीर २ करुण ३ अद्भुत ४ हास्य ५ भयानक ६ बीभत्स ७ रौद्र ८ शांति ९ (वात्सल्य १०) ।

शृंगारः शुचिरुज्ज्वलः ॥१७॥

शृङ्गारके नाम ३-शृङ्गार १ शुचि २ उज्ज्वल ३ ॥ १७ ॥

उत्साहवर्धनो वीरः-

वीररसके नाम२- उत्साहवर्धन १ वीर २ ॥

-कारुण्यं करुणा घृणा । कृपादयानुकम्पा स्यादनुक्रोशो-

करुणा रसके नाम ७-कारुण्य १ करुणा २ घृणा ३ कृपा ४ दया ५ अनुकंम्पा ६ अनुक्रोश ७ ॥

-ऽप्यथो हसः ॥ १८ ॥ हासो हास्यं च-

हास्यरसके नाम३-हस १ ॥१८॥ हास २ हास्य ३ ॥

-बीभत्सं विकृतं त्रिष्विदं द्वयम् ।

बीभत्सरसके नाम २-बीभत्स १ विकृत २ ॥

विस्मयोऽद्भुतमाश्चर्यं चित्र-

अद्भुतरसके नाम ४-अद्भुत १ आश्चर्य २ विस्मय ३ चित्र ४ ॥

मप्यथ भैरवम् ॥ १९ ॥ दारुणं भीषणं भीष्मं घोरं भीमं भयानकम् । भयंकरं प्रतिभयं-

भयानक रसके नाम ९-भैरव १ ॥१९॥ दारुण २ भीषण ३ भीष्म ४ घोर ५ भीम ६ भयानक ७ भयंकर ८ प्रतिभय ९ ॥

-रौद्रं तूग्र-

रौद्ररसके नाम २-रौद्र १उग्र ३॥

-ममी त्रिषु ॥ २० ॥ चतुर्दश-

अद्भुतादि चौदह शब्द द्रव्यवाचक हों तो विशेष्यनिघ्नलिंग जानना॥२०॥

-दरस्त्रासो भीतिर्भीः साध्वसं भयम् ।

भयके नाम ६—दर १ त्रास २ भीति ३ भी ४ साध्वस ५ भय ६ ॥

विकारो मानसो भावो—

मनके विकारका नाम १—भाव १ ॥

—ऽनुभावो भावबोधकः ॥ २१॥

भावप्रकाशकका नाम १—अनुभाव १ ॥ २१ ॥

गर्वोऽभिमानोऽहंकारो -

अहंकारके नाम ३—गर्व १ अभिमान २ अहंकार ३ ॥

—मानश्चित्तसमुन्नतिः ।

बड़प्पनका नाम १—मान १ ॥

अनादरः परिभवः परीभावस्तिरस्क्रिया ॥ २२ ॥ रीढावमाननावज्ञावहेलनमसूर्क्षणम् ।

निरादरके नाम ९—अनादर १ परिभव २ परीभाव ३ तिरस्क्रिया ४ ॥ ॥ २२ ॥ रीढा ५ अवमानना ६ अवज्ञा ७ अवहेलन ८ असूर्क्षण ९ ॥

मन्दाक्षं ह्रीस्त्रपा व्रीडा लज्जा--

लज्जाके नाम ५—मन्दाक्ष १ ह्री २ त्रपा ३ व्रीडा ४ लज्जा ५ ॥

—सापत्रपान्यतः ॥ २३ ॥

दूसरेसे लजानेका नाम १—अपत्रपा १ ॥ २३ ॥

क्षान्तिस्तितिक्षा--

क्षमाके नाम २—क्षान्ति १ तितिक्षा २ ॥

—ऽभिध्या तु परस्य विषये स्पृहा ।

परधन लेनेकी इच्छाका नाम १—अभिध्या १ ॥

अक्षान्तिरीर्ष्या—

ईर्ष्याके नाम २--अक्षान्ति १ ईर्ष्या २॥

—ऽसूया तु दोषारोपो गुणेष्वपि ॥ २४ ॥

पराये गुणोंमें दोष प्रसिद्ध करनेका नाम १—असूया १ ॥ २४ ॥

वैरं विरोधो विद्वेषो—

वैरके नाम ३—वैर १ विरोध २ विद्वेष ३ ॥

—मन्युशोकौ तु शुक् स्त्रियाम् ।

शोकके नाम ३—मन्यु १ शोक २ शुच् ३ ॥

पश्चात्तापोऽनुतापश्च विप्रतीसार इत्यपि ॥ २५ ॥

पछतानेके नाम ३—पश्चात्ताप १ अनुताप २ विप्रतीसार ३ ॥ २५ ॥

कोपक्रोधामर्षरोषप्रतिघा रुट्क्रुधौ स्त्रियौ ।

क्रोधके नाम ७—कोप १ क्रोध २ अमर्ष ३ रोष ४ प्रतिघा ५ रुष् ६ क्रुध् ७

शुचौ तु चरिते शील-

शुद्ध आचरणका नाम १-शील १॥

-मुन्मादश्चित्तविभ्रमः ॥ २६ ॥

सिड़ीपनके नाम २-उन्माद १ चित्तविभ्रम २ ॥ २६ ॥

प्रेमा ना प्रियता हार्दं प्रेम स्नेहो-

प्रेमके नाम ५-प्रेमन् १ प्रियता २ हार्द ३ प्रेमन् ४ स्नेह ५ ॥

-ऽथ दोहदम् । इच्छा कांक्षा स्पृहेहा तृड्वाञ्छा लिप्सा मनोरथः २७ कामोऽभिलाषस्तर्षश्च-

इच्छाके नाम १२-दोहद १ इच्छा २ कांक्षा ३ स्पृहा ४ ईहा ५ तृष् ६ वाञ्छा ७ लिप्सा ८ मनोरथ ९ ॥२७॥ काम १० अभिलाष ११ तर्ष १२ ॥

-सोऽत्यर्थं लालसा द्वयोः ।

बड़ी इच्छाका नाम १-लालसा १।

उपाधिर्ना धर्मचिन्ता-

धर्मचिन्ताके नाम २-उपाधि १ धर्मचिन्ता २ ।

-पुंस्याधिर्मानसी व्यथा ॥ २८॥

मनकी पीडाके नाम २-आधि १ मानसी व्यथा २ ॥ २८ ॥

स्याच्चिन्तास्मृतिराध्यान-

स्मरणके नाम ३-चिंता १ स्मृति २ आध्यान ३ ॥

-मुत्कण्ठोत्कलिके समे ।

कामादिसे उत्पन्न स्मृतिके नाम २-उत्कण्ठा १ उत्कलिका २ ॥

उत्साहोऽध्यवसायः स्यात्-

उत्साहके नाम २-उत्साह १ अध्यवसाय २ ॥

-स वीर्यमतिशक्तिभाक् ॥ २९॥

असाध्य साधनमें उत्साहका नाम-१ वीर्य १ ॥ २९ ॥

कपटोऽस्त्री व्याजदंभोपधयश्छद्मकैतवे । कुसृतिर्निकृतिः शाठ्यं-

कपटके नाम ९-कपट १ व्याज २ दम्भ ३ उपधि ४ छद्मन् ५ कैतव ६ कुसृति ७ निकृति ८ शाठ्य ९ ॥२९॥

-प्रमादोऽनवधानता ॥ ३० ॥

असावधानताके नाम २-प्रमाद १ अनवधानता २ ॥ ३० ॥

कौतूहलं कौतुकं च कुतुकं च कुतूहलम् ।

तमासेके नाम ४-कौतूहल १ कौतुक २ कुतुक ३ कुतूहल ४ ॥

स्त्रीणां विलासविव्वोकविभ्रमा ललितं तथा ॥ ३१ ॥ हेलालीलेत्यमी हावाः क्रियाः शृंगारभावजाः ।

शृङ्गार और भावसे उत्पन्न होनेवाले स्त्रियोंके विलासके नाम ६—विलास १ विव्वोक २ विभ्रम ३ ललित ४ ॥ ३१ ॥ हेला ५ लीला ६ ॥

द्रवकेलिपरीहासाः क्रीडा खेला च नर्म च ॥ ३२ ॥

हँसी करनेके नाम ६—द्रव १ केलि २ परीहास ३ क्रीडा ४ खेला ५ नर्मन् ६ ॥ ३२ ॥

व्याजोऽपदेशो लक्ष्यं च—

बहाना करनेके नाम ३—व्याज १ अपदेश २ लक्ष्य ३ ॥

—क्रीडा खेला च कूर्दनम् ।

बालकोंके खेलके नाम ३—क्रीडा १ खेला २ कूर्दन ३ ॥

घर्मो निदाघः स्वेदः स्यात्—

गर्मीके नाम ३—घर्म १ निदाघ २ स्वेद ३ ॥

—प्रलयो नष्टचेष्टता ॥ ३३ ॥

बेहोशीके नाम २—प्रलय १ नष्टचेष्टता ॥ २ ॥ ३३ ॥

अवहित्थाऽऽकारगुप्तिः—

शोकमें सूरत छिपानेके नाम २—अवहित्था १ आकारगुप्ति २ ॥

—समौ संवेगसंभ्रमौ ।

हर्ष आदिके कारण शीघ्र कार्य करनेके नाम २—संवेग १ संभ्रम २ ॥

स्यादाच्छुरितकं हासः सोत्प्रासः—

किसीको खिजानेके लिये हँसी करनेका नाम १—आच्छुरितक १ ॥

—स मनाक् स्मितम् ॥ ३४ ॥

मुस्कुरानेका नाम १—स्मित १॥३४॥

मध्यमः स्याद्विहसितं—

मध्यम हास्यका नाम—१ विहसित १।

—रोमाञ्चो रोमहर्षणम् ।

रोमोंके खड़े होनेके नाम २—रोमाञ्च १ रोमहर्षण २ ॥

क्रन्दितं रुदितं क्रुष्टं—

रोनेके नाम ३—क्रंदित १ रुदित २ क्रुष्ट ३ ॥

—जृम्भस्तु त्रिषु जृम्भणम्॥ ३५॥

जम्भाई लेनेके नाम २—जृम्भ १ जृम्भण २ ॥ ३५ ॥

विप्रलम्भो विसंवादो—

स्वीकार करके कार्यको न करनेके नाम २—विप्रलम्भ १ विसंवाद २ ॥

—रिङ्गणं स्खलनं समे ।

धर्मसे चलायमान होनेके अथवा बालकोंके घुटुओंसे चलनेके नाम २—रिङ्गण १ स्खलन २ ॥

स्यान्निद्रा शयनं स्वापः स्वप्नः संवेश इत्यपि ॥ ३६ ॥

शयन करनेके नाम ५—निद्रा १ शयन २स्वाप२स्वप्न४संवेश ५ ॥३६॥

तन्द्री प्रमीला—

ऊंघनेके नाम२—तन्द्री १ प्रमीला२

—भ्रुकुटिर्भ्रुकुटिर्भ्रूकुटिः स्त्रियाम् ।

क्रोधसहित भौंह चढ़ानेके नाम ३—भ्रुकुटि १ भ्रुकुटि २ भ्रूकुटि ३ ॥

अदृष्टिः स्यादसौम्येऽक्ष्णि—

क्रूरदृष्टिका नाम १—अदृष्टि १ ॥

—संसिद्धिप्रकृती त्विमे ॥ ३७ ॥ स्वरूपं च स्वभावश्च निसर्गश्च—

स्वभावके नाम ५—संसिद्धि १प्रकृति २ ॥३७॥ स्वरूप ३ स्वभाव ४ निसर्ग५

—ऽथ वेपथुः । कम्पो—

कांपनेके नाम २—वेपथु १ कम्प२॥

—ऽथ क्षण उद्धर्षो मह उद्धव उत्सवः ॥ ३८ ॥

उत्सवके नाम ५—क्षण१उद्धर्ष२मह ३ उद्धव ४ उत्सव ५ ॥ ३८ ॥

इति नाट्यवर्गः ॥ ७ ॥

अथ पातालभोगिवर्गः ८.

अधोभुवनपातालं बलिसद्म रसातलम् । नागलोको—

पातालके नाम५—अधोभुवन१पाताल २बलिसद्मन्३रसातल ४ नागलोक ५ ॥

—ऽथ कुहरं सुषिरं विवरं बिलम् ॥ १ ॥ छिद्रं निर्व्यथनं रोकं रन्ध्रं श्वभ्रं वपा शुषिः ।

छेदके नाम ११—कुहर १ सुषिर २ विवर ३ बिल ४ ॥ १ ॥ छिद्र५ निर्व्यथन ६ रोक ७ रन्ध्र ८ श्वभ्र ९ वपा १० शुषि ११ ।

गर्तावटौ भुवि श्वभ्रे—

पृथ्वीके गढ़हेके नाम २—गर्त १ अवट २ ॥

—सरन्ध्रे सुषिरं त्रिषु ॥ २ ॥

छेदयुक्त वस्तुका नाम १—सुषिर १ ॥ २ ॥

अन्धकारोऽस्त्रियां ध्वान्तं तमिस्रं तिमिरं तमः ।

अन्धकारके नाम ५—अन्धकार १ ध्वान्त २ तमिस्र ३ तिमिर ४ तमस् ५॥

ध्वान्ते गाढेऽन्धतमसं—

अत्यन्त अंधकारका नाम १—अन्धतमस १ ॥

—क्षीणेऽवतमसं—

थोड़ी अँधियारीका नाम १-अवतमस १ ॥

–तमः ॥३॥ विष्वक्संतमसं–

सब ओर फैले हुए अन्धकारका नाम १–सन्तमस १ ॥ ३ ॥

–नागाः काद्रवेयाः–

फन और पूंछवाले मनुष्याकार सर्पोंके नाम २–नाग १ काद्रवेय २ ॥

–स्तदीश्वरः । शेषोऽनन्तो–

शेषनागके नाम २–शेष १ अनन्त २ ॥

–वासुकिस्तु सर्पराजो–

सर्पराजके नाम २–वासुकि १ सर्पराज २ ॥

–ऽथ गोनसे ॥४॥ तिलित्सः स्या-

गोके समान नासिकावाले सर्पके नाम–२ गोनस १ ॥ ४ ॥ तिलित्स २ ॥

–दजगरे शयुर्वाहस इत्युभौ ।

अजगरके नाम ३–अजगर १ शयु २ वाहस ३ ॥

अलगर्दो जलव्यालः–

पानीके सर्पके नाम २–अलगर्द १ जलव्याल २ ॥

–समौ राजिलडुण्डुभौ ॥ ५ ॥

द्विमुहा सर्पके नाम २–राजिल १ ॥ डुण्डुभ २ ॥ ५ ॥

मालुधानो मातुलाहि–

चीते सर्पके नाम २–मालुधान १ मातुलाहि २ ॥

–र्निर्मुक्तो मुक्तकंचुकः ।

कचुली छोड़े हुए सब सर्पोंके नाम २–निर्मुक्त १ मुक्तकंचुक २ ॥

सर्पः पृदाकुर्भुजगो भुजङ्गोऽहि-र्भुजंगमः ॥ ६ ॥ आशीविषो विष-धरश्चक्री व्यालः सरीसृपः । कुण्डली गूढपाच्चक्षुःश्रवाः काको-दरः फणी ॥ ७ ॥ दर्वीकरो दीर्घपृष्ठो दन्दशूको बिलेशयः ॥ उरगः पन्नगो भोगी जिह्मगः पवनाशनः ॥ ८ ॥

सर्पके नाम २५–सर्प १ पृदाकु २ भुजग ३ भुजंग ४ अहि ५ भुजंगम ६ ॥६॥ आशीविष ७ विषधर ८ चक्रिन् ९ व्याल १० सरीसृप ११ कुण्डलिन् १२ गूढपाद् १३ चक्षुःश्रवस् १४ काकोदर १५ फणिन् १६ ॥७॥ दर्वीकर १७ दीर्घपृष्ठ १८ दन्दशूक १९ बिलेशय २० उरग २१ पन्नग २२ भोगिन् २३ जिह्मग २४ पवनाशन २५ ॥८॥

त्रिष्वाहेयं विषास्थ्यादि—

सर्पके विष और हड्डी आदिका नाम १—आहेय १ ॥

—स्फटायां तु फणा द्वयोः ।

सर्पके फनके नाम २—स्फटा १ फणा २ ॥

समौ कंचुकनिर्मोकौ—

कचुलीके नाम २—कंचुक १ निर्मोक २ ॥

—क्ष्वेडस्तु गरलं विषम् ॥ ९ ॥

विषके नाम ३—क्ष्वेड १ गरल २ विष ३ ॥ ९ ॥

पुंसि क्लीबे च काकोलकालकूटहलाहलाः सौराष्ट्रिकः शौक्लिकेयो ब्रह्मपुत्रः प्रदीपनः ॥ १० ॥ दारदो वत्सनाभश्च विषभेदा अमी नव ।

विषके भेद ९—काकोल १ कालकूट २ हलाहल ३ सौराष्ट्रिक ४ शौक्लिकेय ५ ब्रह्मपुत्र ६ प्रदीपन ७ ॥ १० ॥ दारद ८ वत्सनाभ ९ ॥

विषवैद्यो जाङ्गुलिको—

सर्पके विषको दूर करनेकी विद्या जाननेवालेके नाम २—विषवैद्य १ जांगुलिक २ ॥

व्यालग्राह्यहितुण्डिकः ॥ ११ ॥

सर्प पकड़नेवालेके नाम २—व्यालग्राहिन् १ अहितुण्डिक २ ॥ ११ ॥

इति पातालभोगिवर्गः ॥ ८ ॥

अथ नरकवर्गः ९.

स्यान्नारकस्तु नरको निरयो दुर्गतिः स्त्रियाम् ।

नरकके नाम ४—नारक १ नरक २ निरय ३ दुर्गति ४ ॥

तद्भेदास्तपनावीचिमहारौरवरौरवाः ॥ १ ॥ संहारः कालसूत्रं चेत्याद्याः—

नरकोंकी जातिके भेद—तपन १ अवीचि २ महारौरव ३ रौरव ४ ॥ १ ॥ संहार ५ कालसूत्र ६ आदि ॥

—सत्त्वास्तु नारकाः । प्रेता—

नरकवासियोंके नाम २—नारक १ प्रेत २ ॥

—वैतरणी सिंधुः—

प्रेतोंकी नदीका नाम १—वैतरणी १ ॥

—स्यादलक्ष्मीस्तु निर्ऋतिः ॥ २ ॥

नरककी अशोभाके नाम २—अलक्ष्मी १ निर्ऋति २ ॥ २ ॥

विष्टिराजूः—

नरकमें जबरदस्ती ढकेलनेके नाम २–विष्टि १ आजू २ ॥

–कारणा तु यातना तीव्रवेदना ।

नरककी पीडाके नाम ३–कारणा १ यातना २ तीव्रवेदना ३ ॥

पीडा बाधा व्यथा दुःखमामनस्यं प्रसूतिजम् ॥ ३ ॥ स्यात्कष्टं कृच्छ्रमाभीलं–

पीडाके नाम ९–पीडा १ बाधा २ व्यथा ३ दुःख ४ आमनस्य ५प्रसूतिज ६ ॥ ३ ॥ कष्ट ७ कृच्छ्र ८आभील९॥

–त्रिष्वेषां भेद्यगामि यत् ॥ ४ ॥

इन शब्दोंमें जो द्रव्यवाचक हों वे तीनों लिंगोंमें होते हैं ॥ ४ ॥

इति नरकवर्गः ॥ ९ ॥

अथ वारिवर्गः १०.

समुद्रोऽब्धिरकूपारः पारावारः सरित्पतिः । उदन्वानुदधिः सिन्धुः सरस्वान्सागरोऽर्णवः ॥ १ ॥ रत्नाकरो जलनिधिर्यादःपतिरपांपतिः ।

समुद्रके नाम १५–समुद्र १ अब्धि २ अकूपार ३ पारावर ४ सरित्पति ५ उदन्वत् ६ उदधि ७ सिन्धु ८ सरस्वत् ९ सागर १० अर्णव ११ ॥ १ ॥ रत्नाकर १२ जलानिधि १३ यादःपति १४ अपाम्पति १५ ॥

तस्य प्रभेदाः क्षीरोदो लवणोदस्तथापरे ॥ २ ॥

समुद्रके भेद ७–क्षीरोद १ लवणोद २ (इक्षुरसोद ३ सुरोद ४ दधिमण्डोद ५ स्वादूद ६ घृतोद ७) ॥२॥

आपः स्त्री भूम्नि वार्वारि सलिलं कमलं जलम् । पयः कीलालममृतं जीवनं भुवनं वनम् ॥ ३ ॥ कबंधमुदकं पाथः पुष्करं सर्वतोमुखम् । अम्भोऽर्णस्तोयपानीयनीरक्षीराम्बु शम्बरम् ॥ ४ ॥ मेघपुष्पं घनरस–

जलके नाम २७–अप् १ वार् २ वारि ३ सलिल ४ कमल ५ जल ६ पयस् ७ कीलाल ८ अमृत ९ जीवन १० भुवन ११ वन १२ ॥ ३ ॥ कवन्ध १३ उदक १४ पाथस् १५ पुष्कर १६ सर्वतोमुख १७ अम्भस् १८ अर्णस् १९ तोय २० पानीय २१ नीर २२ क्षीर २३ अम्बु २४ शम्बर २५ ॥ ४ ॥ मेघपुष्प २६ घनरस २७॥

–स्त्रिषु द्वे आप्यमम्मयम् ।

जलविकारके नाम २–आप्य १ अम्मय २ ॥

भंगस्तरंग ऊर्मिर्वा स्त्रियां वीचि-

जलकी तरंगका नाम ४—भंग १ तरंग २ ऊर्मि ३ वीचि ४ ॥

-रथोर्मिषु ॥ ५ ॥ महत्सूल्लो-लकल्लोलौ-

बड़ी तरङ्गके नाम २—॥ ५ ॥ उल्लोल १ कल्लोल २ ॥

स्यादावर्त्तोऽम्भसां भ्रमः ।

जलमें भँवर पड़नेका नाम १—आवर्त्त १ ॥

पृषन्ति बिन्दुपृषताः पुमांसो विप्रुषः स्त्रियाम् ॥ ६ ॥

बिन्दुओंके नाम ४—पृषत् १ बिन्दु २ पृषत ३ विप्रुष् ४ ॥ ६ ॥

चक्राणि पुटभेदाः स्यु-

भवँर पड़कर जलके नीचेको जानेके नाम २—चक्र १ पुटभेद २ ॥

-र्भ्रमाश्च जलनिर्गमाः ॥

जलके निकलनेके जालके नाम २—भ्रम १ जलनिर्गम २ ॥

कूलं रोधश्च तीरं च प्रतीरं च तटं त्रिषु ॥ ७ ॥

नदीके किनारेके नाम ५—कूल १ रोधस् २ तीर ३ प्रतीर ४ तट५॥७॥

पारावारे परार्वाची तीरे-

उस पारका नाम १—पार १ ॥
इस पारका नाम १—अवार १ ॥

-पात्रं तदन्तरम् ।

नदीके पाटका नाम १—पात्र १ ॥

द्वीपोऽस्त्रियामन्तरीपं यदंतर्वारिणस्तटम् ॥ ८ ॥

बेटके नाम २—द्वीप १ अन्तरीप २ ॥ ८ ॥

-तोयोत्थितं तत्पुलिनं-

छड़ावेका नाम १—पुलिन १ ॥

-सैकतं सिकतामयम् ।

वालुकाधिकस्थानके नाम २— सैकत १ सिकतामय २ ॥

निषद्वरस्तु जम्बालः पंकोऽस्त्री शादकर्दमौ ॥ ९ ॥

बोदा (कीच) के नाम ५—निषद्वर १ जम्बाल २ पंक ३ शाद ४ कर्दम ५ ॥ ९ ॥

जलोच्छ्वासाः परीवाहाः-

उफलानेके नाम २—जलोच्छ्वास १ परीवाह २ ॥

-कूपकास्तु विदारकाः ।

चूहा (सूखी नदीके गड़हे) के नाम २—कूपक १ विदारक २ ॥

नाव्यं त्रिलिंगं नौतार्ये-

नौकामें उतरनेके योग्य जलका नाम १—नाव्य १ ॥

स्त्रियां नौस्तरणिस्तरिः ॥ १० ॥

नौकाके नाम ३—नौ १ तरणि २ तरि ३ ॥ १० ॥

उडुपं तु प्लवः कोलः--

घन्नईके नाम ३--उडुप १ प्लव २ कोल ३ ॥

--स्रोतोऽम्बुसरणं स्वतः ।

स्रोतका नाम १--स्रोतस् १ ॥

आतरस्तरपण्यं स्याद्--

उतराईके नाम २-- आतर १ तरपण्य २ ॥

--द्रोणीकाष्ठाम्बुवाहिनी ॥११॥

पत्थर वा काष्ठनिर्मित नौकाके खड़ीके नाम २--द्रोणी १ काष्ठाम्बुवाहिनी २ ॥ ११ ॥

सांयात्रिकः पोतवणिक्--

नौका लादनेवाले उद्यमीके नाम २—सांयात्रिक १ पोतवणिज् २ ॥

--कर्णधारस्तु नाविकः ।

खेवा लगानेवालेके नाम २--कर्णधार १ नाविक २ ॥

नियामकाः पोतवाहाः-

जो नौकाके पीछे खड़ा हुआ लकड़ी घुमाया करता है उसके नाम २--नियामक १ पोतवाह २ ॥

कूपको गुणवृक्षकः ॥ १२ ॥

जिस खूँटेमें नौका बांधी जाती है उसके नाम २--कूपक १ गुणवृक्षक २ ॥ १२ ॥

नौकादण्डः क्षेपणी स्या--

पाता (नौकाके दोनों पसवाड़ोंमें बँधे हुए चलानेके काष्ठ) के नाम २--नौकादण्ड १ क्षेपणी २ ॥

--दरित्रं केनिपातकः ।

करिया (नौकाकी पीठमें लगे हुए चलानेके काठ) के नाम २--अरित्र १ केनिपातक २ ॥

अभ्रिः स्त्री काष्ठकुद्दालः--

नौका साफ करनेके कुदालके नाम २—अभ्रि १ काष्ठकुद्दाल २ ॥

--सेकपात्रं तु सेचनम् ॥ १३ ॥

जिससे नौकाका जल उलीचा जाता है उसके नाम २—सेकपात्र १ सेचन २ ॥ १३ ॥

क्लीबेऽर्धनावं नावोऽर्धे--

आधी नावका नाम १—अर्द्धनाव १॥

--ऽतीतनौकेऽतिनु त्रिषु ।

जो नौकालायक जल न हो उसका नाम १--अतिनु १ ॥

त्रिष्वागाधात्—

अगाध शब्दपर्यंत जितने शब्द हैं तीनों लिंगोंमें चलते हैं ॥

–प्रसन्नोऽच्छः–

निर्मल जलके नाम २–प्रसन्न १ अच्छ २॥

–कलुषोऽनच्छ आविलः ॥१४॥

मैले जलके नाम ३–कलुष १ अनच्छ २ आविल ३ ॥ १४ ॥

निम्नं गभीरं गम्भीर–

गहरे जलके नाम ३–निम्न १ गभीर २ गंभीर ३ ॥

–मुत्तानं तद्विपर्यये ।

थाह जलका नाम १–उत्तान १॥

अगाधमतलस्पर्शे–

अथाह जलके नाम २–अगाध १ अतलस्पर्श २ ॥

–कैवर्ते दाशधीवरौ ॥ १५ ॥

मल्लाहके नाम ३–कैवर्त १ दाश २ धीवर ३ ॥ १५ ॥

आनायः पुंसि जालं स्या–

जालके नाम २–आनाय १ जाल२॥

च्छणसूत्रं पवित्रकम् ।

शणसूत्र जालके नाम २–शणसूत्र१ पवित्रक २ ॥

मत्स्याधानी कुवेणी स्या–

जिसमें मछली धरी जायँ उसके नाम २–मत्स्याधानी १ कुवेणी २ ॥

–द्बडिशं मत्स्यवेधनम् ॥ १६॥

मछली पकड़नेके काँटेके नाम २–बडिश १ मत्स्यवेधन २ ॥ १६ ॥

पृथुरोमा झषो मत्स्यो मीनो वैसारिणोऽण्डजः । विसारः शकुली चा–

मछलीके नाम ८–पृथुरोमन् १ झष २ मत्स्य ३ मीन ४ वैसारिण ५ अण्डज ६ विसार ७ शकुलिन् ८॥

–थ गडकः शकुलार्भकः ॥१७॥

मछलीके बच्चोंके नाम २–गडक १ शकुलार्भक २ ॥ १७ ॥

सहस्रदंष्ट्रः पाठीनः–

पह्रा मछलीके नाम २–सहस्रदंष्ट्र १ पाठीन २ ॥

–उलुपी शिशुकः समौ ।

सूस मछलीके नाम २–उलूपिन् १ शिशुक २ ॥

नलमीनश्चिलिचिमः–

चेल्हया मछलीके नाम २–नलमीन १ चिलिचिम २ ॥

–प्रोष्ठी तु शफरी द्वयोः ॥१८॥

सहरी मछलीके नाम २–प्रोष्ठी १ शफरी २ ॥ १८ ॥

क्षुद्राण्डमत्स्यसंघातः पोताधान–

अंडोंसे निकली हुई छोटी मछलीसमूहका नाम १–पोताधान १ ॥

-मथो झषाः । रोहितो मद्गुरः शालो राजीवः शकुलस्तिमिः ॥ १९ ॥ तिमिंगिलादयश्चा-

रोहू मछलीका नाम १-रोहित- मगरी मछलीका नाम १-मद्गुर १ । सौरी मछलीका नाम १-शाल १ । राबा मछलीका नाम १-राजीव १ । सौरा मछलीका नाम १-शकुल १ । बड़ी भारी मछलीका नाम १-तिमि १ ॥१९॥ तिमिके निगलनेवाली मछलीका नाम १-तिमिंगिल १ आदि ॥

-ऽथ यादांसि जलजन्तवः ।

सर्व जलजन्तुओंके नाम २-यादस् १ जलजन्तु २ ॥

तद्भेदाः शिशुमारोद्रशंकवो मकरादयः ॥ २० ॥

शिरसका नाम १-शिशुमार १ । ओदका नाम १-उद्र १ । शफूका नाम १-शंकु १ । मकरका नाम १-मकर १ आदि ॥ २० ॥

स्यात्कुलीरः कर्कटकः-

केकड़ाके नाम २-कुलीर १ कर्कटक २ ॥

-कूर्मे कमठकच्छपौ ।

कछुहेके नाम ३-कूर्म १ कमठ २ कच्छप ३ ॥

ग्राहोऽवहारो-

घड़ियालके नाम २-ग्राह १ अवहार २ ॥

-नक्रस्तु कुम्भीरो-

नाकेके नाम २-नक्र१कुम्भीर २॥

-ऽथ महीलता ॥ २१ ॥ गण्डूपदः किंचुलको-

केंचुवाके नाम ३-महीलता १ ॥२१॥ गण्डूपद २ किंचुलक ३ ॥

निहाका गोधिका समे ।

गोहके नाम २-निहाका १ गोधिका २ ॥

रक्तपा तु जलौकायां स्त्रियां भूम्नि जलौकसः ॥ २२ ॥

जोंकके नाम ३-रक्तपा १ जलौका २ जलौकस् ३ ॥ २२ ॥

मुक्तास्फोटः स्त्रियां शुक्तिः-

समुद्रकी सीपीके नाम २-मुक्तास्फोट १ शुक्ति २ ॥

शंखः स्यात्कम्बुरस्त्रियौ ।

शंखके नाम २-शंख १ कम्बु २॥

क्षुद्रशंखाः शंखनखाः-

छोटे शंखके नाम २-क्षुद्रशंख १ शंखनख २ ॥

-शम्बूका जलशुक्तयः ॥२३॥

सब सीपीके नाम २—शम्बूक १ जलशुक्ति २ ॥ २३ ॥

भेके मण्डूकवर्षाभूशालूरप्लवदर्दुराः ।

मेढकके नाम ६—भेक १ मण्डूक २ वर्षाभू ३ शालूर ४ प्लव ५ दर्दुर ६ ॥

शिली गण्डूपदी—

कछुईके नाम २—शिली १ गण्डूपदी २ ॥

—भेकी वर्षाभ्वी—

मेढकीके नाम२—भेकी १ वर्षाभ्वी २ ।

—कमठी डुलिः ॥ २४ ॥

कछुईके नाम २—कमठी १ डुलि २ ॥ २४ ॥

मद्गुरस्य प्रिया शृङ्गी—

शींगीका नाम १—शृङ्गी १ ॥

—दुर्नामा दीर्घकोशिका ।

झिकवाके नाम२—दुर्नामा १ दीर्घकोशिका २ ॥

जलाशयो जलाधार—

तडाग झीलादि सब जलाशयोंके नाम २—जलाशय १ जलाधार २ ॥

—स्तत्रागाधजलो ह्रदः ॥२५॥

कुण्डका नाम १—ह्रद १ ॥२५॥

आहावस्तु निपानं स्यादुपकूपजलाशये ।

कूपके निकटकी चरही (जलके लिये बनायी हुई)के नाम २—आहाव १ निपान २ ॥

पुंस्येवान्धुः प्रहिः कूप उदपानं तु पुंसि वा ॥ २६ ॥

कुएंके नाम ४—अन्धु १ प्रहि २ कूप ३ उदपान ४ ॥ २६ ॥

नेमिस्त्रिकाऽस्य—

कुएंकी पाठिकाका नाम १—त्रिका १॥

—वीनाहो मुखबन्धनमस्य यत् ।

पक्की जगतका नाम १—वीनाह १॥

पुष्करिण्यां तु खातं स्या—

चौकोने तालाबके नाम २—पुष्करिणी १ खात २ ॥

—दखातं देवखातकम् ॥ २७ ॥

नहीं खोदे हुए तालाबके नाम २—अखात १ देवखातक २ ॥ २७ ॥

पद्माकरस्तडागोऽस्त्री—

जिस तालाबमें कमल हों उसके नाम २—पद्माकर १ तडाग २ ॥

—कासारः सरसी सरः ।

सामान्य तालाबके नाम ३—कासार १ सरसी २ सरस् ३ ॥

वेशन्तः पल्वलं चाल्पसरो-

छोटी तलैयाके नाम ३—वेशन्त १ पल्वल २ अल्पसरस् ३ ॥

—वापी तु दीर्घिका ॥ २८ ॥

बावडीके नाम २—वापी १ दीर्घिका ॥ २ ॥ २८ ॥

खेयं तु परिखा—

खाँचा (खाई) के नाम २—खेय १ परिखा २ ॥

—धारस्त्वम्भसां यत्र धारणम् ।

बांधका नाम १—आधार १ ॥

स्यादालवालमावालमावापो—

थाल्हाके नाम ३—आलवाल १ आवाल २ आवाप ३ ॥

—ऽथ नदी सरित् ॥ २९ ॥ तरंगिणी शैवलिनी तटिनी ह्रादिनी धुनी । स्रोतस्वती द्वीपवती स्रवन्ती निम्नगापगा ॥ ३० ॥

नदीके नाम १२—नदी १ सरित् २ ॥ २९ ॥ तरंगिणी ३ शैवलिनी ४ तटिनी ५ ह्रादिनी ६ धुनी ७ स्रोतस्वती ८ द्वीपवती ९ स्रवन्ती १० निम्नगा ११ आपगा १२ ॥ ३० ॥

गंगा विष्णुपदी जह्नुतनया सुरनिम्नगा । भागीरथी त्रिपथगा त्रिस्रोता भीष्मसूरपि ॥ ३१ ॥

गंगाजीके नाम ८—गंगा १ विष्णुपदा २ जह्नुतनया ३ सुरनिम्नगा ४ भागीरथी ५ त्रिपथगा ६ त्रिस्रोतस् ७ भीष्मसू ८ ॥ ३१ ॥

कालिन्दी सूर्यतनया यमुना शमनस्वसा ।

यमुनाके नाम ४—कालिन्दी १ सूर्यतनया २ यमुना ३ शमनस्वसृ ४ ॥

रेवा तु नर्मदा सोमोद्भवा मेकलकन्यका ॥ ३२ ॥

नर्मदाके नाम ४—रेवा १ नर्मदा २ सोमोद्भवा ३ मेकलकन्यका ४ ॥ ३२ ॥

करतोया सदानीरा—

गौरीविवाहमें जो कन्यादानजलसे उत्पन्न हुई उस नदीके नाम २—करतोया १ सदानीरा २ ॥

—बाहुदा सैतवाहिनी ।

सहस्रबाहुकी नदीके नाम २—बाहुदा १ सैतवाहिनी ॥ २ ॥

शतद्रुस्तु शुतुद्रिः स्या—

शतलजके नाम २—शतद्रु १ शुतुद्रि २ ॥

—द्विपाशा तु विपाट् स्त्रियाम् ३३

व्यासनदीके नाम २ —विपाशा १ विपाश् २ ॥ ३३ ॥

शोणो हिरण्यवाहः स्या—

शोणभद्रके नाम २—शोण १ हिरण्यवाह २ ॥

—कुल्याल्पा कृत्रिमा सरित् ।

नहरका नाम १—कुल्या १ ॥

शरावती वेत्रवती चन्द्रभागा सरस्वती ॥ ३४ ॥ कावेरी-

शरावतीका नाम १-शरावती १। वेत्रवतीका नाम १-वेत्रवती १। चिनावका नाम १-चन्द्रभागा १। सरस्वतीका नाम १-सरस्वती १। ॥ ३४ ॥ कावेरीका नाम १ कावेरी १।

-सरितोऽन्याश्च-

और भी कौशिकी आदि नदियाँ हैं।

-संभेदः सिन्धुसंगमः ।

जहां एक नदी दूसरीसे मिलती है उस संगमके नाम २-सम्भेद १ सिन्धुसंगम २ ॥

द्वयोः प्रणाली पयसः पदव्यां-

पनारका नाम १-प्रणाली १ ॥

-त्रिषु तूत्तरौ ॥ ३५ ॥

आगे होनेवाले दोनों शब्द तीनों लिंगोंमें होते हैं ॥ ३५ ॥

देविकायां सरय्वां च भवे दाविकसारवौ ।

देविका नदीमें जो जो उत्पन्न हों उनका नाम १-दाविक १॥ सरयूमें जो जो उत्पन्न हों उनका नाम १-सारव १।

सौगन्धिकं तु कह्लारं-

कुई (संध्यामें खिलनेवाले श्वेतकमल) के नाम २-सौगंधिक १ कह्लार २ ॥

-हल्लकं रक्तसन्ध्यकम् ॥ ३६ ॥

लाल कुईके नाम २-हल्लक १ रक्तसन्ध्यक २ ॥ ३६ ॥

स्यादुत्पलं कुवलय-

कुमुदकमल साधारणके नाम २-उत्पल १ कुवलय २ ॥

-मथ नीलाम्बुजन्म च । इन्दीवरं च नीलेऽस्मिन्-

काले कमलके नाम २-नीलाम्बुजन्मन् १ इन्दीवर २ ॥

-सिते कुमुदकैरवे ॥ ३७ ॥

उज्ज्वल कमलके नाम २-कुमुद १ कैरव २ ॥ ३७ ॥

शालकमेषां कन्दः स्या-

कमलोंके कन्दका नाम १-शालूक १॥

द्वारिपर्णी तु कुम्भिका ।

जलकुम्भीके नाम २-वारिपर्णी १ कुम्भिका २ ॥

जलनीली तु शेवालं शैवलो-

शैवालके नाम ३-जलनीली १ शेवाल २ शैवल ३ ॥

-ऽथ कुमुद्वती ॥ ३८ ॥ कुमुदिन्यां-

कुमुदिनी वा कुमुदयुक्त देशके नाम २-कुमुद्वती १ ॥३८॥ कुमुदिनी २ ॥

-नलिन्यां तु बिसिनीपद्मिनीमुखाः ।

कमलिनीके नाम ३—नलिनी १ बिसिनी २ पद्मिनी ३ आदि ॥

वा पुंसि पद्मं नलिनमरविन्दं महोत्पलम् ॥ ३९ ॥ सहस्रपत्रं कमलं शतपत्रं कुशेशयम् । पंकेरुहं तामरसं सारसं सरसीरुहम् ॥ ४० ॥ बिसप्रसूनराजीवपुष्कराम्भोरुहाणि च ।

कमलमात्रके नाम १६—पद्म १ नलिन २ अरविन्द ३ महोत्पल ४ ॥३९॥ सहस्रपत्र ५ कमल ६ शतपत्र ७ कुशेशय ८ पंकेरुह ९ तामरस १० सारस ११ सरसीरुह १२ ॥ ४० ॥ बिसप्रसून १३ राजीव १४ पुष्कर १५ अम्भोरुह १६ ॥

पुण्डरीकं सिताम्भोज—

उज्ज्वल कमलके नाम २—पुण्डरीक १ सिताम्भोज २ ॥

—मथ रक्तसरोरुहे ॥ ४१ ॥ रक्तोत्पलं कोकनदं—

लाल कमलके नाम ३—रक्तसरोरुह १॥४१॥ रक्तोत्पल २ कोकनद ३ ॥

—नालो नाल—

कमलकी डांडीके नाम २—नाल (पुँलिंग) १ नाल (नपुंसकलिंग) २॥

—मथास्त्रियाम् । मृणालं बिस—

भसींड़के नाम २—मृणाल १ बिस २॥

—मब्जादिकदम्बे खंडमास्त्रियाम् ॥ ४२ ॥

कमलादिके समूहका नाम १—खण्ड १ ॥ केवल भी नाम १— खण्ड १ ॥ ४२ ॥

करहाटः शिफाकन्दः—

कमलकी जड़के नाम २—करहाट १ शिफाकन्द २ ॥

—किंजल्कः केसरोऽस्त्रियाम् ।

कमल पुष्पके मध्यमें जो झालर होती है उसके नाम २—किंजल्क १ केसर २

संवर्त्तिका नवदलं—

कमलके नये पत्तोंके नाम २—संवर्तिका १ नवदल २ ॥

—बीजकोशो वराटकः ॥ ४३ ॥

कमलाक्षके नाम २—बीजकोश १ वराटक २ ॥ ४३ ॥

उक्तं स्वर्व्योमदिक्कालधीशब्दादि सनाट्यकम् । पातालभोगि नरकं वारि चैषां च सङ्गतम् ॥ ४४ ॥ इत्यमरसिंहकृतौ नामलिंगानुशासने। स्वरादिकांडः प्रथमः सांग एव समर्थितः ॥ १ ॥

इति श्रीमदमरसिंहविरचितामरकोशस्य भाषाटीकायां वारिवर्गः ॥ १० ॥

इति प्रथमः कांडः समाप्तः ।

॥ श्रीः ॥

अथ द्वितीयः काण्डः ।

अथ भूमिवर्गः १.

वर्गाः पृथ्वीपुरक्ष्माभृद्वनौषधिमृगादिभिः । नृब्रह्मक्षत्रविट्शूद्रैः सांगोपांगैरिहोदिताः ॥ १ ॥

इस द्वितीय काण्डमें भूमिवर्ग १, पुरवर्ग २, शैलवर्ग ३, वनौषधिवर्ग४, सिंहादिवर्ग ५, मनुष्यवर्ग ६, ब्रह्मवर्ग-७, क्षत्रियवर्ग ८, वैश्यवर्ग ९, शूद्रवर्ग १० सांगोपांग कहेंगे ॥ १ ॥

भूर्भूमिरचलानन्ता रसा विश्वंभरा स्थिरा । धरा धरित्री धरणिः क्षोणिर्ज्या काश्यपी क्षितिः ॥ २ ॥ सर्वसहा वसुमती वसुधोर्वी वसुंधरा। गोत्रा कुः पृथिवी पृथ्वी क्ष्मावनिर्मेदिनी मही ॥ ३ ॥

पृथ्वीके नाम २७–भू १ भूमि २ अचला ३ अनन्ता ४ रसा ५ विश्वम्भरा ६ स्थिरा ७ धरा ८ धरित्री ९ धरणि १० क्षोणि ११ ज्या १२ काश्यपी १३ क्षिति १४ ॥ २ ॥ सर्वसहा १५ वसुमती १६ वसुधा १७ उर्वी १८ वसुन्धरा १९ गोत्रा २० कु २१ पृथिवी २२ पृथ्वी २३ क्ष्मा २४अवनि २५ मेदिनी २६ मही २७ ॥ ३ ॥

मृन्मृत्तिका–

मिट्टीके नाम २–मृत् १ मृत्तिका२॥

–प्रशस्ता तु मृत्सा मृत्स्ना च मृत्तिका ।

अच्छी मिट्टीके नाम २–मृत्सा २ मृत्स्ना १ ॥

उर्वरा सर्वसस्याढ्या–

जिस मिट्टीसे सब अन्न उपजें उसका नाम १–उर्वरा १ ॥

–स्यादूषः क्षारमृत्तिका ॥ ४ ॥

खारी मिट्टी अर्थात् नोंनीके नाम २-ऊष १–क्षारमृत्तिका २ ॥ ४ ॥

ऊषवानूषरो द्वावप्यन्यलिंगौ–

कल्लरभूमिके नाम २–ऊषवत् १ ऊषर २ ॥

–स्थलं स्थली ।

स्थलके नाम २–स्थल १ स्थली २॥

समानौ मरुधन्वानौ–

निर्जल अर्थात् मरुदेशके नाम २–मरु १ धन्वन् २ ॥

–द्वे खिलाप्रहते समे ॥५॥ त्रिबिजोत खेतके नाम २–खिल १ अप्रहत २ ॥ ५ ॥

–त्वथो जगती लोको विष्टपं भुवनं जगत्।

जगत्के नाम ५–जगती १ लोक २ विष्टप ३ भुवन ४ जगत् ५ ॥

लोकोऽयं भारतं वर्षं–

हिमालयसे दक्षिण समुद्रसे उत्तरके देश तक अर्थात् हिन्दुस्थानका नाम १–भारतवर्ष १ ॥

–शरावत्यास्तु योऽवधेः ॥ ६ ॥ देशः प्राग्दक्षिणः प्राच्य–

शरावती नदीके ॥ ६ ॥ पूर्व दक्षिण देशका नाम १–प्राच्य १ ॥

–उदीच्यः पश्चिमोत्तरः।

शरावती नदीके पश्चिमोत्तरदेशका नाम–१उदीच्य १ ॥

प्रत्यन्तो म्लेच्छदेशः स्या–

फारस रूस रूम आदि देशोंके नाम २–प्रत्यन्त १ म्लेच्छदेश २।–

–न्मध्यदेशस्तु मध्यमः ॥ ७ ॥

विंध्याचलसे उत्तर, हिमालयसे दक्षिण, कुरुक्षेत्रसे पूर्व, प्रयागसे पश्चिम देशके नाम २–मध्यदेश १ मध्यम २ ॥ ७ ॥

आर्यावर्त्तः पुण्यभूमिर्मध्यं विन्ध्यहिमालयोः।

बंगालके समुद्रसे पश्चिम, अरबसमुद्रसे पूर्व, हिमाचलसे दक्षिण, विन्ध्याचलसे उत्तर देशके नाम २–आयावर्त्त १ पुण्यभूमि ॥ २ ॥

नीवृज्जनपदो–

राजाओंके वसाये हुए मगध आदि देशोंके नाम २–नीवृत् १ जनपद २ ॥

–देशविषयौ तूपवर्त्तनम् ॥ ८ ॥

देशमात्रके नाम ३–देश १ विषय २ उपवर्तन ३ ॥ ८ ॥

त्रिष्वागोष्ठा–

गोष्ठपर्यंत जो शब्द हैं वे तीनों लिंगोंमें होते हैं ॥

–न्नडप्राये नड्वान्नड्वल इत्यपि।

नडाधिकदेशके नाम २–नड्वत् १ नडल २ ॥

कुमुद्वान्कुमुदप्राये–

जहां बहुत कुमुद हों उस देशका नाम १–कुमुद्वत् १ ॥

–वेतस्वान्बहुवेतसे ॥ ९ ॥

जहां बहुत वेत हों उस देशका नाम १–वेतस्वत् २ ॥ ९ ॥

शाद्वलः शादहरिते-

जहां हरी घास हो उसका नाम १-शाद्वल १ ॥

-सजम्बाले तु पंकिलः।

जहां बहुत कीच हो उस देशका नाम १-पंकिल १ ॥

जलप्रायमनूपं स्यात्पुंसि कच्छस्तथाविधः ॥ १० ॥

जहां बहुत पानी हो उस देशके नाम ३-जलप्राय १ अनूप २ कच्छ ३ ॥ १० ॥

स्त्री शर्करा शर्करिलः शार्करः शर्करावति।

जहां रेता हो उस देशके नाम ४-शर्करा १ शर्करिल २ शार्कर ३ शर्करावत् ४ ॥

देश एवादिमा-

ऊपर कहे हुए शर्करा आदि शब्दोंमें पहले शर्करा १ और शर्करिल यह दोनों देशके ही नाम हैं ॥

-वेवमुन्नेयाः सिकतावति ॥ ११ ॥

इसी प्रकार सिकता १ और सिकतिल यह शब्द भी रेतेयुक्त देशके ही नाम हैं ॥ ११ ॥

देशो नद्यम्बुवृष्ट्यम्बुसंपन्नव्रीहिपालितः। स्यान्नदीमातृको देवमातृकश्च यथाक्रमम् ॥ १२ ॥

जहां केवल नदीजलसे खेत सींचे जायँ वर्षा न होती हो उस देशका नाम १-नदीमातृक १ ॥ जहां वर्षाके ही जलसे सींचे जायँ उसका नाम १-देवमातृक १ ॥ १२ ॥

-सुराज्ञि देशे राजन्वान्स्या-

धर्मात्मा राजाके देशका नाम १-राजन्वत् १ ॥

-त्ततोऽन्यत्र राजवान्।

सामान्य राजाके देशका नाम १-राजवत् १ ॥

गोष्ठं गोस्थानकं-

गोष्ठके नाम २--गोष्ठ १ गोस्थान २ ॥

-तत्तु गौष्ठीनं भूतपूर्वकम् ॥ १३ ॥

जहां पूर्वकालमें गायें रही हों उसका नाम १-गौष्ठीन १ ॥ १३ ॥

पर्यन्तभूः परिसरः-

नदी पर्वतादिके समीपकी भूमिके नाम २-पर्यंतभू १ परिसर २ ॥

-सेतुरालौ स्त्रियां-

पुलके नाम २-सेतु १ आलि २ ॥

-पुमान्। वामलूरश्च नाकुश्च वल्मीकं पुंनपुंसकम् ॥ १४ ॥

बमईके नाम ३-वामलूर १ नाकु २ वल्मीक ३ ॥ १४ ॥

अयनं वर्त्ममार्गाध्वपन्थानः पदवी सृतिः । सरणिः पद्धतिः पद्यावर्त्तन्येकपदीति च ॥ १५ ॥

मार्गके नाम १२—अयन १ वर्त्मन् २ मार्ग ३ अध्वन् ४ पथिन् ५ पदवी ६ सृति ७ सरणि ८ पद्धति ९ पद्या १० वर्त्तनी ११ एकपदी १२॥ १५ ॥

अतिपन्थाः सुपन्थाश्च सत्पथश्चार्चितेऽध्वनि ।

अच्छे मार्गके नाम ३—अतिपथिन् १ सुपथिन् २ सत्पथ ३ ॥

व्यध्वो दुरध्वो विपथः कदध्वा कापथः समाः ॥ १६ ॥

खराब मार्गके नाम ५—व्यध्व १ दुरध्व २ विपथ ३ कदध्वन् ४ कापथः ५ ॥ १६ ॥

अपन्थास्त्वपथं तुल्ये—

जहां मार्ग न हो उसके नाम २—अपथिन् १ चतुष्पथ २ ॥

—शृंगाटकचतुष्पथे ।

चौहट्टा वा चौकके नाम २—शृंगाटक १ चतुष्पथ २ ॥

प्रान्तरं दूरशून्योऽध्वा·

जहां बड़ी दूरतक छाया वा मनुष्यादि न हों उस मार्गका नाम १—प्रान्तर १ ॥

—कान्तारं वर्त्म दुर्गमम् ॥१७॥

चौरकण्टकादियुक्त मार्गका नाम १—कान्तार १ ॥ १७ ॥

गव्यूतिः स्त्री क्रोशयुगं—

दो कोशका नाम १—गव्यूति १ ॥

—नल्वः किष्कुचतुःशतम् ।

४०० हाथका नाम १—नल्व १ ।

घण्टापथः संसरणं—

राजमार्ग अर्थात् सड़कके नाम २—घण्टापथ १ संसरण २।—

—तत्पुरस्योपनिष्करम् ॥ १८ ॥

ग्रामके निकासका नाम १—उपनिष्कर १ ॥ १८ ॥

इति भूमिवर्गः ॥ १॥

अथ पुरवर्गः २.

पूः स्त्री पुरीनगर्यौ वा पत्तनं पुटभेदनम् । स्थानीयं निगमे—

शहरके नाम ७—पुर् १ पुरी २ नगरी ३ पत्तन ४ पुटभेदन ५स्थानीय ६ निगम ७ ॥

—ऽन्यत्तु यन्मूलनगरात्पुरम् १ ॥ तच्छाखानगरं—

शहरसम्बंधी छोटे नगरोंका नाम १— ॥ १ ॥ शाखानगर १ ॥

—वेशो वेश्याजनसमाश्रयः ।

वेश्याके स्थानके नाम २—वेश १ वेश्याजनसमाश्रय २ ॥

आपणस्तु निषद्यायां—

बजारके नाम २—आपण १ निषद्या २।

—विपणिः पण्यवीथिका ॥ २ ॥

जहाँ बाजार न हो परन्तु वस्तु बिकती हों उसके नाम २—विपणि १ पण्यवीथिका २ ॥ २ ॥

रथ्या प्रतोली विशिखा—

बीचगाँवकी गलीके नाम ३—रथ्या १ प्रतोली २ विशिखा ३ ॥

—स्याच्चयो वप्रमस्त्रियाम् ।

किलेके इधर उधरकी मिट्टीके नाम २-चय १ वप्र २ ॥

प्राकारो वरणः सालः—

किलेके नाम ३—प्राकार १ वरण २ साल ३ ॥

—प्राचीनं प्रान्ततो वृतिः ॥ ३ ॥

चारों ओर कांटोंकी बाडका नाम १—प्राचीन १ ॥ ३ ॥

भित्तिः स्त्री कुड्यं—

दीवारके नाम २—भित्ति १ कुड्य २।

—मेड्कं यदन्तर्न्यस्तकीकसम् ॥

जिस दीवारमें मजबूतीके वास्ते हड्डी आदि लगाई गई हों उसका नाम १—एड्रक १ ॥

गृहं गेहोदवसितं वेश्म सद्म निकेतनम् ॥ ४ ॥ निशान्तपस्त्यसदनं भवनागारमन्दिरम् । गृहाः पुंसि च भूम्न्येव निकाय्यनिलयालयाः ॥ ५ ॥ वासः कुटी द्वयोः शाला सभा—

गृहके नाम २०—गृह १ गेह २ उदवसित ३ वेश्मन् ४ सद्मन् ५ निकेतन ६ ॥ ४ ॥ निशान्त ७ पस्त्य ८ सदन ९ भवन १० अगार ११ मंदिर १२ गृह (पुं० बहुवचन) १३ निकाय्य १४ निलय १५ आलय १६ ॥ ५ ॥ वास १७ कुटी १८ शाला १९ सभा २० ॥

—संजवनं त्विदम् । चतुःशालं—

जिस गृहमें आमने सामने एकसे चार मकान हों उसके नाम २—संजवन १ चतुश्शाल २ ॥

—मुनीनां तु पर्णशालोटजोऽस्त्रियाम् ॥ ६ ॥

मुनियोंकी कुटीके नाम २—पर्णशाला १ उटज २ ॥ ६ ॥

चैत्यमायतनं तुल्ये—

यज्ञशालाके नाम २—चैत्य १ आयतन २ ॥

—वाजिशाला तु मन्दुरा ।

घुड़सालके नाम २—वाजिशाला १ मन्दुरा २ ॥

आवेशनं शिल्पिशाला—

कारीगरोंके स्थानके नाम २—आवेशन १ शिल्पिशाला २ ॥

—प्रपा पानीयशालिका ॥ ७ ॥

गौशाला अर्थात् पानी पिलानेके स्थानके नाम २—प्रपा १ पानीयशालिका २ ॥ ७ ॥

मठश्छात्रादिनिलयः—

विद्यार्थी और संन्यासी आदिके रहनेके स्थानका नाम १—मठ १ ॥

—गञ्जा तु मदिरागृहम् ।

जहां मद्य बनाया जाय अथवा जहां मद्य रखा जाय उस स्थानके नाम २—गञ्जा १ मदिरागृह २ ॥

गर्भागारं वासगृह—

गृहके मध्यभागके नाम २—गर्भागार १ वासगृह २ ॥

—मरिष्टं सूतिकागृहम् ॥ ८ ॥

सोबरके (प्रसूतीके) गृहके नाम २—अरिष्ट १ सूतिकागृह २ ॥ ८ ॥

वातायनं गवाक्षो—

झरोखोंके नाम २—वातायन १ गवाक्ष २ ।

—ऽथ मण्डपोऽस्त्री जनाश्रयः ।

मण्डपके नाम २—मण्डप १ जनाश्रय २ ॥

हर्म्यादि धनिनां वासः—

धनवानोंके गृहका नाम १—हर्म्य१ आदि ॥

—प्रासादो देवभूभुजाम् ॥ ९ ॥

देवता और राजाओंके गृहका नाम १—प्रासाद १ ॥ ९ ॥

सौधोऽस्त्री राजसदन—

राजाओंके गृहके नाम २—सौध १ राजसदन २ ॥

—मुपकार्योपकारिका ।

राजाओंके साधारण गृहोंके नाम २—उपकार्या १ उपकारिका २ ॥

स्वस्तिकः सर्वतोभद्रो नन्द्यावर्त्तादयोऽपि च ॥ १० ॥ विच्छन्दकः प्रभेदा हि भवन्तीश्वरसद्मनाम् ।

राजगृहोंके भेद जिनमें ४ दरवाजे आदि भेद हैं ॥ स्वस्तिक १ सर्वतोभद्र २ नन्द्यावर्त्त ३॥१०॥ विच्छन्दक ४ इत्यादि ।

स्त्र्यगारं भूभुजामन्तःपुरं स्यादवरोधनम् ॥ ११ ॥ शुद्धान्तश्चावरोधश्च—

राजस्त्रियोंके रहनेके स्थानके नाम४—अन्तःपुर १ अवरोधन २ ॥ ११ ॥ शुद्धान्त ३ अवरोध ४ ॥

स्यादट्टः क्षौममस्त्रियाम् ।

गृहके ऊपरके घरके नाम २—अट्ट १ क्षौम २ ॥

प्रघाणप्रघणालिन्दा बहिर्द्वारप्रकोष्ठके ॥ १२ ॥

दहलीजके नाम ३—प्रघाण १ प्रघण २ अलिन्द ३ ॥ १२ ॥

गृहावग्रहणी देह-

देहलीके नाम २—गृहावग्रहणी १ देहली २ ॥

—ल्यङ्गणं चत्वराजिरे ।

आंगनके नाम ३—अंगण १ चत्वर २ अजिर ३ ॥

अधस्ताद्दारुणि शिला-

दरवाजेके नीचेके काठका नाम १—शिला १ ॥

—नासादारूपरि स्थितम् ॥ १३ ॥

दरवाजेके ऊपरके काठका नाम १—नासा १ ॥ १३ ॥

प्रच्छन्नमन्तर्द्वारं स्या-

खिडकीके नाम २—प्रच्छन्न १ अन्तर्द्वार २ ॥

—त्पक्षद्वारं तु पक्षकम् ।

बगलके द्वारके नाम २—पक्षद्वार १ पक्षक २ ॥

वलीकनीध्रे पटलप्रान्ते-

वरौनीके नाम ३—वलीक १ नीध्र २ पटलप्रान्त ३ ॥

—ऽथ पटलं छदिः ॥ १४ ॥

छानिके नाम २—पटल १ छदि २ ॥ १४ ॥

गोपानसी तु वलभी छादने वक्रदारुणि ।

छज्जेके नाम २—गोपानसी १ वलभी २ ।

कपोतपालिकायां तु विटंकं पुंनपुंसकम् ॥ १५ ॥

कबूतरखानेके नाम २—कपोतपालिका १ विटंक २ ॥ १५ ॥

स्त्री द्वार्द्वारं प्रतीहारः-

द्वारके नाम ३—द्वार् १ द्वार २ प्रतीहार ३ ॥

—स्याद्वितर्दिस्तु वेदिका ।

वेदीके नाम २—वितर्दि १ वेदिका २॥

तोरणोऽस्त्री बहिर्द्वारं-

घरके बाहरके फाटकके नाम २—तोरण १ बहिर्द्वार २—

—पुरद्वारं तु गोपुरम् ॥ १६ ॥

नगरके बाहरके फाटकके नाम २—पुरद्वार १ गोपुर २ ॥ १६ ॥

कूटं पूर्द्वारि यद्धस्तिनखस्तस्मि-

नगरके द्वारसे उतरनेके लिये उतार चढावकी भूमिका नाम १—हस्तिनख १।

--अथ त्रिपु । कपाटमररं तुल्ये-

किवाड़ोंके नाम २-कपाट १ अरर २॥

-तद्विष्कम्भोऽर्गलं नना ॥१७॥

किवाड़ोंके डण्डेलेका नाम १- अर्गल १ ॥ १७॥

आरोहणं स्यात्सोपानं-

मिट्टी पत्थर आदिकी सीढ़ीके नाम २-आरोहण १ सोपान २ ।

-निश्रेणिस्त्वधिरोहणी ।

काठकी सीढ़ीके नाम २-निश्रेणि १ अधिरोहणी २ ॥

संमार्जनी शोधनी स्यात्-

बुहारी अर्थात् झाडूके नाम २-संमार्जनी १ शोधनी २ ॥

-संकरोऽवकरस्तथा ॥ १८ ॥

करकट वा कूड़ेके नाम २-संकर १ अवकर २ ॥ १८॥

क्षिप्ते मुखं निःसरणं-

निकासके नाम २-मुख १ निःसरण २ ॥

-संनिवेशो निकर्षणम् ।

नगर इत्यादिमें स्थानके निमित्त मापी हुई भूमिके नाम २-संनिवेश १ निकर्षण २ ॥

समौ संवसथग्रामौ-

ग्रामके नाम २-संवसथ १ ग्राम २॥

-वेश्मभूर्वास्तुरस्त्रियाम्॥ १९ ॥

घरकी भूमिका नाम १-वास्तु १ ॥ १९ ॥

ग्रामान्त उपशल्यं स्यात्-

ग्रामके समीपका नाम १-उपशल्य १॥

-सीमसीमे स्त्रियामुभे ।

सीमाके नाम २-सीमन् १सीमा २॥

घोष आभीरपल्ली स्यात्-

अहीरोंके ग्रामके नाम २-घोष १ आभीरपल्ली २ ॥

-पक्कणः शबरालयः ॥ २० ॥

ज़ंगलियोंके ग्रामके नाम २-पक्कण १ शबरालय २ ॥ २० ॥

इति पुरवर्गः ॥ २ ॥

अथ शैलवर्गः ३.

महीध्रे शिखरिक्ष्माभृदहार्यधरपर्वताः । अद्रिगोत्रगिरिग्रावाचलशैलशिलोच्चयाः ॥ १ ॥

पर्वतके नाम १३-महीध्र १ शिखरिन् २ क्ष्माभृत् ३ अहार्य ४ धर ५ पर्वत ६ आद्रि ७ गोत्र ८ गिरि ९ ग्रावन् १० अचल ११ शैल १२ शिलोच्चय १३ ॥ १ ॥

लोकालोकश्चक्रवाल-

जो पर्वत पृथ्वीको धरे हैं उनके नाम २-लोकालोक १ चक्रवाल २ ॥

-स्त्रिकूटस्त्रिककुत्समौ ।

त्रिकूट कि जिसपर लंका वसी उसके नाम २-त्रिकूट १ त्रिककुद् २॥

अस्तस्तु चरमक्ष्माभृ-

अस्ताचलके नाम २-अस्त १ चरमक्ष्माभृत् २ ॥

-दुदयः पूर्वपर्वतः ॥ २ ॥

उदयाचलके नाम २-उदय १ पूर्वपर्वत २ ॥ २ ॥

हिमवान्निषधो विन्ध्यो माल्यवान्पारियात्रकः । गन्धमादनमन्ये च हेमकूटादयो नगाः ॥ ३ ॥

पर्वतोंके भेद ६-हिमवत् १ निषध २ विन्ध्य ३ माल्यवत् ४ पारियात्रक ५ गन्धमादन ६ तथा हेमकूट आदि अन्य भी पर्वत हैं ॥ ३ ॥

पाषाणप्रस्तरग्रावोपलाश्मानः शिला दृषत् ।

पत्थरके नाम ७-पाषाण १ प्रस्तर २ ग्रावन् ३ उपल ४ अश्मन् ५ शिला ६ दृषत् ७ ॥

कूटोऽस्त्री शिखरं शृङ्गं-

पहाड़की चोटी वा कंगूराके नाम ३-कूट १ शिखर २ शृङ्ग ३ ॥

-प्रपातस्त्वतटो भृगुः ॥ ४ ॥

बीहड़के नाम ३-प्रपात १ अतट २ भृगु ३ ॥ ४ ॥

कटकोऽस्त्री नितम्बोऽद्रेः-

बीच पर्वतका नाम १-कटक १ ॥

-स्नुः प्रस्थः सानुरस्त्रियाम् ।

पर्वतके किनारेके नाम ३-स्नु १ प्रस्थ २ सानु ३ ॥

उत्सः प्रस्रवणं-

जहां पर्वतसे चूकर पानी बटुरता है अर्थात् कुण्डके नाम २-उत्स १ प्रस्रवण २ ॥

-वारिप्रवाहो निर्झरो झरः ॥५॥

झरनोंके नाम ३-वारिप्रवाह १ निर्झर २ झर ३ ॥५॥

दरी तु कन्दरो वा स्त्री-

बनाई हुई गुफाके नाम २-दरी १ कन्दर-कन्दरा २ ॥

-देवखातबिले गुहा । गह्वरं-

अपने आप बनी हुई गुफाके नाम ४-देवखात १ बिल २ गुहा ३ गह्वर४॥

-गण्डशैलास्तु च्युताः स्थूलोपला गिरेः ॥ ६ ॥

जो कि पर्वतसे भारी भारी पत्थर गिरते हैं उनका नाम १-गण्डशैल १॥६॥

खनिः स्त्रियामाकरः स्यात्-

खानिके नाम २-खनि १ आकर २ ॥

--पादाः प्रत्यंतपर्वताः ।

पर्वतके समीप छोटे पर्वतके नाम २–पाद १ प्रत्यन्तपर्वत २ ॥

उपत्यकाद्रेरासन्ना भूमिरूर्ध्वमधित्यका ॥ ७ ॥

पहाड़के नीचेकी भूमिका नाम १–उपत्यका १ । पहाड़की ऊपरकी भूमिका नाम १–अधित्यका १ ॥ ७ ॥

धातुर्मनःशिलाद्यद्रेर्गैरिकं तु विशेषतः ।

पर्वतसे उत्पन्न हुए जो मनःशिल आदिका नाम १–धातु १ । गैरिक (गेरू) तो धातु शब्दसे ही विख्यात है।

निकुञ्जकुञ्जौ वा क्लीबे लतादिपिहितोदरे ॥ ८ ॥

जहां कि बहुत लतातृणादिसे घिरा हो उसके नाम २–निकुञ्ज १ कुञ्ज २ ॥ ८ ॥

इति शैलवर्गः ॥ ३ ॥

अथ वनौषधिवर्गः ४.

अटव्यरण्यं विपिनं गहनं काननं वनम् ।

वनके नाम ६–अटवी १ अरण्य २ विपिन ३ गहन ४ कानन ५ वन ६ ॥

महारण्यमरण्यानी–

बड़े वनके नाम २–महारण्य १ अरण्यानी २ ॥

–गृहारामास्तु निष्कुटाः ॥ १ ॥

गृहके समीप बनाये हुए बगीचेके नाम २–गृहाराम १ निष्कुट २ ॥ १ ॥

आरामः स्यादुपवनं कृत्रिमं वनमेव यत् ।

गृहसमीपके वनके नाम २–आराम १ उपवन २ ॥

अमात्यगणिकागेहोपवने वृक्षवाटिका ॥ २ ॥

जहां राजाके नौकर चाकर और उनकी वेश्या रहें उस बगीचेका नाम १–वृक्षवाटिका १ ॥ २ ॥

पुमानाक्रीड उद्यानं राज्ञः साधारणं वनम् ।

राजाके उस बगीचेका नाम जिसका सब पुरुष भोग कर सकें १–आक्रीड १ ॥

स्यादेतदेव प्रमदवनमंतःपुरोचितम् ॥ ३ ॥

जहां राजा स्त्रियों सहित क्रीडा करें उस बगीचेका नाम १–प्रमदवन १ ॥ ३ ॥

वीथ्यालिरावलिः पंक्तिः श्रेणी–

पंक्तिके नाम ५–वीथी १ आलि २ आवालि ३ पंक्ति ४ श्रेणी ५ ॥

–लेखास्तु राजयः ।

लकीरके नाम २–लेखा १ राजि २ ॥

वन्या वनसमूहे स्या–

वनके झुंडके नाम २—वन्या १ बनसमूह २ ॥

—दंकुरोऽभिनवोद्भिदि ॥ ४ ॥

अंकुरके नाम २—अंकुर १ अभिनवोद्भिद् २ ॥ ४ ॥

वृक्षो महीरुहः शाखी विटपी पादपस्तरुः । अनोकहः कुटः शालः पलाशी द्रुद्रुमागमाः ॥ ५॥

वृक्षके नाम १३—वृक्ष १ महीरुह २ शाखिन् ३ विटपिन् ४ पादप ५ तरु ६ अनोकह ७ कुट ८ शाल ९ पलाशिन् १० द्रु ११ द्रुम १२ अगम १३॥५॥

वानस्पत्यः फलैः पुष्पात्-

जो वृक्ष फूलकर फले उसका नाम १—वानस्पत्य १ ॥

—तैरपुष्पाद्वनस्पतिः ।

जो कि फूलने विना फलें जैसे गूलर कटहर आदि उनका नाम १—वनस्पति १ (वृक्षमात्रको भी वनस्पति कहते हैं)।

ओषध्यः फलपाकान्ताः स्यु-

फलकर पकनेपर नष्ट होनेवाले अर्थात् अन्न आदिका नाम १—ओषधी १

—रवन्ध्यः फलेग्रहिः ॥ ६ ॥

फलनेवाले वृक्षके नाम २—अवन्ध्य १ फलेग्रहि २ ॥ ६ ॥

वन्ध्योऽफलोऽवकेशी च-

जो नहीं फले उस वृक्षके नाम ३—वन्ध्य १ अफल २ अवकेशिन् ३ ॥

--फलवान् फलिनः फली ।

फलयुक्त वृक्षके नाम ३—फलवत् १ फलिन २ फलिन् ३ ॥

प्रफुल्लोत्फुल्लसंफुल्लव्याकोशविकचस्फुटाः ॥ ७ ॥ फुल्लश्चैते विकसिते-

फूलयुक्त (विकसित) वृक्षके नाम ८--प्रफुल्ल १ उत्फुल्ल २ संफुल्ल ३ व्याकोश ४ विकच ५ स्फुट ६ ॥ ७ ॥ फुल्ल ७ विकसित ८ ।

--स्युरवन्ध्यादयस्त्रिषु ।

अवंध्य आदि शब्द तीनों लिंगोंमें होते हैं ॥

स्थाणुर्वा ना ध्रुवः शंकु--

ठूठ वृक्षके नाम ३—स्थाणु १ ध्रुव २ शंकु ३ ॥

—र्ह्रस्वशाखाशिफः क्षुपः ॥ ८ ॥

जिस वृक्षमें छोटी २ डालें और जड़े हों उसका नाम १—क्षुप १॥ ८॥

अप्रकाण्डे स्तम्बगुल्मौ-

जिसमें डालियां न हों उस वृक्षके नाम २—स्तम्ब १ गुल्म २ ॥

—वल्ली तु व्रततिर्लता ।

बेलके नाम ३—वल्ली १ व्रतति २ लता ३ ॥

लता प्रतानिनी वीरुद्गुल्मिन्युलप इत्यपि ॥ ९ ॥

बडी लंबी बेलके नाम ३–वीरुद् १ गुल्मिनी २ उलप ३ ॥ ९ ॥

नगाद्यारोह उच्छ्राय उत्सेधश्चोच्छ्रयश्च सः ।

वृक्षादिककी उचाईके नाम ३–उच्छ्राय १ उत्सेध २ उच्छ्रय ३ ॥

अस्त्री प्रकाण्डः स्कन्धः स्यान्मूलाच्छाखावधिस्तरोः ॥ १० ॥

जडसे शाखातक पेडके नाम २–प्रकाण्ड १ स्कन्ध २ ॥ १० ॥

समे शाखालते–

डालके नाम २–शाखा १ लता २ ॥

--स्कन्धशाखाशाले--

प्रधानशाखा (मोटे डगों) के नाम २–स्कन्धशाखा १ शाला २ ॥

–शिफाजटे ।

जडके नाम २–शिफा १ जटा २॥

शाखाशिफावरोहः स्या--

अवरोहका नाम १–अवरोह १ ॥

–न्मूलाच्चाग्रं गता लता ॥११॥

मूलसे लेकर अग्रभागपर्यंत गई हुई गिलोय आदिके बेलका नाम भी 'अवरोह' है ॥ ११ ॥

शिरोऽग्रं शिखरं वा ना--

टैनीके नाम २–शिरोग्र १ शिखर२॥

--मूलं बुध्नोऽङ्घ्रिनामकः ।

मिट्टीके भीतरकी जडके नाम ३--मूल१ बुध्न २ अंघ्रिनामक सब शब्द३॥

सारो मज्जा नरि--

गूदेके नाम २--सार १ मज्जन् २॥

--त्वक् स्त्री वल्कं वल्कलमस्त्रियाम् ॥ १२ ॥

वृक्षकी छालके नाम ३--त्वच् १ वल्क २ वल्कल ३ ॥ १२ ॥

काष्ठं दा--

काठके नाम २--काष्ठ १ दारु २ ॥

--र्विन्धनं त्वेध इध्ममेधः समित्स्त्रियाम् ।

ईंधनके नाम ३–इन्धन १ एध २ --इध्म ३ । यज्ञादिके ईंधनके नाम २। एधस् १ समिध् २ ॥

निष्कुहः कोटरं वा ना--

खोकलके नाम २–निष्कुह १ कोटर२॥

--वल्लरिर्मञ्जरिः स्त्रियौ ॥ १३ ॥

मंजरीके नाम २–वल्लरि १ मंजरि २ ॥ १३ ॥

पत्रं पलाशं छदनं दलं पर्णं छदः पुमान् ।

पत्तोंके नाम ६--पत्र १ पलाश २ छदन ३ दल ४ पर्ण ५ छद ६ ॥

पल्लवोऽस्त्री किसलयं--

कोंपलके नाम२--पल्लव १किसलय २ ॥

--विस्तारो विटपोऽस्त्रियाम्॥ १४॥

डालोंके फैलनेके नाम २--विस्तार१ विटप २ ॥ १४ ॥

वृक्षादीनां फलं सस्यं--

वृक्षादिकोंके फलका नाम १--सस्य १ ॥

--वृन्तं प्रसवबन्धनम् ।

नाकूके नाम २--वृन्त १ प्रसव-बन्धन २ ॥

आमे फले शलाटुः स्या--

कच्चे फलका नाम १ --शलाटु १॥

--च्छुष्के वान--

सूखे फलका नाम १--वान १ ॥

--मुभे त्रिषु ॥ १५ ॥

शलाटु और वान शब्द तीनों लिंगोंमें होते हैं ॥ १५ ॥

क्षारको जालकं क्लीबे--

नई कली व कलीकी डण्डीके नाम २--क्षारक १ जालक २ ॥

--कलिका कोरकः पुमान् ।

बिना फूली कलीके नाम २--कलिका १ कोरक २ ॥

स्याद्गुच्छकस्तु स्तबकः--

गुच्छेका नाम १--स्तबक १ ॥

--कुड्मलो मुकुलोऽस्त्रियाम् १६

अधफूली कलीके नाम २--कुड्मल १ मुकुल २ ॥ १६ ॥

स्त्रियः सुमनसः पुष्पं प्रसूनं कुसुमं सुमम् ।

फूलके नाम ५--सुमनस् १ पुष्प २ प्रसून ३ कुसुम ४ सुम ५ ॥

मकरन्दः पुष्परसः--

फूलके रसके नाम २--मकरन्द १ पुष्परस २ ॥

--परागः सुमनोरजः ॥ १७ ॥

फूलकी धूलीके नाम २--पराग १ सुमनोरजस् २ ॥ १७ ॥

द्विहीनं प्रसवे सर्वं--

आगे अश्वत्थ आदिकोंके जो फल-पुष्पादिकोंके नाम कहेंगे वह शब्द केवल नपुंसकलिंगमें ही होंगे ॥

--हरीतक्यादयः स्त्रियाम् ।

हरीतकी आदिकोंके फलोंके वाचक (हरीतकी) आदि शब्द स्त्रीलिंगमें होंगे ॥

आश्वत्थवैणवप्लाक्षनैयग्रोधैङ्गुदं फले ॥ १८ ॥ बार्हतं च--

पीपलके फलका नाम १ आश्वत्थ१॥

वांसका फल--वैणव १ ॥

पाकड़के फलका नाम प्लाक्ष १ ॥

वटके फलका नाम--नैयग्रोध १ ॥

–इंगुदीके फलका नाम ऐङ्गुद १॥१८॥

–भटकटैयाके फलका नाम बार्हत १॥

–फले जम्बवा जम्बू स्त्री जम्बु जाम्बवम् ।

जामुनके फलके नाम ३–जम्बू १ जम्बु २ जाम्बव ३ ॥

पुष्पे जातीप्रभृतयः स्वलिंगा–

जूहीके फुलका नाम १–जाती १ ॥

–व्रीहयः फले ॥ १९ ॥

यव आदि धान्योंके फल भी यव आदि नामसे ही कहे जाते हैं, जैसे यवका फल यव, माषका फल माष, मुद्गका फल मुद्ग ॥ १९ ॥

विदार्याद्यास्तु मूलेऽपि–

विदारी आदिकोंके जड़, पुष्प और फल भी विदारी आदि नामवाले ही होते हैं अर्थात् जाती आदि शब्दोंके पुष्पादिक भी स्वलिंग ही होते हैं ॥

–पुष्पे क्लीबेऽपि पाटला ।

पाटलाके पुष्पका नाम १–पाटला १॥ यह शब्द पुष्पका नाम होकर भी स्वलिङ्ग अर्थात् पाटलाका लिङ्ग जो स्त्रीलिङ्ग उसीमें होता है ॥

बोधिद्रुमश्चलदलः पिप्पलः कुञ्जराशनः ॥ २० ॥ अश्वत्थे–

पीपलके नाम ५–बोधिद्रुम १ चलदल २ पिप्पल ३ कुंजराशन ४ ॥ २० ॥ अश्वत्थ ५ ॥

–ऽथ कपित्थे स्युर्दधित्थग्राहिमन्मथाः । तस्मिन्दधिफलः पुष्पफलदन्तशठावपि ॥ २१ ॥

कैथके नाम ७–कपित्थ १ दधित्थ २ ग्राहिन् ३ मन्मथ ४ दधिफल ५ पुष्पफल ६ दन्तशठ ७ ॥ २१ ॥

उदुम्बरो जन्तुफलो यज्ञाङ्गो हेमदुग्धकः ।

गूलरके नाम ४–उदुम्बर १ जन्तुफल २ यज्ञांग ३ हेमदुग्धक ४ ॥

कोविदारे चमरिकः कुद्दालो युगपत्रकः ॥ २२ ॥

कचनारके नाम ४–कोविदार १ चमरिक २ कुद्दाल ३ युगपत्रक ४ ॥२२॥

सप्तपर्णो विशालत्वक्छारदो विषमच्छदः ।

छतिवनीके नाम ४–सप्तपर्ण १ विशालत्वच् २ शारद ३ विषमच्छद ४।

आरग्वधे राजवृक्षशम्याकचतुरंगुलाः ॥ २३ ॥ आरेवतव्याधिघातकृतमालसुवर्णकाः ।

अमलतासके नाम ८–आरग्वध १ राजवृक्ष २ शम्याक ३ चतुरंगुल ४ ॥२३॥

आरेवत ५ व्याधिघात ६ कृतमाल ७ सुवर्णक ८ ॥

स्युर्जम्बीरे दन्तशठजम्भजम्भीरजम्भलाः ॥ २४ ॥

जम्बीरीनिंबूके नाम ५—जम्बीर १ दन्तशठ २ जम्भ ३ जंभीर ४ जंभल ५ ॥ २४ ॥

वरणो वरुणः सेतुस्तिक्तशाखः कुमारकः ।

वरुण (वरुणा)के नाम ५—वरण १ वरुण २ सेतु ३ तिक्तशाख ४ कुमारक ५ ॥

पुन्नागे पुरुषस्तुङ्गः केसरो देववल्लभः ॥ २५ ॥

नागकेशरके नाम ५—पुन्नाग १ पुरुष२ तुङ्ग ३ केशर ४ देववल्लभ ५ ॥२५॥

पारिभद्रे निम्बतरुर्मन्दारः पारिजातकः ।

बकायनके नाम ४—पारिभद्र १ निम्बतरु २ मन्दार ३ पारिजातक ४॥

तिनिशे स्यन्दनो नेमी रथद्रुरतिमुक्तकः ॥ २६ ॥ वञ्जुलश्चित्रकृच्चा—

वञ्जुल वृक्षके नाम ७—तिनिश १ स्यन्दन २ नेमि ३ रथद्रु ४ अतिमुक्तक ५ ॥ ॥ २६ ॥ वञ्जुल ६ चित्रकृत् ७ ॥

—थ द्वौ पीतनकपीतनौ ।

आम्रातके—

अम्बाड़ेके नाम ३—पीतन १ कपीतन २ आम्रातक ३ ॥

—मधूके तु गुडपुष्पमधुद्रुमः॥२७॥ वानप्रस्थमधुष्ठीलौ—

महुएके नाम ५—मधूक १ गुडपुष्प २ मधुद्रुम ३ ॥ २७ ॥ वानप्रस्थ ४ मधुष्ठील ५ ॥

—जलजेऽत्र मधूलकः ।

जलके महुएका नाम १—मधूलक १॥

पीलौ गुडफलः स्रंसी—

देशी अखरोटके नाम ३—पीलु १ गुडफल २ स्रंसिन् ३ ।

—तस्मिंस्तु गिरिसंभवे ॥ २८ ॥ अक्षोटकन्दरालौ द्वा—

पहाड़ी अखरोटके नाम २—॥२८॥ अक्षोट १ कन्दराल २ ॥

—वंकोटे तु निकोचकः ।

अंकोलके नाम २—अंकोट १ निकोचक २ ॥

पलाशे किंशुकः पर्णो वातपोथो-

पलाशके नाम ४—पलाश १ किंशुक २ पर्ण ३ वातपोथ ४ ॥

—ऽथ वेतसे ॥ २९ ॥ रथाभ्रपुष्पविदुरशीतवानीरवञ्जुलाः ।

वेतके नाम ७-वेतस १ ॥ २९ ॥

रथ २ अभ्रपुष्प ३ विदुर ४ शीत ५ वानीर ६ वंजुल ७ ॥

द्वौ परिव्याधविदुलौ नादेयी चाम्बुवेतसे ॥ ३० ॥

पानीके बेतके नाम ४—परिव्याध १ विदुल २ नादेयी ३ अम्बुवेतस ४ ॥ ३० ॥

शोभाञ्जने शिग्रुतीक्ष्णगन्धका- क्षीवमोचकाः ।

सँहिजनेके नाम ५—शोभाञ्जन १ शिग्रु २ तीक्ष्णगन्धक ३ अक्षीव ४ मोचक ५ ॥

रक्तोऽसौ मधुशिग्रुः स्या-

लाल फूलवाले सँहिजनेका नाम १—मधुशिग्रु १ ॥

-दरिष्टः फेनिलस्समौ ॥ ३१ ॥

रीठेके नाम २—अरिष्ट १ फेनिल २ ॥ ३१ ॥

बिल्वे शाण्डिल्यशैलूषौ मालूर- श्रीफलावपि ।

बेलके नाम ५—बिल्व १ शाण्डिल्य २ शैलूष ३ मालूर ४ श्रीफल ५ ॥

प्लक्षो जटी पर्कटी स्या-

पाकरके नाम ३—प्लक्ष १ जटिन् २ पर्कटिन् ३ ॥

-न्न्यग्रोधो बहुपाद्वटः ॥ ३२ ॥

वटके नाम ३—न्यग्रोध १ बहुपाद् २ वट ३ ॥ ३२ ॥

गालवः शाबरो लोध्रस्तिरीट- स्तिल्वमार्जनौ ।

लोधके नाम ६—गालव १ शाबर २ लोध्र ३ तिरीट ४ तिल्व ५ मार्जन ६ ।

आम्रश्चूतो रसालो-

आमके नाम ३—आम्र १ चूत २ रसाल ३ ॥

-ऽसौ सहकारोऽतिसौरभः ॥ ३३ ॥

सुगंधित आमका नाम १—सह- कार १ ॥ ३३ ॥

कुंभोलूखलकं क्लीबे कौशिको गुग्गुलुः पुरः ।

गूगलके नाम ५—कुम्भ १ उलू- खलक २ कौशिक ३ गुग्गुलु ४ पुर ५ ॥

शेलुः श्लेष्मातकः शीत उद्दा- लो बहुवारकः ॥ ३४ ॥

लसोढ़ेके नाम ५—शेलु १ श्लेष्मातक २ शीत ३ उद्दाल ४ बहुवारक ५ ॥ ३४ ॥

राजादनं प्रियालः स्यात्सन्नक- द्रुर्धनुष्पटः ।

चिरौंजीके नाम ४—राजादन १ प्रियाल २ सन्नकद्रु ३ धनुष्पट ४ ।

गंभारी सर्वतोभद्रा काश्मरी मधुपर्णिका ॥३५॥ श्रीपर्णी भद्रपर्णी च काश्मर्यश्चा-

खँभारीके नाम७—गम्भारी १ सर्वतोभद्रा २ काश्मरी ३ मधुपार्णिका ४ ॥३५॥श्रीपर्णी५भद्रपर्णी६काश्मरी ७॥

–प्यथ द्वयोः॥कर्कन्धूर्बदरी कोली-

बेरके नाम ३—कर्कंधू १ बदरी २ कोली ३ ॥

–कोलं कुवलफेनिले ॥ ३६ ॥ सौवीरं बदरं घोण्टा–

बेरके फलके नाम ६—कोल १ कुवल २ फेनिल ३ ॥ ३६ ॥ सौवीर ४ बदर ५ घोण्टा ६ ॥

–प्यथ स्यात्स्वादुकण्टकः । विकंकतः स्रुवावृक्षो ग्रन्थिलो व्याघ्रपादपि ॥ ३७ ॥

टेंटीके नाम ५—स्वादुकण्टक १ विकङ्कत २ स्रुवावृक्ष ३ ग्रन्थिल ४ व्याघ्रपाद् ५ ॥ ३७ ॥

ऐरावतो नागरंगो नादेयी भूमिजम्बुका ॥

नारंगीके नाम४—ऐरावत १ नाग–रङ्ग २ नादेयी ३ भूमिजम्बुका ४ ॥

तिन्दुकः स्फूर्जकः कालस्कन्धश्च शितिसारके ॥ ३८ ॥

तेंदूके नाम ४—तिन्दुक १ स्फूर्ज्जक २ कालस्कन्ध ३ शितिसारक ४ ॥३८॥

काकेन्दुः कुलकः काकतिन्दुकः काकपीलुके ।

कुचलेके नाम ४—काकेन्दु १ कुलक२काकतिन्दुक३ काकपीलुक ४ ॥

गोलीढो झाटलो घण्टापाटलिर्मोक्षमुष्ककौ ॥ ३९ ॥

लोधके भेद मोखाके नाम ५—गोलीढ१झाटल २ घण्टापाटलि३ मोक्ष ४ मुष्कक ५ ॥ ३९ ॥

तिलकः क्षुरकः श्रीमान्–

तिलकके नाम ३—तिलक १ क्षुरक २ श्रीमत् ३ ॥

–समौ पिचुलझावुकौ ।

झाऊके नाम २—पिचुल १ झावुक २ ॥

श्रीपर्णिका कुमुदिका कुम्भी कैडर्यकट्फलौ ॥ ४० ॥

कायफलके नाम ५—श्रीपार्णिका १ कुमुदिका २ कुम्भी ३ कैडर्य ४ कट्-फल ५ ॥ ४० ॥

क्रमुकः पट्टिकाख्यः स्यात्पट्टी लाक्षाप्रसादनः ।

पठानी लोधके नाम ४—क्रमुक १ पट्टिकाख्य २ पट्टी ३लाक्षाप्रसादन ४॥

तूदस्तु यूपः क्रमुको ब्रह्मण्यो ब्रह्मदारु च ॥ ४१ ॥ तूलं च—

पार्श्वपिप्पल वा तूतके नाम ६—तूद १ यूप २ क्रमुक ३ ब्रह्मण्य ४ ब्रह्मदारु ५ ॥ ४१ ॥ तूल ६ ॥

—नीपप्रियककदम्बास्तु हरिप्रियः।

कदम्बके नाम ४—नीप १ प्रियक २ कदम्ब ३ हरिप्रिय ४ ॥

वीरवृक्षोऽरुष्करोऽग्निमुखी भल्लातकी त्रिषु ॥ ४२ ॥

भिलावेके नाम ४—वीरवृक्ष १ अरुष्कर २अग्निमुखी३भल्लातकी४ ॥४२॥

गर्दभाण्डे कन्दरालकपीतनसुपार्श्वकाः । प्लक्षश्च

गेठी (पिलखन) के नाम ५—गर्दभाण्ड १ कन्दराल २ कपीतन ३ सुपार्श्वक ४ प्लक्ष ५ ॥

—तिन्तिडी चिञ्चाम्लिका—

इमलीके नाम ३—तिन्तिडी १ चिञ्चा २ अम्लिका ३ ॥

—ऽथ पीतसारके ॥ ४३ ॥ सर्जकासनबन्धूकपुष्पप्रियकजीवकाः ।

विजयसारके नाम ६—पीतसारक १ ॥ ४३ ॥ सर्जक २ असन ३ बन्धूक ४ पुष्पप्रियक ५ जीवक ६ ॥

सालै तु सर्जकार्ष्याश्वकर्णकाः सस्यसम्बरः ॥ ४४ ॥

शालके नाम५—साल १सर्ज २कार्ष्य ३अश्वकर्णक ४ सस्यसंबर ५॥ ४४ ॥

नदीसर्जो वीरतरुरिन्द्रद्रुः ककुभोऽर्जुनः ।

अर्जुनवृक्षके नाम५—नदीसर्ज१वीरतरु २ इन्द्रद्रु ३ककुभ ४ अर्जुन५॥

राजादनः फलाध्यक्षः क्षीरिकाया—

खिन्नीके नाम ३—राजादन १फलाध्यक्ष २ क्षीरिका ३ ॥

—मथ द्वयोः ॥ ४५ ॥ इङ्गुदी तापसतरु—

पांखीके नाम २—इंगुदी १ तापसतरु २ ॥ ४५ ॥

—भूर्जे चार्मिमृदुत्वचौ ॥

भोजपत्रके वृक्षके नाम ३—भूर्ज १ चार्मिन् २ मृदुत्वच् ३ ॥

पिच्छिला पूरणी मोचा स्थिरायुः शाल्मलिर्द्वयोः ॥ ४६ ॥

सेमलके नाम ५—पिच्छिला१पूरणी २मोचा ३स्थिरायु ४शाल्मलि५॥४६॥

पिच्छा तु शाल्मलीवेष्टे—

सेमलके गोंदके नाम २—पिच्छा १ शाल्मलीवेष्ट २ ॥

—रोचनः कूटशाल्मलिः ।

काले सेमलके नाम २—रोचन १ कूटशाल्मलि २ ॥

चिरबिल्वो नक्तमालः करजश्च करञ्जके ॥ ४७ ॥

करञ्जके नाम ४—चिरबिल्व १ नक्तमाल २ करज ३ करंजक ४ ॥४७॥

प्रकीर्यः पूतिकरजः पूतिकः कलिमारकः ।

कटीले करंजके नाम ४—प्रकीर्य १ पूतिकरज २ पूतिक ३ कलिमारक ४॥

करञ्जभेदाः षड्ग्रन्थो मर्कटयङ्गारवल्लरी ॥ ४८ ॥

करंजके भेद ३—षड्ग्रन्थ १ मर्कटी २ अङ्गारवल्लरी ३ ॥ ४८॥

रोही रोहितकः प्लीहशत्रुर्दाडिमपुष्पकः ।

रोहिडाके नाम ४—रोहिन् १ रोहितक २ प्लीहशत्रु ३ दाडिमपुष्पक ४॥

गायत्री बालतनयः खदिरो दंतधावनः ॥ ४९ ॥

खैर अर्थात् कत्थेके नाम ४—गायत्री १ बालतनय २ खदिर ३ दन्तधावन ४ ॥ ४९ ॥

अरिमेदो विट्खदिरे—

दुर्गंधयुक्त खैरके नाम २—अरिमेद १ विट्खादिर २ ॥

—कदरः खदिरे सिते । सोमवल्को—

सफेद खैरके नाम २—कदर १ सोमवल्क २ ॥

—ऽप्यथ व्याघ्रपुच्छगन्धर्वहस्तकौ॥५०॥एरण्ड उरुबूकश्च रुचकश्चित्रकश्च सः । चञ्चुः पञ्चांगुलो मण्डवर्धमानव्यडम्बकाः ॥ ५१ ॥

रेंड़ अर्थात् एरंडके नाम ११—व्याघ्रपुच्छ १ गन्धर्वहस्त २ ॥ ५०॥ एरण्ड ३ उरुबूक ४ रुचक ५ चित्रक ६ चञ्चु ७ पञ्चांगुल ८ मंड ९ वर्धमान १० व्यडम्बक ११ ॥ ५१ ॥

अल्पा शमी शमीरः स्या—

छोटी शमी (साँइ) का नाम १—शमीर १।

—च्छमी सक्तुफला शिवा ।

शमी (जाँटी) के नाम ३—शमी १ सक्तुफला २ शिवा ३ ॥

पिण्डीतको मरुबकः श्वसनः करहाटकः ॥ ५२॥ शल्यश्च मदने—

मयनफलके नाम ६—पिण्डीतक १ मरुबक २ श्वसन ३ करहाट ४॥५२॥ शल्य ५ मदन ६ ॥

—शक्रपादपः पारिभद्रकः । भद्रदारु द्रुकिलिमं पीतदारु च दारु च ॥ ५३ ॥ पूतिकाष्ठं च सप्त स्युर्देवदारु—

देवदारुके नाम ८—शक्रपादप १ पारिभद्रक २ भद्रदारु ३ द्रुकिलिम ४ पीतदारु ५ दारु ६ ॥ ५३ ॥ पूतिकाष्ठ ७ देवदारु ८ ॥

—ण्यथ द्वयोः । पाटलिः पाटला मोघा काचस्थाली फलेरुहा ॥५४॥ कृष्णवृन्ता कुबेराक्षी—

पाढरीके नाम ७—पाटलि १ पाटला २ मोघा ३ काचस्थाली ४ फलेरुहा ५ ॥ ५४ ॥ कृष्णवृन्ता ६ कुबेराक्षी ७ ॥

—श्यामा तु महिलाह्वया । लता गोविन्दिनी गुन्द्रा प्रियंगुः फलिनी फली ॥ ५५ ॥ विष्वक्सेना गन्धफली कारम्भा प्रियकश्च सा ।

काकुनीके नाम १२—श्यामा १ महिलाह्वया २ लता ३ गोविन्दिनी ४ गुन्द्रा ५ प्रियंगु ६ फलिनी ७ फली ८ ॥ ५५ ॥ विष्वक्सेना ९ गन्धफली १० कारम्भा ११ प्रियक १२ ॥

मण्डूकपर्णपत्रोर्णनटकट्वंगटुण्टुकाः ॥ ५६ ॥ स्योनाकशुकनासर्क्षदीर्घवृन्तकुटन्नटाः । शोणकश्चारलौ—

सखिन (सोनापाठा) के नाम १२—मण्डूकपर्ण १ पत्रोर्ण २ नट ३ कट्वङ्ग ४ टुण्टुक ५ ॥ ५६ ॥ स्योनाक ६ शुकनास ७ ऋक्ष ८ दीर्घवृन्त ९ कुटन्नट १० शोणक ११ अरलु १२ ॥

—तिष्यफला त्वामलकी त्रिषु ॥५७॥ अमृता च वयःस्था च—

आमलोंके नाम ४—तिष्यफला १ आमलकी २ ॥५७॥ अमृता ३ वयःस्था ४ ।

—त्रिलिङ्गस्तु विभीतकः । नाऽक्षस्तुषः कर्षफलो भूतावासः कलिद्रुमः ॥ ५८ ॥

बहेड़ेके नाम ६—विभीतक १ अक्ष २ तुष ३ कर्षफल ४ भूतावास ५ कलिद्रुम ६ ॥ ५८ ॥

अभया त्वव्यथा पथ्या कायस्था पूतनामृता । हरीतकी हैमवती चेतकी श्रेयसी शिवा ॥५९॥

हरडेके नाम ११—अभया १ अव्यथा २ पथ्या ३ कायस्था ४ पूतना ५ अमृता ६ हरीतकी ७ हैमवती ८ चेतकी ९ श्रेयसी १० शिवा ११ ॥५९॥

पीतद्रुः सरलः पूतिकाष्ठं चा-

सरलाके नाम ३-पीतद्रु १ सरल २ पूतिकाष्ठ ३ ॥

-ऽथ द्रुमोत्पलः । कर्णिकारः परिव्याधो-

कनेरके नाम ३-द्रुमोत्पल १कर्णिकार २ परिव्याध ३ ॥

-लकुचो लिकुचो डहुः॥६० ॥

बड़हरके नाम ३-लकुच १ लिकुच २ डहु ३ ॥ ६० ॥

पनसः कंटकिफलो-

कटहरके नाम २-पनस १ कण्टकिफल २ ॥

-निचुलो हिज्जलोऽम्बुजः ।

समुद्रफलके नाम ३-निचुल १ हिज्जल २ अंबुज ३ ॥

काकोदुम्बरिका फल्गुर्मलयूर्जघनेफला ॥ ६१ ॥

कठूमरके नाम ४-काकोदुम्बरिका १ फल्गु २ मलयू३जघनेफला४॥६१॥

अरिष्टः सर्वतोभद्रहिंगुनिर्यासमालकाः । पिचुमन्दश्च निंबे-

नींबके नाम ६-अरिष्ट १ सर्वतोभद्र २ हिंगुनिर्यास ३ मालक ४ पिचुमन्द ५ निंब ६ ॥

-ऽथ पिच्छिलाऽगुरुशिंशपाः॥६२॥

सीसमके नाम ३-पिच्छिल १ अगुरु २ शिंशप ३ ॥ ६२ ॥

कपिला भस्मगर्भा सा-

कृष्णवर्ण सीसमका नाम-१ भस्मगर्भा १ ॥

-शिरीषस्तु कपीतनः । भण्डिलो-

शिरिसके नाम ३-शिरीष १ कपीतन २ भंडिल ३ ॥

-ऽथ चाम्पेयश्चम्पको हेमपुष्पकः ॥ ६३ ॥

चम्पेके नाम ३-चाम्पेय १ चम्पक २ हेमपुष्पक ॥ ३ ॥ ६३ ॥

एतस्य कलिका गन्धफली स्या-

चम्पेके कलीका नाम १-गन्धफली १ ॥

-द्थ केसरे । बकुलो-

मौलसिरीके नाम २-केसर १ बकुल २ ॥

-वञ्जुलोऽशोके-

अशोकके नाम २-वञ्जुल १ अशोक २ ॥

-समौ करकदाडिमौ ॥ ६४ ॥

अनारके नाम २-करक १ दाडिम २ ॥ ६४ ॥

चाम्पेयः केसरो नागकेशरः काञ्चनाह्वयः ।

चंपापुष्पके नाम ४—चाम्पेय १ केसर २ नागरकेशर ३ काञ्चनाह्वय ४ ॥

जया जयन्ती तर्कारी नादेयी वैजयन्तिका ॥ ६५ ॥

जाहीके नाम ५—जया १ जयंती २ तर्कारी ३ नादेयी ४ वैजयन्तिका ५ ॥ ६५ ॥

श्रीपर्णमग्निमन्थः स्यात्कणिका गणिकारिका । जयो—

अरणीके नाम५—श्रीपर्ण १ अग्निमंथ २ कणिका ३ गणिकारिका ७ जय ५ ॥

—ऽथ कुटजः शक्रो वत्सको गिरिमल्लिका ॥ ६६ ॥

कुरैयाके नाम ४—कुटज १ शक्र २ वत्सक ३ गिरिमल्लिका ४ ॥ ६६ ॥

एतस्यैव कलिङ्गेन्द्रयवभद्रयवं फले ।

इन्द्रजव अर्थात् कुरैयाके फलके नाम ३—कलिंग १ इन्द्रयव २ भद्रयव ३ ॥

कृष्णपाकफलाविग्नसुषेणाः करमर्दके ॥ ६७ ॥

करोंदाके नाम ४—कृष्णपाकफल १ अविग्न २ सुषेण ३ करमर्दक ४॥६७॥

कालस्कन्धस्तमालः स्यात्तापिच्छो—

तमालके नाम ३—कालस्कन्ध १ तमाल २ तापिच्छ ३ ॥

—ऽप्यथ सिन्दुके । सिन्दुवारेन्द्रसुरसौ निर्गुण्डीन्द्राणिकेत्यपि ६८॥

म्योंडी (सिंभालू) के नाम५—सिंदुक १ सिन्दुवार २ इन्द्रसुरस ३ निर्गुण्डी ४ इन्द्राणिका ५ ॥ ६८ ॥

वेणी खरा गरी देवताडो जीमूत इत्यपि ।

वृन्दाल वृक्ष जो गुजरातमें गोड़ी प्रसिद्ध है उसके नाम ५—वेणी १ खरा २ गरी ३ देवताड ४ जीमूत ५ ॥

श्रीहस्तिनी तु भूरुण्डी—

घुइयां (अरवी) के नाम २—श्रीहस्तिनी १ भूरुण्डी २ ॥

—तृणशून्यं तु मल्लिका ॥६८॥ भूपदी शीतभीरुश्च—

बेला (मल्लिका) के नाम ४—तृणशून्य १ मल्लिका २ ॥ ६९ ॥ भूपदी ३ शीतभीरु ४ ॥

—सैवास्फोटा वनोद्भवा ।

वनवेलाका नाम १—आस्फोटा १॥

शेफालिका तु सुवहा निर्गुण्डी नीलिका च सा ॥ ७० ॥

न्यवारी (काले पुष्पवाली निर्गुण्डी) के नाम ४—शेफालिका १ सुवहा २ निर्गुण्डी ३ नीलिका ४ ॥ ७० ॥

सितासौ श्वेतसुरसा भूतवेश्य—

उजडी नेवाडीके नाम २—श्वेत--सुरसा १ भूतवेशी २ ॥

—थ मागधी । गणिका यूथिकाऽम्बष्ठा—

जूहीके नाम ४—मागधी १ गणिका २ यूथिका ३ अम्बष्ठा ४ ॥

—सा पीता हेमपुष्पिका ॥७१॥

पीले फूलकी जूहीका नाम १ हेमपुष्पिका १ ॥ ७१ ॥

अतिमुक्तः पुण्ड्रकः स्याद्वासन्ती माधवी लता ।

वसन्तीके नाम ५—अतिमुक्त १ पुण्ड्रक २ वासन्ती ३ माधवी ४लता ५॥

सुमना मालती जातिः—

चमेलीके नाम ३—सुमनस् १ मालती २ जाति ३ ॥

—सप्तला नवमालिका ॥ ७२ ॥

वर्षाकी बेलीके नाम २—सप्तला १ नवमालिका २ ॥ ७२ ॥

माघ्यं कुन्दं—

कुन्दके नाम २—माघ्य १ कुन्द २ ॥

—रक्तकस्तु बन्धूको बन्धुजीवकः।

दुपहरी फूलके नाम ३—रक्तक १ बंधूक २ बंधुजीवक ३ ॥

सहा कुमारी तरणि—

घीक्वारके नाम ३—सहा १ कुमारी २ तरणि ३ ॥

—रम्लानस्तु महासहा ॥ ७३ ॥

कठैयाके नाम २—अम्लान १ महासहा २ ॥ ७३ ॥

तत्र शोणे कुरबक—

लाल कटैयाका नाम १—कुरबक१॥

—स्तत्र पीते कुरण्टकः ।

पीली कटैयाका नाम १-कुरण्टक १ ॥

नीली झिण्टी द्वयोर्बाणा दासी चार्तगलश्च सा ॥ ७४ ॥

नीली झिंडीके नाम ३—बाणा १ दासी २ आर्तगल ३ ॥ ७४ ॥

सैरेयकस्तु झिण्टी स्या—

झिंडीमात्रके नाम २—सैरेयक १ झिण्टी २ ॥

—त्तस्मिन्कुरबकोऽरुणे ।

लाल झिंडीका नाम १—कुरबक १॥

पीता कुरण्टको झिंटी तस्मिन्सहचरी द्वयोः ॥ ७५ ॥

पीली झिंडीके नाम २—कुरण्टक १ सहचरी २ ॥ ७५ ॥

ओण्ड्रपुष्पं जपापुष्पं—

गुड़हरके नाम २—ओण्ड्रपुष्प १ जपापुष्प २ ॥

—वज्रपुष्पं तिलस्य यत् ।

तिलीके फूलका नाम १—वज्रपुष्प १ ॥

प्रतिहासशतप्रासचण्डातहय-मारकाः ॥ ७६ ॥ करवीरे—

कंदइल (कनेर) के नाम ५—प्रतिहास १ शतप्रास २ चण्डात ३ हयमारक ४ ॥ ७६ ॥ करवीर ५ ॥

—करीरे तु क्रकरग्रन्थिलावुभौ ।

करीरके नाम ३—करीर १ क्रकर २ ग्रन्थिल ३ ॥

उन्मत्तः कितवो धूर्तो धत्तूरः कनकाह्वयः ॥ ७७ ॥ मातुलो मदनश्चा—

धतूरेके नाम ७—उन्मत्त १ कितव २ धूर्त २ धत्तूर ४ कनकाह्वय५॥७७॥ मातुल ६ मदन ७ ॥

—स्य फले मातुलपुत्रकः ।

धतूरेके फलका नाम १—मातुल-पुत्रक १ ॥

फलपूरो बीजपूरो—

बिजौरा निंबूके नाम २—फलपूर १ बीजपूर २ ॥

—रुचको मातुलुङ्गके ॥ ७८ ॥

बिजौरा नींबूके भेद—मातुलुङ्ग १ रुचक २ ॥ ७८ ॥

समीरणो मरुबकः प्रस्थपुष्पः फणिज्जकः । जम्बीरो—

मरुआके नाम ५—समीरण १ मरुबक २ प्रस्थपुष्प ३ फणिज्जक ४ जंबीर ५ ॥

—ऽप्यथ पर्णासे कठिञ्जरकुठेरकौ ॥ ७९ ॥

पनसके नाम ३—पर्णास १ कठिञ्जर २ कुठेरक ३ ॥ ७९ ॥

सितेऽर्जकोऽत्र—

श्वेत पनसका नाम १—अर्जक १॥

—पाठी तु चित्रको वह्निसंज्ञकः ।

चीतके नाम ३—पाठी १ चित्रक२ वह्निसंज्ञक ३ और जितने अग्निके नाम उतने भी चीतके नाम हैं ॥

अर्काह्ववसुकाऽऽस्फोटगणरूप-विकीरणाः ॥ ८० ॥ मन्दारश्चा-र्कपर्णो—

आकके नाम ७—अर्काह्व १ वसुक२ आस्फोट ३ गणरूप ४ विकीरण ५ ॥ ८० ॥ मन्दार ६ अर्कपर्ण ७ और सूर्यके सब नाम आकके नाम हैं॥

—ऽत्र शुक्लेऽलर्कप्रतापसौ ।

श्वेत आकके नाम २—अलर्क १ प्रतापस २ ॥

शिवमल्ली पाशुपत एकाष्ठीलो बुको वसुः ॥ ८१ ॥

गूमेके नाम ५—शिवमल्ली १ पाशु-पत २ एकाष्ठील ३ बुक ४ वसु ५ ॥ ८१ ॥

वन्दा वृक्षादनी वृक्षरुहा जीवन्तिकेत्यपि ।

आकाशवेलिके नाम ४--वन्दा १ वृक्षादनी २ वृक्षरुहा ३ जीवन्तिका ४ ॥

वत्सादनी छिन्नरुहा गुडूची तन्त्रिकाऽमृता ॥ ८२ ॥ जीवन्तिका सोमवल्ली विशल्या मधुपर्ण्यपि ।

गिलोयके नाम ९—वत्सादनी १ छिन्नरुहा २ गुडूची ३ तन्त्रिका ४ अमृता ५ ॥ ८२ ॥ जीवंतिका ६ सोमवल्ली ७ विशल्या ८ मधुपर्णी ९ ॥

मूर्वा देवी मधुरसा मोरटा तेजनी स्रवा ॥ ८३ ॥ मधूलिका मधुश्रेणी गोकर्णी पीलुपर्ण्यपि ।

किनारके नाम १०—मूर्वा १ देवी २ मधुरसा ३ मोरटा ४ तेजनी ५ स्रवा ६ ॥ ८३ ॥ मधूलिका ७ मधुश्रेणी ८ गोकर्णी ९ पीलुपर्णी १० ॥

पाठाम्बष्ठा विद्धकर्णी स्थापनी श्रेयसी रसा ॥ ८४ ॥ एकाष्ठीला पापचेली प्राचीना वनतिक्तिका ।

पेठेके नाम १०—पाठा १ अम्बष्ठा २ विद्धकर्णी ३ स्थापनी ४ श्रेयसी ५ रसा ६ ॥ ८४ ॥ एकाष्ठीला ७ पापचेली ८ प्राचीना ९ वनतिक्तिका १० ॥

कटुः कटम्भराऽशोकरोहिणी कटुरोहिणी ॥ ८५ ॥ मत्स्यपित्ता कृष्णभेदी चक्रांगी शकुलादनी ॥

कुटकीके नाम ८—कटु १ कटम्भरा २ अशोकरोहिणी ३ कटुरोहिणी ४ ॥ ८५ ॥ मत्स्यपित्ता ५ कृष्णभेदी ६ चक्रांगी ७ शकुलादनी ८ ॥

आत्मगुप्ताजहाऽव्यण्डा कण्डूरा प्रावृषायणी ॥ ८६ ॥ ऋष्यप्रोक्ता शूकशिम्बिः कपिकच्छुश्च मर्कटी ।

कचके नाम ९—आत्मगुप्ता १ अजहा २ अव्यण्डा ३ कण्डूरा ४ प्रावृषायणी ५ ॥ ८६ ॥ ऋष्यप्रोक्ता ६ शूकशिम्बि ७ कपिकच्छु ८ मर्कटी ९ ॥

चित्रोपचित्रा न्यग्रोधी द्रवन्ती शम्बरी वृषा ॥ ८७ ॥ प्रत्यक्श्रेणी सुतश्रेणी रण्डा मूषिकपर्ण्यपि ।

मूलीके नाम १०—चित्रा १ उपचित्रा २ न्यग्रोधी ३ द्रवन्ती ४ शम्बरी ५ वृषा ६ ॥ ८७ ॥ प्रत्यक्श्रेणी ७ सुतश्रेणी ८ रण्डा ९ मूषिकपर्णी १० ॥

अपामार्गः शैखरिकोऽधामार्गवमयूरकौ ॥ ८८ ॥ प्रत्यक्पर्णी केशपर्णी किणिही खरमञ्जरी ।

अपामार्गके नाम ८—अपामार्ग १

शैखरिक २ अधामार्गव ३ मयूरक ४ ॥ ८८ ॥ प्रत्यक्पर्णी ५ केशपर्णी ६ किणिही ७ खरमञ्जरी ८ ॥

हञ्जिका ब्राह्मणी पद्मा भार्ङ्गी ब्राह्मणयष्टिका ॥ ८९ ॥ अंगारवल्ली बालेयशाकबर्बरवर्धकाः ।

भारंगीके नाम ९–हञ्जिका १ ब्राह्मणी २ पद्मा ३ भार्ङ्गी ४ ब्राह्मणयष्टिका ५ ॥ ८९ ॥ अंगारवल्ली ६ वालेयशाक ७ बर्बर ८ वर्धक ९ ॥

मञ्जिष्ठा विकसा जिंगी समंगा कालमेषिका ॥ ९० ॥ मण्डूकपर्णी मण्डीरी भण्डी योजनवल्ल्यपि ।

मञ्जीठके नाम ९–मंजिष्ठा १ विकसा २ जिंगी ३ समंगा ४ कालमेषिका ५ ॥ ९० ॥ मण्डूकपर्णी ६ मण्डीरी ७ भण्डी ८ योजनवल्ली ९ ॥

यासो यवासो दुःस्पर्शो धन्वयासः कुनाशकः ॥ ९१ ॥ रोदनी कच्छुरानन्ता समुद्रांता दुरालभा ।

जवासेके नाम १० –यास १ यवास २ दुस्पर्श ३ धन्वयास ४ कुनाशक ५ ॥ ९१ ॥ रोदनी ६ कच्छुरा ७ अनन्ता ८ समुद्रान्ता ९ दुरालभा १० ॥

पृश्निपर्णी पृथक्पर्णी चित्रपर्ण्यंघ्रिपर्णिका ॥ ९२ ॥ क्रोष्टुविन्ना सिंहपुच्छी कलशी धावनी गुहा ।

पिठिवनके नाम ९–पृश्निपर्णी १ पृथक्पर्णी २ चित्रपर्णी ३ अंघ्रिपर्णिका ४ ॥ ९२ ॥ क्रोष्टुविन्ना ५ सिंहपुच्छी ६ कलशी ७ धावनी ८ गुहा ९ ॥

निदिग्धिका स्पृशी व्याघ्री बृहती कण्टकारिका ॥९३ ॥ प्रचोदनी कुली क्षुद्रा दुःस्पर्शा राष्ट्रिकेत्यपि ।

भटकटैया (कटेहली) के नाम १०–निदिग्धिका १ स्पृशी २ व्याघ्री ३ बृहती ४ कण्टकारिका ५ ॥ ९३ ॥ प्रचोदनी ६ कुली ७ क्षुद्रा ८ दुःस्पर्शा ९ राष्ट्रिका १० ॥

नीली काला क्लीतकिका ग्रामीणा मधुपर्णिका ॥ ९४ ॥ रञ्जनी श्रीफली तुत्था द्रोणी दोला च नीलिनी ।

नीलके नाम ११–नीली १ काला २ क्लीतकिका ३ ग्रामीणा ४ मधुपर्णिका ५ ॥ ९४॥ रंजनी ६ श्रीफली ७ तुत्था ८ द्रोणी ९ दोला १० नीलिनी ११ ।

अवल्गुजः सोमराजी सुवल्लिः सोमवल्लिका ॥ ९५ ॥ कालमेषी कृष्णफला बाकुची पूतिफल्यपि ।

बाकुचीके नाम ८—अवल्गुज १ सोमराजी २ सुवल्लि ३ सोमवल्लिका ४॥९५॥ कालमेषी ५ कृष्णफला ६ बाकुची ७ पूतिफली ८॥

कृष्णोपकुल्या वैदेही मागधी चपला कणा ॥ ९६ ॥ उषणा पिप्पली शौण्डी कोला—

पीपलके नाम १०—कृष्णा १ उपकुल्या २ वैदेही ३ मागधी ४ चपला ५ कणा ६ ॥ ९६ ॥ उषणा ७ पिप्पली ८ शौण्डी ९ कोला १० ॥

—ऽथ करिपिप्पली।कपिवल्ली कोलवल्ली श्रेयसी वशिरः पुमान् ९७ ॥

गजपीपलके नाम ५—करिपिप्पली १ कपिवल्ली २ कोलवल्ली ३ श्रेयसी ४ वशिर ५ ॥ ९७ ॥

चव्यं तु चविका—

चाबके नाम २—चव्य १ चविका २॥

—काकचिञ्चागुञ्जे तु कृष्णला।

घुँघुची (चिरमठी) के नाम ३—काकचिंचा १ गुंजा २ कृष्णला ३ ॥

पलंकषा त्विक्षुगन्धा श्वदंष्ट्रा स्वादुकण्टकः ॥ ९८ ॥ गोकण्टको गोक्षुरको वनशृंगाट इत्यपि।

गोखरूके नाम ७—पलंकषा १ इक्षुगन्धा २ श्वदंष्ट्रा ३ स्वादुकण्टक ४ ॥ ९८ ॥ गोकण्टक ५ गोक्षुरक ६ वनशृङ्गाट ७॥

विश्वा विषा प्रतिविषाऽतिविषोपविषारुणा ॥ ९९ ॥ शृंगी महौषधं चा—

अतीसके नाम ८—विश्वा १ विषा२ प्रतिविषा ३ अतिविषा ४ उपविषा ५ अरुणा ६॥९९॥ शृंगी ७ महौषध८ ॥

—ऽथ क्षीरावी दुग्धिका समे।

दूधीके नाम२—क्षीरावी १ दुग्धिका२॥

शतमूली बहुसुताऽभीरुरिन्दीवरी वरी ॥ १०० ॥ ऋष्यप्रोक्ताऽभीरुपत्रीनारायण्यः शतावरी। अहेरु—

शतावरीके नाम १०- शतमूली १ बहुसुता २ अभीरु ३ इन्दीवरी ४ वरी ५ ॥ १०० ॥ ऋष्यप्रोक्ता ६ अभीरुपत्री ७ नारायणी ८ शतावरी ९ अहेरु १० ॥

—ऽथ पीतद्रुकालेयकहरिद्रवः ॥ १०१ ॥ दार्वी पचम्पचा दारुहरिद्रा पर्जनीत्यपि।

दारुहलदीके नाम ७—पीतद्रु १ कालेयक २ हरिद्रु ३ ॥ १०१ ॥ दार्वी४ पचंपचा ५ दारुहरिद्रा ६ पर्जनी ७ ॥

वचोग्रगन्धा षड्ग्रन्था गोलोमी शतपर्विका ॥ १०२ ॥

वचके नाम ५—वचा १ उग्रगन्धा षड्ग्रन्था ३ गोलोमी ४ शतपर्विका ५ ॥ १०२ ॥

शुक्ला हैमवती—

जिसका श्वेत जड हो उस वचका नाम १—हैमवती १ ॥

—वैद्यमातृसिंह्यौ तु वाशिका। वृषोऽटरूषः सिंहास्यो वासिको वाजिदन्तकः ॥ १०३ ॥

अडूसेके नाम ८—वैद्यमातृ १ सिंही २ वाशिका ३ वृष ४ अटरूष ५ सिंहास्य ६ वासिक ७ वाजिदन्तक ८ ॥१०३॥

आस्फोटा गिरिकर्णी स्याद्विष्णुक्रान्तापराजिता ।

विष्णुक्रान्ताके नाम ४—आस्फोटा १ गिरिकर्णी २ विष्णुक्रान्ता ३ अपराजिता ४ ॥

इक्षुगन्धा तु काण्डेक्षुकोकिलाक्षेक्षुरक्षुराः ॥ १०४ ॥

तालमखानेके नाम ५—इक्षुगन्धा १ काण्डेक्षु २ कोकिलाक्ष ३ इक्षुर ४ क्षुर ५ ॥ १०४ ॥

शालेयः स्याच्छीतशिवश्छत्रा मधुरिका मिसिः । मिश्रेया—

सौंफके नाम ६—शालेय १ शीतशिव २ छत्रा ३ मधुरिका ४ मिसि ५ मिश्रेया ६ ॥

—ऽप्यथ सीहुण्डो वज्रः स्नुक्स्त्री स्नुही गुडा ॥१०५॥ समन्तदुग्धा—

सेहुंड (थूहर) के नाम ६—सीहुंड १ वज्र २ स्नुह ३ स्नुही ४ गुडा ५ ॥ ॥ १०५ ॥ समन्तदुग्धा ६ ॥

—ऽथो वेल्लममोघा चित्रतण्डुला । तण्डुलश्च कृमिघ्नश्च विडङ्गं पुंनपुंसकम् ॥ १०६ ॥

वायविडंगके नाम ६—वेल्ल १ अमोघा २ चित्रतण्डुला ३ तण्डुल ४ कृमिघ्न ५ विडङ्ग ६ ॥ १०६ ॥

बला वाट्यालको—

बरियरा (खरहँटी) के नाम २—बला १ वाट्यालक २ ॥

—घण्टारवा तु शणपुष्पिका ।

सनाटाके नाम २—घण्टारवा १ शणपुष्पिका २ ॥

मृद्वीका गोस्तनी द्राक्षा स्वाद्वी मधुरसेति च ॥ १०७ ॥

दाखके नाम ५—मृद्वीका १ गोस्तनी २ द्राक्षा ३ स्वाद्वी ४ मधुरस ५ ॥ १०७ ॥

सर्वानुभूतिः सरला त्रिपुटा त्रिवृता त्रिवृत् । त्रिभण्डी रोचनी—

श्वेत त्रिधारा (निसोत) के नाम ७—सर्वानुभूति १ सरला २ त्रिपुटा ३ त्रिवृता ४ त्रिवृत् ५ त्रिभण्डी ६ रोचनी ७ ॥

—श्यामापालिन्द्यौ तु सुषेणिका ॥ १०८ ॥ काला मसूरविदलार्धऽचन्द्रा कालमेषिका ।

काले त्रिधारे (निसोत) के नाम ७—श्यामा १ पालिन्दी २ सुषेणिका ३ ॥ १०८ ॥ काला ४ मसूरविदला ५ अर्द्धचन्द्रा ६ कालमेषिका ७ ॥

मधुकं क्लीतकं यष्टीमधुकं मधुयष्टिका ॥ १०९ ॥

जेठीमधुके नाम ४—मधुक १ क्लीतक २ यष्टीमधुक ३ मधुयष्टिका ४ ॥ १०९ ॥

विदारी क्षीरशुक्लेक्षुगन्धा क्रोष्ट्री तु या सिता ।

कृष्णभूकूष्माण्डके नाम ४—विदारी १ क्षीरशुक्ला २ इक्षुगन्धा ३ क्रोष्ट्री ४॥

अन्या क्षीरविदारी स्यान्महाश्वेतर्क्षगन्धिका ॥ ११० ॥

शुक्लभूकूष्माण्डके नाम ३—क्षीरविदारी १ महाश्वेता २ ऋक्षगन्धिका ३ ॥ ११० ॥

लांगली शारदी तोयपिप्पली शकुलादनी ।

जलपीपलके नाम ४—लांगली १ शारदी २तोयपिप्पली ३शकुलादनी ४॥

खराश्वा कारवी दीप्यो मयूरो लोचमस्तकः ॥ १११ ॥

मयूरशिखा वा अजमोदके नाम—५ खराश्वा १ कारवी २ दीप्य ३ मयूर ४ लोचमस्तक ५ ॥ १११ ॥

गोपी श्यामा शारिवा स्यादनन्तोत्पलशारिवा ।

कालीशाम्ब (अनंतमूल) के नाम ५—गोपी १ श्यामा २ शारिवा ३ अनंता ४ उत्पलशारिवा ५ ॥

योग्यमृद्धिः सिद्धिलक्ष्म्यौ—

ऋद्धि ओषधिके नाम ४—योग्य १ ऋद्धि २ सिद्धि ३ लक्ष्मी ४ ॥

—वृद्धेरप्याह्वया इमे ॥ ११२ ॥

ये ही नाम वृद्धिनामक ओषधिके भी होते हैं ॥ ११२ ॥

कदली वारणबुसा रम्भा मोचांशुमत्फला । काष्ठीला—

केलेके नाम ६—कदली १ वारणबुसा २ रम्भा ३ मोचा ४ अंशुमत्फला ५ काष्ठीला ६ ॥

—मुद्गपर्णी तु काकमुद्गा सहेत्यपि ॥ ११३ ॥

वनमूंगके नाम ३—मुद्गपर्णी १ काकमुद्गा १ सहा ३ ॥ ११३ ॥

वार्ताकी हिंगुली सिंही भण्टाकी दुष्प्रधर्षिणी ।

वनभांटे (रानकटेहली) के नाम ५—

वार्ताकी १ हिंगुली २ सिंही ३ भण्टाकी ४ दुष्प्रधर्षिणी ५ ॥

नाकुली सुरसा रास्ना सुगन्धा गन्धनाकुली ॥ ११४ ॥ नकुलेष्टा भुजंगाक्षी छत्राकी सुवहा च सा ।

रासन (तुलसी) के नाम ९—नाकुली १सुरसा २ रास्ना ३सुगंधा ४ गन्धनाकुली ५॥ ११४ ॥ नकुलेष्टा ६ भुजंगाक्षी ७ छत्राकी ८ सुवहा ९ ॥

विदारिगन्धांशुमती सालपर्णी स्थिरा ध्रुवा ॥ ११५ ॥

शालपर्णी वा सरिवनके नाम ५—विदारिगन्धा १ अंशुमती १ सालपर्णी ३ स्थिरा ४ ध्रुवा ५ ॥ ११५ ॥

तुण्डिकेरी समुद्रान्ता कार्पासी बदरेति च ।

कपासके नाम ४—तुंडिकेरी १ समुद्रांता २ कार्पासी ३ बदरा ४ ॥

भारद्वाजी तु सा वन्या—

वनकी कपास अर्थात् नरमाका नाम १—भारद्वाजी १ ॥

—शृंगी तु ऋषभो वृषः ॥११६॥

काकड़ासींगीके नाम ३—शृङ्गी १ ऋषभ २ वृष ३ ॥ ११६ ॥

गांगेरुकी नागबला झषा ह्रस्वगवेधुका ॥

ककही (गँगेरन) के नाम ४—गांगेरुकी १ नागबला २ झषा ३ ह्रस्वगवेधुका ४ ॥

धामार्गवो घोषकः स्या—

श्वेत तुरईके नाम २—धामार्गव १ घोषक २ ॥

—न्महाजाली स पीतकः ॥ ११७ ॥

पीलेफूलकी तुरईका नाम १—महाजाली १ ॥ ११७ ॥

ज्योत्स्नी पटोलिका जाली—

चचेंड़ेके नाम ३—ज्योत्स्नी १ पटोलिका २ जाली ३ ॥

—नादेयी भूमिजम्बुका ।

भूमिजामुनके नाम २—नादेयी १ भूमिजम्बुका २ ॥

स्याल्लांगलिक्यग्निशिखा—

करियारी (कलहारी) के नाम२—लांगलिकी १ अग्निशिखा २ ॥

—काकांगी काकनासिका ११८॥

काकजंघा अर्थात् कौवाटोंढी (मकोह) के नाम २—काकांगी १ काकनासिका २ ॥ ११८ ॥

गोधापदी तु सुवहा—

हंसपदी (लज्जावंती) के नाम२—गोधापदी १ सुवहा २ ॥

—मुसली तालमूलिका ।

मुसलीके नाम २—मुसली १ तालमूलिका २ ॥

अजशृंगी विषाणी स्या-

मेढ़ासींगीके नाम २-अजशृंगी १ विषाणी २ ॥

-द्गोजिह्वादार्विके समे ॥११९॥

गोमीके नाम २-गोजिह्वा १ दार्विका २ ॥ ११९ ॥

ताम्बूलवल्ली ताम्बूली नागवल्ल्य-

नागबेल अर्थात् पानके नाम ३-तांबूलवल्ली १ तांबूली २ नागवल्ली ३॥

-प्यथ द्विजा । हरेणू रेणुका कौन्ती कपिला भस्मगन्धिनी १२०

गगनधूरिके नाम ६-द्विजा १ हरेणु २ रेणुका ३ कौन्ती ४ कपिला ५ भस्मगन्धिनी ६ ॥ १२० ॥

एलावालुकमैलेयं सुगन्धि हरिवालुकम् । वालुकं चा-

एलुआ नामक गन्धद्रव्य विशेषके नाम ५-एलावालुक १ ऐलेय २ सुगन्धि ३ हरिवालुक ४ वालुक ५ ॥

-थ पालंक्यां मुकुन्दः कुन्दकुन्दुरू ॥ १२१ ॥

पालवाके नाम ४-पालंकी १ मुकुन्द २ कुन्द ३ कुन्दुरु ४॥१२१॥

वालं ह्रीबेरबर्हिष्ठोदीच्यं केशाम्बु नाम च ।

नेत्रवालाके नाम ४-वाला १ ह्रीबेर २ बर्हिष्ठ ३ उदीच्य ४ ॥ एवं केशके और उदकके सब नाम ॥

कालानुसार्यवृद्धाश्मपुष्पशीतशिवानि तु ॥ १२२ ॥ शैलेयं-

शिलाजीतके नाम ५-कालानुसार्य १ वृद्ध २ अश्मपुष्प ३ शीतशिव ४ ॥ १२२ ॥ शैलेय ५ ॥

-तालपर्णी तु दैत्या गंधकुटी मुरा । गंधिनी-

मुरैठी वा तालीसपत्रके नाम ५-तालपर्णी १ दैत्या २ गन्धकुटी ३ मुरा ४ गंधिनी ५ ॥

-गजभक्ष्या तु सुवहा सुरभी रसा ॥ १२३ ॥ महेरुणा कुन्दुरुकी सल्लकी ह्लादिनीति च ।

कांसके नाम ८-गजभक्ष्या १ सुवहा २ सुरभि ३ रसा ४ ॥ १२३॥ महेरुणा ५ कुन्दुरुकी ६ सल्लकी ७ ह्लादिनी ८ ॥

अग्निज्वालासुभिक्षे तु धातकी धातुपुष्पिका ॥ १२४ ॥

धव (धायफूल) के नाम ४-अग्निज्वाला १ सुभिक्षा २ धातकी ३ धातुपुष्पिका ४ ॥ १२४ ॥

पृथ्वीका चन्द्रवालैला निष्कुटिर्बहुला-

बड़ी इलायचीके नाम ५–पृथ्वीका १ चन्द्रवाला २ एला ३ निष्कुटी ४ बहुला ५ ॥

–ऽथ सा । सूक्ष्मोपकुञ्चिका तुत्था कोरङ्गी त्रिपुटा त्रुटिः१२५॥

गुजराती (छोटी) इलायचीके नाम ५–उपकुञ्चिका १ तुत्था २कोरङ्गी ३ त्रिपुटा ४ त्रुटि ५ ॥१२५ ॥

व्याधिः कुष्ठं पारिभाव्यं व्याप्यं पाकलमुत्पलम् ।

कूठके नाम ६–व्याधि १ कुष्ठ २ पारिभाव्य३व्याप्य४पाकल५उत्पल ६ ॥

शंखिनी चोरपुष्पी स्यात्केशि-

शंखाहुलीके नाम ३–शंखिनी १ चोरपुष्पी २ केशिनी ३ ॥

–न्यथ वितुन्नकः ॥ १२६ ॥ झटामलाज्झटा ताली शिवा तामलकीति च ।

भूम्यामलकी अर्थात् अँबरीके नाम ७–वितुन्नक १ ॥१२६॥ झटा २ अमला ३ अज्झटा ४ ताली ५ शिवा ६ तामलकी ७ ॥

प्रपौण्डरीकं पौण्डर्य–

गुलाबके नाम २–प्रपौण्डरीक १ पौण्डर्य २ ॥

–मथ तुन्नः कुबेरकः ॥१२७॥ कुणिः कच्छः कान्तलको नन्दिवृक्षो–

तुनके नाम ६–तुन्न १ कुबेरक २ ॥ १२७ ॥ कुणि ३ कच्छ ४ कान्तलक ५ नंदिवृक्ष ६ ॥

–ऽथ राक्षसी । चण्डा धनहरी क्षेमदुष्पत्रगणहासकाः ॥ १२८ ॥

धनहरीके नाम ६–राक्षसी १ चण्डा २ धनहरी ३ क्षेम ४ दुष्पत्र ५ गणहासक ६ ॥ १२८ ॥

व्याडायुधं व्याघ्रनखं करजं चक्रकारकम् ।

नखा(गन्धद्रव्य) के नाम ४–व्याडायुध१व्याघ्रनख २करज ३ चक्रकारक४॥

सुषिरा विद्रुमलता कपोतांघ्रिर्नटी नली ॥ १२९ ॥

मालकांगनीके नाम ५–सुषिरा १ विद्रुमलता २ कपोतांघ्रि ३ नटी ४ नली ५ ॥ १२९ ॥

धमन्यञ्जनकेशी च हनुर्हट्टविलासिनी ।

ककूदनिके नाम ४–धमनि१अञ्जनकेशी २ हनु ३ हट्टविलासिनी ४ ॥

शुक्तिः शंखः खुरः कोलदलं नख-

नखी नाम गन्धद्रव्यविशेषके नाम ५–शुक्ति १ शंख २ खुर ३ कोलदल ४ नख ५ ॥

–मथाढकी ॥ १३० ॥ काक्षी मृत्स्ना तुवरिका मृत्तालकसुराष्ट्रजे ।

अरहरके नाम ६–आढकी १ ॥ ॥ १३० ॥ काक्षी २ मृत्स्ना ३ तुवरिका ४ मृत्तालक ५ सुराष्ट्रज ६ ॥

कुटन्नटं दाशपुरं वानेयं परिपेलवम् ॥ १३१ ॥ प्लवगोपुरगोनर्दकैवर्तीमुस्तकानि च ।

मोथाके नाम ९–कुटन्नट १ दाशपुर २ वानेय ३ परिपेलव ४ ॥ १३१ ॥ प्लव ४ गोपुर ६ गोनर्द ७ कैवर्त्ती ८ मुस्तक ९ ॥

ग्रन्थिपर्णं शुकं बर्हपुष्पं स्थौणेयकुक्कुरं ॥ १३२ ॥

ककरोंके नाम ५–ग्रन्थिपर्ण १ शुक २ बर्हपुष्प ३ स्थौणेय ४ कुक्कुर ॥ १३२ ॥

मरुन्माला तु पिशुना स्पृक्का देवी लता लघुः । समुद्रान्ता वधूः कोटिवर्षा लंकोपिकेत्यपि ॥ १३३ ॥

अस्परकके नाम १०–मरुन्माला १ पिशुना २ स्पृक्का ३ देवी ४ लता ५ लघु ६ समुद्रान्ता ७ वधू ८ कोटिवर्षा ९ लंकोपिका १० ॥ १३३ ॥

तपस्विनी जटा मांसी जटिला लोमशा मिशी ।

जटामांसीके नाम ६–तपस्विनी १ जटा २ मांसी ३ जटिला ४ लोमशा ५ मिशी ६ ॥

त्वक्पत्रमुत्कटं भृंगं त्वचं चोचं वराङ्गकम् ॥ १३४ ॥

तजके नाम ६–त्वक्पत्र १ उत्कट २ भृङ्ग ३ त्वच ५ चोच ५ वरांगक ६ ॥ १३४ ॥

कर्चूरको द्राविडकः काल्पको वेधमुख्यकः ।

कचूरके नाम ४–कर्चूरक १ द्राविडक ५ काल्पक ३ वेधमुख्यक ४ ॥

ओषध्यो जातिमात्रे स्यु–

सब अन्नोंका नाम १–ओषधि १ ॥

–रजातौ सर्वमौषधम् ॥ १३५ ॥

अन्नमात्रका नाम १–औषध १ ॥ १३५ ॥

शाकाख्यं पत्रपुष्पादि–

तर्कारीमात्रका नाम १–शाक १ ॥

–तण्डुलीयोऽल्पमारिषः ।

चौराईके नाम २–तण्डुलीय १ अल्पमारिष २ ॥

विशल्याग्निशिखाऽनन्ता फलिनी शक्रपुष्पिका ॥ १३६ ॥

कलियारी (इन्द्रपुष्पीके) नाम ५–विशल्या १ अग्निशिखा २ अनन्ता ३ फलिनी ४ शक्रपुष्पिका ५ ॥ १३६ ॥

स्यादृक्षगन्धा छगलान्त्र्यावेगी वृद्धदारकः । जुङ्गो-

विधाराके नाम५—ऋक्षगन्धा१छगलान्त्री२आवेगी ३वृद्धदारक४जुङ्ग ५॥

—ब्राह्मी तु मत्स्याक्षी वयस्था सोमवल्लरी ॥ १३७ ॥

ब्राह्मीके नाम ४—ब्राह्मी १मत्स्याक्षी २ वयस्था ३ सोमवल्लरी ४ ॥ १३७॥

पटुपर्णी हैमवती स्वर्णक्षीरी हिमावती ।

मकोइके नाम ४—पटुपर्णी १ हैमवती २ स्वर्णक्षीरी ३ हिमावती ४ ॥

हयपुच्छी तु काम्बोजी माषपर्णी महासहा ॥ १३८ ॥

सूंगके नाम ४—हयपुच्छी१काम्बोजी २ माषपर्णी ३ महासहा ४ ॥ १३८॥

तुण्डकेरी रक्तफला बिम्बिका पीलुपर्ण्यपि ।

कुंदुरीके नाम ४—तुण्डिकेरी १ रक्तफला २ बिम्बिका ३ पीलुपर्णी ४॥

बर्बरा कबरी तुंगी खरपुष्पाऽजगन्धिका ॥ १३९ ॥

बर्बराके नाम ५—बर्बरा १ कबरी२ तुंगी३खरपुष्पा४अजगन्धिका५।१३९॥

एलापर्णी तु सुवहा रास्ना युक्तरसा च सा ।

एलापर्णीके नाम ४—एलापर्णी १ सुवहा २ रास्ना ३ युक्तरसा ४ ॥

चांगेरी चुक्रिका दन्तशठाम्बष्ठाम्ललोणिका ॥ १४० ॥

अम्लोना वा चूकाके नाम ५—चांगेरी १ चुक्रिका २ दन्तशठा ३ अम्बष्ठा ४ अम्ललोणिका ५ ॥ १४०॥

सहस्रवेधी चुक्रोऽम्लवेतसः शतवेध्यपि ।

अमलवेतके नाम ४—सहस्रवेधी १ चुक्र २ अम्लवेतस ३ शतवेधी ४ ॥ (किसी किसीके मतसे चांगेरी आदि९ भी अमलवेतके नाम हैं) ॥ ९ ॥

नमस्कारी गण्डकारी समंगा खदिरेत्यपि ॥ १४१ ॥

लजालूके नाम४—नमस्कारी १गण्डकारी २ समंगा ३ खदिरा ४ ॥१४१॥

जीवन्ती जीवनी जीवा जीवनीया मधुः स्रवा ।

जिसे गुर्जरदेशमें दोढ़ी कहते हैं उस ओषधिके नाम ६—जीवंती १ जीवनी २ जीवा ३ जीवनीया ४ मधु ५ स्रवा ६। (कोई 'मधुस्रवा'एकनाम कहतेहैं)॥

कूर्चशीर्षो मधुरकः शृंगह्रस्वांगजीवकाः ॥ १४२ ॥

जीवकके नाम ५—कूर्चशीर्ष१मधुरक २ शृंग ३ ह्रस्वांग ४जीवक५॥१४२॥

किराततिक्तो भूनिम्बोऽनार्यतिक्तो-

चिरायतेके नाम ३—किराततिक्त १ भूनिम्ब २ अनार्यतिक्त ३ ॥

ऽ-थ सप्तला । विमला सातला भूरिफेना चर्मकषेत्यपि ॥ १४३ ॥

सीहुण्डभेदके नाम ५—सप्तला १ विमला २ सातला ३ भूरिफेना४ चर्मकषा ५ ॥ १४३ ॥

वायसोली स्वादुरसा वयस्था-

काकोलीके नाम ३—वायसोली १ स्वादुरसा २ वयस्था ॥ ३ ॥

-थ मकूलकः । निकुम्भो दन्तिका प्रत्यक्श्रेण्युदुम्बरपर्ण्यपि १४४

वज्रदन्ती अर्थात् दँतियाके नाम (जिसके बीजको 'जयपाल'कहते हैं)५—मकूलक १निकुम्भ २ दंतिका ३ प्रत्यक्श्रेणी ४ उदुम्बरपर्णी ५ ॥ १४४ ॥

अजमोदा तूग्रगन्धा ब्रह्मदर्भा यवानिका ।

अजमोद या अजवायनके नाम४—अजमोदा १ उग्रगन्धा २ ब्रह्मदर्भा ३ यवानिका ४ ॥

मूले पुष्करकाश्मीरपद्मपत्राणि पौष्करे ॥ १४५ ॥

पोहकरमूलके नाम ३—पुष्कर १ काश्मीर २ पद्मपत्र ३ ॥ १४५ ॥

अव्यथातिचरा पद्मा चारटी पद्मचारिणी ।

पद्माखके नाम ५—अव्यथा १ अतिचरा २ पद्मा ३ चारटी ४ पद्मचारिणी ५ ॥

काम्पिल्यः कर्कशश्चन्द्रो रक्तांगो रोचनीत्यपि ॥ १४६ ॥

कबीलेके नाम ५—कांपिल्य१कर्कश २चन्द्र ३रक्तांग ४ रोचनी ५॥१४६॥

प्रपुन्नाडस्त्वेडगजो दद्रुघ्नश्चक्रमर्दकः । पद्माट उरणाख्यश्च-

चकवड़ वा पवाड़के नाम ६—प्रपुन्नाड १ एडगज २ दद्रुघ्न ३ चक्रमर्दक ४ पद्माट ५ उरणाख्य ६ ॥

-पलांडुस्तु सुकन्दकः ॥१४७॥

प्याजके नाम २—पलांडु १ सुकन्दक २ ॥ १४७ ॥

लतार्कदुद्रुमौ तत्र हरिते-

हरे प्याजके नाम २—लतार्क१दुद्रुम२॥

-ऽथ महौषधम् । लशुनं गृञ्जनारिष्टमहाकन्दरसोनकाः ॥१४८॥

लहसुनके नाम ६—महौषध १ लशुन २ गृञ्जन ३ अरिष्ट ४ महाकन्द ५ रसोनक ६ ॥ १४८ ॥

पुनर्नवा तु शोथघ्नी-

गदहपुरैना (साठी) के नाम २–पुनर्नवा १ शोथघ्नी २॥

–वितुन्नं सुनिषण्णकम् ।

विषखपड़ाके नाम २–वितुन्न १ सुनिषण्णक २ ॥

स्याद्वातकः शीतलोऽपराजिताशणपर्ण्यपि ॥ १४९ ॥

पटशनके नाम ४–वातक १ शीतल २ अपराजिता ३ शणपर्णी४॥१४९॥

पारावताङ्घ्रिः कटभी पण्या ज्योतिष्मती लता ।

मालकांगनीके नाम ५–पारावतांघ्रि १ कटभी २ पण्या ३ ज्योतिष्मती ४ लता ५ ॥

वार्षिकं त्रायमाणा स्यात्त्रायन्ती बलभद्रिका ॥ १५० ॥

त्रायमाणके नाम ४–वार्षिक १ त्रायमाणा २ त्रायन्ती ३ बलभद्रिका ४ ॥ १५० ॥

विष्वक्सेनप्रिया गृष्टिर्वाराही बदरेत्यपि ।

वाराहीकन्दके नाम ४–विष्वक्सेनप्रिया १ गृष्टि २ वाराही ३बदरा ४॥

मार्कवो भृङ्गराजः स्यात्–

भृंगराज (भँगरा) के नाम २–मार्कव १ भृंगराज २ ॥

–काकमाची तु वायसी ॥ १५१ ॥

कांवैया वा कौवाहांडी गोड़ाके नाम २–काकमाची १ वायसी २ ॥१५१॥

शतपुष्पासितच्छत्राऽतिच्छत्रा मधुरा मिसिः । अवाक्पुष्पी कारवी च–

सौंफके नाम ७–शतपुष्पा १ सितच्छत्रा २ अतिच्छत्रा ३ मधुरा ४ मिसि ५ अवाक्पुष्पी ६ कारवी ७ ॥

–सरणा तु प्रसारिणी ॥१५२॥ तस्यां कटम्भरा राजबला भद्रबलेत्यपि ।

कुब्जप्रसारिणी वा चांदवेल वा प्रसारनि (खीप) के नाम ५–सरणा १ प्रसारिणी २॥ १५२ ॥ कटम्भरा ३ राजबला ४ भद्रबला ५ ॥

जनी जतूका रजनी जतुकृच्चक्रवर्तिनी ॥ १५३ ॥ संस्पर्शा–

चकवतके नाम ६–जनी १ जतूका २ रजनी ३ जतुकृत् ४ चक्रवर्तिनी ५ ॥ १५३ ॥ संस्पर्शा ६ ॥

–ऽथ शठी गन्धमूली षड्ग्रन्थिकेत्यपि । कर्चूरोऽपि पलाशो–

कचूरके नाम ५–शठी १ गन्धमूली २ षड्ग्रन्थिका ३ कर्चूर ४ पलाश ५ ॥

–ऽथ कारवेल्लः कठिल्लकः ॥ ॥ १५४ ॥ सुषवी चा–

करेलोंके नाम २--कारवेल्ल १ कठिल्लक २ ॥ १५४ ॥ सुषवी ३ ॥

-ऽथ कुलकं पटोलस्तिक्तकः पटुः ।

परवरके नाम ४-कुलक १ पटोल २ तिक्तक ३ पटु ४ ॥

कूष्मांडकस्तु कर्कारु-

कुम्हड़ा (कोहला) के नाम २-कूष्माण्डक १ कर्कारु २ ॥

-रीर्वारुः कर्कटी स्त्रियौ ॥१५५॥

ककड़ीके नाम २-ईर्वारु १ कर्कटी २ ॥ १५५ ॥

इक्ष्वाकुः कटुतुम्बी स्या-

रामतुरई अर्थात् लौकीके नाम २-इक्ष्वाकु १ कटुतुम्बी २ ॥

-त्तुम्ब्यलाबूरुभे समे ॥

तुम्बीके नाम २-तुम्बी १ अलाबू २॥

चित्रा गवाक्षी गोडुम्बा-

जठऊ ककरी(गड़ूभा)के नाम ३-चित्रा १ गवाक्षी २ गोडुम्बा ३ ॥

-विशाला त्विन्द्रवारुणी॥१५६॥

इंद्रवारुणीके नाम २-विशाला १ इंद्रवारुणी २ ॥ १५६ ॥

-अर्शोघ्नः सूरणः कन्दः-

सूरण अर्थात् जमीकन्दके नाम ३-अर्शोघ्न १ सूरण २ कन्द ३ ॥

गण्डीरस्तु समष्ठिला ।

गंडरीके नाम २-गंडीर १ समष्ठिला २ ॥

कलम्ब्यु-

करेंबुआका नाम १-कलम्बी १ ॥

-पोदिका-

पोईका नाम १-उपोदिका १ ॥

-स्त्री तु मूलकं-

मूलीका नाम १-मूलक १ ॥

-हिलमोचिका ॥ १५७ ॥

हिलसाका नाम १-हिलमोचिका १ ॥ १५७ ॥

वास्तूकं-

बथुएका नाम १-वास्तूक १

-शाकभेदाः स्यु-

यह सब शाकके भेद कहे ॥

-र्दूर्वा तु शतपर्विका । सहस्रवीर्याभार्गव्यौ रुहाऽनन्ता-

दूबके नाम ६-दूर्वा १ शतपर्विका २ सहस्रवीर्या ३ भार्गवी ४ रुहा ५ अनन्ता ६ ॥

-ऽथ सा सिता ॥ १५८ ॥ गोलोमी शतवीर्या च गण्डाली शकुलाक्षकः ।

उजली दूबके नाम ४-॥ १५८॥ गोलोमी १ शतवीर्या २ गण्डाली ३ शकुलाक्षक ४ ॥

कुरुविन्दो मेघनामा मुस्ता मुस्तकमस्त्रियाम् ॥ १५९ ॥

मोथाके नाम ४–कुरुविन्द १ मेघनामन् २ मुस्ता ३–मुस्तक– ॥ १५९ ॥

स्याद्भद्रमुस्तको गुन्द्रा–

नागरमोथाके नाम २–भद्रमुस्तक १ गुन्द्रा २ ॥

–चूडाला चक्रलोच्चटा ।

मोथाविषके नाम ३–चूडाला १ चक्रला २ उच्चटा ३ ॥

वंशे त्वक्सारकर्मारत्वचिसारतृणध्वजाः ॥ १६० ॥ शतपर्वा यवफलो वेणुमस्करतेजनाः ।

बांसके नाम १०–वंश१त्वक्सार २ कर्मार ३ त्वचिसार ४ तृणध्वज ५ ॥ १६० ॥ शतपर्वन् ६ यवफल ७ वेणु ८ मस्कर ९ तेजन १० ॥

वेणवः कीचकास्ते स्युर्ये स्वनन्त्यनिलोद्धताः ॥ १६१ ॥

जो छेदमें वायु जानेसे शब्द करने लगें उन बांसोंका नाम १–कीचक ॥ १ ॥ १६१ ॥

ग्रन्थिर्ना पर्वपरुषी–

गांठके नाम ३–ग्रन्थि १ पर्वन्२ परुष् ३ ॥

गुन्द्रस्तेजनकः शरः ।

शरके नाम ३–गुंद्र १ तेजनक २ शर ३ ॥

नडस्तु धमनः पोटगलो–

नलके नाम ३–नड १ धमन २ पोटगल ३ ॥

–ऽथो काशमस्त्रियाम् ॥ १६२ ॥ इक्षुगन्धा पोटगलः–

काशके नाम ३–काश १ ॥१६२॥ इक्षुगन्धा २ पोटगल ३ ॥

–पुंसि भूम्नि तु बल्वजाः ।

बगईका नाम १–बल्वज १ ॥

रसाल इक्षु–

ऊख अर्थात् गन्नाके नाम २– रसाल १ इक्षु २ ॥

–स्तद्भेदाः पुंड्रकान्तारकादयः ॥ १६३ ॥

पौंडा ऊखके नाम २–पुण्ड्र १ कान्तारक २ आदि ॥ १६३ ॥

स्याद्वीरणं वीरतरं–

गांडरके नाम २–वीरण १ वीरतर २ ॥

–मूलेऽस्योशीरमस्त्रियाम् । अभयं नलदं सेव्यममृणालं जलाशयम् ॥ १६४ ॥ लामज्जकं लघुलयमवदाहेष्टकापथे ।

गांडरकी जड़ अर्थात् खशके नाम १०–उशीर १ अभय२ नलद ३सेव्य४

अमृणाल ५ जलाशय ६ ॥ १६४ ॥ लामज्जक ७ लघुलय ८ अवदाह ९ इष्टकापथ १० ॥

नडादयस्तृणं गर्मुच्छ्यामाक-प्रमुखा अपि ॥ १६५ ॥

नलादि गर्मुत् श्यामाक आदिका नाम १—तृण १ ॥ १६५ ॥

अस्त्री कुशं कुथो दर्भः पवित्र-

कुशके नाम ४—कुश १ कुथ २ दर्भ ३ पवित्र ४ ॥

--मथ कत्तृणम् । पौरसौगन्धि-कध्यामदेवजग्धकरौहिषम् ॥१६६॥

रोहिसके नाम ६—कत्तृण १पौर २ सौगन्धिक ३ ध्याम ४ देवजग्धक ५ रौहिष ६ ॥ १६६ ॥

छत्रातिच्छत्रपालघ्नौ—

पानीके तृणके नाम ३—छत्रा १ अतिच्छत्र २ पालघ्न ३ ॥

—मालातृणकभूस्तृणे ।

तृणविशेषके नाम २—मालातृणक१ भूस्तृण २ ॥

शष्पं बालतृणं—

नये तृणके नाम २—शष्प १ बाल-तृण २ ॥

—घासो यवसं—

घासके नाम २—घास १ यवस २॥

तृणमर्जुनम् ॥ १६७ ॥

तृणमात्रके नाम २—तृण १ अर्जुन २ ॥ १६७ ॥

तृणानां संहतिस्तृण्या—

तृणसमूहका नाम १—तृण्या १ ॥

—नड्या तु नडसंहतिः ।

नलोंके समूहका नाम १—नड्या १॥

तृणराजाह्वयस्तालो—

ताड़के नाम २—तृणराज१ताल २॥

—नालिकेरस्तु लाङ्गली ॥१६८॥

नारियलके नाम २—नालिकेर १ लांगली २ ॥ १६८ ॥

घोण्टा तु पूगः क्रमुको गुवाकः खपुरो—

सुपारीके नाम ५—घोण्टा १ पूग २ क्रमुक ३ गुवाक ४ खपुर ५ ॥

—ऽस्य तु । फलमुद्वेग—

सुपारीके फलका नाम १—उद्वेग १ ॥

—मेते च हिन्तालसहितास्त्रयः ॥ १६९ ॥ खर्जूरः केतकी ताली खर्जूरी च तृणद्रुमाः ।

खजूरीके नाम ४—खर्जूर १ केतकी २ ताली ३ खर्जूरी ४। पेड़का 'तृण-द्रुम' नाम है ॥ १६९ ॥

इति वनौषधिवर्गः ४.

अथ सिंहादिवर्गः ५.

सिंहो मृगेन्द्रः पञ्चास्यो हर्यक्षः केसरी हरिः ।

सिंहके नाम ६—सिंह १ मृगेन्द्र २ पञ्चास्य ३ हर्यक्ष ४ केसरिन् ५हरि६॥

शार्दूलद्वीपिनौ व्याघ्रे—

बाघके नाम ३—शार्दूल १ द्वीपिन् २ व्याघ्र ३ ॥

—तरक्षुस्तु मृगादनः ॥ १ ॥

चीतेके नाम २—तरक्षु १ मृगादन २ ॥ १ ॥

वराहः सूकरो घृष्टिः कोलः पोत्री किरिः किटिः। दंष्ट्री घोणी स्तब्धरोमा क्रोडो भूदार इत्यपि ॥ २ ॥

सूअरके नाम १२—वराह १सूकर २ घृष्टि ३ कोल ४ पोत्रिन् ५ किरि ६ किटि ७ दंष्ट्रिन् ८ घोणिन् ९ स्तब्धरोमन् १० क्रोड ११ भूदार १२॥२॥

कपिप्लवङ्गप्लवगशाखामृगवलीमुखाः । मर्कटो वानरः कीशो वनौका—

वानरके नाम ९—कपि १ प्लवङ्ग२ प्लवग ३ शाखामृग ४ वलीमुख५मर्कट ६ वानर ७ कीश ८ वनौकस् ९ ॥

—अथ भल्लुके ॥ ३ ॥ ऋक्षाच्छभल्लभल्लूका—

रीछके नाम ४—भल्लुक १ ॥३॥ ऋक्ष २ अच्छभल्ल ३ भल्लूक ४ ॥

—गण्डके खड्गखड्गिनौ ।

गैंडेके नाम ३—गण्डक १ खड्ग २ खड्गिन् ३ ॥

लुलायो महिषो वाहद्विषत्कासरसैरिभाः ॥ ४ ॥

भैंसेके नाम ५—लुलाय १ महिष२ वाहद्विषत् ३ कासर ४ सैरिभ ५ ॥४॥

स्त्रियां शिवाभूरिमायगोमायुमृगधूर्तकाः । शृगालवञ्चकक्रोष्टुफेरुफेरवजम्बुकाः ॥ ५ ॥

सियार—गीदडके नाम १०—शिवा १ भूरिमाय २ गोमायु ३ मृगधूर्तक४ शृगाल ५ वंचक ६ क्रोष्टु ७फेरु ८ फेरव ९ जम्बुक १० ॥ ५ ॥

ओतुर्बिडालो मार्जारो वृषदंशक आखुभुक् ।

बिलावके नाम ५—ओतु १ बिडाल २ मार्जार ३ वृषदंशक ४ आखुभुक्५॥

त्रयो गौधेरगोधारगौधेया गोधिकात्मजे ॥ ६ ॥

चन्दनगोह (गुहेरा) अर्थात् यह जन्तु काले सर्पसे गोहमें उत्पन्न होता है उसके नाम ३—गौधेर १ गौधार २ गौधेय ३ ॥ ६ ॥

श्वावित्तु शल्य—

साहीके नाम२--श्वाविद् १शल्य२॥

--स्तल्लोम्नि शलली शललं शलम् ॥

साहीके परोंके नाम--३ शलली १ शलल २ शल ३ ॥

वातप्रमीर्वातमृगः--

शीतगामी मृगविशेषके नाम २--वातप्रमी १ वातमृग २ ॥

--कोकस्त्वीहामृगो वृकः ॥७॥

भेड़ियेके नाम ३-कोक १ ईहामृग २ वृक ३ ॥ ७ ॥

मृगे कुरंगवातायुहरिणाजिनयोनयः।

मृगके नाम ५--मृग १ कुरङ्ग २ वातायु ३ हरिण ४ अजिनयोनि ५ ॥

ऐणेयमेण्याश्चर्माद्य--

हरिणके चर्म मांसादिका नाम १--ऐणेय १ ॥

--मेणस्यैण--

हरिणके चर्म मांसादिका नाम१--ऐण १

--मुभे त्रिषु ॥ ८ ॥

ऐणेय और ऐण ये शब्द तीनों लिंगोंमें होते हैं ॥ ८ ॥

कदली कंदली चीनश्चमूरुप्रियकावपि । समूरुश्चेति हरिणा अमी अजिनयोनयः ॥ ९ ॥

मृगोंके भेद ७--कदलिन् १ कन्दलिन् २ चीन ३ चमूरु ४ प्रियक ५ समूरु ६ हरिण ७ ॥ ९ ॥

कृष्णसाररुरुन्यंकुरंकुशम्बररौहिषाः । गोकर्णपृषतैणर्श्यरोहिताश्चमरो मृगाः ॥ १० ॥

तथा मृगोंके भेद १२--कृष्णसार १ रुरु २ न्यंकु ३ रंकु ४ शम्बर ५ रौहिष ६ गोकर्ण ७ पृषत ८ एण ९ ऋश्य १०रोहित ११चमर१२ ॥१०॥

गन्धर्वः शरभो रामः सृमरो गवयः शशः । इत्यादयो मृगेन्द्राद्या गवाद्याः पशुजातयः ॥ ११ ॥

तथा मृगोंके भेद ६--गन्धर्व १ शरभ २ राम ३ सृमर४ गवय ५ शश ६ इस प्रकार मृग आदि और सिंह आदि तथा गौ आदि पशुजाति कहलाते हैं ॥ ११ ॥

उन्दुरुर्मूषकोऽप्याखु--

चूहेके नाम ३--उन्दुरु १ मूषक २ आखु ३ ॥

--र्गिरिका बालमूषिका ।

छोटी चुहियाके नाम२--गिरिका १ बालमूषिका २ ॥

सरटः कृकलासः स्या--

गिरगटके नाम २--सरट १ कृकलास २ ॥

--न्मुसली गृहगोधिका ॥ २ ॥

छपकलीके नाम २—मुसली १ गृहगोधिका २ ॥ १२ ॥

लूता स्त्री तन्तुवायोर्णनाभमर्कटकाः समाः।

मकड़ीके नाम ४—लूता १ तन्तुवाय २ ऊर्णनाभ ३ मर्कटक ४ ॥

नीलंगुस्तु कृमिः—

कीटविशेषके नाम २—नीलंगु १ कृमि २।

—कर्णजलौकाः शतपद्युभे॥१३॥

कानखजूरेके नाम २—कर्णजलौकस् १ शतपदी २ ॥ १३ ॥

वृश्चिकः शूककीटः स्या—

ऊनी वस्त्रके खानेवाले कीड़ेके नाम २—वृश्चिक १ शूककीट २ ॥

—दलिद्रोणौ तु वृश्चिके।

बीछूके नाम ३—अलि १ द्रोण २ वृश्चिक ३ ॥

पारावतः कलरवः कपोतो—

कबूतरके नाम ३—पारावत १ कलरव २ कपोत ३ ॥

—ऽथ शशादनः ॥१४॥ पत्री श्येन—

बाजके नाम ३—शशादन १॥१४॥ पत्रिन् २ श्येन ३ ॥

—उलूकस्तु वायसारातिपेचकौ।

उल्लूके नाम ३—उलूक १ वायसाराति २ पेचक ३ ॥

व्याघ्राटः स्याद्भरद्वाजः—

भरद्वाज पक्षीके नाम २—व्याघ्राट १ भरद्वाज २ ॥

खञ्जरीटस्तु खञ्जनः ॥ १५ ॥

खञ्जनके नाम २—खञ्जरीट १ खञ्जन २ ॥ १५ ॥

लोहपृष्ठस्तु कङ्कः स्या—

कंक पक्षीके नाम २—लोहपृष्ठ १ कंक २॥

—दथ चाषः किकीदिविः।

नीलकण्ठके नाम २—चाष १ किकीदिवि २ ॥

कलिङ्गभृङ्गधूम्याटा—

मस्तकचूडपक्षीके नाम ३—कलिंग १ भृंग २ धूम्याट ३ ॥

—अथ स्याच्छतपत्रकः॥ १६ ॥ दार्वाघाटो—

खुटबढई पक्षीके नाम २—शतपत्रक १ ॥ १६ ॥ दार्वाघाट २ ॥

—ऽथ सारंगस्तोककश्चातकः समाः।

पपीहा अर्थात् चातकके नाम ३—सारंग १ तोकक २ चातक ३ ॥

कृकवाकुस्ताम्रचूडः कुक्कुटश्चरणायुधः ॥ १७ ॥

मुरगेके नाम ४—कृकवाकु १ ताम्रचूड २ कुक्कुट ३ चरणायुध ४ ॥१७॥

चटकः कलविङ्कः स्यात्-

चिरौंटे (चिडे) के नाम २-चटक १ कलविंक २ ॥

--तस्य स्त्री चटका-

चिडियाका नाम १-चटका १ ॥

--तयोः । पुमपत्ये चाटकैरः-

इनके बच्चेका नाम १-चाटकैर १॥

-स्त्र्यपत्ये चटकैव सा ॥ १८ ॥

इनके बच्चीका नाम१-चटका१॥१८॥

कर्करेटुः करेटुः स्यात्-

एक प्रकारके अशुभ शब्द करनेवाले पक्षीके नाम २-कर्करेटु १ करेटु २ ॥

-कृकणक्रकरौ समौ ।

चिडियाविशेषके नाम २-कृकण १ क्रकर २ ॥

वनप्रियः परभृतः कोकिलः पिक इत्यपि ॥ १९ ॥

कोयलके नाम ४-वनप्रिय १ परभृत २ कोकिल ३ पिक ४ ॥१९॥

काके तु करटारिष्टबलिपुष्टसकृत्प्रजाः । ध्वाङ्क्षात्मघोषपरभृद्बलिभुग्वायसा अपि ॥ २० ॥

कौवेके नाम १०-काक १ करट२ अरिष्ट ३ बलिपुष्ट ४ सकृत्प्रज ५ ध्वांक्ष ६ आत्मघोष ७ परभृत् ८ बलिभुज् ९ वायस १० ॥ २० ॥

द्रोणकाकस्तु काकोलो-

डोम कौवेके नाम २-द्रोणकाक १ काकोल २ ॥

-दात्यूहः कालकण्ठकः ।

काले कौवेके नाम २-दात्यूह १ कालकण्ठक २ ॥

आतापिचिल्लौ-

चीलके नाम २-आतापि १चिल्ल२

-दाक्षाय्यगृध्रौ-

गीधके नाम २-दाक्षाय्य१गृध्र२ ॥

-कीरशुकौ-

तोतेके नाम २-कीर १ शुक २ ॥

-समौ ॥ २१ ॥

आतापि, और चिल्ल, दाक्षाय्य और गृध्र तथा कीर और शुक शब्द समानलिंग है ॥ २१ ॥

क्रुङ्क्रौञ्चो-

क्रौञ्चपक्षीके नाम२-क्रुंच १ क्रौञ्च २ ॥

-ऽथ बकः कह्वः-

बगुलेके नाम २-बक १ कह्व २ ॥

पुष्कराह्वस्तु सारसः ।

सारसके नाम२-पुष्कराह्व१सारस २॥

कोकश्चक्रश्चक्रवाको रथाङ्गाह्वयनामकः-॥ २२ ॥

चकई चकवाके नाम ४-कोक १ चक्र २ चक्रवाक ३ रथांग ४॥ २२॥

कादम्बः कलहंसः स्या-

वर्त्तक पक्षीके नाम २—कादम्ब १ कलहंस २ ॥

-दुत्क्रोशकुररौ समौ ।

कुररी पक्षीके नाम २—उत्क्रोश १ कुरर २ ॥

हंसास्तु श्वेतगरुतश्चक्रांगा मानसौकसः ॥ २३ ॥

हंसके नाम ४—हंस १ श्वेतगरुत् २ चक्रांग ३ मानसौकस् ४ ॥ २३ ॥

राजहंसास्तु ते चञ्चुचरणैर्लोहितैः सिताः ।

जिन हंसोंकी चोंच और पैर लाल हों और देह उज्ज्वल हो उन हंसोंका नाम १—राजहंस १ ॥

मलिनैर्मल्लिकाक्षास्ते-

जिन हंसोंके चरणादि मैले हों उनका नाम १—मल्लिकाक्ष १ ॥

-धार्तराष्ट्राः सितेतरैः ॥ २४ ॥

जिनके चोंच और चरण काले हों उन हंसोंका नाम १—धार्त्तराष्ट्र १॥२४॥

शरारिराटिराडिश्च-

आडी पक्षीके नाम ३--शरारि १ आटि २ आड़ि ३ ॥

-बलाका बिसकण्ठिका ।

बगुलेके दूसरी जातिके नाम २—बलाका १ बिसकण्ठिका २ ॥

हंसस्य योषिद्वरटा-

हंसनीका नाम १—वरटा १ ॥

-सारसस्य तु लक्ष्मणा ॥२५॥

सारसकी स्त्रीका नाम १—लक्ष्मणा १ ॥ २५ ॥

जतुकाऽजिनपत्रा स्यात्-

चिमगादरके नाम २—जतुका १ अजिनपत्रा २ ॥

-परोष्णी तैलपायिका ।

चपरा पक्षीके नाम २—परोष्णी १ तैलपायिका २ ॥

वर्वणा मक्षिका नीला-

मक्खीके नाम ३—वर्वणा १ मक्षिका २ नीला ३ ॥

-सरघा मधुमक्षिका ॥ २६ ॥

शहदकी मक्खीके नाम २—सरघा १ मधुमाक्षिका २ ॥ २६ ॥

पतंगिका पुत्तिका स्या-

छोटी मधुमक्खीके नाम २—पतंगिका १ पुत्तिका २ ॥

दंशस्तु वनमक्षिका ।

डांसके नाम २-दंश १ वनमक्षिका २ ॥

दंशी तज्जातिरल्पा स्या-

छोटे डांसका नाम १—दंशी १ ॥

-द्गन्धोली वरटा द्वयोः ॥ २७ ॥

गन्धेली मक्खीके नाम २—गंधोली १ वरटा २ ॥ २७ ॥

भृंगारी झीरुका चीरी झिल्लिका च समा इमाः।

झींगरके नाम ४—भृंगारी १ झीरुका २ चीरी ३ झिल्लिका ४ ॥

समौ पतंगशलभौ—

पतंगके नाम २—पतंग १ शलभ २॥

खद्योतो ज्योतिरिंगणः॥ २८ ॥

जुगुनू कीडेके नाम २—खद्योत १ ज्योतिरिङ्गण २ ॥ २८॥

मधुव्रतो मधुकरो मधुलिण्मधुपालिनः। द्विरेफपुष्पलिड्भृंगषट्पदभ्रमरालयः ॥ २९ ॥

भँवरेके नाम ११—मधुव्रत १ मधुकर २ मधुलिह् ३ मधुप ४ अलिन् ५ द्विरेफ ६ पुष्पलिह् ७ भृङ्ग ८ षट्पद ९ भ्रमर १० अलि ११ ॥ २९ ॥

मयूरो बर्हिणो बर्ही नीलकण्ठो भुजंगभुक्। शिखावलः शिखी केकी मेघनादानुलास्यपि ॥ ३० ॥

मोरके नाम ९—मयूर १ बर्हिण २ बर्हिन् ३ नीलकण्ठ ४ भुजंगभुज् ५ शिखावल ६ शिखिन् ७ केकिन् ८ मेघनादानुलासिन् ९ ॥ ३० ॥

केका वाणी मयूरस्य—

मोरके शब्दका नाम १—केका १॥

समौ चन्द्रकमेचकौ।

मोरके परोंपर चन्द्राकार चिह्नोंके नाम २— चन्द्रक १ मेचक २ ॥

शिखा चूडा—

मोरकी चोटीके नाम २—शिखा १ चूडा २ ॥

—शिखण्डस्तु पिच्छबर्हे नपुंसके ॥ ३१ ॥

मोरके परोंके नाम ३—शिखण्ड १ पिच्छ २ बर्ह ३ ॥ ३१ ॥

खगे विहंगविहगविहंगमविहायसः। शकुन्तिपक्षिशकुनिशकुन्तशकुनद्विजाः ॥ ३२ ॥ पतत्रिपत्रिपतगपतत्पत्ररथाण्डजाः । नगौकोवाजिविकिरविविष्किरपतत्रयः ॥ ३३ ॥ नीडोद्भवा गरुत्मन्तः पित्सन्तो नभसंगमाः।

पक्षीमात्रके नाम २७—खग १ विहंग २ विहग ३ विहंगम ४ विहायस् ५ शकुन्ति ६ पक्षिन् ७ शकुनि ८ शकुन्त ९ शकुन १० द्विज ११ ॥ ३२ ॥ पतत्रिन् १२ पत्रिन् १३ पतग १४ पतत् १५ पत्ररथ १६ अण्डज १७ नगौकस् १८ वाजिन् १९ विकिर २० वि २१ विष्किर २२ पतत्रि २३ ॥ ३३ ॥ नीडोद्भव २४ गरुत्मत् २५ पित्सत् २६ नभसंगम २७ ॥

तेषां विशेषा हारीतो मद्गुः कारण्डवः प्लवः ॥ ३४॥ तित्तिरिः

–कुक्कुभो लावो जीवंजीवश्च–कोरकः॥ कोयष्टिकष्टिट्टिभको वर्तको वर्तिकादयः ॥ ३९ ॥

पक्षियोंके भेद १३–हारीत १ मद्गु २ कारण्डव ६ प्लव ४ ॥ ३४ ॥ तित्तिरि ५ कुक्कुभ ६ लाव ७ जीवंजीव ८ चकोरक ९ कोयष्टिक१०टिट्टिभक११ वर्तक १२ वर्तिका १३ इत्यादि ॥ ३५ ॥

गरुत्पक्षच्छदाः पत्रं पतत्रं च तनूरुहम् ।

पक्षियोंके परोंके नाम ६–गरुत् १ पक्ष २ छद ३ पत्र४पतत्र ५तनूरुह ६॥

स्त्री पक्षतिः पक्षमूलं–

पक्षियोंके बाजके नाम २–पक्षति १ पक्षमूल २ ॥

–चञ्चुस्त्रोटिरुभे स्त्रियौ ॥३६॥

चोंचके नाम २–चञ्चु १ त्रोटि २ ॥ ३६ ॥

प्रडीनोड्डीनसंडीनान्येताः खगगतिक्रियाः ।

पक्षियोंकी चालके भेद ३–प्रडीन उड्डीन २ संडीन ३ ॥

पेशी कोशो द्विहीनेऽण्डं–

अण्डके नाम ३–पेशी १ कोश २ अण्ड ॥ ३ ॥

–कुलायो नीडमस्त्रियाम् ॥३७॥

पक्षियोंके घरके नाम २–कुलाय १ नीड २ ॥ ३७ ॥

पोतः पाकोऽर्भको डिम्भः पृथुकः शावकः शिशुः ।

पक्षियोंके वा साधारण बच्चोंके नाम ७–पोत १ पाक २ अर्भक ३ डिम्भ ४ पृथुक ५ शावक ६ शिशुः ७ ॥

स्त्रीपुंसौ मिथुनं द्वन्द्वं–

स्त्रीपुरुषके जोडेके नाम ३–स्त्रीपुंस १ मिथुन २ द्वन्द्व ३ ॥

–युग्मं तु युगलं युगम् ॥३८॥

जोडेके नाम ३–युग्म १ युगल २ युग ३ ॥ ३८ ॥

समूहो निवहव्यूहसंदोहविसरव्रजाः । स्तोमौघनिकरव्रातवारसंघातसंचयाः ॥ ३९ ॥ समुदायः समुदयः समवायश्च यो गणः । स्त्रियां तु संहतिर्वृन्दं निकुरम्बं कदम्बकम् ॥ ४० ॥

समूहके नाम २२–समूह १ निवह २ व्यूह ३ सन्दोह ४ विसर ५ व्रज ६ स्तोम ७ ओघ ८ निकर ९ व्रात १० वार ११ संघात १२ संचय १३ ॥ ३९ ॥ समुदाय १४ समुदय १५ समवाय १६ चय १७ गण १९ संहति १९ वृन्द २० निकुरम्ब २१ कदंबक २२ ॥ ४० ॥

वृन्दभेदाः-

अथ समूहोंके भेद कहते हैं ॥

-समैर्वर्गः-

जीव अजीव एकही जातिके समूहका नाम १-वर्ग १-

-संघसार्थौ तु जन्तुभिः ।

केवल प्राणियोंके समूहके नाम २-संघ १ सार्थ २ ॥

सजातीयैः कुलं-

एक जातिके ही प्राणियोंके समूहका नाम १-कुल १ ॥

-यूथस्तिरश्चां पुंनपुंसकम् ॥४१

पक्षियोंके समूहका नाम १-यूथ १ ॥ ४१ ॥

पशूनां समजो-

पशुओंके समूहका नाम १-समज १

-ऽन्येषां समाजो-

पक्षी और पशुओंसे दूसरोंके समूहका नाम १-समाज १ ॥

-ऽथ सधर्मिणाम् । स्यान्निकायः-

एक धर्मावलंबियोंके समूहका नाम १-निकाय १ ॥

-पुञ्जराशी तूत्करः कूटमस्त्रियाम् ॥ ४२ ॥

अन्नादिक ऊंचे ढेरके नाम ४-पुञ्ज १ राशि २ उत्कर ३ कूट ४॥४२॥

कापोतशौकमायूरतैत्तिरादीनि तद्गणे ।

(कबूतरोंके समूहका नाम) कापोत॥ (तोतोंके समूहका नाम) शौक ॥ (मयूरोंके समूहका नाम) मायूर ॥ (तीतरोंके समूहका नाम) तैत्तिर इत्यादि ॥

गृहासक्ताः पक्षिमृगाश्छेकास्ते गृह्यकाश्च ते ॥ ४३ ॥

घरके पाले हुए मृगपक्षी आदिके नाम २-छेक १ गृह्यक २ ॥ ४३ ॥

इति सिंहादिवर्गः ॥ ५ ॥

अथ मनुष्यवर्गः ६.

मनुष्या मानुषा मर्त्या मनुजा मानवा नराः ॥

मनुष्यमात्रके नाम ६-मनुष्य १ मानुष २ मर्त्य ३ मनुज ४ मानव ५ नर ६ ॥

स्युः पुमांसः पञ्चजनाः पुरुषाः पूरुषा नरः ॥ १ ॥

मनुष्यजातिपुरुषके नाम ५-पुंस् १ पञ्चजन २ पुरुष ३ पूरुष ४ नृ ५ ॥१॥

स्त्री योषिदबला योषा नारी सीमंतिनी वधूः । प्रतीपदर्शिनी वामा वनिता महिला तथा ॥ २ ॥

स्त्रीके नाम ११-स्त्री १ योषित् २ अबला ३ योषा ४ नारी ५ सीमंतिनी ६

वधू ७ प्रतीपदर्शिनी ८ वामा ९ वनिता १० महिला ११ ॥ २ ॥

विशेषा–

स्त्रियोंके विशेषभेद कहते हैं ॥

–स्त्वङ्गना भीरुः कामिनी वामलोचना । प्रमदा मानिनी कान्ता ललना च नितम्बिनी ॥ ३ ॥ सुन्दरी रमणी रामा–

अच्छे अंगोंवाली स्त्रीका नाम १–अंगना १ ॥ डरभूत स्त्रीका नाम १–भीरु १ ॥ कामयुतस्त्रीका नाम १–कामिनी १ ॥ सुंदरनेत्रोंवाली स्त्रीका नाम १–वामलोचना १॥ वहुत कामवती स्त्रीका नाम १–प्रमदा १ ॥ प्रणयकोपवाली स्त्रीका नाम १–मानिनी १ ॥ मन हरनेवाली स्त्रीका नाम १–कान्ता १ ॥ दुलारी स्त्रीके नाम २–ललना १ नितम्बिनी २ ॥ ३ ॥ सुन्दर अंगोंवाली स्त्रीका नाम १–सुन्दरी १॥ जिसमें चित्तअतिरमित हो उस स्त्रीका नांम १–रमणी १ ॥ विहारके योग्य स्त्रीका नाम १–रामा १ ॥

–कोपना सैव भामिनी ।

कोपवाली स्त्रीके नाम २–कोपना १ भामिनी २ ॥

वरारोहा मत्तकाशिन्युत्तमा वरवर्णिनी ॥ ४ ॥

बहुतही उत्तम स्त्रीके नाम ४–वरारोहा १ मत्तकाशिनी २ उत्तमा ३ वरवर्णिनी ४ ॥ ४ ॥

कृताभिषेका महिषी–

जिस रानीका अभिषेक हुआ हो उसका नाम १–महिषी १ ॥

भोगिन्योऽन्या नृपस्त्रियः ।

महिषीको छोड राजाकी अन्य स्त्रियोंका नाम १–भोगिनी १ ॥

पत्नी पाणिगृहीती च द्वितीया सहधर्मिणी ॥ ५ ॥ भार्या जायाथ पुंभूम्नि दाराः–

व्यांही हुई स्त्रीके नाम ७–पत्नी १ पाणिगृहीती २ द्वितीया ३ सहधर्मिणी ४॥५॥ भार्या ५ जाया ६ दार पु० व० ७॥

–स्यात्तु कुटुम्बिनी । पुरन्ध्री–

जिस स्त्रीके पतिपुत्र दोनों विद्यमान हों उसके नाम २–कुटुंबिनी १ पुरन्ध्री २॥

–सुचरित्रा तु सती साध्वी पतिव्रता ॥ ६ ॥

पतिव्रता स्त्रीके नाम ४–सुचरित्रा १ सती २ साध्वी ३ पतिव्रता ४ ॥ ६ ॥

कृतसापत्निकाध्यूढाधिविन्ना–

जिसके बहुतसी स्त्रियां हों उनमें जो प्रथम व्याही गयी हो उसके नाम ३–

कृतसापत्निका १ अध्यूढा २ अधिविन्ना ३॥

–ऽथ स्वयंवरा। पतिंवरा च वर्या–

जो अपने आप स्वयंवरादिमें पतिकी इच्छा करे उस स्त्रीके नाम ३–स्वयंवरा १ पतिंवरा २ वर्या ३ ॥

–ऽथ कुलस्त्री कुलपालिका॥७॥

कुलवती स्त्रीके नाम २–कुलस्त्री १ कुलपालिका २ ॥ ७ ॥

कन्या कुमारी–

पांच वर्षकी कन्याके नाम २–कन्या १ कुमारी २ ॥

–गौरी तु नग्निकाऽनागतार्तवा ।

दशवर्षकी कन्याके नाम ३–गौरी १ नग्निका २ अनागतार्तवा ३ ॥

स्यान्मध्यमा दृष्टरजा–

जिसको रजोधर्म्म हो जाय उस स्त्रीका नाम १–मध्यमा १ ॥

–स्तरुणी युवतिः समे ॥ ८ ॥

युवा स्त्रीके नाम २–तरुणी १ युवती २ ॥ ८ ॥

समाः स्नुषाजनीवध्व–

बहू (पुत्रवधू) के नाम ३–स्नुषा १ जनी २ वधू ३ ॥

–श्चिरण्टी तु सुवासिनी ।

जो कि किंचित् युवावस्थाको प्राप्त ब्याही हुई निज पिताके घरमें रहती हो उस स्त्रीके नाम २–चिरण्टी १ सुवासिनी २ ॥

इच्छावती कामुका स्या–

जो धनादिकी इच्छा करती हो उस स्त्रीके नाम २–इच्छावती १ कामुका २॥

–द्वृषस्यन्ती तु कामुकी ॥९॥

मैथुनकी इच्छा करनेवाली स्त्रीके नाम २–वृषस्यन्ती १ कामुकी २ ॥९॥

कान्तार्थिनी तु या याति संकेतं साऽभिसारिका ।

जो पतिकी इच्छा कर कामार्त्त हो संकेत स्थानको जावे उस स्त्रीका नाम १–अभिसारिका १ ॥

पुंश्चली धर्षिणी बन्धक्यसती कुलटेत्वरी ॥ १० ॥ स्वैरिणी पांशुला च स्या–

व्यभिचारिणी स्त्रीके नाम ८–पुंश्चली १ धर्षिणी २ बन्धकी ३ असती ४ कुलटा ५ इत्वरी ६ ॥१०॥ स्वैरिणी ७ पांसुला ८ ॥

–दशिश्वी शिशुना विना ।

विना पुत्रवाली स्त्रीका नाम १–अशिश्वी १ ॥

अवीरा निष्पतिसुता–

जिसके पति पुत्र न हों उस स्त्रीका नाम १–अवीरा १ ॥

–विश्वस्ताविधवे समे ॥ ११ ॥

विधवा स्त्रीके नाम २–विश्वस्ता १ विधवा २ ॥ ११ ॥

आलिः सखी वयस्याथ—

सखी वा साथके खेलनेवाली स्त्रीके नाम ३—आलि १ सखी २ वयस्या ३॥

—पतिवत्नी सभर्तृका ।

जिस स्त्रीका पति जीता हो उसके नाम २—पतिवत्नी १ सभर्तृका २ ॥

वृद्धा पलिक्नी—

बूढ़ी स्त्रीके नाम २—वृद्धा १ पलिक्नी २ ॥

—प्राज्ञी तु प्रज्ञा—

कुछ-कुछ समझदार स्त्रीके नाम २—प्राज्ञी १ प्रज्ञा २ ॥

—प्राज्ञा तु धीमती ॥ १२ ॥

अति बुद्धिमती स्त्रीके नाम २—प्राज्ञा १ धीमती २ ॥ १२ ॥

शूद्री शूद्रस्य भार्या स्या—

चाहे अन्य जाति भी हो पर शूद्रकी स्त्री हो उस स्त्रीका नाम १ शूद्री १ ॥

—च्छूद्रा तज्जातिरेव च ॥

शूद्रजातिका नाम १—शूद्रा १ ॥

आभीरी तु महाशूद्री जाति-पुंयोगयोः समा ॥ १३ ॥

अहिरिनिके नाम २ आभीरी १ महाशूद्री २ ॥ १३ ॥

अर्याणी स्वयमर्या स्यात्—

बनैनीके नाम २—अर्याणी १ अर्या २ ॥

—क्षत्त्रिया क्षत्त्रियाण्यपि ।

क्षत्रियानीके नाम २—क्षत्त्रिया १ क्षत्रियाणी २ ॥

उपाध्यायाप्युपाध्यायी—

पंडितानीके नाम २—उपाध्याया १ उपाध्यायी २ ॥

—स्यादाचार्यापि च स्वतः ॥ १४ ॥

जो अपने आप मंत्रोंके अर्थ कह सके उसका नाम १—आचार्य्या १ ॥ १४ ॥

आचार्यानी तु पुंयोगे—

चाहे मंत्रादिकी व्याख्या न करसके पर आचार्यकी स्त्री हो उसका नाम १—आचार्य्यानी १ ॥

—स्यादर्यी—

वैसे ही अर्य (वैश्य) की स्त्रीका नाम १—अर्यी १ ॥

—क्षत्त्रियी तथा ।

क्षत्रियकी स्त्रीका नाम १—क्षत्त्रियी १।

उपाध्यायान्युपाध्यायी—

पढ़ानेवालेकी स्त्रीके इसीप्रकारके नाम २—उपाध्यायानी १ उपाध्यायी २ ॥

—पोटा स्त्री पुंसलक्षणा ॥ १५ ॥

डाढ़ी मूछ आदियुक्त स्त्रीका नाम १-पोटा १ ॥ १५ ॥

वीरपत्नी वीरभार्या—

वीरकी स्त्रीके नाम २—वीरपत्नी १ वीरभार्या २ ॥

-वीरमाता तु वीरसूः।

वीरकी माताके नाम २-वीरमातृ १ वीरसू २ ॥

जातापत्या प्रजाता च प्रसूता च प्रसूतिका ॥ १६ ॥

जिसके बालक पैदा हुआ हो उस स्त्रीके नाम ४-जातापत्या १ प्रजाता २ प्रसूता ३ प्रसूतिका ४ ॥ १६ ॥

स्त्री नग्निका कोटवी स्याद्-

नङ्गी स्त्रीके नाम २-नग्निका १ कोटवी २ ॥

-दूती सञ्चारिके समे।

दूतीके नाम २-दूती १ संचारिका २ ॥

कात्यायन्यर्धवृद्धा या काषायवसनाऽधवा ॥ १७ ॥

गेरू आदिसे रँगे हुए वस्त्र पहरनेवाली कुछ वृद्ध विधवा स्त्रीका नाम १-- कात्यायनी १ ॥ १७ ॥

सैरन्ध्री परवेश्मस्था स्ववशा शिल्पकारिका ॥

अपनी इच्छाके अनुसार पराये गृहमें रहकर शिल्पकार्य करनेवाली स्त्रीका नाम १-सैरन्ध्री १ ॥

असिक्नी स्यादवृद्धा या प्रेष्याऽन्तःपुरचारिणी ॥ १८ ॥

घरके भीतर सेवा आदि कार्य करनेवाली जवान स्त्रीका नाम १-असिक्नी १ ॥ १८ ॥

वारस्त्री गणिका वेश्या रूपाजीवा-

वेश्याके नाम ४-वारस्त्री १ गणिका २ वेश्या ३ रूपाजीवा ४ ॥

-ऽथ सा जनैः। सत्कृता वारमुख्या स्यात्-

जिसका पुरुष अधिक सत्कार करे अर्थात् सबमें श्रेष्ठ वेश्याका नाम १-- वारमुख्या १ ॥

-कुट्टनी शम्भली समे ॥ १९ ॥

कुटनीके नाम २-कुट्टनी १ ॥ शम्भली २ ॥ १९ ॥

विप्रश्निका त्वीक्षणिका दैवज्ञा-

सामुद्रिक आदि शास्त्रानुसार लक्षण जानकर शुभाशुभ फल कहनेवाली स्त्रीके नाम ३-विप्रश्निका १ ईक्षणिका २ दैवज्ञा ३ ॥

ऽथ रजस्वला।
स्त्रीधर्मिण्यविरात्रेयी मलिनी पुष्पवत्यपि ॥ २० ॥ ऋतुमत्यप्युदक्यापि-

रजस्वला स्त्रीके नाम ८-रजस्वला १ स्त्रीधर्मिणी २ अवि ३ आत्रेयी ४ मलिनी ५ पुष्पवती ६ ॥ २० ॥ ऋतुमती ७ उदक्या ८ ॥

-स्याद्रजः पुष्पमार्तवम्।

स्त्रीके मासिक रजोधर्मके नाम ३- रजस् १ पुष्प २ आर्तव ३ ॥

श्रद्धालुर्दोहदवती–

गर्भके समय अनेक प्रकारकी इच्छा करनेवाली स्त्रीके नाम २–श्रद्धालु १ दोहदवती २ ॥

–निष्कला विगतार्तवा ॥ २१॥

रजोहीन स्त्रीके नाम २–निष्कला १ विगतार्तवा २ ॥ २१ ॥

आपन्नसत्त्वा स्याद्गुर्विण्यन्तर्वत्नी च गर्भिणी ।

गर्भवाली स्त्रीके नाम ४–आपन्नसत्त्वा १ गुर्विणी २ अन्तर्वत्नी ३ गर्भिणी ४ ॥

गणिकादेस्तु गाणिक्यं गार्भिणं यौवतं गणे ॥ २२ ॥

वेश्याओंके समूहका नाम १ गाणिक्य १ ॥ गार्भिणियोंके समूहका नाम १–गार्भिण १ ॥ युवतियोंके समूहका नाम १–यौवत १ ॥ २२ ॥

पुनर्भूर्दिधिषूरूढा द्वि–

जिस स्त्रीका विवाहसंस्कार द्वितीयवार हो उस स्त्रीके नाम २–पुनर्भू १ दिधिषू २ ॥

--स्तस्या दिधिषुः पतिः ।

उसके पतिका नाम १–दिधिषु १।

स तु द्विजोऽग्रेदिधिषूः सैव यस्य कुटुम्बिनी ॥ २३ ॥

जिसका द्वितीयवार विवाहसंस्कार हो वह स्त्री और उसका पति उन दोनोंसे उत्पन्न बालकका नाम १–अग्रेदिधिषू १ ॥ २३ ॥

कानीनः कन्यकाजातः सुतो–

कन्यासे उत्पन्न हुए पुत्रके नाम २–कानीन १ कन्यकाजात २ ॥

–ऽथ सुभगासुतः । सौभागिनेयः–

सौभाग्यवती स्त्रीके पुत्रके नाम २–सुभगासुत १ सौभागिनेय २ ॥

–स्यात्पारस्त्रैणेयस्तु परस्त्रियाः २४॥

परस्त्रीके पुत्रका नाम १–पारस्त्रैणेय १ ॥ २४ ॥

पैतृष्वसेयः स्यात्पैतृष्वस्रीयश्च पितृष्वसुः । सुतो–

पिताकी बहन अर्थात् बुवाके पुत्रके नाम २–पैतृष्वसेय १ पैतृष्वस्रीय २ ॥

–मातृष्वसुश्चैवं–

मौसीके पुत्रके नाम २–मातृष्वसेय १ मातृष्वस्रीय २ ॥

–वैमात्रेयो विमातृजः ॥ २५ ॥

सौतेले भाईके नाम २–वैमात्रेय १ विमातृज २ ॥ २५ ॥

अथ बान्धकिनेयः स्याद्बन्धुलश्चासतीसुतः । कौलटेरः कौलटेयो–

कुलटाके पुत्रके नाम ५–बान्धकिनेय १ बन्धुल २ असतीसुत ३ कौलटेर ४ कौलटेय ५ ॥

–भिक्षुकी तु सती यदि ॥२६॥ तदा कौलटिनेयोऽस्याः कौलटेयोऽपि चात्मजः ।

जो सती भिक्षाके निमित्त घरोंमें फिरे ॥ २६ ॥ उसके पुत्रके नाम २–कौलटिनेय १ कौलटेय २ ॥

आत्मजस्तनयः सूनुः सुतः पुत्रः–

पुत्रके नाम ५–आत्मज १ तनय २ सूनु ३ सुत ४ पुत्र ५ ॥

–स्त्रियां त्वमी ॥ २७ ॥ आहुर्दुहितरं सर्वे–

जो पुत्रके नाम स्त्रीलिंगमें हों तो पुत्रीके नाम हो जाते हैं ॥ २७ ॥

–ऽपत्यं तोकं तयोः समे ।

पुत्र पुत्री साधारणके नाम २–अपत्य १ तोक २ ॥

स्वजाते त्वौरसोरस्यौ–

सगे पुत्रके नाम २–औरस १ उरस्य २ ॥

–तातस्तु जनकः पिता ॥ २८॥

पिताके नाम ३–तात १ जनक २ पितृ ३॥ २८ ॥

जनयित्री प्रसूर्माता जननी–

माताके नाम ४–जनयित्री १ प्रसू २ मातृ ३ जननी ४ ॥

–भगिनी स्वसा ।

बहिनके नाम २–भगिनी १ स्वसृ २॥

ननान्दा तु स्वसा पत्यु–

ननन्दका नाम १–ननान्दृ १ ॥

र्नप्त्री पौत्री सुतात्मजा ॥२९॥

नातिनिके नाम ३–नप्त्री १ पौत्री २ सुतात्मजा ३ ॥ २९ ॥

भार्यास्तु भ्रातृवर्गस्य यातरः स्युः परस्परम् ।

आपसमें भ्रातृवर्गकी स्त्रियोंका नाम १–यातृ १ ॥

प्रजावती भ्रातृजाया–

भौजाईके नाम २–प्रजावती १ भ्रातृजाया २ ॥

–मातुलानी तु मातुली ॥३०॥

मामीके नाम २–मातुलानी १ मातुली २ ॥ ३० ॥

पतिपत्न्योः प्रसूः श्वश्रूः–

पति और स्त्रीकी माताका नाम १–श्वश्रू १ ॥

–श्वशुरस्तु पिता तयोः ।

पति और स्त्रीके पिताका नाम १–श्वशुर १ ॥

पितुर्भ्राता पितृव्यः स्या–

चाचा या ताऊका नाम १–पितृव्य १॥

–न्मातुर्भ्राता च मातुलः ॥ ३१ ॥

मामाके नाम २—मातुर्भ्रातृ १ मातुल २ ॥ ३१ ॥

श्यालाः स्युर्भ्रातरः पत्न्याः—

शालेका नाम १—श्याल १—

—स्वामिनो देवृदेवरौ ।

देवरके नाम २—देवृ १ देवर २ ॥

स्वस्रीयो भागिनेयः स्या—

भानजेके नाम २—स्वस्रीय १ भागिनेय २ ॥

ज्जामाता दुहितुः पतिः ॥३२॥

जमाईके नाम १—जामातृ १॥३२॥

पितामहः पितृपिता—

दादाके नाम २—पितामह १ पितृपितृ २ ॥

—तत्पिता प्रपितामहः ।

परदादाका नाम १—प्रपितामह १॥

मातुर्मातामहाद्येवं—

इस प्रकार (नानाका नाम) मातामह (परनानाका) प्रमातामह ॥

सपिण्डास्तु सनाभयः ॥ ३३ ॥

सपिण्डके नाम २—सपिण्ड १ सनाभि २ ॥ ३३ ॥

समानोदर्यसोदर्यसगर्भ्यसहजाः समाः ।

सगे भाईके नाम ४—समानोदर्य १ सोदर्य २ सगर्भ्य ३ सहज ४ ॥

सगोत्रबान्धवज्ञातिबन्धुस्वस्वजनाः समाः ॥ ३४ ॥

एक गोत्रवालोंके अर्थात् समगोत्रियोंके नाम ६—सगोत्र १ बान्धव २ ज्ञाति ३ बन्धु ४ स्व ५ स्वजन ६॥३४

ज्ञातेयं बन्धुता तेषां क्रमाद्भावसमूहयोः ।

बिरादरीके भावका नाम १—ज्ञातेय १ ॥ परिवारके समूहका नाम १—बन्धुता १ ॥

धवः प्रियः पतिर्भर्ता—

पतिके नाम ४—धव १ प्रिय २ पति ४ भर्तृ ४ ॥

—जारस्तूपपतिः समौ ॥ ३५ ॥

जिसके साथ ब्याही हो उससे अतिरिक्त अन्यसे मैथुन करती हो तो उस पतिके नाम २—जार १ उपपति२॥३५

अमृते जारजः कुण्डो—

अपने पतिके जीते ही अन्य पतिसे जो पुत्र हो उसका नाम १—कुण्ड १ ॥

—मृते भर्तरि गोलकः ।

जो पतिके मरनेपर अन्य पतिसे उत्पन्न हो उसका नाम १—गोलक १ ॥

भ्रात्रीयो भ्रातृजो—

भतीजेके नाम २—भ्रात्रीय १ भ्रातृज २ ॥

—भ्रातृभगिन्यौ भ्रातरावुभौ ३६

बहिनभाईके नाम २–भ्रातृभगिनी (रौ) १ भ्रातृ (तरौ) २ ॥ ३६ ॥

मातापितरौ पितरौ मातरपितरौ प्रसूजनयितारौ।

जहां मातापिताको साथ ही कहना हो उसके नाम ४–मातापितृ (तरौ) १ पितृ (तरौ) २ मातरपितृ (तरौ) ३ प्रसूजनयितृ (तारौ) ४ ॥

श्वश्रूश्वशुरौ श्वशुरौ–

ऐसे ही सासु ससुरके नाम २–श्वश्रूश्वशुर (रौ) १ श्वशुर (रौ) २ ।

–पुत्रौ पुत्रश्च दुहिता च ॥ ३७ ॥

इसी प्रकार कन्यापुत्रका नाम १ ॥ पुत्र (त्रौ) १ ॥ ३७ ॥

दंपती जंपती जायापती भार्यापती च तौ।

स्त्रीपुरुषके इकट्ठे नाम ४–दम्पति (ती) १ जम्पति (ती) २ जायापति (ती) ३ भार्यापति (ती) ४ ॥

गर्भाशयो जरायुः स्या–

गर्भस्थानके नाम २–गर्भाशय १ जरायु २ ॥

–दुल्बं च कललोऽस्त्रियाम् ३८

गर्भबन्धनके नाम २–उल्व १ कलल २ ॥ ३८ ॥

सूतिमासो वैजननो–

गर्भ रहनेसे नवमें वा दशमें मासके नाम जिसमें बालक पैदा होता है २–सूतिमास १ वैजनन २ ॥

–गर्भो भ्रूण इमौ समौ।

गर्भके नाम २–गर्भ १ भ्रूण २ ॥

तृतीयाप्रकृतिः षण्ढः क्लीबः पण्डो नपुंसके ॥ ३९ ॥

हीजडेके नाम ५–तृतीयाप्रकृति १ षण्ढ २ क्लीब ३ पण्ड ४ नपुंसक ५ ॥ ३९ ॥

शिशुत्वं शैशवं बाल्यं–

लड़कपनके नाम ३–शिशुत्व १ शैशव २ बाल्य ३ ॥

तारुण्यं यौवनं समे।

यौवनके नाम २–तारुण्य १ यौवन २ ॥

स्यात्स्थाविरं तु वृद्धत्वं–

बुढापेके नाम २–स्थाविर १ वृद्धत्व २ ॥

वृद्धसंघेऽपि वार्धकम् ॥ ४० ॥

बूढोंके समूहका नाम १–वार्धक १ ॥ ४० ॥

पलितं जरसा शौक्ल्यं केशादौ–

अतिबुढ़ापेमें केश आदिकमें जरा करके जो सफेदी आती है उसका नाम १–पलित १ ॥

–विस्रसा जरा।

बुढ़ाईके नाम २–विस्रसा १ जरा २ ॥

स्यादुत्तानशया डिम्भा स्तनपा च स्तनन्धयी ॥ ४१ ॥

दूधपिई छोटी लड़कीके नाम ४—उत्तानशया १ डिम्भा २ स्तनपा ३ स्तनन्धयी ४ ॥ ४१ ॥

बालस्तु स्यान्माणवको—

सोलह वर्षपर्यन्त लड़केके नाम २—बाल १ माणवक २ ॥

—वयःस्थस्तरुणो युवा ।

जवान पुरुषके नाम ३—वयःस्थ १ तरुण २ युवन् ३ ॥

प्रवयाः स्थविरो वृद्धो जीनो जीर्णो जरन्नपि ॥ ४२ ॥

बूढ़ेके नाम ६—प्रवयस् १ स्थविर २ वृद्ध ३ जीन ४ जर्णि ५ जरत् ६ ॥ ४२ ॥

वर्षीयान्दशमी ज्यायान्—

अतिबूढ़ेके नाम ३—वर्षीयस् १ दशमिन् २ ज्यायस् ३ ॥

—पूर्वजस्त्वग्रियोऽग्रजः ।

ज्येष्ठ भाईके नाम ३—पूर्वज १ अग्रिय २ अग्रज ३ ॥

जघन्यजे स्युः कनिष्ठयवीयोऽवरजानुजाः ॥ ४३ ॥

छोटे भाईके नाम ५—जघन्यज १ कनिष्ठ २ यवीयस् ३ अवरज ४ अनुज ५ ॥ ४३ ॥

अमांसो दुर्बलश्छातो—

दुबलेके नाम ३— अमांस १ दुर्बल २ छात ३ ॥

—बलवान्मांसलोंऽसलः ।

बलवान्के नाम ३—बलवत् १ मांसल २ अंसल ३ ॥

तुन्दिलस्तुन्दिभस्तुन्दी बृहत्कुक्षिः पिचण्डिलः ॥ ४४ ॥

बड़े पेटवालेके नाम ५—तुंदिल १ तुंदिभ २ तुन्दिन् ३ बृहत्कुक्षि ४ पिचण्डिल ॥ ४४ ॥

अवटीटोऽवनाटश्चावभ्रटो नतनासिके ।

चपटी नाकवालेके नाम ३—अवटीट १ अवनाट २ अवभ्रट ३ ॥

केशवः कोशिकः केशी—

अच्छे बालवालोंके नाम३—केशव १ केशिक २ केशिन् ३ ॥

—वलिनो वलिभः समौ॥ ४५ ॥

जिसकी बुढ़ापेके मारे खाल सिकुड़ गयी हो उसके नाम २— वलिन १ वलिभ २ ॥ ४५ ॥

विकलांगस्त्वपोगण्डः—

जिसका अपनेहीसे कोई अंग अधिक वा कम हो उसके नाम २—विकलांग १ अपोगण्ड ॥ २ ॥

—खर्वो ह्रस्वश्च वामनः ।

बौनेके नाम ३—खर्व १ ह्रस्व २ वामन ३ ॥

खरणाः स्यात्खरणसो—

जिसकी तीखी नाक हो उसके नाम २—खरणस् १ खरणस २ ॥

—विग्रस्तु गतनासिकः ॥ ४६ ॥

नकटेके नाम २—विग्र १ गतनासिक २ ॥ ४६ ॥

खुरणाः स्यात्खुरणसः—

जिसकी पशुके खुरके सदृश नासिका हो उसके नाम२—खुरणस् १ खुरणस ॥ २ ॥

प्रज्ञुः प्रगतजानुकः ।

वातआदि रोगसे जिसके घुटने बहुत दूर दूर हो गये हों उसके नाम २--प्रज्ञु १ प्रगतजानुक २ ॥

—ऊर्ध्वज्ञुरूर्ध्वजानुः स्यात्—

जिसके घुटने ऊंचे हों उसके नाम२-ऊर्ध्वज्ञु १ ऊर्ध्वजानु २ ॥

—संज्ञुः संहतजानुकः ॥ ४७ ॥

जिसके घुटने मिले हुए हों उसके नाम२—संज्ञु १ संहतजानुक २॥४७॥

स्यादेडे बधिरः—

बहिरेके नाम २—एड १ बधिर २

—कुब्जे गडुलः—

कुबड़ेके नाम२—कुब्ज १ गडुल२॥

—कुकरे कुणिः ।

जिसके हाथमें रोगादिसे कुछ विकार हो उसके नाम २—कुकर १ कुणि२ ॥

पृश्निरल्पतनौ—

जिसका बहुत ही छोटा शरीर हो उसके नाम२—पृश्नि १ अल्पतनु २ ॥

—श्रोणः पंगौ—

लूलेके नाम २—श्रोण १ पंगु २ ॥

—मुण्डस्तु मुण्डिते ॥ ४८ ॥

जिसका शिर मूँड़ा हुआ हो उसके नाम २—मुण्ड १ मुण्डित २ ॥ ४८ ॥

बलिरः केकरे—

भेंड़े (जिसके नेत्रकी पुतली फिरती हो) उसके नाम२--बलिर १ केकर२॥

—खोडे खञ्जे—

लँगड़ेके नाम २—खोड १ खञ्ज२॥

—स्त्रिषु जरावराः । जडुलः कालकः पिप्लु—

जिसके अंगमें लशुनाकारका चिह्न हो उसके नाम ३—जडुल १ कालक २ पिप्लु ३ ॥

—स्तिलकस्तिलकालकः ॥४९॥

देहके तिलके नाम २—तिलक १ तिलकालक २ ॥ ४९ ॥

अनामयं स्यादारोग्यं—

विना रोगके नाम २--अनामय १ आरोग्य २ ॥

—चिकित्सा रुक्प्रतिक्रिया ।

इलाज करनेके नाम २—चिकित्सा१ रुक्प्रतिक्रिया २ ॥

भेषजौषधभैषज्यान्यगदो जायुरित्यपि ॥ ५० ॥

औषधके नाम ५–भेषज १ औषध २ भैषज्य ३ अगद ४ जायु ॥५० ॥

स्त्री रुग्रुजा चोपतापरोगव्याधिगदामयाः ।

रोगके नाम ७–रुज् १ रुजा २ उपताप ३ रोग ४ व्याधि ५ गद ६ आमय ७ ॥

क्षयः शोषश्च यक्ष्मा च–

क्षय रोगके नाम ३–क्षय १ शोष- २ यक्ष्मन् ३ ॥

–प्रतिश्यायस्तु पीनसः ॥५१॥

पीनसरोगके नाम २–प्रतिश्याय १ पीनस २ ॥ ५१ ॥

स्त्री क्षुत्क्षुतं क्षवः पुंसि–

छींकके नाम ३–क्षुत् १ क्षुत २ क्षव ३ ।

–कासस्तु क्षवथुः पुमान् ।

खांसीके नाम २–कास १ क्षवथु २ ।

शोफस्तु श्वयथुः शोथः–

सूजनके नाम ३–शोफ १ श्वयथु २ शोथ ३ ॥

--पादस्फोटो विपादिका ॥५२॥

बिवायी रोगके नाम २--पादस्फोट १ विपादिका २ ॥ ५२ ॥

किलाससिध्मे–

सेहुवां (सीप) के नाम २-- किलास १ सिध्म २ ॥

--कच्छ्वां तु पामपामे विचर्चिका ।

खाजुरोगके नाम ४--कच्छू १ पामन् २ पामा ३ विचर्चिका ४ ॥

कण्डूः खर्जूश्च कण्डूया–

खुजलीके नाम ३--कण्डू १ खर्जू २ कण्डूया ३ ॥

--विस्फोटः पिटकोऽस्त्रियाम् ॥ ५३ ॥

फोड़ेके नाम २–विस्फोट १ पिटक २ ॥ ५३ ॥

व्रणोऽस्त्रियामीर्ममरुः क्लीबे–

घावके नाम ३-व्रण १ ईर्म्म २ अरुस् ३ ।

–नाडीव्रणः पुमान् ।

नासूरका नाम १–नाडीव्रण १ ॥

कोठो मण्डलकं–

जो गोल उज्ज्वल चन्दे पड़ जाते हैं उस कोढ़के नाम २–कोठ १ मण्डलक २ ॥

–कुष्ठश्वित्रे–

छाजनके नाम २–कुष्ठ १ श्वित्र २ ॥

–दुर्नामकार्शसी ॥ ५४ ॥

बवासीरके नाम २–दुर्नामक १ अर्शस् २ ॥ ५४ ॥

आनाहस्तु विबन्धः स्याद्–

कजई जिसमें मल मूत्र रुक जाय उस रोगके नाम २--आनाह १ विबन्ध २ ॥

--ग्रहणी रुक्प्रवाहिका ।

संग्रहणी रोगके नाम २--ग्रहणी १ प्रवाहिका २ ॥

प्रच्छर्दिका वमिश्च स्त्री पुमांस्तु वमथुः समाः ॥५५ ॥

उलटी अर्थात् वमनके नाम ३--प्रच्छर्दिका १ वमि २ वमथु ३ ॥५५॥

व्याधिभेदा विद्रधिः स्त्री ज्वर-मेहभगन्दराः ।

व्यराथिया (एक प्रकारका फोड़ा) का नाम १--विद्रधि १ । ज्वरका नाम १--ज्वर १ ॥ प्रमेहका नाम १ मेह १ । भगन्दर अर्थात् गुदसमीपके फोड़ेका नाम १--भगन्दर १ ॥

अश्मरी मूत्रकृच्छ्रं स्यात्-

कर्करोग अर्थात् पथरीरोगके नाम २--अश्मरी १ मूत्रकृच्छ्र २ ॥

--पूर्वे शुक्रावधेस्त्रिषु ॥ ५६ ॥

यहांसे लेकर शुक्रशब्दके पहलेके शब्द तीनों लिङ्गोंमें होते हैं ॥ ५६ ॥

रोगहार्यगदंकारो भिषग्वैद्यो चिकित्सके ॥

वैद्यके नाम ५--रोगहारिन् १ अगदंकार २ भिषज् ३ वैद्य ४ चिकित्सक ५॥

वार्त्तो निरामयः कल्य उल्लाघो निर्गतो गदात् ॥ ५७ ॥

रोगरहितके नाम ४--वार्त १ निरामय २ कल्य ३ उल्लाघ ४ ॥ ५७ ॥

ग्लानग्लास्नू-

रोगवशसे क्षीण हो जानेवालेके नाम २--ग्लान १ ग्लास्नु २ ॥

--आमयावी विकृतो व्याधितो-ऽपटुः । आतुरोऽभ्यमितोऽभ्यान्तः-

रोगीके नाम ७--आमयाविन् १ विकृत २ व्याधित ३ अपटु ४ आतुर ५ अभ्यमित ७ अभ्यान्त ७ ॥

--समौ पामनकच्छुरौ ॥ ५८ ॥

खुजलीवालेके नाम २--पामन १ कच्छुर २ ॥ ५८ ॥

दद्रुणो दद्रुरोगी स्या-

दद्रुरोगीके नाम २--दद्रुण १ दद्रुरोगिन् २ ॥

--दर्शोरोगयुतोऽर्शसः ।

बवासीररोगीका नाम १--अर्शस १॥

वातकी वातरोगी स्यात्-

वातरोगीके नाम २--वातकिन् १ वातरोगिन् २ ॥

--सातिसारोऽतिसारकी ॥५९॥

जिसको बहुत दस्त हों उसके नाम २--सातिसार १ अतिसारकिन् २ ॥५९॥

स्युः क्लिन्नाक्षे चुल्लचिल्लपिल्लाः क्लिन्नेऽक्ष्णि चाप्यमी ।

चुन्धेके नाम ४—क्लिन्नाक्ष १ चुल्ल २ चिल्ल ३ पिल्ल ४ ॥

उन्मत्त उन्मादवति—

उन्मत्त अर्थात् बावलेके नाम २—उन्मत्त १ उन्मादवत् २ ॥

—श्लेष्मलः श्लेष्मणः कफी ॥६०॥

कफरोगवालेके नाम ३—श्लेष्मल १ श्लेष्मण २ कफिन् ३ ॥ ६० ॥

न्युब्जो भुग्ने रुजा—

कुबड़ेका नाम १—न्युब्ज १ ॥

—वृद्धनाभौ तुन्दिलतुन्दिभौ ।

जिसकी वातरोगसे नाभि बढ़ जाय उसके नाम ३—वृद्धनाभि १ तुन्दिल २ तुन्दिभ ३ ॥

किलासी सिध्मलो—

किलास (सींप्) रोगीके नाम २—किलासिन् १ सिध्मल २ ॥

—ऽन्धोऽदृक्—

अन्धेके नाम २—अन्ध १ अदृश् २ ॥

—मूर्छाले मूर्तमूर्छितौ ॥ ६१ ॥

बेहोशवालेके नाम ३—मूर्च्छाल १ मूर्त २ मूर्छित ३ ॥ ६१ ॥

शुक्रं तेजोरेतसी च बीजवीर्येन्द्रियाणि च ।

धातुके नाम ६—शुक्र १ तेजस् २ रेतस् ३ बीज ४ वीर्य ५ इंद्रिय ६ ॥

मायुः पित्तं—

पित्तके नाम २—मायु १ पित्त २ ॥

—कफः श्लेष्मा—

कफके नाम २—कफ १ श्लेष्मन् २।

—स्त्रियां तु त्वगसृग्धरा ॥६२॥

खालके नाम २—त्वच् १ असृग्धरा २ ॥ ६२ ॥

पिशितं तरसं मांसं पललं क्रव्यमामिषम् ।

मांसके नाम ६—पिशित १ तरस २ मांस ३ पलल ४ क्रव्य ५ आमिष ६॥

उत्तप्तं शुष्कमांसं स्यात्तद्वल्लूरं त्रिलिङ्गकम् ॥ ६३ ॥

सूखे मांसके नाम ३—उत्तप्त १ शुष्कमांस २ वल्लूर ३ ॥ ६३ ॥

रुधिरेऽसृग्लोहितास्त्ररक्तक्षतजशोणितम् ।

रुधिरके नाम ७—रुधिर १ असृज् २ लोहित ३ अस्त्र ४ रक्त ५ क्षतज ६ शोणित ७ ॥

बुक्काग्रमांसं—

कलेजेके नाम २—बुक्का १ अग्रमांस ॥

—हृदयं हृत्—

हृदयके नाम २—हृदय १ हृद् २॥

—न्मेदस्तु वपा वसा ॥ ६४ ॥

चरबीके नाम ३–मेदस् १ वपा २ वसा ३ ॥ ६४ ॥

पश्चाद्ग्रीवाशिरा मन्या–

गलेके पीछेकी नसका नाम १–मन्या १ ॥

–नाडी तु धमनिः शिरा ।

नाड़ीके नाम ३–नाडी १ धमनि २ शिरा ३ ॥

तिलकं क्लोम–

शरीरके तिलके नाम २–तिलक १ क्लोमन् २ ॥

–मस्तिष्कं गोर्दं–

गुर्देके नाम २–मस्तिष्क १ गोर्द २ ॥

–किट्टं मलोऽस्त्रियाम् ॥ ६५ ॥

मैलके नाम २–किट्ट १ मल २ ॥ ६५ ॥

अन्त्रं पुरीतद्–

आंतोंके नाम २–अन्त्र १ पुरीतत् २ ॥

–गुल्मस्तु प्लीहा पुं–

पलैया (तिल्ली) रोगके नाम २–गुल्म १ प्लीहन् २ ॥

–स्यथ वस्नसा । स्नायुः स्त्रियां–

नसके नाम २–वस्नसा १ स्नायु २ ॥

–कालखण्ड यकृती तु समे इमे ॥ ६६ ॥

पेटमें जो दहिनी ओर बटिया हो उसके नाम २–कालखण्ड १ यकृत् २ ॥ ६६ ॥

सृणिका स्यन्दिनी लाला–

लारके नाम ३–सृणिका १ स्यन्दिनी २ लाला ३ ॥

दूषिका नेत्रयोर्मलम् ।

कीचड (गीड़) का नाम १–दूषिका १ ॥

मूत्रं प्रस्राव–

मूतके नाम २–मूत्र १ प्रस्राव २ ॥

–उच्चारावस्करौ शमलं शकृत् ॥ ६७ ॥ पुरीषं गूथवर्चस्कमस्त्री विष्ठाविशौ स्त्रियौ ।

विष्ठाके नाम ९–उच्चार १ अवस्कर २ शमल ३ शकृत् ४ ॥ ॥ ६७ ॥ पुरीष ५ गूथ ६ वर्चस्क ७ विष्ठा ८ विश् ९ ॥

स्यात्कर्परः कपालोऽस्त्री–

कपालके नाम २–कर्पर १ कपाल २ ॥

–कीकसं कुल्यमस्थि च ॥ ६८ ॥

हड्डीके नाम ३–कीकस १ कुल्य २ अस्थि ॥ ६८ ॥

स्याच्छरीरास्थ्नि कंकालः–

खांकरका नाम १–कंकाल १ ॥

–पृष्ठास्थ्नि तु कशेरुका ।

पीठकी हड्डीका नाम १–कशेरुका १ ॥

शिरोस्थनि करोटिः स्त्री–

खोपड़ीका नाम १–करोटि १ ॥

–पार्श्वास्थनि तु पर्शुका ॥ ६९ ॥

पँसलीका नाम १–पर्शुका १ ॥ ६९ ॥

अङ्गं प्रतीकोऽवयवोऽपघनो–

अङ्गके नाम ४—अंग १ प्रतीक २ अवयव ३ अपघन ४ ॥

--ऽथ कलेवरम् । गात्रं वपुः संहननं शरीरं वर्ष्म विग्रहः ॥७०॥ कायो देहः क्लीबपुंसोः स्त्रियां मूर्तिस्तनुस्तनूः ।

देहके नाम १२—कलेवर १ गात्र २ वपुष् ३ संहनन ४ शरीर ५ वर्ष्मन् ६ विग्रह ७ ॥ ७० ॥ काय ८ देह ९ मूर्ति १० तनु ११ तनू १२ ॥

पादाग्रं प्रपदं--

पांवके आगेके नाम २—पादाग्र १ प्रपद २ ॥

--पादः पदंघ्रिश्चरणोऽस्त्रियाम् ७१॥

पांवके नाम ४—पाद १ पद् २ अंघ्रि ३ चरण ४ ॥ ७१ ॥

तद्ग्रन्थी घुटिके गुल्फौ--

टांकनोंके नाम २--घुटिका १ गुल्फ २

—पुमान्पार्ष्णिस्तयोरधः ।

एड़ीका नाम १—पार्ष्णि १ ॥

जंघा तु प्रसृता—

जंघा (पींडी) के नाम २--जंघा १ प्रसृता २ ॥

--जानूरुपर्वाष्ठीवदस्त्रियाम् ॥७२॥

जानुके नाम ३—जानु १ ऊरुपर्वन् २ अष्ठीवत् ३ ॥ ७२ ॥

सक्थि क्लीबे पुमानूरु—

निरोहके नाम २—सक्थि १ ऊरु २॥

—स्तत्सन्धिः पुंसि वंक्षणः ।

टिहुनीका नाम १—वंक्षण १ ॥

गुदं त्वपानं पायुर्ना—

गुदाके नाम ३—गुद १ अपान २ पायु ३ ॥

—बस्तिर्नाभेरधो द्वयोः ॥ ७३ ॥

जहां मूत्र रहता है अर्थात् पेडूका नाम १—बस्ति २ ॥ ७३ ॥

कटो ना श्रोणिफलकं—

कमरके दोनों बगलके नाम ३—कट १ श्रोणि २ फलक ३ ॥

—कटिः श्रोणिः ककुद्मती ।

कमरके नाम ३—कटि १ श्रोणि २ ककुद्मती ३ ॥

पश्चान्नितम्बः स्त्रीकट्याः—

स्त्रीके चूतड़का नाम १—नितम्ब १ ॥

—क्लीबे तु जघनं पुरः ॥ ७४ ॥

स्त्रीके जांघका नाम १—जघन १ ॥ ॥ ७४ ॥

कूपकौ तु नितम्बस्थौ द्वयहीने कुकुन्दरे ।

नितम्बमें जो दो गड्ढे होते हैं उनका नाम १—कुकुन्दर १ ॥

स्त्रियां स्फिचौ कटिप्रोथा—

कूलेके नाम २—स्फिच् १ कटिप्रोथ २॥

–वुपस्थो वक्ष्यमाणयोः ॥७५॥

लिंगयोनिका नाम १–उपस्थ१ ॥७५॥

भगं योनिर्द्वयोः–

योनिके नाम २–भग १ योनि२ ॥

–शिश्नो मेढ्रो मेहनशेफसी ।

लिंगके नाम ४–शिश्न १ मेढ्र २ मेहन ३ शेफस् ४ ॥

मुष्कोऽण्डकोशो वृषणः–

अण्डकोशके नाम ३–मुष्क १ अण्डकोश २ वृषण ३ ॥

–पृष्ठवंशाधरे त्रिकम् ॥ ७६ ॥

पीठके बांसके नीचे जहां तीन हाड़ मिले हैं उस जोड़का नाम १–त्रिक १ ॥ ७६ ॥

पिचण्डकुक्षी जठरोदरं तुन्दं–

पेटके नाम ५–पिचण्ड १ कुक्षि २ जठर ३ उदर ४ तुन्द ५ ॥

–स्तनौ कुचौ ।

कुचके नाम २–स्तन १ कुच२ ॥

चूचुकं तु कुचाग्रं स्या–

कुचके अग्रभागके नाम २–चूचुक १ कुचाग्र २ ॥

–न्न ना क्रोडं भुजान्तरम् ७७॥

गोदके नाम २–क्रोड १ भुजान्तर २ ॥ ७७ ॥

उरो वत्सं च वक्षश्च–

हृदयके नाम ३–उरस् १ वत्स २ वक्षस् ३ ॥

–पृष्ठं तु चरमं तनोः ।

पीठका नाम १–पृष्ठ १ ॥

स्कन्धो भुजशिरोंऽसोऽस्त्री–

कंधेके नाम ३–स्कन्ध १भुजशिरस् २ अंस ३ ॥

–सन्धी तस्यैव जत्रुणी ॥ ७८॥

हँसलीका नाम १–जत्रु १॥ ७८॥

बाहुमूले उभे कक्षौ–

बगलोंका नाम १–कक्ष १ ॥

–पार्श्वमस्त्री तयोरधः ।

बगलके नीचेका नाम १–पार्श्व१॥

मध्यमं चावलग्नं च मध्योऽस्त्री––

पेटके नीचेका और हाथके ऊपरके भागके नाम ३–मध्यम १ अवलग्न २ मध्य ३ ॥

–द्वौ परौ द्वयोः ॥ ७९ ॥

भुजबाहू प्रवेष्टो दोः स्यात्–

बांहके नाम ४––॥ ७९ ॥ भुज १ बाहु २ प्रवेष्ट ३ दोस् ४ ॥

––कफोणिस्तु कूर्परः ।

कोनीके नाम २––कफोणि १ कूर्पर २ ॥

अस्योपरि प्रगण्डः स्यात्––

कोनीके ऊपरका नाम १–प्रगण्ड१॥

–प्रकोष्ठस्तस्य चाप्यधः ॥ ८० ॥

कोनीके नीचेका नाम १–प्रकोष्ठ १ ॥ ८० ॥

मणिबन्धादाकनिष्ठं करस्य करभो बहिः ।

मणिबन्धसे कनिष्ठांगुलीपर्यन्तका नाम १–करभ १ ॥

पञ्चशाखः शयः पाणि–

हाथके नाम ३–पञ्चशाख १ शय २ पाणि ३ ॥

–स्तर्जनी स्यात्प्रदेशिनी॥८१॥

हाथके अँगूठेके पासकी अँगुलीके नाम २–तर्जनी १ प्रदेशिनी २ ॥ ८१ ॥

अंगुल्यः करशाखाः स्युः–

अँगुलियोंके नाम २–अंगुली १ करशाखा २ ॥

–पुंस्यंगुष्ठः–

अँगूठाका नाम १–अंगुष्ठ १ ॥

–प्रदेशिनी ।

अँगूठाके पासवाली अंगुलीका नाम १–प्रदेशिनी १ ॥

मध्यमाऽनामिका चापि कनिष्ठा चेति ताः क्रमात् ॥ ८२ ॥

बीचवाली अंगुलीका नाम १–मध्यमा १ ॥

बीचवाली और कनअंगुलीके बीचवालीका नाम १–अनामिका १ ॥

कनअंगुलीका नाम १–कनिष्ठा १ ॥ ८२ ॥

पुनर्भवः कररुहो नखोऽस्त्री नखरोऽस्त्रियाम् ।

नाखूनोंके नाम ४–पुनर्भव १ कररुह २ नख ३ नखर ४ ॥

प्रादेशतालगोकर्णास्तर्जन्यादियुते तते ॥ ८३ ॥

अंगुष्ठ तर्जनीतककी लम्बाईका नाम १–प्रादेश १ ॥

अंगुष्ठ और बीचवालीके फैलानेकी लंबाईका नाम १–ताल १ ॥

अंगुष्ठ अनामिकाके फैलानेकी लम्बाईका नाम १–गोकर्ण १ ॥८३॥

अंगुष्ठे सकनिष्ठे स्याद्वितस्तिर्द्वादशांगुलः ।

नापनेमें बिलस्तके नाम २–वितस्ति १ द्वादशांगुल २ ॥

पाणौ चपेटप्रतलप्रहस्ता विस्तृतांगुलौ ॥ ८४ ॥

थप्पड़के नाम ३–चपेट १ प्रतल २ प्रहस्त ३ ॥ ८४ ॥

द्वौ संहतौ संहतलप्रतलौ वामदक्षिणौ ।

दुहत्थड़ेके नाम २–संहतल १प्रतल२॥

पाणिर्निकुब्जः प्रसृति–

चुल्लूका नाम १–प्रसृति १ ॥

–स्तौ युतावञ्जलिः पुमान्॥८५॥

अंजलिका नाम१—अञ्जलि१॥८५॥

प्रकोष्ठे विस्तृतकरे हस्तो—

हाथका नाम १—हस्त १ ॥

—मुष्टया तु बद्धया । सरत्निः स्या-

मुट्ठी बांधे हाथका नाम १—(सरत्नि) रत्नि १ ॥

—दरत्निस्तु निष्कनिष्ठेन मुष्टिना ॥ ८६ ॥

कनअंगुलियाको छोड़के मुट्ठी बांधे हाथका नाम १—अरत्नि १ ॥ ८६ ॥

व्यामो बाह्वोः सकरयोस्ततयोः स्तिर्यगन्तरम् ।

हाथ फैलानेका नाम १ व्याम १ ॥

ऊर्ध्वविस्तृतदोः पाणिर्नृमाने पौरुषं त्रिषु ॥ ८७ ॥

ऊपरको हाथ उठाके मापनेका नाम १—पौरुष १ ॥ ८७ ॥

कण्ठो गलो—

गलेके नाम २—कण्ठ १ गल २ ॥

—ऽथ ग्रीवायां शिरोधिः कन्धरे-त्यपि ।

गर्दनके नाम ३—ग्रीवा १ शिरोधि २ कन्धरा ३ ॥

कम्बुग्रीवा त्रिरेखा सा—

तीन रेखासे युक्त गर्दनका नाम १—कम्बुग्रीवा १ ॥

—ऽवटुर्घाटा कृकाटिका ॥८८॥

घांटीके नाम ३—अवटु १ घाटा २ कृकाटिका ३ ॥ ८८ ॥

वक्त्रास्ये वदनं तुण्डमाननं लपनं मुखम् ।

मुँहके नाम ७—वक्त्र १ आस्य २ वदन ३ तुण्ड ४ आनन ५ लपन ६ मुख ७ ॥

क्लीबे घ्राणं गन्धवहा घोणा नासा च नासिका ॥ ८९ ॥

नाकके नाम ५—घ्राण १ गन्धवहा२ घोणा ३ नासा ४ नासिका ५ ॥ ८९ ॥

ओष्ठाधरौ तु रदनच्छदौ दशन-वाससी ।

होठके नाम ४—ओष्ठ १ अधर २ रदनच्छद ३ दशनवासस् ४ ॥

अधस्ताच्चिबुकं—

ठोड़ीका नाम १—चिबुक १ ॥

—गण्डौ कपोलौ—

गालके नाम २—गण्ड १ कपोल २॥

—तत्परा हनुः ॥ ९० ॥

कनपटीका नाम १—हनु १ ॥९०॥

रदना दशना दन्ता रदा—

दांतके नाम ४—रदन १ दशन २ दन्त ३ रद ४ ॥

—स्तालु तु काकुदम् ।

तालुएके नाम २—तालु १काकुद २।

रसज्ञा रसना जिह्वा–

जीभके नाम ३–रसज्ञा १ रसना २ जिह्वा ३ ॥

–प्रान्तावोष्ठस्य सृक्किणी ॥९१॥

होंठोंके किनारोंका नाम १–सृक्किणी १ ॥ ९१ ॥

ललाटमलिकं गोधि–

लिलारके नाम ३–ललाट १ अलिक २ गोधि ३ ॥

–रूर्ध्वे दृग्भ्यां भ्रुवौ स्त्रियौ ॥

भौंहका नाम १–भ्रू १ ॥

कूर्चमस्त्री भ्रुवोर्मध्यं–

भौंहके बीचका नाम १–कूर्च १ ॥

–तारकाक्ष्णः कनीनिका ॥९२॥

आंखके तिलका नाम १–तारका १॥९२

लोचनं नयनं नेत्रमीक्षणं चक्षुरक्षिणी । दृग्दृष्टी चा–

आंखके नाम ८–लोचन १ नयन २ नेत्र ३ ईक्षण ४ चक्षुष् ५ आक्षि ६ दृश् ७ दृष्टि ८ ॥

–ऽस्त्रु नेत्राम्बु रोदनं चास्त्रमश्रु च ॥९३ ॥

आंसूके नाम ५–अस्त्रु १ नेत्राम्बु २ रोदन ३ अस्त्र ४ अश्रु ५ ॥ ९३ ॥

अपाङ्गौ नेत्रयोरन्तौ–

आंखके किनारोंका नाम १–अपांग १ ॥

–कटाक्षोऽपाङ्गदर्शने ।

अपांगसे देखनेका नाम १–कटाक्ष १

कर्णशब्दग्रहौ श्रोत्रं श्रुतिः स्त्री श्रवणं श्रवः ॥ ९४ ॥

कानके नाम ६–कर्ण १ शब्दग्रह २ श्रोत्र ३ श्रुति ४ श्रवण ५ श्रवस् ६॥९४॥

उत्तमांगं शिरः शीर्षं मूर्द्धा ना मस्तकोऽस्त्रियाम् ।

शिरके नाम ५–उत्तमांग १ शिरस् २ शीर्ष ३ मूर्धन् ४ मस्तक ५ ॥

चिकुरः कुन्तलो बालः कचः केशः शिरोरुहः ॥ ९५ ॥

बालके नाम ६–चिकुर १ कुन्तल २ बाल ३ कच ४ केश ५ शिरोरुह ६ ॥ ९५ ॥

तद्वृन्दे कैशिकं कैश्य–

बालोंके समूहके नाम २–कैशिक १ कैश्य २ ॥

–मलकाश्चूर्णकुन्तलाः ।

टेढ़े बालोंके नाम २–अलक १ चूर्णकुन्तल २ ॥

ते ललाटे भ्रमरकाः–

ललाटपर लटकते हुए बालोंका नाम १–भ्रमरक १ ॥

–काकपक्षः शिखण्डकः ॥९६॥

जुल्फोंके नाम २–काकपक्ष १ शिखण्डक २ ॥ ९६ ॥

कबरी केशवेशो–

मांगके नाम २–कबरी १ केशवेश २ ॥

–ऽथ धम्मिल्लः संयताः कचाः ।

बँधे हुए बालोंका नाम १ धम्मिल्ल १ ॥

शिखा चूडा केशपाशी–

चोटीके नाम ३–शिखा १ चूडा २ केशपाशी ३ ॥

–व्रतिनस्तु सटा जटा ॥९७॥

जटाके नाम २–सटा १ जटा २ ॥९७॥

वेणिः प्रवेणी–

तैलादि न लगानेके हेतु लटरे बाल हो जानेके नाम २–वेणि १ प्रवेणी २ ॥

–शीर्षण्यशिरस्यौ विशदे कचे ॥

साफ बालोंके नाम २–शीर्षण्य १ शिरस्य २ ॥

पाशः पक्षश्च हस्तश्च कलापार्थाः कचात्परे ॥ ९८ ॥

केशसमूहके नाम ३–केशपाश १ केशपक्ष २ कुन्तलहस्त ३ इत्यादि ॥९८॥

तनूरुहं रोम लोम–

रोवेंके नाम ३–तनूरुह १ रोमन् २ लोमन् ३ ॥

–तद्वृद्धे श्मश्रु पुंमुखे ।

डाढ़ी मूछका नाम १–श्मश्रु १ ॥

आकल्पवेषौ नेपथ्यं प्रतिकर्म प्रसाधनम् ॥ ९९ ॥

अलंकारकी शोभाके नाम ५–आकल्प १ वेष २ नेपथ्य ३ प्रतिकर्मन् ४ प्रसाधन ५ ॥ ९९ ॥

दशैते त्रि–

यह आगे कहे दश शब्द तीनों लिंगोंमें होते हैं ॥

–ष्वलंकर्त्ताऽलंकरिष्णुश्च–

अलंकार करनेवालेके नाम २–अलंकर्तृ १ अलंकरिष्णु २ ॥

–मण्डितः॥प्रसाधितोऽलंकृतश्च भूषितश्च परिष्कृतः ॥ १०० ॥

अलंकारयुक्तके नाम ५–मण्डित १ प्रसाधित २ अलंकृत ३ भूषित ४ परिष्कृत ५ ॥ १०० ॥

विभ्राड् भ्राजिष्णुरोचिष्णू–

अलंकारादिसे अतिशोभित हुएके नाम ३–विभ्राज् १ भ्राजिष्णु २ रोचिष्णु ३ ॥

–भूषणं स्यादलंक्रिया ।

सँवारने या सिंगारनेके नाम २–भूषण १ अलंक्रिया २ ॥

अलंकारस्त्वाभरणं परिष्कारो विभूषणम् ॥ १०१ ॥ मण्डनं चा–

गहने आदिके नाम ५–अलंकार १ आभरण २ परिष्कार ३ विभूषण ४ ॥ १०१ ॥ मण्डन ५ ॥

—ऽथ मुकुटं किरीटं पुन्नपुंसकम् ।

मुकुटके नाम २—मुकुट १ किरीट २ दोनों भी पुं० न० ॥

चूडामणिः शिरोरत्नं—

चोटीके मणिके नाम २—चूडामणि १ शिरोरत्न २ ॥

—तरलो हारमध्यगः ॥१०२॥

जो हारके बीचमें सबसे बड़ा मणि होता है उसका नाम १—तरल ॥१०२॥

वालपाश्या पारितथ्या—

चोटीके गहनेके नाम २—वालपाश्या १ पारितथ्या २ ॥

—पत्रपाश्या ललाटिका ।

बेंदी वा टिकेके नाम २—पत्रपाश्या १ ललाटिका २ ॥

कर्णिका तालपत्रं स्यात्—

बाली वा तरकीके नाम—२ कर्णिका १ तालपत्र २ ॥

—कुण्डलं कर्णवेष्टनम् ॥१०३॥

सुवर्णादिरचित बालीके नाम २—कुण्डल १ कर्णवेष्टन २ ॥ १०३ ॥

ग्रैवेयकं कण्ठभूषा—

कण्ठी वा कण्ठके नाम २—ग्रैवेयक १ कण्ठभूषा २ ॥

—लम्बनं स्याल्ललन्तिका ।

जो सूंडीतक लम्बी कण्ठी हो उस कण्ठीके नाम २—लम्बन १ ललंतिका २ ॥

स्वर्णैः प्रालम्बिका—

ऐसे ही यदि सोनेकी कण्ठी हो तो उस कण्ठीका नाम १—प्रालंबिका १ ॥

—थोरः सूत्रिका मौक्तिकैः कृता ॥ १०४ ॥

और वैसे ही मोतीसे गूथी हो तो उसका नाम १—उरस्सूत्रिका १ ॥ १०४ ॥

हारो मुक्तावली—

मोतीके हारके नाम २—हार १ मुक्तावली २ ॥

—देवच्छन्दोऽसौ शतयष्टिका ।

जो सौ लड़का हार हो उसका नाम १—देवच्छन्द १ ॥

हारभेदा यष्टिभेदा गुच्छगुच्छार्धगोस्तनाः ॥ १०५ ॥ अर्धहारो माणवक एकावल्येकयष्टिका । सैव नक्षत्रमाला स्यात्सप्तविंशतिमौक्तिकैः ॥ १०६ ॥

बत्तीस लड़का हार हो उसका नाम १—गुच्छ १ ॥ जो २४ लड़का हार हो उसका नाम १—गुच्छार्ध १ ॥ चार लड़का हार हो उसका नाम १-गोस्तन १ ॥१०५॥ बारह लड़का हार हो उसका नाम १—अर्द्धहार १ ॥ बीस लड़का हार हो उसका नाम १—माणवक १ ॥ एक लड़का हार हो उसका नाम १—एकावली १ ॥ वही

एक लड़ अगर सत्ताईस मोतियोंकी हो तो उसका नाम १–नक्षत्रमाला १ ॥ १०६ ॥

आवापकः पारिहार्यः कटको वलयोऽस्त्रियाम् ।

पहुँचीके नाम ४–आवापक १ पारिहार्य २ कटक ३ वलय ४ ॥

केयूरमङ्गदं तुल्ये–

बाजूबन्द आदि भुजाके गहनोंके नाम २–केयूर १ अङ्गद २ ॥

–अंगुलीयकमूर्मिका ॥ १०७ ॥

छल्ले अँगूठीके नाम २–अंगुलीयक १ ऊर्मिका २ ॥ १०७ ॥

साक्षरांगुलिमुद्रा स्यात्–

मोहर सहित अँगूठीका नाम १–अंगुलिमुद्रा १ ॥

–कंकणं करभूषणम् ।

कंकनाके नाम २–कंकण १ करभूषण २ ॥

स्त्रीकट्यां मेखला काञ्ची सप्तकी रशना तथा ॥ १०८ ॥ क्लीबे सारसनं चा--

स्त्रीके कमरकी जंजीर अर्थात् मेखलाके नाम ५–मेखला १ काञ्ची २ सप्तकी ३ रशना ४॥१०८॥सारसन ५

–ऽथ पुंस्कट्यां शृंखलं त्रिषु ॥

पुरुषके जंजीरका नाम १–शृंखल १॥

पादांगदं तुलाकोटिर्मञ्जीरो नूपुरोऽस्त्रियाम् ॥ १०९ ॥

पैंजण आदि स्त्रीके पांवके गहनेके नाम ४–पादाङ्गद १ तुलाकोटि २ मञ्जीर ३ नूपुर ४ ॥ १०९ ॥

हंसकः पादकटकः–

कड़ेके नाम २–हंसक १ पादकटक २

--किंकिणी क्षुद्रघण्टिका ।

घुँघुरूके नाम २–किंकिणी १ क्षुद्रघण्टिका २ ॥

त्वक्फलक्रिमिरोमाणि वस्त्रयोनि--

वृक्षोंकी छाल, फल और कीड़ोंके रोम वस्त्रके उत्पन्न होनेके स्थान हैं ॥

--दश त्रिषु ॥ ११० ॥

यह दशों शब्द तीनों लिङ्गोंमें होते हैं ॥ ११० ॥

वाल्कं क्षौमादि--

वृक्ष आदिकी छालसे बने हुए वस्त्रोंके नाम २–वाल्क १ क्षौम २ इत्यादि ॥

--फालं तु कार्पासं बादरं च तत् ।

कपासके बने हुए वस्त्रोंके नाम ३--फाल १ कार्पास २ बादर ३ ॥

कौशेयं कृमिकोशोत्थं--

रेशमीवस्त्रोंका नाम १--कौशेय १॥

—राङ्कवं मृगरोमजम् ॥ १११ ॥

ऊनी वस्त्रोंका नाम १--राङ्कव १ ॥ १११ ॥

अनाहतं निष्प्रवाणि तन्त्रकं च नवाम्बरम् ।

कोरे वस्त्रके नाम ४—अनाहत १ निष्प्रवाणिन् २ तन्त्रक ३ नवाम्बर४॥

तत्स्यादुद्गमनीयं यद्धौतयोर्वस्त्रयोर्युगम् ॥ ११२ ॥

धुले हुए दो वस्त्रोंके जोड़ेका नाम १--उद्गमनीय १ ॥ ११२ ॥

पत्रोर्णं धौतकौशेयं—

धुले हुए रेशमी वस्त्रका नाम १—पत्रोर्ण १ ॥

--बहुमूल्यं महाधनम् ।

बड़े मोलके वस्त्रादिका नाम १—महाधन १ ॥

क्षौमं दुकूलं स्याद्--

दुपट्टेके नाम २—क्षौम १दुकूल २॥

--द्वे तु निवीतं प्रावृतं त्रिषु११३

कपड़ेके छोरेके नाम २—निवीत १ प्रावृत २ ॥ ११३ ॥

स्त्रियां बहुत्वे वस्त्रस्य दशाः स्युर्वस्तयोर्द्वयोः ।

छीराका नाम १—दशा १ ॥

दैर्घ्यमायाम आरोहः—

कपड़े आदिकी लम्बाईके नाम ३--दैर्घ्य १ आयाम २ आरोह ३ ॥

—परिणाहो विशालता ॥११४॥

कपड़े आदिकी चौड़ाईके नाम२--परिणाह १ विशालता २ ॥ ११४ ॥

पटच्चरं जीर्णवस्त्रं—

पुराने कपड़ेके नाम २--पटच्चर १ जर्णिवस्त्र २ ॥

—समौ नक्तककर्पटौ ।

फटे चीथरेके नाम २--नक्तक १ कर्पट २ ॥

वस्त्रमाच्छादनं वासश्चैलं वसनमंशुकम् ॥ ११५ ॥

कपड़ेमात्रके नाम ६—वस्त्र १ आच्छादन २ वासस् ३ चैल ४ वसन ५ अंशुक ६ ॥ ११५ ॥

सुचेलकः पटोऽस्त्री--

अच्छे वस्त्रके नाम २--सुचेलक१पट२॥

—स्याद्वराशिः स्थूलशाटकः ।

मोटे वस्त्रके नाम २—वराशि १ स्थूलशाटक २ ॥

निचोलः प्रच्छदपटः--

पालकी आदिके ढकनेके वस्त्रके नाम २—निचोल १ प्रच्छदपट २ ॥

--समौ रल्लककम्बलौ ॥११६॥

कम्बलके नाम २- रल्लक १ कम्बल २ ॥ ११६ ॥

अन्तरीयोपसंव्यानपरिधानान्यधोंऽशुके

धोतीके नाम ४–अन्तरीय १ उप-संव्यान २ परिधान ३ अधोंऽशुक ४ ॥

द्वौ प्रावारोत्तरासङ्गौ समौ बृहतिका तथा ॥ ११७ ॥ संव्यानमुत्तरीयं च--

अँगोछा(रुमाल आदि)के नाम५–प्रावार १ उत्तरासंग २ बृहतिका ३ ॥ ११७ ॥ संव्यान ४ उत्तरीय ५ ॥

--चोलः कूर्पासकोऽस्त्रियाम् ।

चोलीके नाम२--चोल १ कूर्पासक २॥

नीशारः स्यात्प्रावरणे हिमानिलनिवारणे ॥ ११८ ॥

रजाईका नाम १–नीशार१।११८।

अधोरुकं वरस्त्रीणां स्याच्चण्डातकमास्त्रियाम् ।

लहँगेका नाम १--चण्डातक १ ॥

स्यात्त्रिष्वाप्रपदीनं तत्प्राप्नोत्याप्रपदं हि यत् ॥ ११९ ॥

लंबे लहँगेका नाम १--आप्रपदीन १ ॥ ११९ ॥

अस्त्री वितानमुल्लोचो--

चंदोएके नाम २--वितान १ उल्लोच २ ॥

--दूष्याद्यं वस्त्रवेश्मनि ।

तम्बू वा डेराका नाम १--दूष्य १ ॥

प्रतिसीरा जवनिका स्यात्तिरस्करिणी च सा ॥ १२० ॥

कनातके नाम ३--प्रतिसीरा १ जवनिका २ तिरस्करिणी ३॥ १२० ॥

परिकर्मांगसंस्कारः–

स्नानादि अंगसंस्कारके नाम २--परिकर्मन् १ अंगसंस्कार २ ॥

--स्यान्मार्ष्टिर्मार्जना मृजा ।

पोंछनेके नाम ३--मार्ष्टि १मार्जना २ मृजा ३ ॥

उद्वर्तनोत्सादने द्वे समे--

उबटनके नाम २--उद्वर्त्तन १ उत्सादन २ ॥

--आप्लाव आप्लवः ॥ १२१ ॥ स्नानं--

नहानेके नाम३–आप्लाव १आप्लव २ ॥ १२१ ॥ स्नान ३ ॥

--चर्चा तु चार्चिक्यं स्थासको-

चन्दनादिसे देहके लेपके नाम ३–चर्चा १ चार्चिक्य २ स्थासक ३ ॥

--ऽथ प्रबोधनम् । अनुबोधः--

गन्धोमटनिके नाम २–प्रबोधन१ अनुबोध २ ॥

--पत्रलेखापत्रांगुलिरिमे समे॥१२२

स्त्रियोंके गाल स्तनादिपर कस्तूरी चन्दनसे की हुई चित्रकारीके नाम २–पत्रलेखा १ पत्रांगुलि २ ॥ १२२ ॥

तमालपत्रतिलकचित्रकाणि विशेषकम् । द्वितीयं च तुरीयं च न स्त्रियाः—

मस्तकमें चन्दन कस्तूरी आदिसे टीका लगानेके नाम ४—तमालपत्र १ तिलक २ चित्रक ३ विशेषक ४ ॥

—ऽथ कुंकुमम् ॥ १२३ ॥ काश्मीरजन्माग्निशिखं वरं बाह्लीकपीतने । रक्तसंकोचपिशुनं धीरं लोहितचन्दनम् ॥ १२४ ॥

केशरके नाम ११—कुंकुम १ ॥ १२३ ॥ काश्मीरजन्मन् २ अग्निशिख ३ वर ४ बाह्लीक ५ पीतन ६ रक्तसंकोच ७ पिशुन ८ धीर ९ लोहित १० चन्दन ११ ॥ १२४ ॥

लाक्षा राक्षा जतु क्लीबे यावोऽलक्तो द्रुमामयः ।

महावरके नाम ६—लाक्षा १ राक्षा २ जतु ३ याव ४ अलक्त ५ द्रुमामय ६ ॥

लवङ्गं देवकुसुमं श्रीसंज्ञ—

लौंगके नाम ३—लवंग १ देवकुसुम २ श्रीसंज्ञ ३ ॥

—मथ जायकम् ॥ १२५ ॥ कालीयकं च कालानुसार्यं चा—

पीले चन्दनके नाम—३ जायक १ ॥ १२५ ॥ कालीयक २ कालानुसार्य ३ ॥

—ऽथ समार्थकम् । वंशकागुरुराजार्हलोहंकृमिजजोङ्गकम् ॥ १२६ ॥

अगरके नाम ६—वंशक १ अगुरु २ राजार्ह ३ लोह ४ कृमिज ५ जोङ्गक ६ ॥ १२६ ॥

कालागुर्वगुरुः—

काले अगरके नाम २—कालागुरु १ अगुरु २ ॥

स्यात्तन्मंगल्या मल्लिगन्धि यत् ।

अगरका भेद १—मंगल्या १ ॥

यक्षधूपः सर्जरसो रालसर्वरसावपि ॥ १२७ ॥ बहुरूपो—

रालके नाम ५—यक्षधूप १ सर्जरस २ राल ३ सर्वरस ४ ॥ १२७ ॥ बहुरूप ५ ॥

—ऽप्यथ वृकधूपकृत्रिमधूपकौ ॥

कृत्रिम धूपके नाम २—वृकधूप १ कृत्रिमधूप २ ॥

तुरुष्कः पिण्डकः सिह्लो यावनो—

लोबानके नाम ४—तुरुष्क १ पिण्डक २ सिह्ल ३ यावन ४ ॥

ऽप्यथ पायसः ॥ १२८ ॥ श्रीवासो वृकधूपोऽपि श्रीवेष्टसरलद्रवौ ।

देवदारु धूपके नाम ५–पायस १ ॥ १२८ ॥ श्रीवास २ वृकधूप ३ श्रीवेष्ट ४ सरलद्रव ५ ॥

मृगनाभिर्मृगमदः कस्तूरी चा–

कस्तूरीके नाम ३–मृगनाभि १ मृगमद २ कस्तूरी ३ ॥

–ऽथ कोलकम् ॥ १२९ ॥ कंकोलकं कोशफल–

कंकोलके नाम ३–कोलक १ ॥ ॥ १२९ ॥ कंकोलक २ कोशफल ३॥

–मथ कर्पूरमस्त्रियाम् । घनसारश्चन्द्रसंज्ञः सिताभ्रो हिमवालुका ॥ १३० ॥

कर्पूरके नाम ५–कर्पूर १ घनसार २ चन्द्रसंज्ञ ३ सिताभ्र ४ हिमवालुका ५ ॥ १३० ॥

गन्धसारो मलयजो भद्रश्रीश्चंदनोऽस्त्रियाम् ।

मलयागिरि चन्दनके नाम ४–गन्धसार १ मलयज २ भद्रश्री ३ चन्दन ४॥

तैलपर्णिकगोशीर्षे हरिचन्दनमस्त्रियाम् ॥ १३१ ॥

सफेद चन्दनका नाम १–तैलपर्णिक १॥ जिसमें कमलके समान गन्ध हो उस चन्दनका नाम १–गोशीर्ष १ ॥ कपिलवर्ण चन्दनका नाम १–हरिचन्दन १ ॥ १३१ ॥

तिलपर्णी तु पत्रांगं रञ्जनं रक्तचन्दनम् । कुचन्दनं चा–

लालचन्दनके नाम ५–तिलपर्णी १ पत्रांग २ रञ्जन ३ रक्तचन्दन ४ कुचन्दन ५ ॥

–ऽथ जातीकोशजातीफले समे ॥ १३२ ॥

जायफलके नाम २–जातीकोश १ जातीफल २ ॥ १३२ ॥

कर्पूरागरुकस्तूरीकंकोलैर्यक्षकर्दमः ।

कपूर अगर कस्तूरी और कंकोल इनको बराबर मिलानेसे जो लेपन बनता है उसका नाम १–यक्षकर्दम १॥

गात्रानुलेपनी वर्तिर्वर्णकं स्याद्विलेपनम् ॥ १३३ ॥

पिसी हुई लेपन वस्तुके नाम २–गात्रानुलेपनी १ वर्ति २ ॥ घिसी (रगड़ी) हुई लेपन वस्तुके नाम २–वर्णक १ विलेपन २ ॥ १३३ ॥

चूर्णानि वासयोगाः स्यु–

कपड़छान करके जो वस्तु घोली जाय उसके नाम २-चूर्ण १वासयोग २॥

–र्भावितं वासितं त्रिषु ।

पुष्प इत्यादिसे बसायी हुई वस्तुके नाम २–भावित १ वासित २ ॥

संस्कारो गंधमाल्याद्यैर्यः स्यात्तदधिवासनम् ॥ १३४ ॥

सुगंध पुष्पादिसे संस्कार करनेका नाम १–अधिवासन १ ॥ १३४ ॥

माल्यं मालास्रजौ मूर्ध्नि–

सिरपर धारण करने योग्य मालाके नाम ३–माल्य १ माला २ स्रज् ३ ॥

–केशमध्ये तु गर्भकः ।

बालोंके बीचमें धारण की हुई मालाका नाम १–गर्भक १ ॥

प्रभ्रष्टकं शिखालम्बि–

जो चोटीमें गुँधी हुई माला हो उसका नाम १–प्रभ्रष्टक १ ॥

–पुरो न्यस्तं ललामकम् ॥ १३५ ॥

जो शिखासे लिलारतक लपेटी माला हो उसका नाम १–ललामक १ ॥ १३५ ॥

प्रालम्बमृजुलम्बि स्यात्कण्ठा–

कंठमें पहनी हुई मालाका नाम १–प्रालम्ब १ ॥

वैकक्षिकं तु तत् । यत्तिर्यक् क्षिप्तमुरसि–

जो यज्ञोपवीतके तुल्य पहनी जाय उस मालाका नाम १–वैकक्षिक १ ॥

–शिखास्वापीडशेखरौ ॥ १३६ ॥

जो शिखामें पहनी जाय उस मालाके नाम २–आपीड १ शेखर २ ॥ १३६ ॥

रचना स्यात्परिस्पन्द–

माला आदिके बनानेके नाम २–रचना १ परिस्पन्द २ ॥

–आभोगः परिपूर्णता ।

सर्व सामग्रीके पूरे होनेके नाम २–आभोग १ परिपूर्णता २ ॥

उपधानं तूपबर्हः–

तकियेके नाम २–उपधान १ उपबर्ह २ ।

–शय्यायां शयनीयवत् ॥ १३७ ॥ शयनं–

बिछौनेके नाम ३–शय्या १ शयनीय २ ॥ १३७ ॥ शयन ३ ॥

–मञ्चपर्यंकपल्यंकाः खट्वया समाः ।

पलँग वा खाटके नाम ४–मंच १ पर्यंक २ पल्यंक ३ खट्वा ४ ॥

गेन्दुकः कन्दुको–

गेंदके नाम २–गेन्दुक १ कन्दुक २ ॥

–दीपः प्रदीपः–

दियाके नाम २–दीप १ प्रदीप २ ॥

–पीठमासनम् ॥ १३८ ॥

पीढ़ाके नाम २–पीठ १ आसन २ ॥ १३८ ॥

समुद्गकः सम्पुटकः–

डिब्बाके नाम २–समुद्गक १ संपुटक २ ॥

–प्रतिग्राहः पतद्ग्रहः ।

पीकदानके नाम २–प्रतिग्राह १ पतद्ग्रह २ ॥

प्रसाधनी कंकतिका–

कंघीके नाम २–प्रसाधनी १ कंकतिका २ ॥

–पिष्टातः पटवासकः।

बुक्काके नाम २–पिष्टात १ पटवासक २ ॥

दर्पणे मुकुरादर्शौ–

दर्पण (सीसे) के नाम ३–दर्पण १ मुकुर २ आदर्श ३ ॥

–व्यजनं तालवृन्तकम् ॥१३९॥

पंखेके नाम २–व्यजन १ तालवृन्तक २ ॥ १३९ ॥

इति मनुष्यवर्गः ॥ ६ ॥

अथ ब्रह्मवर्गः ७.

संततिर्गोत्रजननकुलान्यभिजनान्वयौ। वंशोऽन्ववायः सन्तानो–

वंशके नाम ९–सन्तति १ गोत्र २ जनन ३ कुल ४ अभिजन ५ अन्वय २ ६ वंश ७ अन्ववाय ८ सन्तान ९ ॥

–वर्णाः स्युर्ब्राह्मणादयः ॥ १ ॥

ब्राह्मण आदिका नाम १–वर्ण १॥१॥

विप्रक्षत्रियविट्छूद्राश्चातुर्वर्ण्यमिति स्मृतम्।

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र इन चारोंका इकट्ठा नाम १–चातुर्वर्ण्य १॥

राजबीजी राजवंश्यो–

राजाके वंशवालोंके नाम २–राजबीजिन् १ राजवंश्य २ ॥

–बीज्यस्तु कुलसंभवः ॥ २ ॥

कुलीनके नाम २–बीज्य १ कुलसंभव २ ॥ २ ॥

महाकुलकुलीनार्यसभ्यसज्जनसाधवः।

सज्जनके नाम ६–महाकुल १ कुलीन २ आर्य्य ३ सभ्य ४ सज्जन ५ साधु ६ ॥

ब्रह्मचारी गृही वानप्रस्थो भिक्षुश्चतुष्टये ॥ ३ ॥ आश्रमोऽस्त्री–

ब्रह्मचारी, गृही, वानप्रस्थ, यति इन चारोंका इकट्ठा नाम १–॥३॥आश्रम १॥

–द्विजात्यग्रजन्मभूदेववाडवाः। विप्रश्च ब्राह्मणो–

ब्राह्मणके नाम ६–द्विजाति १ अग्रजन्मन् २ भूदेव ३ वाडव ४ विप्र ५ ब्राह्मण ६ ॥

–ऽसौ षट्कर्मा यागादिभिर्वृतः ॥ ४ ॥

इज्या, अध्ययन, दान, याजन, अध्यापन, प्रतिग्रह इन षट् कर्मोंकरके युक्त विप्रका नाम १–षट्कर्मन् १ ॥ ४ ॥

विद्वान्विपश्चिद्दोषज्ञः सन्सुधीः कोविदो बुधः। धीरो मनीषी ज्ञः प्राज्ञः संख्यावान्पण्डितः कविः ॥ ५ ॥ धीमान्सूरिः कृती कृष्टिर्लब्धवर्णो विचक्षणः। दूरदर्शी दीर्घदर्शी—

पंडितके नाम २२—विद्वस् १ विपश्चित् २ दोषज्ञ ३ सत् ४ सुधी ५ कोविद ६ बुध ७ धीर ८ मनीषिन् ९ ज्ञ १०प्राज्ञ११संख्यावत्१२पंडित १३ कवि १४॥५॥ धीमत् १५ सूरि १६ कृतिन् १७कृष्टि१८लब्धवर्ण १९विचक्षण २० दूरदर्शिन्२१दीर्घदर्शिन् २२॥

—श्रोत्रियच्छान्दसौ समौ ॥६॥

वेदपाठीके नाम २—श्रोत्रिय १ छान्दस २ ॥ ६ ॥

उपाध्यायोऽध्यापको—

जो पढ़ाता हो उस पंडितके नाम २—उपाध्याय १ अध्यापक २ ॥

—ऽथ स्यान्निषेकादिकृद् गुरुः।

गर्भाधानादि कर्म्म करानेवालेका नाम १—गुरु १ ॥

मन्त्रव्याख्याकृदाचार्य—

मन्त्रकी व्याख्या करनेवालेका नाम १—आचार्य १ ॥

—आदेष्टा त्वध्वरे—

यज्ञमें सब ऋत्विजोंमें सिखानेवालेका नाम १—आदेष्टृ १ ॥

—व्रती ॥७॥ यष्टा च यजमानश्च—

यजमानके नाम ३—व्रतिन् १ ॥७॥ यष्टृ २ यजमान ३ ॥

—स सोमवति दीक्षितः।

सोमयज्ञके यजमानका नाम १—दीक्षित १ ॥

इज्याशीलो यायजूको—

वारंवार यज्ञ करनेवालेके नाम २—इज्याशील १ यायजूक २ ॥

—यज्वा तु विधिनेष्टवान् ॥८॥

जो विधिसे यज्ञ करे उसका नाम १—यज्वन् १ ॥ ८ ॥

स गीष्पतीष्ट्या स्थपतिः—

बृहस्पति यज्ञ करनेवालेका नाम१—स्थपति १ ॥

सोमपीथी तु सोमपाः।

सोमवल्लीका रस पीनेवालेके नाम २—सोमपीथिन् १ सोमपा २ ॥

सर्ववेदाः स येनेष्टो यागः सर्वस्वदक्षिणः ॥ ९ ॥

जो यज्ञमें अपना सब धन दे डाले उसका नाम १—सर्ववेदस् १ ॥ ९ ॥

अनूचानः प्रवचने साङ्गेऽधीती—

गार्हपत्याग्निसे लेकर जो दक्षिणाग्नि प्रवेश कराया जाय उसका नाम १-आनाय्य १ ॥

-ऽथाग्नायी स्वाहा च हुतभुक्प्रिया ॥ २१ ॥

स्वाहा अर्थात् अग्निकी स्त्रीके नाम ३-अग्नायी १ स्वाहा २ हुतभुक्प्रिया ३ ॥ २१ ॥

ऋक्सामिधेनी धाय्या च या स्यादग्निसमिन्धने ।

अग्नि बालनेके अर्थ जो ऋचा पढ़ी जाय उसके नाम २-सामिधेनी १ धाय्या २ ॥

गायत्रीप्रमुखं छन्दो-

गायत्री, उष्णिह, अनुष्टुम् इत्यादिका नाम १-छन्दस् १ ॥

-हव्यपाके चरुः पुमान् ॥२२॥

अग्निमें छोड़ने योग्य साकल्यका नाम १-चरु १ ॥ २२ ॥

आमिक्षा सा शृतोष्णे या क्षीरे स्याद्दधियोगतः ।

गरम पके दूधमें दही डालनेसे जो बनता है उसका नाम १-आमिक्षा १॥

धवित्रं व्यजनं तद्यद्रचितं मृगचर्मणा ॥ २३ ॥

मृगचर्मसे बने हुए बीजनेका नाम १-धवित्र १ ॥ २३ ॥

पृषदाज्यं सदध्याज्ये-

दही घी मिले हुएका नाम १-पृषदाज्य १ ॥

-परमान्नं तु पायसम् ।

खीरके नाम२-परमान्न १पायस२॥

हव्यकव्ये दैवपित्र्ये अन्ने-

देवताके अर्थकी खीरका नाम १-हव्य १ । पितरोंकी खीरका नाम १-कव्य १ ॥

-पात्रं स्रुवादिकम् ॥ २४ ॥

स्रुवा आदिका नाम १-पात्र १॥२४॥

ध्रुवोपभृज्जुहूर्ना तु स्रुवो भेदाः स्रुचः स्त्रियः ।

स्रुवाके भेद ५-ध्रुवा १ उपभृत् २ जुहू ३ स्रुव ४ स्रुच् ५ ॥

उपाकृतः पशुरसौ योऽभिमन्त्र्य क्रतौ हतः ॥ २५ ॥

यज्ञके पशुका नाम १-उपाकृत१॥ ॥ २५ ॥

परम्पराकं शमनं प्रोक्षणं च वधार्थकम् ।

यज्ञके अर्थ पशु मारनेके नाम ३-परम्पराक १ शमन २ प्रोक्षण ३ ॥

वाच्यलिंगाः प्रमीतोपसंपन्नप्रोक्षिता हते ॥ २६ ॥

यज्ञमें मारे हुए पशुके नाम ३-प्रमीत१उपसम्पन्न २प्रोक्षित ३ ॥२६॥

सान्नाय्यं हवि-

साकल्यके नाम २—सान्नाय्य १ हविष् २ ॥

—रग्नौ तु हुतं त्रिषु वषट्कृतम् ।

अग्निमें जो हुना जावे उसका नाम १—वषट्कृत १ ॥

दीक्षान्तोऽवभृथो यज्ञे—

यज्ञान्तस्नानका नाम १—अवभृथ १॥

—स्तत्कर्मार्हं तु यज्ञियम् । ॥ २७ ॥ त्रि—

यज्ञयोग्यवस्तुका नाम १—यज्ञिय १ ॥ २७ ॥

—ष्वथ क्रतुकर्मेष्टं—

यज्ञमें कर्मका नाम १—इष्ट १ ॥

—पूर्तं खातादि कर्म यत् ।

बावडी तालाब आदि खुदानेका नाम १—पूर्त्त १ ॥

अमृतं विघसो यज्ञशेषभोजनशेषयोः ॥ २८ ॥

यज्ञसे बची हुई जाऊरि आदिका नाम १—अमृत १॥ और भोजनसे बची हुई वस्तुका नाम १—विघस १ ॥२८॥

त्यागो विहापितं दानमुत्सर्जनविसर्जने । विश्राणनं वितरणं स्पर्शनं प्रतिपादनम् ॥ २९ ॥ प्रादेशनं निर्वपणमपवर्जनमंहतिः ।

दानके नाम १३—त्याग १ विहापित २ दान ३ उत्सर्ज्जन ४ विसर्ज्जन ५ विश्राणन ६ वितरण ७ स्पर्शन ८ प्रतिपादन ९ ॥२९॥ प्रादेशन १० निर्वपण ११ अपवर्जन १२ अंहति १३ ॥

मृतार्थं तदहे दानं त्रिषु स्यादौर्ध्वदेहिकम् ॥ ३० ॥

मृतकके अर्थ जो दश दिनके बीचमें पिंडादि दिये जाते हैं उनका नाम १—और्ध्वदेहिक १ ॥ ३० ॥

पितृदानं निवापः स्या—

पितरोंके देनेके निमित्त जो दान दिया जावे उसके नाम २—पितृदान १ निवाप २ ॥

—च्छ्राद्धं तत्कर्म शास्त्रतः ।

पितरोंके देनेके निमित्तके कर्मका नाम १—श्राद्ध १ ॥

अन्वाहार्यं मासिके—

अमावस्याके श्राद्धके नाम २—अन्वाहार्य १ मासिक २ ॥

—ऽशोऽष्टमोऽह्नः कुतपोऽस्त्रियाम् ॥ ३१ ॥

दिनके आठवें हिस्सेका नाम १—कुतप १ ॥ ३१ ॥

पर्येषणा परीष्टिश्चान्वेषणा च गवेषणा ।

श्राद्धमें ब्राह्मणकी भक्ति और सेवा

करनेके नाम २–पर्येषणा १ परीष्टि २ ॥ धर्म आदिके खोजनेके नाम –२ अन्वेषणा १ गवेषणा २ ॥ अथवा ये चारों नाम धर्म आदिके खोजनेके ही जानने ॥

सनिस्त्वध्येषणा–

विनतीके नाम २–सनि १ अध्येषणा२

–याच्ञाऽभिशस्तिर्याचनार्थना ॥ ३२ ॥

मांगनेके नाम ४–याच्ञा १ अभिशस्ति २ याचना ३ अर्थना ४ ॥३२॥

–षट् तु त्रि–

यह छः शब्द तीनों लिंगोंमें होते हैं ॥

–ष्वर्घ्यमर्घार्थे पाद्यं पादाय वारिणि ।

पूजार्थ पानी छोड़नेका नाम १–अर्घ्य १॥ पांव धोनेको छोड़ने योग्य पानीका नाम १–पाद्य १ ॥

क्रमादातिथ्यातिथेये अतिथ्यर्थेऽत्रसाधुनि ॥ ३३ ॥

अतिथिके अर्थ जो कर्म उसका नाम १–आतिथ्य १॥ अतिथिके निमित्त जो सिद्ध हो वह १-आतिथेय १ ॥ ३३ ॥

स्युरावेशिक आगन्तुरतिथिर्ना गृहागते ।

महिमानके नाम ४–आवेशिक १ आगन्तु २ अतिथि ३ गृहागत ४ ॥

पूजा नमस्याऽपचितिः सपर्याऽर्चाऽर्हणाः समाः ॥ ३४ ॥

पूजाके नाम ६–पूजा १ नमस्या २ अपचिति ३ सपर्या ४ अर्चा ५ अर्हणा ६ ॥ ३४ ॥

वरिवस्या तु शुश्रूषा परिचर्याप्युपासना ।

उपासनाके नाम ४–वरिवस्या १ शुश्रूषा २ परिचर्या ३ उपासना ४ ॥

व्रज्याऽटाट्या पर्यटनं–

विदेशमें भ्रमण करनेके नाम ३–व्रज्या २ अटाट्या २ पर्यटन ३ –

–चर्या त्वीर्यापथे स्थितिः॥३५॥

योगमार्गमें स्थितिका नाम १–चर्या १ ॥ ३५॥

उपस्पर्शस्त्वाचमन–

आचमनके नाम २–उपस्पर्श १ आचमन २ ॥

–मथ मौनमभाषणम् ।

चुप रहनेके नाम २–मौन १ अभाषण २ ॥

आनुपूर्वी स्त्रियां वाऽऽवृत्परिपाटी अनुक्रमः॥ ३६॥ पर्यायश्चा–

अनुक्रमके नाम ५–आनुपूर्वी १ आवृत् २ परिपाटी ३ अनुक्रम ४ ॥ ३६॥ पर्य्याय ॥ ५॥

-ऽतिपातस्तु स्यात्पर्य्यय उपात्ययः ।

अतिक्रमके नाम ३-अतिपात १ पर्य्यय २ उपात्यय ३ ॥

नियमो व्रतमस्त्री-

व्रतके नाम २-नियम १ व्रत २ ॥

-तच्चोपवासादि पुण्यकम् ॥ ३७ ॥

चान्द्रायणादि व्रतका नाम १-पुण्यक १ ॥ ३७ ॥

औपवस्तं तूपवासो-

उपवासके नाम २-औपवस्त १ उपवास २ ॥

-विवेकः पृथगात्मता ।

प्रकृतिपुरुषके भेद जाननेके विचारके नाम २-विवेक १ पृथगात्मता २ ॥

स्याद्ब्रह्मवर्चसं वृत्ताध्ययनर्द्धि-

सदाचारपालन और वेदाभ्यास करनेसे जो तेज होता है उसका नाम १-ब्रह्मवर्चस १ ॥

-रथाञ्जलिः ॥ ३८ ॥ पाठे ब्रह्माञ्जलिः-

वेद पढ़नेके समयकी अंजलिका नाम १-ब्रह्माञ्जलि १ ॥ ३८ ॥

-पाठे विप्रुषो ब्रह्मबिन्दवः ॥

वेद पढ़नेके समय जो मुखसे जल चूता है उसका नाम १-ब्रह्मबिंदु १ ॥

ध्यानयोगासने ब्रह्मासनं-

ध्यान और योगके आसनका नाम १-ब्रह्मासन १ ॥

-कल्पे विधिक्रमौ ॥ ३९ ॥

नियोगशास्त्रके नाम ३-कल्प १ विधि २ क्रम ३ ॥ ३९ ॥

मुख्यः स्यात्प्रथमः कल्पो-

प्रथम विधिका नाम १-मुख्य १ ॥

-ऽनुकल्पस्तु ततोऽधमः ।

द्वितीय विधिका नाम १-अनुकल्प १ ॥

संस्कारपूर्वं ग्रहणं स्यादुपाकरणं श्रुतेः ॥ ४० ॥

संस्कारपूर्वक वेदके सुननेका नाम १-उपाकरण १ ॥ ४० ॥

समे तु पादग्रहणमभिवादनमित्युभे ।

नामगोत्रादिपूर्वक प्रणाम करनेके नाम २-पादग्रहण १ अभिवादन २ ॥

भिक्षुः परिव्राट् कर्मन्दी पाराशर्यपि मस्करी ॥ ४१ ॥

संन्यासीके नाम ५-भिक्षु १ परिव्राज् २ कर्मन्दिन् ३ पाराशरिन् ४ मस्करिन् ॥ ५ ॥ ४१ ॥

तपस्वी तापसः पारिकांक्षी-

तपस्वीके नाम ३-तपस्विन् १ तापस २ पारिकांक्षिन् ३ ॥

-वाचंयमो मुनिः।

मुनिके नाम २-वाचंयम १ मुनि २ ॥

तपःक्लेशसहो दान्तो-

तपस्याके क्लेशके सहनेवालेका नाम १-दान्त १ ॥

-वर्णिनो ब्रह्मचारिणः॥ ४२ ॥

ब्रह्मचारीके नाम २-वर्णिन् १ ब्रह्मचारिन् २ ॥ ४२ ॥

-ऋषयः सत्यवचसः-

ऋषिके नाम २-ऋषि १ सत्य-वचस् २ ॥

-स्नातकस्त्वाप्लुतो व्रती।

जो वेदव्रत धारण किये हुए गुरुकी आज्ञासे स्नान करे उसका नाम १-स्नातक १ ॥

ये निर्जितेन्द्रियग्रामा यतिनो यतयश्च ते॥ ४३ ॥

जितेंद्रियके नाम २-यतिन् १ यति २ ॥ ४३ ॥

यः स्थण्डिले व्रतवशाच्छेते स्थण्डिलशाय्यसौ । स्थाण्डिलश्चा-

जो व्रतवश हो पृथिवीपर चबूतरा बना उसपर सोवे उसके नाम २-स्थण्डिलशायिन् १ स्थांडिल २ ॥

-ऽथ विरजस्तमसः स्युर्द्वयातिगः ॥ ४४ ॥

रजोगुण तमोगुण रहित व्यासादि मुनिके नाम २-विरजस्तमस् १ द्वयातिग २ ॥ ४४ ॥

पवित्रः प्रयतः पूतः-

पवित्रके नाम ३-पवित्र १ प्रयत २ पूत ३ ॥

-पाखण्डाः सर्वलिङ्गिनः।

बौद्धक्षपणकादि दुष्ट शास्त्रवर्तियोंके नाम २-पाखण्ड १ सर्वलिंगिन् २ ॥

पालाशो दण्ड आषाढो व्रते-

ब्रह्मचर्यमें पलाशके दण्डका नाम १-आषाढ १ ॥

-राम्भस्तु वैणवः ॥ ४५ ॥

यदि वह दण्ड बांसका हो तो उसके नाम२-राम्भ १ वैणव २ ॥ ४५ ॥

अस्त्री कमण्डलुः कुण्डी-

व्रतियोंके लोटेके नाम २-कमण्डलु १ कुण्डी २ ॥

-व्रतिनामासनं बृसी।

और उनके आसनका नाम १-बृसी १ ॥

अजिनं चर्म कृत्तिः स्त्री-

मृगादिके चर्मके नाम ३-अजिन १ चर्मन् २ कृत्ति ३ ॥

-भैक्षं भिक्षाकदम्बकम् ॥ ४६ ॥

भिक्षाके ढेरका नाम १-भैक्ष १॥४६ ॥

स्वाध्यायः स्याज्जपः-

वेदके अभ्यासके नाम२-स्वाध्याय १ जप २ ॥

-सुत्याऽभिषवः सवनं च सा ।

यज्ञौषधिके कूटनेके नाम ३-सुत्या १ अभिषव २ सवन ३ ॥

सर्वैनसामपध्वंसि जप्यं त्रिष्वघमर्षणम् ॥ ४७ ॥

सब पापके नाश करनेवाले मंत्रका नाम १-अघमर्षण १ ॥ ४७ ॥

दर्शश्च पौर्णमासश्च यागौ पक्षान्तयोः पृथक् ।

अमावसके दिनके यज्ञका नाम १-दर्श १॥ पौर्णमासीके दिनके यज्ञका नाम १-पौर्णमास ॥ १ ॥

शरीरसाधनापेक्षं नित्यं यत्कर्म तद्यमः ॥ ४८ ॥

अहिंसा, सत्य, चोरी न करना, ब्रह्मचर्य्य, अपरिग्रह (दान न लेना) इन नित्यकर्मका नाम १-यम १ ॥ ४८ ॥

नियमस्तु स यत्कर्म नित्यमागन्तुसाधनम् ।

शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वरप्रणिधान इन आगन्तु कर्मसाधनका नाम १-नियम १ ॥

उपवीतं ब्रह्मसूत्रं प्रोद्धृते दक्षिणे करे ॥ ४९ ॥

बांये कांधेके जनेऊके नाम२-उपवीत १ ब्रह्मसूत्र २ ॥ ४९ ॥

प्राचीनावीतमन्यस्मिन्-

दहने कांधेपर रहनेवाले जनेऊका नाम १-प्राचीनावीत १ ॥

-निवीतं कण्ठलम्बितम् ।

मालाकार यज्ञोपवीत पहिरनेका नाम १-निवीत १ ॥

अंगुल्यग्रे तीर्थं दैवं-

अँगुलियोंका अग्रभाग देवताओंका तीर्थ कहाता है ॥

-स्वल्पांगुल्योर्मूले कायम् ॥५०॥

कन-अंगुलियोंके मूलका नाम प्रजापति तीर्थ है ॥ ५० ॥

मध्येऽङ्गुष्ठांगुल्योः पित्र्यं-

अंगुष्ठ और तर्जनी अँगुलीके मध्यमें पितृतीर्थ कहाता है ॥

-मूले त्वंगुष्ठस्य ब्राह्मम् ।

अंगुष्ठके मूलमें ब्राह्मतीर्थ कहाता है॥

स्याद्ब्रह्मभूयं ब्रह्मत्वं ब्रह्मसायुज्यमित्यपि ॥ ५१ ॥

ब्रह्ममें मिल जानेके नाम ३-ब्रह्मभूय १ ब्रह्मत्व २ ब्रह्मसायुज्य ३ ॥ ५१ ॥

देवभूयादिकं तद्वत्-

देवमें मिलजानेके नाम ३-देवभूयं १ देवत्व २ देवसायुज्य ३ ॥

—कृच्छ्रं सान्तपनादिकम् ।

गोमूत्र,गोबर, दूध,दही, घी, कुशोदक इनका भक्षण करने और एकरात्रिके उपवासका नाम १—कृच्छ्र १ ॥

संन्यासवत्यनशने पुमान्प्रायो-

संन्यासपूर्वक भोजनत्यागका नाम १—प्राय १ ॥

—ऽथ वीरहा ॥५२ ॥ नष्टाग्निः—

जिस तपस्वीकी अग्नि बुझ गयी हो उस तपस्वीके नाम २—वीरहन् १ ॥५२॥ नष्टाग्नि २ ॥

—कुहना लोभान्मिथ्येर्यापथकल्पना ।

दम्भसे ध्यानादि करनेका नाम १—कुहना १ ॥

व्रात्यः संस्कारहीनः स्या—

जिस ब्राह्मणका गौणकालमें भी यज्ञोपवीत न हुआ हो उसका नाम १—व्रात्य १ ॥

—दस्वाध्यायो निराकृतिः ॥ ५३ ॥

वेदाभ्यासरहितका नाम १—निराकृति १ ॥ ५३ ॥

धर्मध्वजी लिङ्गवृत्ति—

बहुरूपिया ब्राह्मणके नाम २—धर्मध्वजिन् १ लिंगवृत्ति ॥ २ ॥

—रवकीर्णी क्षतव्रतः ।

जिसका ब्रह्मचर्य नष्ट हो गया हो उसके नाम २—अवकीर्णिन् १ क्षतव्रत २॥

सुप्ते यस्मिन्नस्तमेति सुप्ते यस्मिन्नुदेति च ॥ ५४ ॥ अंशुमानभिनिर्मुक्ताभ्युदितौ च यथाक्रमम्।

सायंसंध्यामें सोनेवालेका नाम १—अभिनिर्मुक्त १॥ प्रातःकालकी संध्यामें सोनेवालेका नाम १—अभ्युदित १॥५४॥

परिवेत्ताऽनुजोऽनूढे ज्येष्ठे दारपरिग्रहात् ॥ ५५ ॥

जिसका बड़ा भाई न ब्याहा गया हो प्रथम छोटा ब्याहा जाय तो उस छोटेका नाम १—परिवेत्तृ ॥ ५५ ॥

परिवित्तिस्तु तज्ज्यायान्—

उसके बड़े भाईका नाम १—परिवित्ति १ ॥

—विवाहोपयमौ समौ । तथा परिणयोद्वाहोपयामाः पाणिपीडनम् ॥ ५६ ॥

विवाहके नाम ६—विवाह १ उपयम २ परिणय ३ उद्वाह ४ उपयाम ५ पाणिपीडन ६ ॥ ५६ ॥

व्यवायो ग्राम्यधर्मो मैथुनं निधुवनं रतम् ।

मैथुनके नाम ५—व्यवाय १ ग्राम्यधर्म २ मैथुन ३ निधुवन ४ रत ५ ॥

त्रिवर्गो धर्मकामार्थैः—

वेदविहितयज्ञादि विधि, स्त्रीसेवन, न्यायसे धनोपार्जन इनका नाम १—त्रिवर्ग १ ॥

—श्चतुर्वर्गः समोक्षकैः ॥ ५७ ॥

और मोक्षकरके युक्त धर्म, अर्थ, काम हों तो उसका नाम १—चतुर्वर्ग १॥५७॥

सबलैस्तैश्चतुर्भद्रं—

और वेद धर्मादि सबल हों तो उनका नाम १—चतुर्भद्रं १ ॥

—जन्याः स्निग्धा वरस्य ये ५८॥

बराती अर्थात् वरके पक्षवालोंका नाम १—जन्य १ ॥ ५८ ॥

इति ब्रह्मवर्गः ॥ ७ ॥

अथ क्षत्रियवर्गः ८.

मूर्धाभिषिक्तो राजन्यो बाहुजः क्षत्त्रियो विराट् ।

क्षत्रियके नाम ५—मूर्द्धाभिषिक्त १ राजन्य २ बाहुज ३ क्षत्त्रिय ४ विराज् ५॥

राजा राट् पार्थिवक्ष्माभृन्नृप-भूपमहीक्षितः ॥ १ ॥

राजाके नाम ७—राजन् १ राज् २ पार्थिव ३ क्ष्माभृत् ४ नृप ५ भूप ६ महीक्षित् ७ ॥ १ ॥

राजा तु प्रणताशेषसामन्तः स्यादधीश्वरः ।

जो बहुत राजाओंका मालिक हो उसका नाम १—अधीश्वर १॥

चक्रवर्ती सार्वभौमो—

समुद्रपर्यन्त पृथ्वीका जिसका राज्य हो उसके नाम २—चक्रवर्तिन् १ सार्वभौम २ ॥

—नृपोऽन्यो मण्डलेश्वरः ॥ २ ॥

चारहजार ४००० कोशके भूमंडलके राजाका नाम १—मण्डलेश्वर १॥ २ ॥

येनेष्टं राजसूयेन मण्डलस्येश्वरश्च यः । शास्ति यश्चाज्ञया राज्ञः स सम्रा—

वही मण्डलेश्वर राजसूय यज्ञ किये हो और सब राजाओंका शिक्षक हो तो उसका नाम १—सम्राज् १ ॥

—ड्थ राजकम् ॥ ३ ॥ राजन्यकं च नृपतिक्षत्त्रियाणां गणे क्रमात् ।

राजाओंके गणका नाम १—राजक १ ॥३॥ और क्षत्त्रियोंके गणका नाम १—राजन्यक १ ॥

मन्त्री धीसचिवोऽमात्यो—

मंत्रीके नाम ३—मन्त्रिन् १ धीसचिव २ अमात्य ३ ॥

—ऽन्ये कर्मसचिवास्ततः ॥ ४ ॥

मन्त्रीसे छोटे अन्य मुसाहिबोंका नाम १—कर्मसचिव १ ॥ ४ ॥

महामात्राः प्रधानानि-

मुख्यमंत्रीके नाम २-महामात्र १ प्रधान २ ॥

पुरोधास्तु पुरोहितः ।

पुरोहितके नाम २-पुरोधस् १ पुरोहित २ ॥

द्रष्टरि व्यवहाराणां प्राड्विवाकाक्षदर्शकौ ॥ ५ ॥

पंच अर्थात् न्यायाधीशके नाम २-प्राड्विवाक १ अक्षदर्शक २ ॥ ५ ॥

प्रतीहारो द्वारपालद्वाःस्थद्वाःस्थितदर्शकाः ।

द्वारपालके नाम ५-प्रतीहार १ द्वारपाल २ द्वाःस्थ ३ द्वाःस्थित ४ दर्शक ५ ॥

रक्षिवर्गस्त्वनीकस्थो-

रखवालेके नाम २-रक्षिवर्ग १ अनीकस्थ २ ॥

-ऽथाध्यक्षाधिकृतौ समौ ॥६॥

अधिकारीके नाम २-अध्यक्ष १ अधिकृत २ ॥ ६ ॥

स्थायुकोऽधिकृतो ग्रामे-

एक ग्रामके ठेकेदारका नाम १-स्थायुक १ ॥

-गोपो ग्रामेषु भूरिषु ।

बहुत ग्रामोंके ठेकेदारका नाम १-गोप १ ॥

भौरिकः कनकाध्यक्षो-

सोनेके अधिकारीके नाम २-भौरिक १ कनकाध्यक्ष २ ॥

-रूपाध्यक्षस्तु नैष्किकः ॥७॥

खजानचीके नाम २-रूपाध्यक्ष १ नैष्किक २ ॥ ७ ॥

अन्तःपुरे त्वाधिकृतः स्यादन्तर्वंशिको जनः ।

जो जनानेकी वस्तुओंका अधिकारी हो उसका नाम १-अन्तर्वंशिक १ ॥

सौविदल्लाः कञ्चुकिनः स्थापत्याः सौविदाश्च ते ॥ ८ ॥

राजा वा राजस्त्रियोंके निकट जो बेंत लिये हुए खड़े रहते हैं उनके नाम ४-सौविदल्ल १ कञ्चुकिन् २ स्थापत्य ३ सौविद ४ ॥ ८ ॥

षण्ढो वर्षवरस्तुल्यौ-

खोजोंके नाम २-षण्ढ १ वर्षवर २ ॥

-सेवकार्थ्यनुजीविनः ।

सेवक वा नौकरके नाम ३-सेवक १ आर्थिन् २ अनुजीविन् ३ ॥

विषयानन्तरो राजा शत्रु-

राजाके देशके पासके राजाका नाम १-शत्रु १ ॥

-र्मित्रमतः परम् ॥ ९ ॥

उसके अन्य राजाका नाम १-मित्र १ ॥ ९ ॥

उदासीनः परतरः-

इन शत्रु मित्रोंसे पर (अन्य) राजाओंका नाम १—उदासीन १ ॥

—पार्ष्णिग्राहस्तु पृष्ठतः ।

अपने राज्यके पीछे राजा जो हो उसका नाम १—पार्ष्णिग्राह १ ॥

रिपौ वैरिसपत्नारिद्विषद्द्वेषणदुर्हृदः ॥१०॥ द्विड्विपक्षाहितामित्रदस्युशात्रवशत्रवः ॥ अभिघातिपरारातिप्रत्यर्थिपरिपंथिनः ॥ ११ ॥

दुश्मनके नाम १९—रिपु १ वैरिन् २ सपत्न ३ अरि ४ द्विषत् ५ द्वेषण ६ दुर्हृद् ७ ॥१०॥ द्विष् ८ विपक्ष ९ अहित १० अमित्र ११ दस्यु १२ शात्रव १३ शत्रु १४ अभिघातिन् १५ पर १६ अराति १७ प्रत्यर्थिन् १८ परिपंथिन् १९ ॥ ११ ॥

वयस्यः स्निग्धः सवया—

हमजोलीके नाम ३—वयस्य १ स्निग्ध २ सवयस् ३ ॥

—अथ मित्रं सखा सुहृत् ।

मित्रके नाम ३—मित्र१सखि २सुहृद्३

सख्यं साप्तपदीनं स्या—

मित्रताके नाम २—सख्य १ साप्तपदीन २ ॥

दनुरोधोऽनुवर्तनम् ॥ १२ ॥

भला मनाने (सुलाहिजे) के नाम२—अनुरोध १ अनुवर्त्तन २ ॥ १२ ॥

यथार्हवर्णः प्रणिधिरपसर्पश्चरः स्पशः । चारश्च गूढपुरुष—

जासूस वा हल्कारेके नाम ७—यथार्हवर्ण १ प्रणिधि २ अपसर्प ३चर ४ स्पश ५ चार ६ गूढपुरुष ७ ॥

—श्चाप्तप्रत्यायितौ समौ ॥ १३ ॥

विश्वासीके नाम २—आप्त१प्रत्यायित २ ॥ १३ ॥

सांवत्सरो ज्योतिषिको दैवज्ञगणकावपि । स्युर्मौहूर्तिकमौहूर्तज्ञानिकार्तान्तिका अपि ॥ १४ ॥

ज्योतिषी पण्डितके नाम ८—सांवत्सर १ ज्योतिषिक २ दैवज्ञ ३ गणक ४ मौहूर्त्तिक ५ मौहूर्त्त ६ ज्ञानिन् ७ कार्तान्तिक ८ ॥ १४ ॥

तान्त्रिको ज्ञातसिद्धान्तः—

शास्त्रीके नाम २—तान्त्रिक१ ज्ञातसिद्धान्त २ ॥

—सत्री गृहपतिः समौ ।

मोदीके नाम २—सत्रिन् १गृहपति२ ॥

लिपिकरोऽक्षरचणोऽक्षरचुञ्चुश्च लेखके ॥ १५ ॥

लेखकके नाम ४—लिपिकर१अक्षरचण २ अक्षरचुञ्चु ३ लेखक४॥१५॥

लिखिताक्षरविन्यासे लिपिर्लिबिरुभे स्त्रियौ ।

लिखे हुए लेखके नाम४—लिखित १ अक्षरविन्यास २ लिपि ३ लिबि ४ ॥

स्यात्संदेशहरो दूतो—

दूतके नाम २—संदेशहर १दूत२॥

—दूत्यं तद्भावकर्मणि ॥ १६ ॥

दूतपनका नाम १—दूत्य १॥१६॥

अध्वनीनोऽध्वगोऽध्वन्यः पान्थः पथिक इत्यपि ।

रस्तेगीरके नाम ५—अध्वनीन १ अध्वग २अध्वन्य ३ पान्थ ४ पथिक५॥

स्वाम्यमात्यसुहृत्कोशराष्ट्रदुर्गबलानि च ॥ १७ ॥ राज्याङ्गानि प्रकृतयः पौराणां श्रेणयोऽपि च ।

स्वामी(राजा)अमात्य (मन्त्री) सुहृद् (मित्र) कोश (खजाना) राष्ट्र (देशकी भूमि) दुर्ग (किला) बल (फौज) ॥ १७ ॥ पुरवासी और शिल्पी इन सबके नाम २—राज्याङ्ग १प्रकृति २॥

संधिर्ना विग्रहो यानमासनं द्वैधमाश्रयः ॥ १८ ॥ षड्गुणाः—

सुवर्णादि देके शत्रुके मिलानेका नाम१—सन्धि१॥शत्रुके साथ बिगड़नेका नाम १—विग्रह १॥ शत्रुपर चढ़ाई करनेका नाम १—यान१॥ अपने स्थानपर तैयार हो रहनेका नाम १—आसन१॥ शत्रुके अधिकारियेंमें फूट करानेका नाम १—द्वैध १ ॥ दूसरेका आसरा लेनेका नाम १—आश्रय १ ॥१८॥ ये छः गुण कहलाते हैं॥

—शक्तयस्तिस्रः प्रभावोत्साहमन्त्रजाः ।

राजाकी शक्तियोंके नाम ३—प्रभावज १ उत्साहज २ मन्त्रज ३ ॥

क्षयः स्थानं च वृद्धिश्च त्रिवर्गो नीतिवेदिनाम् ॥ १९ ॥

नीतिशास्त्रोक्त क्षय स्थान वृद्धिका नाम १—त्रिवर्ग १ ॥ १९ ॥

स प्रतापः प्रभावश्च यत्तेजः कोशदण्डजम् ।

खजाना और दंडके प्रभावके नाम २—प्रताप १ प्रभाव २ ॥

सामदाने भेददण्डावित्युपायचतुष्टयम् ॥ २० ॥

राजाके चारों उपायोंके नाम ४—सामन् १ दान २ भेद३दण्ड४ ॥२०॥

साहसं तु दमो दण्डः—

दण्ड देनेके नाम ३—साहस १ दम २ दण्ड ३ ॥

—साम सान्त्व—

सलूक करनेके नाम २—सामन् १ सान्त्व २ ॥

-मथो समौ ॥ भेदोपजापा-

फरक डालनेके नाम २-भेद १ उपजाप २ ॥

उपधा धर्माद्यैर्यत्परीक्षणम् २१

धर्म अर्थ काम और भयसे मन्त्री इत्यादिकोंकी परीक्षा करनेका नाम १-उपधा १ ॥ २१ ॥

पञ्च त्रि-

अषडक्षीण आदि निःशलाक पर्य्यन्त पांच शब्द तीनों लिंगोंमें होते हैं ॥

ष्वषडक्षीणो यस्तृतीयाद्यगोचरः ।

दो जनोंकी ही सलाहका नाम १-अषडक्षीण १ ॥

विविक्तविजनच्छन्ननिःशलाकास्तथा रहः ॥ २२ ॥ रहश्चोपांशु चालिंगे-

एकान्तके नाम ७-विविक्त १ विजन २ छन्न ३ निश्शलाक ४ रहस् ॥ २२ ॥ रह ६ उपांशु ७ ॥

-रहस्यं तद्भवे त्रिषु ।

एकान्तकी बात वा कामका नाम १-रहस्य १ ।

समौ विस्रम्भविश्वासौ-

विश्वासके नाम २-विस्रम्भ १ विश्वास २ ॥

-भ्रेषो भ्रंशो यथोचितात्॥२३॥

अन्यायका नाम १-भ्रेष १॥२३॥

अभ्रेषन्यायकल्पास्तु देशरूपं समञ्जसम् ।

न्यायके नाम ५-अभ्रेष १ न्याय २ कल्प ३ देशरूप ४ समञ्जस ५ ॥

युक्तमौपयिकं लभ्यं भजमानाभिनीतवत् ॥ २४ ॥ न्याय्यं च त्रिषु षट्-

न्यायसे जो वस्तु ली जावे उसके नाम ६-युक्त १ औपयिक २ लभ्य ३ भजमान ४-अभिनीत ५ ॥ २४ ॥ न्याय्य ६-ये छः शब्द त्रिलिंग हैं ॥

-संप्रधारणा तु समर्थनम् ।

यही उचित है ऐसे निश्चय करनेके नाम २-सम्प्रधारणा १ समर्थन २ ॥

अववादस्तु निर्देशो निदेशः शासनं च सः ॥ २५ ॥ शिष्टिश्चाज्ञा च-

आज्ञाके नाम६-अववाद १ निर्देशः २ निदेश ३ शासन ४ ॥ २५॥ शिष्टि ५ आज्ञा ६ ॥

-संस्था तु मर्यादा धारणा स्थितिः ।

मर्यादाके नाम ४-संस्था-१ मर्यादा २ धारणा ३ स्थिति ४ ॥

आगोऽपराधो मन्तुश्च-

अपराधके नाम ३—आगस् १ अपराध २ मन्तु ३ ॥

—समे तूद्दानबन्धने ॥ २६ ॥

बन्धनके नाम २—उद्दान १ बन्धन २ ॥ २६ ॥

द्विपाद्यो द्विगुणो दण्डो-

दूने दण्डका नाम १—द्विपाद्य १ ॥

भागधेयः करो बलिः ।

करके नाम ३—भागधेय १ कर २ बलि ३ ॥

घट्टादिदेयं शुल्कोऽस्त्री-

घाटी वगैरहमें देने योग्य महसूलके नाम १—शुल्क ॥

—प्राभृतं तु प्रदेशनम् ॥ २७ ॥

मित्रादिकोंको भेंट वा नजर देनेके नाम २—प्राभृत १ प्रदेशन २ ॥२७॥

उपायनमुपग्राह्यमुपहारस्तथोपदा ।

राजाको भेंट वा नजर देनेके नाम४-उपायन१उपग्राह्य२उपहार ३ उपदा ४ ॥

यौतकादि तु यद्देयं सुदायो हरणं च तत् ॥ २८ ॥

दहेज वा भाई बन्धुओंके देनेकी वस्तुके नाम२—सुदाय१ हरण २॥२८॥

तत्कालस्तु तदात्वं स्या-

वर्तमानसमयके नाम २—तत्काल १ तदात्व २ ॥

—दुत्तरः काल आयतिः ।

आनेवाले समयका नाम १—आयति १ ॥

सांदृष्टिकं फलं सद्य-

तुरन्तके फलका नाम १—सांदृष्टिक१।

—उदर्कः फलमुत्तरम् ॥ २९ ॥

आगेके होनेवालेका नाम १-उदर्क १ ॥ २९ ॥

अदृष्टं वह्नितोयादि-

आग लगने और अतिवृष्टि होने आदि उत्पातका नाम १—अदृष्ट १ ॥

—दृष्टं स्वपरचक्रजम् ।

अपने या पराये राज्यसे चौरादिक भयका नाम १—दृष्ट १ ॥

महीभुजामहिभयं स्वपक्षप्रभवं भयम् ॥ ३० ॥

अपने सहायकसे भयका नाम १—अहिभय १ ॥ ३० ॥

प्रक्रिया त्वधिकारः स्या-

कानून चलानेके नाम२—प्रक्रिया १ अधिकार २ ॥

—च्चामरं तु प्रकीर्णकम् ।

चँवरके नाम २—चामर१प्रकीर्णक२।

नृपासनं यत्तद्भद्रासनं-

मणि आदिसे बनी हुई राजगद्दीके नाम २—नृपासन १ भद्रासन २ ॥

—सिंहासनं तु तत् ॥ ३१ ॥
हैमं—

कदाचित् वही राजाके बैठनेका स्थान सोनेसे बना हो तो उसका नाम १—सिंहासन १ ॥ ३१ ॥

—छत्रं त्वातपत्रं—

छतुरीके नाम २—छत्र १ आतपत्र २।

—राज्ञस्तु नृपलक्ष्म तत् ।

राजाके छत्रका नाम १—नृपलक्ष्मन् १॥

भद्रकुम्भः पूर्णकुम्भो—

भरे घड़ेके नाम २—भद्रकुम्भ १ पूर्णकुम्भ २ ॥

—भृङ्गारः कनकालुका ॥ ३२॥

झारी या गडुवेके नाम २—भृंगार १ कनकालुका २ ॥ ३२ ॥

निवेशः शिबिरं षण्डे—

डेराके नाम २—निवेश १ शिबिर २ ॥

—सज्जनं तूपरक्षणम् ।

पहरेके नाम २—सज्जन १ उपरक्षण २॥

हस्त्यश्वरथपादातं सेनाङ्गं स्याच्चतुष्टयम् ॥ ३३ ॥

हाथी,घोड़ा, रथ, सिपाही इन सबका नाम १—सेनाङ्ग १ ॥ ३३ ॥

दन्ती दन्तावलो हस्ती द्विरदोऽनेकपो द्विपः । मतंगजो गजो नागः कुञ्जरो वारणः करी ॥ ३४॥ इभः स्तम्बेरमः पद्मी—

हाथीके नाम १५—दन्तिन् १ दन्तावल २ हस्तिन् ३ द्विरद ४ अनेकप ५ द्विप ६ मतंगज ७ गज ८ नाग ९ कुञ्जर १० वारण ११ करिन् १२॥३४॥ इभ १३ स्तम्बेरम १४ पद्मिन् १५ ॥

—यूथनाथस्तु यूथपः ।

हाथियोंके सरदार हाथीके नाम २—यूथनाथ १ यूथप २ ॥

मदोत्कटो मदकलः—

मदान्ध हाथीके नाम २—मदोत्कट १ मदकल २ ॥

कलभः करिशावकः ॥ ३५ ॥

हाथीके बच्चोंके नाम २—कलभ १ करिशावक २ ॥ ३५ ॥

प्रभिन्नो गर्जितो मत्तः—

जिसके मद बहता हो उसके नाम ३—प्रभिन्न १ गर्जित २ मत्त ३ ॥

—समावुद्वान्तनिर्मदौ ।

बेमदवालेके नाम २—उद्वान्त १ निर्मद २ ॥

हास्तिकं गजता वृन्दे—

हाथियोंके समूहके नाम २—हास्तिक १ गजता २ ॥

—करिणी धेनुका वशा ॥३६ ॥

हथिनीके नाम ३—करिणी १ धेनुका २ वशा ३ ॥ ३६ ॥

गण्डः कटो–

हाथीके गालके नाम २–गण्ड १ कट २ ॥

मदो दानं–

हाथीके मदके नाम २–मद १ दान २ ॥

–वमथुः करशीकरः ।

हाथीकी सूँड़से पानी निकलनेके नाम २–वमथु १ करशीकर २ ॥

कुम्भौ तु पिण्डौ शिरस–

हाथीके मस्तकके मांसका नाम १–कुम्भ १ ॥

–स्तयोर्मध्ये विदुः पुमान्॥३७॥

दोनों कुम्भोंके मध्यमें जो खाली रहता है उसका नाम १–विदु १॥३७॥

–अवग्रहो ललाटं स्या–

हाथीके लिलारका नाम १–अवग्रह १ ॥

–दीषिका त्वक्षिकूटकम् ।

उसके नेत्रोंकी गोलाईके नाम २–ईषिका १ अक्षिकूटक २ ॥

अपांगदेशो निर्याणं–

उसके निहारनेका नाम १–निर्याण १

–कर्णमूलं तु चूलिका ॥ ३८ ॥

हाथीके जहांसे कान जमते हैं उस जगहका नाम १–चूलिका १ ॥३८ ॥

अधः कुम्भस्य वाहित्थं–

हाथीके लिलारके नीचेका नाम १–वाहित्थ १ ॥

प्रतिमानमधोऽस्य यत् ।

वाहित्थके नीचेका नाम १–प्रतिमान १ ॥

आसनं स्कन्धदेशः स्यात्–

हाथीके कन्धेका नाम १–आसन १॥

–पद्मकं बिन्दुकालकम् ॥३९॥

हाथीके बिंदुओंका नाम १–पद्मक १ ॥ ३९ ॥

पार्श्वभागः पक्षभागो–

हाथीकी बगलके नाम २–पार्श्वभाग १ पक्षभाग २ ॥

–दन्तभागस्तु योऽग्रतः ।

हाथीके आगेके भागका नाम १–दन्तभाग १ ॥

द्वौ पूर्वपश्चाज्जंघादिदेशौ गात्रावरे क्रमात् ॥ ४० ॥

हाथीके आगेके जंघादि भागका नाम १–गात्र १ ॥ हाथीके पीछेके भागका नाम १–अवर १ ॥ ४० ॥

तोत्रं वैणुकं–

चाबुककी डण्डीके नाम २–तोत्र १ वैणुक २ ॥

–आलानं बन्धस्तम्भे–

हाथीके खूटेका नाम १–आलान १ ॥

–ऽथ शृंखले । अन्दुको निगडोऽस्त्री स्या–

हाथीकी जंजीरके नाम ३–शृंखल १ अन्दुक २ निगड ३ ॥

दंकुशोऽस्त्री सृणिः स्त्रियाम् ॥४१॥

अंकुशके नाम २–अंकुश १ सृणि २ ॥ ४१ ॥

दूष्या कक्ष्या वरत्रा च–

हाथीकी कमर बांधनेकी रस्सीके नाम ३–दूष्या १ कक्ष्या २ वरत्रा ३ ॥

–कल्पना सज्जना समे ।

मालिकके चढ़नेके वास्ते हाथीको तैयार करनेके नाम २-कल्पना १ सज्जना २ ॥

प्रवेण्यास्तरणं वर्णः परिस्तोमः कुथो द्वयोः ॥ ४२ ॥

गद्दी वा झूलके नाम ५–प्रवेणी १ आस्तरण २ वर्ण ३ परिस्तोम ४ कुथ ५ ॥ ४२ ॥

–वीतं त्वसारं हस्त्यश्वं–

युद्धादि करनेमें असमर्थ हाथी घोड़ेका नाम १–वीत १ ॥

–वारी तु गजबन्धनी ।

जिस भूमिमें हाथी बांधे जायँ उसका नाम १- वारी १ ॥

घोटके वीतितुरगतुरङ्गाश्वतुरङ्गमाः ॥ ४३ ॥ वाजिवाहार्वगन्धर्वहयसैंधवसप्तयः ।

घोड़ेके नाम १३–घोटक १ वीति २ तुरग ३ तुरङ्ग ४ अश्व ५ तुरङ्गम ६ ॥ ४३ ॥ वाजिन् ७ वाह ८ अर्वन् ९ गन्धर्व १० हय ११ सैन्धव १२ सप्ति १३ ॥

आजानेयाः कुलीनाः स्यु–

कुलीन घोड़ेका नाम १-आजानेय १ ॥

–र्विनीताः साधुवाहिनः ॥४४॥

सीखे हुए घोड़ेका नाम १–विनीत १ ॥ ४४ ॥

वनायुजाः पारसीकाः काम्बोजा बाह्लिका हयाः ।

वनायु देशमें पैदा हुए घोड़ेका नाम १–वनायुज १ ॥ पारसदेशोत्पन्न घोड़ेका नाम १ पारसीक १ ॥ काबुली घोड़ेका नाम १–बाह्लिक १ ॥

ययुरश्वोऽश्वमेधीयो–

अश्वमेधके श्यामकर्णवाले घोड़ेके नाम १–ययु १ ॥

–जवनस्तु जवाधिकः ॥ ४५ ॥

जल्दी चलनेवाले घोड़ेका नाम १–जवन १ ॥ ४५ ॥

पृष्ठ्यः स्थौरी–

लदनेवाले घोड़ेके नाम २–पृष्ठ्य १ स्थौरिन् २ ॥

–सितः कर्को–

उजले घोड़ेका नाम १–कर्क १ ॥

रथ्यो वोढा रथस्य यः ।

रथके घोड़ेका नाम १–रथ्य १ ॥

बालः किशोरो–

घोड़ेके बच्चेका नाम १–किशोर १ ॥

वाम्यश्वा वडवा–

घोड़ीके नाम ३–वामी १ अश्वा २ वडवा ३ ॥

–वाडवं गणे ॥ ४६ ॥

घोड़ीके समूहका नाम १–वाडव १ ॥ ४६ ॥

त्रिष्वाश्वीनं यदश्वेन दिनेनैकेन गम्यते ।

घोड़ेके एक दिन चलने योग्य मार्गका नाम १–आश्वीन १ ॥

कश्यं तु मध्यमाश्वानां–

घोड़ेके मध्यभागका नाम १-कश्य १ ॥

–हेषा ह्रेषा च निःस्वनः ॥४७॥

घोड़ेके शब्दके नाम २–हेषा १ ह्रेषा २ ॥ ४७ ॥

निगालस्तु गलोद्देशे–

घोड़ेके गलेका नाम १–निगाल १ ॥

–वृन्दे त्वश्वीयमाश्ववत् ।

घोड़ोंके समूहके नाम २–अश्वीय १ आश्व २ ॥

आस्कन्दितं धौरितकं रेचितं वल्गितं प्लुतम् ॥ ४८ ॥ गतयोऽ–मूः पञ्च धारा–

घोड़ेके पांच प्रकारकी चालोंके नाम ५–आस्कन्दित १ धौरितक २ रेचित ३ वल्गित ४ प्लुत ५ ॥ ४८ ॥

घोणा तु प्रोथमस्त्रियाम् ।

घोड़ेकी नाकका नाम १–प्रोथ १ ॥

कविका तु खलीनोऽस्त्री–

घोड़ेकी लगामके नाम २–कविका १ खलील २ ॥

–शफं क्लीबे खुरः पुमान् ॥ ४९ ॥

घोड़ेके खुरके नाम २–शफ १ खुर २ (क्षुर) ॥ ४९ ॥

पुच्छोऽस्त्री लूमलांगूले–

पूँछके नाम ३–पुच्छ १ लूम २ लांगूल ३ ॥

–वालहस्तश्च वालधिः ।

वालसहित पूँछके नाम २–वालहस्त १ वालधि २ ॥

त्रिषूपावृत्तलुठितौ परावृत्ते मुहुर्भुवि ॥ ५० ॥

पृथ्वीमें लोटनेके नाम २–उपावृत्त १ लुठित २ ॥ ५० ॥

याने चक्रिणि युद्धार्थे शतांगः स्यन्दनो रथः ।

युद्धके रथके नाम ३–शतांग १ स्यन्दन २ रथ ३ ॥

असौ पुष्यरथश्चक्रयानं न समराय यत् ॥ ५१ ॥

सामान्य रथका नाम १–पुष्यरथ १ ॥ ५१ ॥

कर्णीरथः प्रवहणं डयनं च समं त्रयम् ।

स्त्रियोंकी गाड़ीके नाम ३–कर्णीरथ १ प्रवहण २ डयन ३ ॥

क्लीबेऽनः शकटोऽस्त्री स्या–

छकड़ेके नाम २–अनस् १ शकट २॥

–द्गन्त्री कम्बलिवाह्यकम् ॥५२॥

गाड़ीके नाम २–गन्त्री १ (गान्त्री) कम्बलिवाह्यक २ ॥ ५२ ॥

शिबिका याप्ययानं स्या–

पालकीके नाम २–शिबिका १ याप्ययान २ ॥

–द्दोला प्रेंखादिका स्त्रियाम् ।

दोली वा हिंडोलेके नाम २–दोला १ प्रेंखा २ ॥

उभौ तु द्वैपवैयाघ्रौ द्वीपिचर्मावृते रथे ॥ ५३ ॥

जिसमें बघेरके चमड़ेका परदा हो उसके नाम २–द्वैप १ वैयाघ्र २ ॥५३॥

पाण्डुकम्बलसंवीतः स्यन्दनः पाण्डुकम्बली ।

पीले रंगवाले परदेके रथका नाम १––पाण्डुकम्बली १ ॥

रथे काम्बलवास्त्राद्याः कम्बलादिभिरावृते ॥ ५४ ॥

कम्बल आदि परदेवाले रथके नाम २–काम्बल १ वास्त्र २ आदि ॥ ५४॥

त्रिषु द्वैपादयो–

द्वैप आदि शब्द तीनों लिंगोंमें होते हैं ॥

–रथ्या रथकट्या रथव्रजे ।

रथके समूहके नाम २–रथ्या १ रथकट्या २ ॥

धूः स्त्री क्लीबे यानमुखं–

धूरीके नाम २–धुर् १ यानमुख २ ॥

–स्याद्रथाङ्गमपस्करः ॥ ५५ ॥

तांगेके नाम २–रथांग १ अपस्कर २ ॥ ५५ ॥

चक्रं रथाङ्गं–

पहियेके नाम २–चक्र १ रथाङ्ग २॥

–तस्यान्ते नेमिः स्त्री स्यात्प्रधिः पुमान् ।

रथकी नेमिके नाम २–नेमि १ प्रधि २ ॥

पिण्डिका नाभि–

पुढ़ीके नाम २–पिण्डिका १ नाभि २॥

–रक्षाग्रकीलके तु द्वयोराणिः ५६

कुलावेका नाम १–अणि १ ॥५६॥

रथगुप्तिर्वरूथो ना–

लोहे जड़े रथके आवरणके नाम २–रथगुप्ति १ वरूथ २ ॥

–कूबरस्तु युगंधरः ।

काठके जुए बांधनेके स्थानके नाम २–कूबर १ युगंधर २ ॥

अनुकर्षो दार्वधःस्थं–

सुगनका नाम १–अनुकर्ष १ ॥

–प्रासङ्गो ना युगाद्युगः॥५७॥

जुएके नाम २–प्रासंग १ युग २ ॥ ५७॥

सर्वं स्याद्वाहनं यानं युग्यं पत्रं च धोरणम् ॥

सवारीके नाम ५–वाहन १ यान २ युग्य ३ पत्र ४ धोरण ५ ॥

परम्परावाहनं यत्तद्वैनीतकमस्त्रियाम् ॥ ५८ ॥

कहार आदि वाहनोंका नाम १–वैनीतक १ ॥ ५८ ॥

आधोरणा हस्तिपका हस्त्यारोहा निषादिनः ।

हाथीवानके नाम ४–आधोरण १ हस्तिपक २ हस्त्यारोह ३ निषादिन् ४॥

नियंता प्राजिता यन्ता सूतः क्षत्ता च सारथिः ॥५९ ॥ सव्येष्ठदक्षिणस्थौ च संज्ञा रथकुटुम्बिनः ।

रथादिके हांकनेवालके नाम ८–नियन्तृ १ प्राजितृ २ यन्तृ ३ सूत ४ क्षत्तृ ५ सारथि ६ ॥ ५९ ॥ सव्येष्ठ ७ दक्षिणस्थ ८ ॥

रथिनः स्यन्दनारोहा–

रथके ऊपर चढ़के लड़नेवालोंके नाम २–रथिन् १ स्यन्दनारोह २ ॥

–अश्वारोहास्तु सादिनः ॥६०॥

घुड़सवारोंके नाम २–अश्वारोह १ सादिन् २ ॥ ६० ॥

भटा योधाश्च योद्धारः–

लड़नेवालेके नाम ३–भट १ योध २ योद्धृ ३ ॥

–सेनारक्षास्तु सैनिकाः ।

पहरा देनेवालेके नाम २–सेनारक्ष १ सैनिक २ ॥

सेनायां समवेता ये सैन्यास्ते सैनिकाश्च ते ॥ ६१ ॥

सम्पूर्ण सेनाके नाम २–सैन्य १ सैनिक २ ॥ ६१ ॥

बलिनो ये सहस्रेण साहस्रास्ते सहस्रिणः ॥

हजार सिपाहियोंके मालिकके नाम २–साहस्र १ सहस्रिन् २ ॥

परिधिस्थः परिचरः–

जो फौज रखानेके अर्थ चारों तरफ घूमता है उसके नाम २–परिधिस्थ १ परिचर २ ॥

सेनानीर्वाहिनीपतिः ॥ ६२ ॥

सेनाके मालिकके नाम २--सेनानी १ वाहिनीपति २ ॥ ६२ ॥

कञ्चुको वारबाणोऽस्त्री-

योद्धाओंको युद्धके समय पहरनेके वस्त्रके नाम २-कञ्चुक १ वारवाण २॥

-यत्तु मध्ये सकञ्चुकाः । बध्नंति तत्सारसनमधिकाङ्गो-

इसे पहनकर जो योद्धा पट्टी बांधते हैं उसके नाम २-सारसन १ अधिकांग २ ॥

-थ शीर्षकम् ॥ ६३ ॥ शीर्षण्यं च शिरस्त्रे-

टोपके नाम ३-शीर्षक १ ॥ ६३ ॥ शीर्षण्य २ शिरस्त्र ३ ॥

-ऽथ तनुत्रं वर्म दंशनम् । उरश्छदः कङ्कटको जगरः कवचोऽस्त्रियाम् ॥ ६४ ॥

कवचके नाम ७-तनुत्र १ वर्मन् २ दंशन ३ उरश्छद ४ कंकटक ५ जगर ६ कवच ७ ॥ ६४ ॥

आमुक्तः प्रतिमुक्तश्च पिनद्धश्चापिनद्धवत् ।

पहिरे हुए कवचके नाम ४-आमुक्त १ प्रतिमुक्त २ पिनद्ध ३ अपिनद्ध ४॥

संनद्धो वर्मितः सज्जो दंशितो व्यूढकङ्कटः ॥ ६५ ॥

मंत्रादि कवच धारण किये हुएके नाम ५-संनद्ध १ वर्मित २ सज्ज ३ दंशित ४ व्यूढकंकट ५ ॥ ६५ ॥

त्रिष्वामुक्तादयो-

आमुक्त आदि शब्द तीनों लिंगोंमें होते हैं ।

-वर्मभृतां कावचिकं गणे ।

कवच धारण करनेवालोंके समूहका नाम १-कावचिक १ ॥

पदातिपत्तिपदगपादातिकपदाजयः ॥ ६६ ॥ पद्गश्च पदिकश्चा-

पैदलके नाम ७-पदाति १ पत्ति २ पदग ३ पादातिक ४ पदाजि ५ ॥ ६६ ॥ पद्ग ६ पदिक ७ ॥

-थ पादातं पत्तिसंहतिः ॥

पैदलसमूहके नाम २-पादात १ पत्तिसंहति २ ॥

शस्त्राजीवे काण्डपृष्ठायुधीयायुधिकाः समाः ॥ ६७ ॥

जो हथियार बांधकर जीविका करते हैं उनके नाम ४-शस्त्राजीव १ काण्डपृष्ठ २ आयुधीय ३ आयुधिक४॥६७॥

कृतहस्तः सुप्रयोगविशिखः कृतपुंखवत् ॥

तीरन्दाजके नाम ३-कृतहस्त १ सुप्रयोगविशिख २ कृतपुंख ३ ॥

अपराद्धपृषत्कोऽसौ लक्ष्याद्यश्च्युतसायकः ॥ ६८ ॥

जिसका तीर निशानसे चूक जाय उसका नाम १—अपराद्धपृषत्क १॥६८॥

धन्वी धनुष्मान्धानुष्को निषङ्गयस्त्री धनुर्धरः ।

धनुष वा वाण बांधनेवालेके नाम ६—धन्विन् १ धनुष्मत् २ धानुष्क ३ निषंगिन् ४ अस्त्रिन् ५ धनुर्धर ६ ॥

स्यात्काण्डवांस्तु काण्डीरः—

केवल वाण बांधनेवालेके नाम २—काण्डवत् १ काण्डीर २ ॥

—शाक्तीकः शक्तिहेतिकः॥६९॥

शक्ति आदि शस्त्रधारीके नाम २—शाक्तीक १ शक्तिहेतिक २ ॥ ६९ ॥

याष्टीकपारश्वधिकौ यष्टिपार्श्वधहेतिकौ ।

लठिया रखनेवालेका नाम १—याष्टीक १ ॥ फरसा बांधनेवालेका नाम १—पारश्वधिक १ ॥

नैस्त्रिंशिकोऽसिहेतिः स्या—

तरवार बांधे हुएके नाम २—नैस्त्रिंशिक १ असिहेति २ ॥

—त्समौ प्रासिककौन्तिकौ ७०॥

बल्लमके बांधनेवालेका नाम १—प्रासिक १ ॥ भालेवालेका नाम १ कौन्तिक १ ॥ ७० ॥

चर्मी फलकपाणिः स्या—

ढाल बांधनेवालेके नाम २—चर्मिन् १ फलकपाणि २ ॥

—त्पताकी वैजयन्तिकः ।

निशान बांधनेवालेका नाम २—पताकिन् १ वैजयंतिक २ ॥

अनुप्लवः सहायश्चानुचरोऽभिचरः समाः ॥ ७१ ॥

सहायके नाम ४—अनुप्लव १ सहाय २ अनुचर ३ अभिचर ४॥७१॥

पुरोगाग्रेसरप्रष्ठाग्रतःसरपुरःसराः । पुरोगमः पुरोगामी—

अग्रगामीके नाम ७—पुरोग १ अग्रेसर २ प्रष्ठ ३ अग्रतस्सर ४ पुरस्सर ४ पुरोगम ६ पुरोगामिन् ॥ ७ ॥

—मन्दगामी तु मन्थरः ॥ ७२ ॥

धीरे चलनेवालेके नाम २—मन्दगामिन् १ मन्थर २ ॥ ७२ ॥

जंघालोऽतिजवस्तुल्यो—

जादे चलनेवालेके नाम २—जंघाल १ अतिजव २ ॥

—जंघाकरिकजांघिकौ ।

जो जंघाके बलसे जीता है उसके नाम २—जंघाकरिक १ जांघिक २ ॥

तरस्वी त्वरितो वेगी प्रजवी ज़वनो जवः ॥ ७३ ॥

बेगसे चलनेवालेके नाम ६—तरस्विन् १ त्वरित २ वेगिन् ३ प्रजविन् ४ जवन ५ जव ६ ॥ ७३ ॥

जय्यो यः शक्यते जेतुं—

जिसे जीत सके उसका नाम १—जय्य १ ॥

—जेयो जेतव्यमात्रके ।

जीतने लायकका नाम १—जेय १ ॥

जैत्रस्तु जेता—

जो जीत सके उसके नाम २—जैत्र १ जेतृ २ ॥

—यो गच्छत्यलं विद्विषतः प्रति ॥ ७४ ॥ सोऽभ्यमित्र्योऽभ्यमित्रीयोऽप्यभ्यमित्रीण इत्यपि ।

सामर्थ्यसे शत्रुओंके संमुख जानेवालेके नाम ३—॥ ७४ ॥ अभ्यमित्र्य १ अभ्यमित्रीय २ अभ्यमित्रीण ३ ॥

ऊर्जस्वलः स्यादूर्जस्वी य ऊर्जातिशयान्वितः ॥ ७५ ॥

पहलवानके नाम ३—ऊर्जस्वल १ ऊर्जस्विन् २ ऊर्जातिशय ३ ॥ ७५ ॥

स्यादुरस्वानुरसिलो—

बड़ी छातीवालेके नाम २—उरस्वत् १ उरसिल २ ॥

—रथिनो रथिको रथी ।

रथके स्वामीके नाम ३—रथिन १ रथिक २ राथिन् ३ ॥

कामङ्गाम्यनुकामीनो—

जो अपने मनसे चलता हो उसका नाम १—अनुकामीन १ ॥

—ह्यत्यन्तीनस्तथा भृशम् ॥७६॥

वारंवार चलनेवालेका नाम १—अत्यन्तीन १ ॥ ७६ ॥

शूरो वीरश्च विक्रान्तो—

शूरके नाम ३—शूर १ वीर २ विक्रांत ३ ॥

—जेता जिष्णुश्च जित्वरः ।

जीतनेवालेके नाम ३—जेतृ १ जिष्णु २ जित्वर ३ ॥

सांयुगीनो रणे साधुः—

युद्धकुशलका नाम १—सांयुगीन १ ॥

—शस्त्राजीवादयस्त्रिषु ॥ ७७ ॥

शस्त्राजीव आदि शब्द तीनों लिंगोंमें होते हैं ॥ ७७ ॥

ध्वजिनी वाहिनी सेना पृतनानीकिनी चमूः । वरूथिनी बलं सैन्यं चक्रं चानीकमस्त्रियाम् ॥७८॥

सेनाके नाम ११—ध्वजिनी १ वाहिनी २ सेना ३ पृतना ४ अनीकिनी ५ चमू ६ वरूथिनी ७ बल ८ सैन्य ९ चक्र १० अनीक ११ ॥ ७८ ॥

व्यूहस्तु बलविन्यासो—

सेनाकी रचनाके नाम २–व्यूह १ बलविन्यास २ ॥

–भेदा दण्डादयो युधि ।

सेनाकी रचनाके अनेक भेद दण्ड इत्यादि १ ॥ (ये चक्र, मयूर, कमल आदिक व्यूह हैं ॥)

प्रत्यासारो व्यूहपार्ष्णिः–

व्यूहके पीछेके नाम २–प्रत्यासार १ व्यूहपार्ष्णि २ ॥

सैन्यपृष्ठे प्रतिग्रहः ॥ ७९ ॥

फौजके पीछेके नाम २–सैन्यपृष्ठ १ प्रतिग्रह २ ॥ ७९ ॥

क्रमसे तिगुने पत्ति (पैदलों) के नाम ७–॥ ८० ॥ तीन पत्ति (पैदलों) का नाम–सेनामुख १ ॥ तीन सेनामुखका नाम–गुल्म १ ॥ तीन गुल्मका नाम–गण १ ॥ तीन गणका नाम–वाहिनी १ ॥ तीन वाहिनीका नाम–पृतना १ ॥ तीन पृतनाका नाम–चमू १ ॥ तीन चमूका नाम–अनीकिनी १ ॥

–दशानीकिन्यक्षौहि–

दश अनीकिनीका नाम १–अक्षौहिणी १ ॥

अक्षौहिणी आदि सेनाका प्रमाण ।

सेना	पैदल (पत्ति)	सेना-मुख	गुल्म	गण	वाहि-नी	पृतना	चमू	अनी-किनी	अक्षौ-हिणी
हाथी,रथ	१	३	९	२७	८१	२४३	७२९	२१८७	२१८७०
घोड़े	३	९	२७	८१	२४३	७२९	२१८७	६५६१	६५६१०
पैदल	५	१५	४५	१३५	४०५	१२५५	३६४५	१०९३५	१०९३५०

एकेभैकरथा त्र्यश्वा पत्तिः पञ्च पदातिका ।

जिसमें हाथी १ रथ १ घोड़े ३ पैदल ५ हों उस सेनाका नाम–पत्ति १ ॥

पत्त्यङ्गैस्त्रिगुणैः सर्वैः क्रमादाख्या यथोत्तरम् ॥ ८० ॥ सेनामुखं गुल्मगणौ वाहिनी पृतना चमूः । अनीकिनी–

–ण्यथ संपदि ॥ ८१ ॥ संपत्तिः श्रीश्च लक्ष्मीश्च–

सम्पत्तिके नाम ४–संपद् १ ॥ ८१ ॥ संपत्ति २ श्री ३ लक्ष्मी ४ ॥

–विपत्त्यां विपदापदौ ॥

विपत्तिके नाम ३–विपत्ति १ विपद् २ आपद् ३ ॥

आयुधं तु प्रहरणं शस्त्रमस्त्र–

हथियारके नाम ४—आयुध १ प्रहरण २ शस्त्र ३ अस्त्र ४ ॥

—मथास्त्रियौ ॥ ८२ ॥ धनुश्चापौ धन्वशरासनकोदण्डकार्मुकम् । इष्वासोऽ—

धनुषके नाम ७ ॥ ८२ ॥ धनुष् १ चाप २ धन्वन् ३ शरासन ४ कोदण्ड ५ कार्मुक ६ इष्वास ७।

—प्यथ कर्णस्य कालपृष्ठं शरासनम् ॥ ८३ ॥

राजा कर्णके धनुषका नाम १—कालपृष्ठ १ ॥ ८३ ॥

कपिध्वजस्य गाण्डीवगाण्डिवौ पुंनपुंसकौ ।

अर्जुनके धनुषके नाम २—गाण्डीव १ गाण्डिव २ ॥

कोटिरस्याटनी—

धनुषके दोनों कोनोंके नाम २—कोटि १ अटनी २ ॥

—गोधातलेज्याघातवारणे॥८४॥

चमड़ेके दस्तानोंके नाम २—गोधा १ तल २॥ ८४ ॥

लस्तकस्तु धनुर्मध्यं—

धनुषके मध्यभागका नाम १—लस्तक १ ॥

—मौर्वी ज्या शिञ्जिनी गुणः ।

धनुषकी प्रत्यञ्चाके नाम ४—मौर्वी १ ज्या २ शिञ्जिनी ३ गुण ४ ॥

स्यात्प्रत्यालीढमालिढमित्यादि स्थानपञ्चकम् ॥ ८५ ॥

धनुषधारियोंके आसनविशेषके नाम २—प्रत्यालीढ १ आलीढ २ इत्यादि पांच स्थान ॥ ८५ ॥

लक्षं लक्ष्यं शरव्यं च—

निशानेके नाम ३—लक्ष १ लक्ष्य २ शरव्य ३ ॥

—शराभ्यास उपासनम् ।

बाण छोड़नेके अभ्यासके नाम २—शराभ्यास १ उपासन २ ॥

पृषत्कबाणविशिखा अजिह्मगखगाशुगाः ॥ ८६ ॥ कलम्बमार्गणशराः पत्री रोप इषुर्द्वयोः ।

बाणके नाम १२—पृषत्क १ बाण २ विशिख ३ अजिह्मग ४ खग ५ आशुग ६ ॥ ८६ ॥ कलम्ब ७ मार्गण ८ शर ९ पत्रिन् १० रोप ११ इषु ॥ १२ ॥

प्रक्ष्वेडनास्तु नाराचाः—

लोहेके तीरके नाम २—प्रक्ष्वेडन १ नाराच २ ॥

—पक्षो वाज—

बाणके पक्षके नाम २—पक्ष १ वाज २॥

—स्त्रिषूत्तरे ॥ ८७ ॥

लिप्तकपर्यंत सब शब्द तीनों लिंगोंमें होते हैं ॥ ८७ ॥

निरस्तः प्रहिते बाणे-

छोड़े हुए बाणका नाम १-निरस्त १॥

-विषाक्ते दिग्धलिप्तकौ ।

विषयुक्त बाणके नाम ३-विषाक्त १ दिग्ध २ लिप्तक ३ ॥

तूणोपासंगतूणीरनिषंगा इषुधिर्द्वयोः ॥ ८८ ॥ तूण्यां-

तरकसके नाम ६-तूण १ उपासङ्ग २ तूणीर ३ निषङ्ग ४ इषुधि ५॥८८॥ तूणी ६ ॥

-खड्गे तु निस्त्रिंशचन्द्रहासासिरिष्टयः । कौक्षेयको मण्डलाग्रः करवालः कृपाणवत् ॥ ८९ ॥

तलवारके नाम ९-खड्ग १ निस्त्रिंश २ चन्द्रहास ३ असि ४ रिष्टि ५ कौक्षेयक ६ मण्डलाग्र ७ करवाल ८ कृपाण ९ ॥ ८९ ॥

त्सरुः खड्गादिमुष्टौ स्या-

तलवार आदिकी मूठका नाम १-त्सरु१॥

न्मेखला तन्निबन्धनम् ।

तलवारके म्यानका नाम १-मेखला१॥

फलकोऽस्त्री फलं चर्म-

ढालके नाम ३-फलक १ फल २ चर्मन् ३ ॥

-संग्राहो मुष्टिरस्य यः ॥ ९० ॥

ढालकी मूठका नाम १-संग्राह १ ॥ ९० ॥

द्रुघणो मुद्गरघनौ-

मुद्गरके नाम ३-द्रुघण १ मुद्गर २ घन ३॥

स्यादीली करवालिका ।

गुप्तिके नाम २-ईली १ करवालिका २॥

भिन्दिपालः सृगस्तुल्यौ-

तोफनके नाम २-भिन्दिपाल १ सृग २॥

-परिघः परिघातिनः ॥ ९१ ॥

परिघके नाम २-परिघ १ परिघातिन् २ ॥ ९१ ॥

द्वयोः कुठारः स्वधितिः परशुश्च परश्वधः ।

कुल्हाड़ीके नाम ४-कुठार १ स्वधिति २ परशु ३ परश्वध ४ ॥

स्याच्छस्त्री चासिपुत्री च छुरिका चासिधेनुका ॥ ९२ ॥

छूरीके नाम ४-शस्त्री १ असिपुत्री २ छुरिका ३ असिधेनुका ४ ॥ ९२ ॥

वा पुंसि शल्यं शंकुर्ना ।

बर्छीके नाम २-शल्य १ शंकु २ ॥

-सर्वला तोमरोऽस्त्रियाम्-

गँड़ासके नाम २-सर्वला १ तोमर २॥

प्रासस्तु कुन्तः-

भालेके नाम २-प्रास १ कुन्त २ ॥

-कोणस्तु स्त्रियः पाल्यश्रिकोटयः ॥ ९३ ॥

खड्गादिकी नोंकके नाम ४—कोण १ पालि २ अश्रि ३ कोटि ४ ॥ ९३ ॥

सर्वाभिसारः सर्वौघः सर्वसन्नहनार्थकः ।

सेनाकी तैयारीके नाम ३—सर्वाभिसार १ सर्वौघ २ सर्वसंनहन ३ ॥

लोहाभिसारोऽस्त्रभृतां राज्ञां नीराजनाविधिः ॥ ९४ ॥

महानवमीके पहिले लड़ाईके निमित्त राजाओंका शस्त्र पूजनेका नाम १—लोहाभिसार १ ॥ ९४ ॥

यत्सेनयाभिगमनमरौ तदभिषेणनम् ॥

शत्रुके ऊपर सेना चढ़नेका नाम १—आभिषेणन १ ॥

यात्रा व्रज्याऽभिनिर्याणं प्रस्थानं गमनं गमः ॥ ९५ ॥

चलनेके नाम ६—यात्रा १ व्रज्या २ अभिनिर्याण ३ प्रस्थान ४ गमन ५ गम ६ ॥ ९५ ॥

स्यादासारः प्रसरणं—

सेनाके फैलनेके नाम २—आसार १ प्रसरण २ ॥

—प्रचक्रं चलितार्थकम् ।

चली हुई सेनाके नाम २—प्रचक्र १ चलित २ ॥

अहितान्प्रत्यभीतस्य रणे यानमभिक्रमः ॥ ९६ ॥

निडर होकर शत्रुपर चढ़ाईका नाम १—अभिक्रम १ ॥ ९६ ॥

वैतालिका बोधकरा—

प्रातःकालके राजाके जगानेवालोंके नाम २—वैतालिक १ बोधकर २ ॥

—श्चाक्रिका घाण्टिकार्थकाः ।

घड़ियालीके नाम २—चक्रिक १ घाण्टिक २ ॥

स्युर्मागधास्तु मगधा—

राजाका वंश वर्णन करनेवालेके नाम २—मागध १ मगध २ ॥

—बन्दिनः स्तुतिपाठकाः ॥ ९७ ॥

भाटके नाम २—बन्दिन् १ स्तुतिपाठक २ ॥ ९७ ॥

संशप्तकास्तु समयात्संग्रामादनिवर्तिनः ।

शपथ खाकर युद्धमें पीठ न देनेवालेका नाम १—संशप्तक १ ॥

रेणुर्द्वयोः स्त्रियां धूलिः पांसुर्ना न द्वयो रजः ॥ ९८ ॥

धूलिके नाम ४—रेणु १ धूलि २ पांसु ३ रजस् ४ ॥ ९८ ॥

चूर्णे क्षोदः—

चूनके नाम २—चूर्ण १ क्षोद २॥

-समुत्पिञ्जपिञ्जलौ भृशमाकुले।

अकुलानेके नाम २-समुत्पिञ्ज १ पिञ्जल २ ॥

पताका वैजयन्ती स्यात्केतनं ध्वजमस्त्रियाम् ॥ ९९ ॥

झंडेके नाम ४-पताका १ वैजयन्ती २ केतन ३ ध्वज ४ ॥ ९९ ॥

सा वीराशंसनं युद्धभूमिर्याऽतिभयप्रदा ।

भयंकर युद्धभूमिके स्थानका नाम -१ वीराशंसन १ ॥

अहं पूर्वमहं पूर्वमित्यहंपूर्विका स्त्रियाम् ॥ १०० ॥

जिसमें वीर कहें कि हम पहले लडेंगे, हम पहले लडेंगे उस लडाईका नाम १-अहंपूर्विका १ ॥ १०० ॥

आहोपुरुषिका दर्पाद्या स्यात्संभावनात्मनि ।

जिसमें कहें कि हम पुरुष हैं हम ही लडेंगे उसका नाम १-आहोपुरुषिका १॥

अहमहमिका तु सा स्यात्परस्परं यो भवत्यहंकारः ॥ १०१ ॥

आपसके इस कहनेको कि हम शक्त हैं हम लड़ सकते हैं उसका नाम १-अहमहमिका १ ॥ १०१ ॥

द्रविणं तरः सहोबलशौर्याणि स्थाम शुष्मं च । शक्तिः पराक्रमः प्राणो-

पराक्रमके नाम १०-द्रविण १ तरस् २ सहस् ३ बल ४ शौर्य ५ स्थामन् ६ शुष्म ७ शक्ति ८ पराक्रम ९ प्राण १० ॥

-विक्रमस्त्वतिशक्तिता ॥ १०२ ॥

अतिपराक्रमके नाम २-विक्रम १ अतिशक्तिता २ ॥ १०२ ॥

वीरपानं तु यत्पानं वृत्ते भाविनि वा रणे ।

लड़नेके निमित्त पहले या पीछे नसा खाने पीनेका नाम १-वीरपान १ ॥

युद्धमायोधनं जन्यं प्रधनं प्रविदारणम् ॥ १०३ ॥ मृधमास्कन्दनं संख्यं समीकं साम्परायिकम् । अस्त्रियां समरानीकरणाः कलहविग्रहौ ॥ १०४ ॥ संप्रहाराभिसंपातकलिसंस्फोटसंयुगाः । अभ्यामर्दसमाघातसंग्रामाभ्यागमाहवाः ॥ १०५ ॥ समुदायः स्त्रियः संयत्समित्याजिसमिद्युधः ।

युद्धके नाम ३१-युद्ध १ आयोधन २ जन्य ३ प्रधन ४ प्रविदारण ५ ॥ १०३ ॥ मृध ६ आस्कन्दन ७ संख्य ८ समीक ९

सांपरायिक १० समर ११ अनीक १२ रण १३ कलह १४ विग्रह १५ ॥ १०४ ॥ संप्रहार १६ अभिसम्पात १७ कलि १८ संस्फोट १९ संयुग २० अभ्यामर्द २१ समाघात २२ संग्राम २३ अभ्यागम २४ आहव २५॥१०५॥ समुदाय २६ संयत् २७ समिति २८ आजि २९ समित् ३० युध् ३१ ॥

नियुद्धं बाहुयुद्धे स्यात्-

भुजाके युद्धके नाम २—नियुद्ध १ बाहुयुद्ध २ ॥

-तुमुलं रणसंकुले ॥ १०६ ॥

घोर संग्रामका नाम १—तुमुल १ ॥ १०६ ॥

क्ष्वेडा तु सिंहनादः स्यात्-

वीरोंके गर्जनेके नाम २—क्ष्वेडा १ सिंहनाद २ ॥

-करिणां घटना घटा।

हाथियोंके समूहके नाम २—घटना १ घटा २ ॥

क्रन्दनं योधसंरावो-

युद्धके शब्दका नाम १—क्रन्दन १॥

-बृंहितं करिगर्जितम् ॥१०७॥

हाथीके शब्दका नाम १—बृंहित १ ॥ १०७ ॥

विस्फारो धनुषः स्वानः-

धनुषके शब्दका नाम १—विस्फार १॥

-पटहाडम्बरौ समौ।

नगाड़ेके शब्दके नाम २—पटह १ आडंबर २ ॥

प्रसभं तु बलात्कारो हठो-

हठके नाम ३—प्रसभ १ बलात्कार २ हठ ३ ॥

ऽथ स्खलितं छलम् ॥ १०८ ॥

धोखा देनेके नाम २—स्खलित १ छल २ ॥ १०८ ॥

अजन्यं क्लीबमुत्पात उपसर्गः समं त्रयम्।

उत्पातके नाम ३—अजन्य १ उत्पात २ उपसर्ग ३ ॥

मूर्च्छा तु कश्मलं मोहो-

मूर्च्छाके नाम ३—मूर्च्छा १ कश्मल २ मोह ३ ॥

-ऽप्यवमर्दस्तु पीडनम् ॥१०९॥

देशादिको उपद्रव देनेके नाम २—अवमर्द १ पीडन २ ॥ १०९ ॥

अभ्यवस्कन्दनं त्वभ्यासादनं-

धोखेसे दबा लेनेके नाम २—अभ्यवस्कन्दन १ अभ्यासादन २ ॥

-विजयो जयः।

जीतके नाम २—विजय १ जय २॥

वैरशुद्धिः प्रतीकारो वैरनिर्यातनं च सा ॥ ११० ॥

वैर दूर करनेके नाम ३—वैरशुद्धि १ प्रतीकार २ वैरनिर्यातन ३ ॥ ११० ॥

प्रद्रावोद्रावसन्द्रावसन्दावा विद्रवो द्रवः । अपक्रमोऽपयानं च—

पलायन (भागने) के नाम ८—प्रद्राव १ उद्राव २ संद्राव ३ संदाव ४ विद्रव ५ द्रव ६ अपक्रम ७ अपयान ८॥

—रणेभङ्गः पराजयः ॥ १११ ॥

हारके नाम २—रणेभङ्ग १ पराजय २ ॥ १११ ॥

पराजितपराभूतौ—

हारे हुएके नाम २—पराजित १ पराभूत २ ॥

—त्रिषु नष्टतिरोहितौ ।

छिपे हुएके नाम २—नष्ट १ तिरोहित २ ॥

प्रमापणं निबर्हणं निकारणं विशारणम् ॥ ११२ ॥ प्रवासनं परासनं निषूदनं निहिंसनम् । निर्वासनं संज्ञपनं निर्ग्रन्थनमपासनम् ॥ ११३ ॥ निस्तर्हणं निहननं क्षणनं परिवर्जनम् । निर्वापणं विशसनं मारणं प्रतिघातनम् ॥ ११४॥ उद्वासनप्रमथनक्रथनोज्जासनानि च। आलम्भपिञ्जविशरघातोन्माथवधा अपि ॥ ११५ ॥

मारनेके नाम ३०—प्रमापण १ निबर्हण २ निकारण ३ विशारण ४ ॥ ११२ ॥ प्रवासन ५ परासन ६ निषूदन ७ निहिंसन ८ निर्वासन ९ संज्ञपन १० निर्ग्रन्थन ११ अपासन १२ ॥ ११३ ॥ निस्तर्हण १३ निहनन १४ क्षणन १५ परिवर्जन १६ निर्वापण १७ विशसन १८ मारण १९ प्रतिघातन २० ॥ ११४ ॥ उद्वासन २१ प्रमथन २२ क्रथन २३ उज्जासन २४ आलम्भ २५ पिञ्ज २६ विशर २७ ॥ घात २८ उन्माथ २९ वध ३० ॥ ११५ ॥

स्यात्पञ्चता कालधर्मो दिष्टान्तः प्रलयोऽत्ययः । अन्तो नाशो द्वयोर्मृत्युर्मरणं निधनोऽस्त्रियाम् ॥ ११६॥

मृत्युके नाम १०—पञ्चता १ कालधर्म २ दिष्टान्त ३ प्रलय ४ अत्यय ५ अन्त ६ नाश ७ मृत्यु ८ मरण ९ निधन १ ॥ ११६ ॥

परासुप्राप्तपञ्चत्वपरेतप्रेतसंस्थिताः । मृतप्रमीतौ त्रिष्वेते—

मृत्युको प्राप्त हुएके नाम ७—परासु १ प्राप्तपञ्चत्व २ परेत ३ प्रेत ४ संस्थित ५ मृत ६ प्रमीत ७ ॥

—चिता चित्या चितिः स्त्रियाम् ॥ ११७ ॥

चिताके नाम ३—चिता १ चित्या २ चिति ३ ॥ ११७ ॥

कबन्धोऽस्त्री क्रियायुक्तमपमूर्धकलेवरम् ।

शिररहित चेष्टा करनेवाले शरीरका नाम १—कबन्ध १ ॥

श्मशानं स्यात्पितृवनं—

श्मशानके नाम २—श्मशान १ पितृवन २ ॥

—कुणपः शवमस्त्रियाम्॥११८॥

मुर्देके नाम २—कुणप १ शव २ ॥ ११८ ॥

प्रग्रहोपग्रहौ बन्द्यां—

कैदके नाम ३—प्रग्रह १ उपग्रह २ बन्दी ३ ॥

—कारा स्याद्बन्धनालये ।

जेहलखानेका नाम १—कारा १ ॥

पुंसि भूम्न्यसवः प्राणाश्चैवं—

प्राणके नाम २—असु १ प्राण २॥

—जीवोऽसुधारणम् ॥ ११९ ॥

जीवके नाम २—जीव १ असुधारण २ ॥ ११९ ॥

आयुर्जीवितकालो—

आयुका नाम १—आयुष् १ ॥

—ना जीवातुर्जीवनौषधम् ।

मृतसंजीवनी बूटीके नाम २—जीवातु १ जीवनौषध २ ॥

इति क्षत्रियवर्गः ॥ ८ ॥

अथ वैश्यवर्गः ९.

ऊरव्या ऊरुजा अर्या वैश्या भूमिस्पृशो विशः ।

वैश्यके नाम ६—ऊरव्य १ ऊरुज २ अर्य ३ वैश्य ४ भूमिस्पृक् ५ विश् ६ ॥

आजीवो जीविका वार्ता वृत्तिर्वर्तनजीवने ॥ १ ॥

जीविकाके नाम ६—आजीव १ जीविका २ वार्त्ता ३ वृत्ति ४ वर्त्तन ५ जीवन ६ ॥ १ ॥

स्त्रियां कृषिः पाशुपाल्यं वाणिज्यं चेति वृत्तयः ।

जीविकाके भेद ३—खेती करनेका नाम—कृषि १ ॥ पशुपालनका नाम—पाशुपाल्य २ ॥ व्यापारका नाम—वाणिज्य ३ ॥ ये तीनों वैश्यवृत्ति हैं ॥

सेवा श्ववृत्ति—

परसेवाके नाम २—सेवा १ श्ववृत्ति २ ॥

—रनृतं कृषि—

खेतीके नाम २—अनृत १कृषि २॥

—रुञ्छशिलं त्वृतम् ॥ २ ॥

उञ्छवृत्तिके नाम ३—उञ्छ १ शिल २ ऋत ३ ॥ २ ॥

द्वे याचितायाचितयोर्यथासंख्यं मृतामृते।

मांगनेसे प्राप्त हुई वस्तुका नाम १—मृत १ ॥ विना मांगे प्राप्त हुई वस्तुका नाम १—अमृत १ ॥

सत्यानृतं वणिग्भावः स्या—

व्यापारके नाम २—सत्यानृत १ वणिग्भाव २ ॥

—दृणं पर्युदञ्चनम् ॥ ३ ॥ उद्धारो-

कर्जके नाम ३—ऋण १ पर्युदञ्चन २ ॥ ३ ॥ उद्धार ३ ॥

—ऽर्थप्रयोगस्तु कुसीदं वृद्धि-जीविका।

ब्याजके नाम ३—अर्थप्रयोग १ कुसीद २ वृद्धिजीविका ३ ॥

याच्ञयाप्तं याचितकं—

मांगनेकी वस्तुका नाम १—याचितक १ ॥

—निमयादापमित्यकम् ॥ ४ ॥

वायदेपर ली हुई वस्तुका नाम १—आपमित्यक १ ॥ ४ ॥

उत्तमर्णाधमर्णौ द्वौ प्रयोक्तृग्राहकौ क्रमात्।

ऋण देनेवालेका नाम १—उत्तमर्ण १॥ ऋणके लेनेवालेका नाम १—अधमर्ण १

कुसीदिको वार्धुषिको वृद्ध्याजीवश्च वार्धुषिः ॥ ५ ॥

ब्याजसे जीनेवालेके नाम ४—कुसीदिक १ वार्धुषिक २ वृद्ध्याजीव ३ वार्धुषि ४ ॥ ५ ॥

क्षेत्राजीवः कर्षकश्च कृषिकश्च कृषीवलः।

किसानके नाम ४—क्षेत्राजीव १ कर्षक २ कृषिक ३ कृषीवल ४ ॥

क्षेत्रं व्रैहेयशालेयं व्रीहिशाल्युद्भवोचितम् ॥ ६ ॥

व्रीहि होनेके योग्य खेतका नाम १—व्रैहेय १ ॥ धानके खेतका नाम १—शालेय १ ॥ ६ ॥

यव्यं यवक्यं षष्टिक्यं यवादिभवनं हि यत्।

जौके खेतका नाम १—यव्य १॥ छोटे जौके खेतका नाम १—यवक्य १ ॥ साठीके खेतका नाम १—षष्टिक्य १ ॥

तिल्यं तैलीनवन्माषोमाणुभंगाद्द्विरूपता ॥ ७ ॥

तिलके खेतके नाम २—तिल्य १ तैलीन २ ॥ उरद होनेवालेके नाम २—माष्य १ माषीण २॥ अलसी होनेवालेके

नाम २—उम्य १ औमीन २ ॥ अणुके होनेवालेके नाम २—अणव्य १ आणवीन २ ॥ भंग (भांग) होनेवालेके नाम—२भंग्य १ भंगीन २ ॥ ७ ॥

मौद्गीनकौद्रवीणादिशेषधान्योद्भवक्षमम् ।

मूंग होनेवालेका नाम १—मौद्गीन १॥ कोदों होनेवाले खेतका नाम १—कौद्रवीण १ ॥ चणे होनेवाले खेतका नाम १—चाणकीन १ ॥ गेहूं होनेवालेका नाम १—गौधूमीन १ इत्यादि ॥

बीजाकृतं तूप्तकृष्टं—

बीज बोनेका नाम १—बीजाकृत १॥

—सीत्यं कृष्टं च हल्यवत् ॥ ८ ॥

जोते हुए खेतके नाम ३—सीत्य १ कृष्ट २ हल्य ३ ॥ ८ ॥

त्रिगुणाकृतं तृतीयाकृतं त्रिहल्यं त्रिसीत्यमपि तस्मिन् ।

तीन वार जुते हुए खेतके नाम ४—त्रिगुणाकृत १ तृतीयाकृत २ त्रिहल्य ३ त्रिसीत्य ४ ॥

द्विगुणाकृते तु सर्वं पूर्वं शम्बाकृतमपीह ॥ ९ ॥

दो बार जुते हुएके नाम ४—द्विगुणाकृत १ द्वितीयाकृत २ द्विहल्य ३ द्विसीत्य ४ ॥ ९ ॥

द्रोणाढकादिवापादौ द्रौणिकाढकिकादयः ।

जिसमें द्रोण (१०२४) तोला धान आदि बोया जाय उस खेतका नाम १—द्रौणिक १॥ आढक (२५६) तोलाभरवालेका नाम १—आढकिक १ ॥ आदि ॥

खारीवापस्तु खारीक—

जिसमें खारी (४ द्रोण अर्थात् ४०९६) तोलाभर अन्न बोया जाय उसका नाम १—खारीक १ ॥

—उत्तमर्णादयस्त्रिषु ॥ १० ॥

उत्तमर्णादि शब्द तीनों लिंगोंमें होते हैं ॥ १० ॥

पुंनपुंसकयोर्वप्रः केदारः क्षेत्र—

खेतके नाम ३—वप्र १ केदार २ क्षेत्र ३॥

—मस्य तु । केदारकं स्यात्कैदार्यं क्षेत्रं कैदारिकं गणे ॥ ११ ॥

खेतके समूहके नाम—४कैदारक १ कैदार्य २ क्षेत्र ३ कैदारिक ४ ॥११॥

लोष्टानि लेष्टवः पुंसि—

ढेलेके नाम २—लोष्ट १ लेष्टु ॥

—कोटिशो लोष्टभेदनः ।

मूगरीके नाम २—कोटिश १ लोष्टभेदन २ ॥

प्राजनं तोदनं तोत्रं—

पैने (लाठी, चाबुक आदि) के नाम ३—प्राजन १ तोदन २ तोत्र ३॥

खेतीके नाम २—अनृत १कृषि २॥

—रुञ्छशिलं त्वृतम् ॥ २ ॥

उञ्छवृत्तिके नाम ३—उञ्छ १ शिल २ ऋत ३ ॥ २ ॥

द्वे याचितायाचितयोर्यथासंख्यं मृतामृते ।

मांगनेसे प्राप्त हुई वस्तुका नाम १—मृत १ ॥ विना मांगे प्राप्त हुई वस्तुका नाम १—अमृत १ ॥

सत्यानृतं वणिग्भावः स्या—

व्यापारके नाम २—सत्यानृत १ वणिग्भाव २ ॥

—हणं पर्युदञ्चनम् ॥ ३ ॥ उद्धारो-

कर्जके नाम ३—ऋण १ पर्युदञ्चन २ ॥ ३ ॥ उद्धार ३ ॥

—ऽर्थप्रयोगस्तु कुसीदं वृद्धि-जीविका ।

ब्याजके नाम ३—अर्थप्रयोग १ कुसीद २ वृद्धिजीविका ३ ॥

याच्ञयाप्तं याचितकं—

मांगनेकी वस्तुका नाम १—याचितक १ ॥

—निमयादापमित्यकम् ॥ ४ ॥

वायदेपर ली हुई वस्तुका नाम १—आपमित्यक १ ॥ ४ ॥

उत्तमर्णाधमर्णौ द्वौ प्रयोक्तृग्राहकौ क्रमात् ।

ऋण देनेवालेका नाम १—उत्तमर्ण १॥ ऋणके लेनेवालेका नाम १—अधमर्ण १

कुसीदिको वार्धुषिको वृद्धयाजीवश्च वार्धुषिः ॥ ५ ॥

ब्याजसे जीनेवालेके नाम ४—कुसीदिक १ वार्धुषिक २ वृद्ध्याजीव ३ वार्धुषि ४ ॥ ५ ॥

क्षेत्राजीवः कर्षकश्च कृषिकश्च कृषीवलः ।

किसानके नाम ४—क्षेत्राजीव १ कर्षक २ कृषिक ३ कृषीवल ४ ॥

क्षेत्रं व्रैहेयशालेयं व्रीहिशाल्युद्भवोचितम् ॥ ६ ॥

व्रीहि होनेके योग्य खेतका नाम १—व्रैहेय १ ॥ धानके खेतका नाम १—शालेय १ ॥ ६ ॥

यव्यं यवक्यं षष्टिक्यं यवादिभवनं हि यत् ।

जौके खेतका नाम १—यव्य १॥ छोटे जौके खेतका नाम १—यवक्य १ ॥ साठीके खेतका नाम १—षष्टिक्य १ ॥

तिल्यं तैलीनवन्माषोमाणुभंगाद्द्विरूपता ॥ ७ ॥

तिलके खेतके नाम २—तिल्य १ तैलीन २ ॥ उरद होनेवालेके नाम २—माष्य १ माषीण २॥ अलसी होनेवालेके

नाम २–उम्य १ औमीन २ ॥ अणुके होनेवालेके नाम २–अणव्य १ आणवीन २ ॥ भंग (भांग) होनेवालेके नाम–२भंग्य १ भंगीन २ ॥ ७ ॥

मौद्गीनकौद्रवीणादिशेषधान्योद्भवक्षमम् ।

मूंग होनेवालेका नाम १–मौद्गीन १॥ कोदों होनेवाले खेतका नाम १–कौद्रवीण १ ॥ चणे होनेवाले खेतका नाम १–चाणकीन १ ॥ गेहूं होनेवालेका नाम १–गौधूमीन १ इत्यादि ॥

बीजाकृतं तूप्तकृष्टे–

बीज बोनेका नाम १–बीजाकृत १॥

–सीत्यं कृष्टं च हल्यवत् ॥ ८ ॥

जोते हुए खेतके नाम ३–सीत्य १ कृष्ट २ हल्य ३ ॥ ८ ॥

त्रिगुणाकृतं तृतीयाकृतं त्रिहल्यं त्रिसीत्यमपि तस्मिन् ।

तीन वार जुते हुए खेतके नाम ४–त्रिगुणाकृत १ तृतीयाकृत २ त्रिहल्य ३ त्रिसीत्य ४ ॥

द्विगुणाकृते तु सर्वं पूर्वं शम्बाकृतमपीह ॥ ९ ॥

दो बार जुते हुएके नाम ४–द्विगुणाकृत १ द्वितीयाकृत २ द्विहल्य ३ द्विसीत्य ४ ॥ ९ ॥

द्रोणाढकादिवापादौ द्रौणिकाढकिकादयः ।

जिसमें द्रोण (१०२४) तोला धान आदि बोया जाय उस खेतका नाम १–द्रौणिक १॥ आढक (२५६) तोलाभरवालेका नाम १–आढकिक १ ॥ आदि ॥

खारीवापस्तु खारीक–

जिसमें खारी (४ द्रोण अर्थात् ४०९६) तोलाभर अन्न बोया जाय उसका नाम १–खारीक १ ॥

–उत्तमर्णादयस्त्रिषु ॥ १० ॥

उत्तमर्णादि शब्द तीनों लिंगोंमें होते हैं ॥ १० ॥

पुंनपुंसकयोर्वप्रः केदारः क्षेत्र–

खेतके नाम ३–वप्र १ केदार २ क्षेत्र ३॥

–मस्य तु । केदारकं स्यात्कैदार्यं क्षेत्रं कैदारिकं गणे ॥ ११ ॥

खेतके समूहके नाम–४कैदारक १ कैदार्य २ क्षेत्र ३ कैदारिक ४ ॥ ११॥

लोष्टानि लेष्टवः पुंसि–

ढेलेके नाम २–लोष्ट १ लेष्टु ॥

–कोटिशो लोष्टभेदनः ।

मूगरीके नाम २–कोटिश १ लोष्टभेदन २ ॥

प्राजनं तोदनं तोत्रं–

पैने (लाठी, चाबुक आदि) के नाम ३–प्राजन १ तोदन २ तोत्र ३॥

-खनित्रमवदारणे ॥ १२ ॥

कुदालके नाम २-खनित्र १ अवदारण २ ॥ १२ ॥

दात्रं लवित्रं-

खुरपा फावड़ा आदिके नाम २-दात्र १ लवित्र २ ॥

-माबन्धो योत्रं योक्त्रं-

नाथके नाम ३-आबन्ध १ योत्र २ योक्त्र ३ ॥

-मथो फलम् । निरीशं कुटकं फालः कृषको-

फाल अर्थात् हलके नीचे लगे हुए लोहेके नाम ५-फल १ निरीश २ कुटक ३ फाल ४ कृषक ५ ॥

लांगलं हलम् ॥ १३ ॥ गोदारणं च सीरो-

हलके नाम ४-लाङ्गल १ हल २ ॥ १३ ॥ गोदारण ३ सीर ४ ॥

-ऽथ शम्या स्त्री युगकीलकः ।

सैले (सिमल) के नाम २-शम्या १ युगकीलक २ ॥

ईषा लाङ्गलदण्डः स्यात्-

हलस (हाल) के नाम २-ईषा १ लाङ्गलदण्ड २ ॥

-सीता लाङ्गलपद्धतिः ॥ १४ ॥

हलकी रेखा (खूड) के नाम २-सीता १ लाङ्गलपद्धति २ ॥ १४ ॥

पुंसि मेधिः खलेदारु न्यस्तं यत्पशुबन्धने ।

जो धान्यमर्दन करनेके स्थान अर्थात् पैरमें गाड़े हुए पशु बांधनेके खूंटे (मेढ़) के नाम २-मेधि १ खलेदारु २ ॥

आशुर्व्रीहिः पाटलः स्या-

साठी (धान) के नाम ३-आशु १ व्रीहि २ पाटल ३ ॥

च्छितशूकयवौ समौ ॥ १५ ॥

जौके नाम २-शितशूक १ यव २ ॥ १५ ॥

तोक्मस्तु तत्र हरिते-

हरे जौका नाम १-तोक्म १ ॥

-कलायस्तु सतीनकः । हरेणुखण्डिकौ चास्मिन्-

मटरके नाम ४-कलाय १ सतीनक २ हरेणु ३ खण्डिक ४ ॥

-कोरदूषस्तु कोद्रवः ॥ १६ ॥

कोदोंके नाम २-कोरदूष १ कोद्रव २ ॥ १६ ॥

मङ्गल्यको मसूरो-

मसूरके नाम २-मङ्गल्यक १ मसूर २ ॥

-ऽथ मकुष्ठकमयुष्ठकौ । वनमुद्गे-

मोठके नाम ३-मकुष्ठक १ मयुष्ठक २ वनमुद्ग ३ ॥

—सर्षपे तु द्वौ तंतुभकदम्बकौ ॥ १७ ॥

सरसोंके नाम ३—सर्षप १ तन्तुभ २ कदम्बक ३ ॥ १७ ॥

सिद्धार्थस्त्वेष धवलो—

सफेद सरसोंका नाम १—सिद्धार्थ १

—गोधूमः सुमनः समौ ।

गेहूंके नाम २—गोधूम १ सुमन २ ॥

स्याद्यावकस्तु कुल्माष—

कुलथीके नाम २—यावक १ कुल्माष २॥

—श्चणको हरिमन्थकः ॥ १८ ॥

अरहरे (चने) के नाम २—चणक १ हारिमन्थक २ ॥ १८ ॥

द्वौ तिले तिलपेजश्च तिलपि—ञ्जश्च निष्फले ।

'फलहीन' 'बांझतिल' 'रानतिल' के नाम २—तिलपेज १ तिलपिंज २ ॥

क्षवः क्षुताभिजननो राजिका कृष्णिकाऽऽसुरी ॥ १९ ॥

राईके नाम ५—क्षव १ क्षुताभिजनन २ राजिका ३ कृष्णिका ४ आसुरी ५ ॥ १९ ॥

स्त्रियौ कङ्गुप्रियंगू द्वे—

कङ्गनीके नाम २—कंगु १ प्रियंगु २॥

—अतसी स्यादुमा क्षुमा ।

अलसीके नाम ३— अतसी १ उमा २ क्षुमा ३ ॥

मातुलानी तु भंगायाम्—

भङ्गके नाम २—मातुलानी १ भंगा २ ॥

—व्रीहिभेदस्त्वणुः पुमान् ॥ २० ॥

चीना धान्यका नाम १-अणु १ ॥ २० ॥

किंशारुः सस्यशूकं स्यात्—

जौ इत्यादिके तीखे अग्रभाग (सीकुर) के नाम २—किंशारु १ सस्यशूक २ ॥

—कणिशं सस्यमञ्जरी ।

धान्यकी बालीके नाम २—कणिश १ सस्यमञ्जरी २ ॥

धान्यं व्रीहिः स्तम्बकरिः—

धान्यमात्रके नाम ३—धान्य १ व्रीहि २ स्तम्बकरि ३ ॥

—स्तम्बो गुच्छस्तृणादिनः ॥ २१ ॥

यव आदिकी जड़के नाम २—स्तम्ब १ गुच्छ २ ॥ २१ ॥

नाडी नालं च काण्डोऽस्य—

नलुआके नाम २—नाडी १ नाल २ ॥

—पलालोऽस्त्री स निष्फलः ।

पयालका नाम १—पलाल १ ॥

कडङ्गरो बुसं क्लीबे—

मोटे भुसके नाम २—कडङ्गर १ बुस २ ॥

धान्यत्वचि तुषः पुमान् ॥ २२ ॥

भूसीका नाम १—तुष १ ॥ २२ ॥

-खनित्रमवदारणे ॥ १२ ॥

कुदालके नाम २-खनित्र १ अवदारण २ ॥ १२ ॥

दात्रं लवित्र-

खुरपा फावड़ा आदिके नाम २-दात्र १ लवित्र २ ॥

-माबन्धो योत्रं योक्त्र-

नाथके नाम ३-आबन्ध १ योत्र २ योक्त्र ३ ॥

-मथो फलम् । निरीशं कुटकं फालः कृषको-

फाल अर्थात् हलके नीचे लगे हुए लोहेके नाम ५-फल १ निरीश २ कुटक ३ फाल ४ कृषक ५ ॥

लांगलं हलम् ॥ १३ ॥ गोदारणं च सीरो-

हलके नाम ४-लाङ्गल १ हल २ ॥ १३ ॥ गोदारण ३ सीर ४ ॥

-ऽथ शम्या स्त्री युगकीलकः ।

सैले (सिमल) के नाम २-शम्या १ युगकीलक २ ॥

ईषा लाङ्गलदण्डः स्यात्-

हलस (हाल) के नाम २-ईषा १ लाङ्गलदण्ड २ ॥

-सीता लाङ्गलपद्धतिः ॥ १४ ॥

हलकी रेखा (खूड) के नाम २-सीता १ लाङ्गलपद्धति २ ॥ १४ ॥

पुंसि मेधिः खलेदारु न्यस्तं यत्पशुबन्धने ।

जो धान्यमर्दन करनेके स्थान अर्थात् पैरमें गाड़े हुए पशु वांधनेके खूंटे (मेढ़) के नाम २-मेधि १ खलेदारु २ ॥

आशुर्व्रीहिः पाटलः स्या-

साठी (धान) के नाम ३-आशु १ व्रीहि २ पाटल ३ ॥

च्छितशूकयवौ समौ ॥ १५ ॥

जौके नाम २-शितशूक १ यव २ ॥ १५ ॥

तोक्मस्तु तत्र हरिते-

हरे जौका नाम १-तोक्म १ ॥

-कलायस्तु सतीनकः । हरेणुखण्डिकौ चास्मिन्-

मटरके नाम ४-कलाय १ सतीनक २ हरेणु ३ खण्डिक ४ ॥

-कोरदूषस्तु कोद्रवः ॥ १६ ॥

कोदोंके नाम २-कोरदूष १ कोद्रव २ ॥ १६ ॥

मङ्गल्यको मसूरो-

मसूरके नाम २-मङ्गल्यक १ मसूर २ ॥

-ऽथ मकुष्ठकमयुष्ठकौ । वनमुद्गे-

मोठके नाम ३-मकुष्ठक १ मयुष्ठक २ वनमुद्ग ३ ॥

—सर्षपे तु द्वौ तंतुभकदम्बकौ ॥ १७ ॥

सरसोंके नाम ३—सर्षप १ तन्तुभ २ कदम्बक ३ ॥ १७ ॥

सिद्धार्थस्त्वेष धवलो—

सफेद सरसोंका नाम १—सिद्धार्थ १

—गोधूमः सुमनः समौ ।

गेहूंके नाम २—गोधूम १ सुमन २ ॥

स्याद्यावकस्तु कुल्माष—

कुलथीके नाम २—यावक १ कुल्माष २॥

—श्चणको हरिमन्थकः ॥ १८ ॥

अरहेर (चने) के नाम २—चणक १ हरिमन्थक २ ॥ १८ ॥

द्वौ तिले तिलपेजश्च तिलपि-ञ्जश्च निष्फले ।

'फलहीन' 'बांझतिल' 'रानतिल' के नाम २—तिलपेज १ तिलपिंज २ ॥

क्षवः क्षुताभिजननो राजिका कृष्णिकाऽऽसुरी ॥ १९ ॥

राईके नाम ५—क्षव १ क्षुताभिज-नन २ राजिका ३ कृष्णिका ४ आसुरी ५ ॥ १९ ॥

स्त्रियौ कङ्गुप्रियंगू द्वे—

कङ्गनीके नाम २—कंगु १ प्रियंगु २॥

—अतसी स्यादुमा क्षुमा ।

अलसीके नाम ३—अतसी १ उमा २ क्षुमा ३ ॥

मातुलानी तु भंगायाम्—

भङ्गके नाम २—मातुलानी १ भंगा २ ॥

—व्रीहिभेदस्त्वणुः पुमान् ॥२०॥

चीना धान्यका नाम १-अणु १॥२०॥

किंशारुः सस्यशूकं स्यात्—

जौ इत्यादिके तीखे अग्रभाग (सीकुर) के नाम २—किंशारु १ सस्यशूक २ ॥

—कणिशं सस्यमञ्जरी ।

धान्यकी बालीके नाम २—कणिश १ सस्यमञ्जरी २ ॥

धान्यं व्रीहिः स्तम्बकरिः—

धान्यमात्रके नाम ३—धान्य १ व्रीहि २ स्तम्बकरि ३ ॥

—स्तम्बोगुच्छस्तृणादिनः ॥२१॥

यव आदिकी जड़के नाम २—स्तम्ब १ गुच्छ २ ॥ २१ ॥

नाडी नालं च काण्डोऽस्य—

नलुआके नाम २—नाडी १ नाल २॥

—पलालोऽस्त्री स निष्फलः ।

पयालका नाम १—पलाल १ ॥

कडङ्गरो बुसं क्लीबे—

मोटे भुसके नाम २—कडङ्गर १ बुस २॥

धान्यत्वचि तुषः पुमान् ॥ २२ ॥

भूसीका नाम १—तुष १ ॥ २२ ॥

शूकोऽस्त्री श्लक्ष्णतीक्ष्णाग्रे-

यव आदिके चिकने और तीखे अग्रभागके नाम २-शूक १ श्लक्ष्ण-तीक्ष्णाग्र २ ॥

-शमी शिम्बा-

मटर आदिकी फलीके नाम २-शमी १ शिम्बा २ ॥

-त्रिषूत्तरे ।

आगे कहे हुए सब शब्द तीनों लिंगोंमें होंगे ॥

ऋद्धमावसितं धान्यं-

तृण दूर करके पैरेमें इकट्ठे करने योग्य धान्यके नाम २-ऋद्ध १ आवसित २ ॥

-पूतं तु बहुलीकृतम् ॥ २३ ॥

साफ करके इकट्ठे किये हुए धान्यके नाम २-पूत १ बहुलीकृत २ ॥ २३॥

माषादयः शमीधान्ये-

फलीके भीतर होनेवाले धान्यं माष आदि हैं ॥

-शूकधान्ये यवादयः ।

अव आदि शूकधान्य अर्थात् बालीसे पैदा होनेवाले हैं ॥

शालयः कलमाद्याश्च षष्टिका-द्याश्च-

यव आदि और साठी आदि शालि-धान्य कहलाते हैं ॥

-पुंस्यमी ॥ २४ ॥

माष आदि शब्द पुँल्लिङ्गमें होते हैं ॥ २४ ॥

तृणधान्यानि नीवाराः-

पशाई आदि मुनियोंके धान्यका नाम १-नीवार १॥

-स्त्री गवेधुर्गवेधुका ।

जिसको कोकणदेशमें कसाड़ (कसा) कहते हैं उस मुनिअन्नके नाम २-गवेधु १ गवेधुका २ ॥

अयोग्रं मुसलोऽस्त्री स्या-

मूसलके नाम २-अयोग्र १ मुसल २ ॥

-दुदूखलमुलूखलम् ॥ २५ ॥

ओखलीके नाम २-उदूखल २ उलूखल २ ॥ २५ ॥

प्रस्फोटनं शूर्पमस्त्री-

छाजके नाम २-प्रस्फोटन १ शूर्प २ ॥

-चालनी तितउः पुमान् ।

चलनीके नाम २-चालनी १ तितउ ॥ २

स्यूतप्रसेवौ-

सण आदिसे बने हुए वस्त्रके थैलेके नाम २-स्यूत १ प्रसेव २ ॥

-कण्डोलपिटौ-

टोकरीके नाम २-कण्डोल१पिट२॥

—कटकिलिञ्जकौ ॥ २६ ॥

चटाईके नाम २—कट १ किलिंजक ॥ २६ ॥

समानौ—

यह समानलिङ्ग हैं ॥

—रसवत्यां तु पाकस्थानमहानसे ।

रसोईके स्थानके नाम ३—रसवती १ पाकस्थान २ महानस ३ ॥

पौरोगवस्तदध्यक्षः—

रसोईके अधिकारीके नाम २—पौरोगव १ तदध्यक्ष (महानसाध्यक्ष)२ ॥

—सूपकारास्तु बल्लवाः ॥ २७ ॥ आरालिका आन्धसिकाः सूदा औदनिका गुणाः ।

रसोइयोंके नाम ७—सूपकार १ बल्लव २ ॥ २७ ॥ आरालिक ३ आन्धसिक ४ सूद ५ औदनिक ६ गुण ७॥

आपूपिकः कान्दविको भक्ष्यकार इमे त्रिषु ॥ २८ ॥

पुआ आदि बनानेवालेके नाम ३—आपूपिक १ कान्दविक २ भक्ष्यकार ३॥ ये शब्द तीनों लिङ्गोमें होते हैं ॥२८॥

अश्मन्तमुद्धानमधिश्रयणी चुल्लिरन्तिका ।

चूल्हेके नाम ५—अश्मन्त १ उद्धान २ अधिश्रयणी ३ चुल्लि ४ अन्तिका ५॥

अंगारधानिकाऽङ्गारशकटचपि हसन्त्यपि ॥ २९ ॥ हसन्य—

बरोसी (सिगड़ीके) नाम ४—अंगारधानिका १ अङ्गारशकटी २ हसन्ती ३ ॥ २९ ॥ हसनी ४ ॥

—प्यथ न स्त्री स्यादंगारो—

अंगारेका नाम १—अंगार १ ॥

—ऽलातमुल्मुकम् ।

जलते हुए काष्ठके नाम २—अलात १ उल्मुक २ ॥

क्लीबेऽम्बरीषं भ्राष्ट्रो—

भाड़के नाम २—अम्बरीष १ भ्राष्ट्र २॥

—ना कन्दुर्वा स्वेदनी स्त्रियाम् ॥ ३० ॥

कढ़ाईके नाम २—कन्दु १ स्वेदनी २ ॥ ३० ॥

आलिञ्जरः स्यान्मणिकः—

माठ (बड़ा घड़ा) के नाम २—आलिञ्जर १ मणिक २ ॥

—कर्कर्यालुर्गलन्तिका ।

कठौतीके नाम ३—कर्करी १ आलु २ गलन्तिका ३ ॥

पिठरः स्थाल्युखा कुण्डं—

बटलोईके नाम ४—पिठर १ स्थाली २ उखा ३ कुण्ड ४ ॥

—कलशस्तु त्रिषु द्वयोः ॥३१॥

नाम.	की. रु. आ.
कुमारसम्भव–महाकवि कालिदासकृत और मल्लिनाथकृत संजीवनी-टीकासमेत । इसमें–पार्वतीजीकी उत्पत्ति, ब्रह्माजीकी तारकासुरसे क्लेशित देवोंको शिक्षा, मदनदहन, रतिविलाप, पार्वतीके तपका उदय, पार्वतीका शिवजीसे विवाह करनेके निमित्त हिमवान्‌के पास सप्तऋषियोंको भेजकर विवाहका निश्चय और शिव–पार्वतीजीका विवाह विधिपूर्वक वर्णित है.	१–८
कृष्णलीलामृतकाव्य–और भक्त मनोरञ्जनी....	०–५
कृष्णकर्णामृतकाव्य–(बडाही सरस भक्तिमय है)	०–६
कार्ष्णिकण्ठाभरण–कार्ष्णिगोपालदास विरचित । नरोत्तमीय टीका तथा अमरेश्वरीय–टिप्पणीसहित । इसमें भुजङ्गप्रयात, रत्नदशक, तोटकरत्न दशक आदि दश दशक हैं । और श्रीकृष्णभगवान्‌की स्तुतिके साथ २ ऐसी उत्तम कविता है कि पण्डितोंका मन मुग्ध हो जाता है ।	०–८
गीतगोविन्द–राधाविनोदसमेत–संस्कृतटीका तथा भाषाटीका सहित । इसमें जयदेवगोस्वामिकृत अतिललित संस्कृतमें रागमय राधाकृष्णकी प्रेममयभक्तिकी गानेकी चीजें विद्यमान हैं । गानविद्या जाननेवालोंको अवश्य संग्रह करना चाहिये । यह भगवान्‌को अत्यन्त प्रिय है.	१–८
गीतगोविन्द–मूलमात्र.	०–३
गुरुपीयूषलहरी–गुरुनानकसाहबका वर्णन	०–६
घटकर्परकाव्य–भाषाटीकासमेत, ...	०–२
दशकुमारचरित्र–(संस्कृत) टीका व टिप्पणीसहित	१–८
दशकुमारचरित्र–भाषाग्रन्थ–राजकुमारादि दश कुमारोंकी अपूर्व रोचक देशाटनीय विचित्र कथा वर्णित है	०–१४

नाम.	की. रु. आ.
शांतिविलासादि अत्यन्त रोचक विषय हैं, पंडितोंके देखने योग्य है.	१–४
भोजप्रबन्ध–मूल। कविबल्लालकृत। इसमें भोजराजाका चरित्र राजनीतिसम्बन्धीं भली भांति वर्णित है.	०–१२
भोजप्रबन्ध–पं० श्यामसुन्दरलाल त्रिपाठीकृत भाषाटीकासमेत	१–६
भोज और कालिदास–भाषाटीकासमेत। राजा भोज और कालिदासके चातुर्य्यकी उत्तमोत्तम कथाका संग्रह है	१–६
भङ्गाभङ्गनिषेध भाषाटीकासमेत। इसमें भाङ्गकी निन्दाका खण्डन भलीभांति किया है.	०–२
मारुतिस्तव–सटीक। जोधपुरनिवासी नित्यानन्दशास्त्रीजीने हनुमानजीकी लोकोत्तरमहिमाको ललितपद्योंमें वर्णन किया है। कवितामें यह विचित्रता है कि पद्योंके अक्षरोंमें रामरक्षा स्तोत्र सम्पूर्ण आ गया है जो कि विद्वानोंके देखने ही योग्य है। साथ ही जोधपुर वैदिक पाठशालाके प्रधानाध्यापक पण्डित भगवतीलालजीने इसकी ऐसी सरल टीका की है कि कविता स्पष्ट समझने आती है	०–५



पुस्तक मिलनेका ठिकाना–

खेमराज श्रीकृष्णदास, "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्–प्रेस, बम्बई.	गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास, "लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" प्रेस, कल्याण–बम्बई.

